॥ न्यूरोथैरेपी वेद – सुत्र ॥

Dr. Lajpatrai Mehra's™

Neurotherapy

Foreword प्रस्तावना

इस पुस्तक में कई जगह लिखा हुआ है कि अमुक फौरमुले से शरीर में कोई खास कैमीकल बनता है – इस बात को किसी लैबोरेटरी टैस्ट (laboratory tests) द्वारा प्रमाणित नहीं कर पाये क्योंकि इन को टैस्ट कराने में बहुत खर्चा आता है। दूसरी बात ऐसी है कि कुछ जगहों पर किये गये टैस्ट के रिपोर्ट भी अस्पताल के लोग देते नहीं हैं – कहते हैं कि वे हमारी अपनी documents हैं - हम आपको नहीं दे सकते। अपने अनुभव के तौर पर कुछ मिसाल हैं जो कई पेशंटों पर प्रयोग करने पर सच साबित हुये हैं –उनके बारे में यहाँ बयान कर रहा हूँ।

करीब बीस साल पहले मैंने फिज़ियोलोजी (physiology) के तथ्यों के आधार पर एक ऐसा उपचार बनाया था जिससे शरीर में अनचाहे थक्के नहीं बनेंगे एवं पुराने थक्के भी खत्म होंगे। यह इतना प्रभावशाली उपचार है कि जब उसे उन औरतों को दिया जाता है जिन्हें मैन्सस में क्लोट (clot) यानि थक्के आती हों – तो एक दो उपचार के बाद अगले मैन्सस में clots आते ही नहीं – उस दिन से आज तक कई औरतों पर यह साबित हो चुका है। वैसे ही, जिन्हें इन्फार्कट (infarct) के कारण पैरालाइसिस हो, उन्हें यह उपचार देने के तुरन्त बाद ही वे कहते हैं कि एक ही उपचार के बाद उन्हें पचीस–तीस प्रतिशत से ज्यादा लाभ पहुँचा है। क्योंकि हेपारिन नामक केमीकल का कार्य है कि रक्त को क्लोटिंग (clotting) होने से रोकना तथा प्लास्मिन का कार्य है पुराने क्लोट (clot) को खोलना – सो हम समझते हैं कि हमारे उपचार द्वारा heparin तथा plasmin दोनों बनाये या उकसाये जाते हैं। इसलिये ही मैंने उस उपचार का नाम Plasmin Heparin या P. Heparin दिया था।

सन् २००२ में सूर्यमाल गाँव की एक बीस वर्ष की लड़की हमारे पास आयी जिसे कुछ ही दिनों पहले अचानक दाहिने हाथ में लकवा हुआ था जिसके कारण वह उस हाथ को उठा नहीं पाती थी। उसे ऊपर के LMNT का Heparin का उपचार दिन में सुबह–शाम दिया गया तो देखा कि सात ही उपचारों के बाद उसके हाथ पूरे ही उठ गये – जिसके फोटो हमारे पास हैं ! इस हेपारिन उपचार की सफलता के ऐसे अनगिनत किस्से हैं।

हमने पाया है कि जिनको हाई बी पी होती है उनमें कई लोगों को अक्सर छाती में जलन होती थी – खासकर तली हुयी चीजें खाने के बाद – जिससे हम समझते हैं कि उनकी पाचन शक्ति कुछ बिगड़ी हुयी है। हमारे उपचार से छाती में जलन तुरन्त कम होती है, आंतडियों की मोटिलिटी बढ़ती है और पाचन शक्ति भी सुधर जाती है। आंतडियों में पाचन का मुख्य दायित्व कोलिसिस्टोकाइनिन (Cholecystokinin) नामक हौरमोन की है, इसलिये हमने उस उपचार को Chole treatment नाम दिया है। हमने पाया है कि इस उपचार से सिस्टोलिक बी पी भी कम होती है। किसी गर्भवती औरत को अगर प्रेगनैन्सी के दौरान ब्लड प्रेशर बढ़ जाये और जनम के बाद पता चले कि बच्चे में मन्द बुद्धि है तो उस बच्चे को Chole treatment तथा अन्य उपचार देने के बाद तीन महीनों में ही उसके पाचन शक्ति में काफी लाभ होता है – यह अनुभव की बात है ।

शरीर का नौरमल टैम्परेचर (temperature) यानि तापमान 98.4ºF होना चाहिये। लेकिन सभी व्यक्तियों का ऐसा नहीं होता। जिनका टैम्परेचर हमेशा ही 97 ºF या उसके आसपास ही रहता हो – उन्हें जब हम उनके कान के नीचे और गर्दन के बाजू पर (6) Medulla नामक ट्रीट्मेंट देते हैं तो ट्रीट्मेंट के तुरन्त बाद ही उनका टैम्परेचर थोड़ा बढ़ने लगता है। और दो–चार उपचार देने के बाद उनका टैम्परेचर 98.4 ºF आ जाता है और फिर कम नहीं होता। तो हम कहते हैं कि इस उपचार से हमने हायपोथैलमस (hypothalamus) को उकसाया है क्योंकि शरीर में तापमान को सही बनाये रखने की मुख्य जिम्मेदारी हायपोथैलमस की है।

किसी रोगी की अगर बी पी (blood pressure) 90/50 है – तो हम उन्हें (2) Para नामक उपचार एक-एक मिनट के अंतर में दो बार देते हैं तो देखा गया कि एक घंटे के अंदर उनकी बी पी बढ़ कर 100/60 आ जाती है। और कुछ दिनों के उपचार के बाद बी पी 110/70 या उससे ज्यादा भी आ जाती है। और उस पेशंट को पहले–जैसे चक्कर इत्यादि नहीं आते – उन्हें बहुत अच्छा लगता है। ऐसे कई लोगों पर साबित हो चुका है – सो हम समझते हैं कि उस उपचार से शरीर में वैसोप्रैसिन बनता है या उकसाया जाता है – सो हमने उस उपचार का नाम Vasopressin treatment रखा है।

कुछ साल पहले, करीब सन् २००० में, मैंने एक ट्रीट्मेंट बनाया था जिसको देने के बाद मुझे लगा कि उस उपचार से शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा बढ़ेगी। तभी मैंने बिना किसी टैस्ट किये ही, उस उपचार का नाम Oxygen Formula रख दिया था। सन् 2004 की बात है। मुंबई के लीलावती अस्पताल में critical stage यानि गंभीर अवस्था में एक पेशंट थे – जिन्हें देखने के लिये उनके रिश्तेदारों ने मुझे बुलाया। डॉक्टरों ने कहा उनकी सैल्स के अन्दर ऑक्सीजन की मात्रा जो 90 होनी चाहिये, वह 82 थी। उनको हमारा Oxygen formula नामक उपचार दो बार दिया और दो घंटे बाद टैस्ट कराया गया तो वह 84 आ गया। फिर वही उपचार दो बार दिये गये और टैस्ट किया गया तो वह 86-87 आ चुका था। यह सब हुआ एक ही दिन के अंदर – बगैर किसी अन्य दवाई के। इससे साबित हुआ कि मैंने जो सोचकर वह फॉरमुला बनाया था वह हरि की कृपा से सही निकला। अगर हमें कुछ और समय दिया जाता तो हमारे उपचार से ऑक्सीजन की मात्रा 90 तक आ ही जाती। लेकिन किसी कारण से अस्पताल वालों ने हमारा उपचार बन्द करवा दिया। पेशंट को ICU में लाया गया और उनको दवाइयों द्वारा उपचार किया गया तो उसमें Oxygen की मात्रा 90 आ गयी। तीन घंटे बाद टैस्ट कराने पर ऑक्सीजन की मात्रा फिर से कम हो गयी। लेकिन ध्यान रहे कि इस बार वह कम होकर 87 तक ही आयी - न कि 82 तक! सो क्यों न हम कहें कि हमारे Oxygen treatment द्वारा शरीर में Oxygen की मात्रा को बढ़ाया जा सकता है ?

जब हम (20) Medulla नामक उपचार देते हैं तो कई पॉरकिन्सन बीमारी के रोगियों के हाथों के कंपन में काफी फर्क आता है। वैसे ही, अगर किसी औरत में Prolactin की मात्रा बढ़ी हुयी हो तो उसी उपचार से उसके शरीर में Prolactin level कम हो जाती है। डोपॅमीन की कमी से ही पॉरकिन्सन बीमारी आती है, एवं उसका एक और काम है प्रोलैक्टीन को inhibit करना यानि रोकना। इस उपचार से दोनों चीजों में असर होता है, सो ही हम कहते हैं कि (20) Medulla के उपचार से शरीर में dopamine बनता है। मुंबई के कई अस्पतालों में फोन करके पूछा तो सब जगह से यही जवाब आया कि उनके lab में डोपॅमीन की testing नहीं होती !

डबल निमोनिया (Double pneumonia) के उपचार के लिये अस्पतालों में डोपॅमीन (dopamine) तथा angiotensin # 2 नामक दवाई दिये जाते हैं। हमने देख लिया कि (20) Medulla से हम डोपॅमीन को उकसा सकते हैं। किताबों से पता चला कि angiotensin # 2 लिवर, किडनी और लंगज़ के कार्यों द्वारा बनता है। जब हमने इन तीनों अंगों को क्रमशः अपने तरीके से उकसाया तो उससे एक पेशंट की लो बी पी बढ़कर ठीक होने लगी। विभिन्न अवसरों में उसका प्रयोग करने के बाद हमें लगने लगा कि वह उपचार सचमुच वही कार्य करता है जो Angiotensin #2 करता है। सो उस उपचार को angiotensin #2 formula का नाम दिया गया। किसी बच्चे को डबल निमोनिया होने पर उसे दूसरे उपचारों के साथ हम जब (20) Medulla और Angiotensin#2 फॉरमुला देते हैं, तो कुछ ही उपचार के बाद उस बच्चे को काफी लाभ होता है। और यह बात मैं अपने students से छुपाता नहीं – जैसे ही कोई अच्छे results मिलते हैं, जो-जो मेरे संपर्क में रहते हैं, उन सभी को मैं तुरन्त बता देता हूं।

कुछ महीने बाद सन् 2002 में तामिल नाडू के सेलम शहर (Salem) के एक डॉक्टर के बेटे को डबल निमोनिया (double pneumonia) के कारण काफी तेज बुखार और अचानक बी पी तथा pulse दोनों ही बहुत कम होने लगे। नर्स ने उस के पिताजी को फोन किया तो डॉक्टर साहब ने बताया कि मैं तुरन्त ही dopamine एवं angiotensin #2 के इन्जेक्शन लेकर वहाँ पहुँच रहा हूँ। तब हरि की कृपा से हमारा एक थेरेपिस्ट वहीं मौजूद था जिसे हमारे इन उपचारों का ज्ञान था। नर्स की फोन की बातें सुनकर झट से उस पेशंट को LMNT का angiotensin #2 फॉरमुला तथा (20) Medulla उपचार देकर चुपचाप खड़ा हो गया। थोड़ी देर बाद जब डॉक्टर साहब पहुँचे तब तक बुखार कम हो चुका था एवं बी पी और pulse काफी ठीक हो चुके थे कि दवाई देने की जरूरत नहीं पड़ी। तो नर्स हैरान हुयी। तब हमारे थेरेपिस्ट ने डॉक्टर को बताया कि उसने पेशंट को LMNT के angiotensin#2 एवं dopamine का उपचार दिया – तो उन्हें आश्चर्य हुआ, मगर वे उस बात पर विश्वास नहीं कर पाये। ऐसे कई और भी मिसाल मिले हैं जिससे हमें विश्वास है कि हमारे इन उपचारों द्वारा शरीर में डोपॅमीन (dopamine) और angiotensin #2 बन रहे हैं।

किताबों से पता चलता है कि ऐल्डोस्टीरोन (aldosterone) नामक हौरमोन ऐड्रीनल कौरटेक्स द्वारा बनाया जाता है जो किडनीज़ पर प्रभाव डालता है कि वे पेशाब द्वारा सोडियम को बाहर जाने न दें। अगर किसी रोगी का सोडियम नौरमल हो यानि 135 से कम हो – जैसे 125 वगैरह - तो उन्हें हम (2) Adr के तीन ट्रीट्मेंट एक–एक मिनट के अंतर में देते हैं – ऐसे दिन में तीन बार दिया जाता है। चार दिन इस उपचार देने के बाद टैस्ट कराने से सोडियम की मात्रा ऊपर आ जाता है – करीब 130 या उससे भी ऊपर। दुबारा यही उपचार कुछ दिन देने के बाद सोडियम की मात्रा नौरमल होकर 135 से भी ऊपर आ जाती है। अगर ऐसा होता है, तो क्या हम नहीं कह सकते कि हमने ऐड्रीनल कौरटेक्स को ऐल्डोस्टीरोन बनाने के लिये उकसाया है ?

अगर किसी को सोडियम या कैल्शियम किसी एक की या दोनों की कमी हो तो उसे क्रैम्प्स आते हैं। हम उनसे पूछते हैं कि उनका ब्लड प्रेशर कैसा है। अगर वे कहें कि उनका ब्लड प्रेशर हाई है, तो हम समझ जाते हैं कि उन में खाली कैल्शियम की कमी है। मैंने Guyton की फिज़ियोलोजी (physiology) किताब से देखा कि शरीर में कैल्शियम ठीक से कार्य करने के लिये 1,25 DCC नामक हौरमोन की जरूरत है – जो कि लिवर, पैरॅाथौरमोन (parathormone) तथा किडनीज़ द्वारा बनाया जाता है। फिर मैंने अपने LMNT तरीके से उन्हीं अंगों को क्रम से उकसाया तो पेशंट ने कहा कि उसके क्रैम्प्स दूसरे ही बन्द हो गये और दुबारा आये नहीं। जिन औरतों को कैल्शियम की कमी से मैन्सस (menses) में बहुत ज्यादा ब्लीडिंग आती है, यह उपचार देने से उनकी ब्लीडिंग कम या बन्द होती है। ऐसे अनेक पेशंटों पर देने के बाद यह निश्चित हो गया कि वह उपचार रक्त में कैल्शियम को बढ़ाता है, तो उसका नाम 1,25 DCC रख दिया गया।

अगर पेशंट कहे कि उनकी बी पी नौरमल है तो हम उन्हें कैल्शियम के लिये 1,25 DCC और सोडियम के लिये (2) Adr देते हैं तो अगले दिन से ही उनके क्रैम्प्स आने बन्द हो जाते हैं। अगर इन दोनों किस्म के पेशंटों में हमारे इन उपचारों से क्रैम्प्स बन्द हो जाते हैं तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि हमारे उपचार ने शरीर में 1,25 DCC को तथा ऐड्रीनल कौरटेक्स को उकसाया है ?

हम फिज़ियोलोजी के तथ्यों के गहन अभ्यास के बाद काफी सोच समझकर ही उपचार बनाते हैं। और रोगियों से बात करने पर उनसे प्राप्त feedback यानि संदेश से हम समझ जाते हैं कि हम शरीर के अंदर ही उन चीजों को बनाने में सफल हैं। हमारे प्वाइंट या फौरमुले जिन कैमीकल्स या ग्रंथियों के कार्य को बढ़ाते या उकसाते हैं, हम उनको उसी नाम से पुकारते हैं – उसका कारण यही है।

डॉ. लाजपतराय मेहरा

शिक्षा प्रारंभ मंत्र (हर दिन कक्षा के प्रारंभ में कहें)

इस महान् विश्व को जो अद्‌भुत शक्ति चला रही है, उसके कई पहलू हैं, जिन्हें हम मानव अलग-अलग नामों से पुकारते हैं। आम व्यक्ति इन शक्तियों को नंगी आँखों से देख नहीं सकते लेकिन हमारे पूर्वज ध्यान के दौरान उन्हें महसूस कर सकते थे। आजकल कुछ लोग उचित ट्रेनिंग द्वारा इन शक्तियों में से प्राणिक एनर्जी (pranic energy) नामक शक्ति को महसूस कर सकते हैं, जिसे औरा या ऑरा (aura) कहते हैं। यहां तक कि किर्लियन फोटोग्राफी (Kirlian photography) नामक तकनीक द्वारा ऑरा का फोटो भी निकाला जा सकता है। लेकिन आम व्यक्ति को इस बात की जानकारी शायद नहीं होगी।

आजकल छोटे बच्चों को भी पता है कि हमें चारों ओर से रेडियो, टी-वी, मोबाइल और न जाने अन्य किन-किन तरंगों ने घेर रखा है। ठीक उसी प्रकार, हमारे पूर्वज जानते थे कि इस संसार को चलानेवाली हर शक्ति से हम घेरे हुये हैं। जब हम कहते हैं कि भगवान सर्व व्यापी है तो उनकी शक्तियां भी सभी जगह होंगी ही। ये तरंग रूपी हैं, इसलिये हम उन्हें देख नहीं सकते - तो हमें उनकी उपस्थिति का ज्ञान नहीं है। पर ऐसी कोई जगह हो ही नहीं सकती जहां वे शक्तियां मौजूद न हों। तो क्यों न उनका लाभ उठाया जाय ?

सब से पहले यह दृढ़ विश्वास कर लें कि विश्व को चलानेवाली वे शक्तियां हमारे इर्द-गिर्द हमेशा ही होती हैं। हम जो भी सच्चे दिल से मांगेंगे वे जरूर देंगी ही। तो आइये हम इन प्रार्थनाओं के दौरान अपने लिये कुछ वरदान मांग लें।

दोनों हाथों को नमस्कार मुद्रा में जोड़ लें। ध्यान आज्ञा चक्र पर (जहाँ टिलक लगाते हैं वहाँ) ले जायें। कुछ ही दिनों के अभ्यास के बाद आप महसूस करेंगे कि मंत्र कहते हुये कुछ तरंगों के लहर आप के अंदर प्रवेश कर रहे हैं।

१ ॐ सरस्वति नमस्तुभ्यं वरदे काम रूपिणी ।
विद्या आरंभम् करिष्यामि, सिद्धिर्भवतु मे सदा ॥

२ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय धन्वन्त्र्ये,
अमृत कलश हस्ताय, सर्वामय विनाशाय,
त्रैलोक्य नाथाय, श्री महाविष्णवे नम : ।

३ ॐ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु।
सह वीर्यं करवावहै॥ तेजस्विनावधीतम् अस्तु।
मा विद्विषावहै ॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

शिक्षा प्रारंभ मंत्रों का अर्थ

१. पहला श्लोक है – सरस्वति वन्दना

ॐ – यह विश्व की सारी हितकारी मंगलमय शक्तियों का प्रतीक है। सरस्वति को केवल एक नाम मत समझिये। वह एक ऐसी शक्ति का प्रतीक है जो ज्ञान का भंडार, एवं विद्या ग्रहण करने की, तथा उसे ठीक रूप से उपयोग में लाने की क्षमता को सूचित करती है। चूंकि हमें उससे कुछ वर चाहिये इसलिये हम उस शक्ति को एक माँ के रूप में वन्दना करते हैं, क्योंकि माँ हमेशा अपने बच्चे की हर मांग को पूरा करती है। आश्रम में अग्निहोत्र रोज किया जाता है

अर्थ – हे सरस्वति ! तुम्हें नमन है ! मैं अब विद्या प्रारंभ करने वाला हूँ। मुझे यह वर दो कि इस विद्या में मुझे हमेशा सिद्धि प्राप्त हो॥

(इधर सिद्धि का मतलब उस विद्या में हम इतने निपुण हों कि हमेशा – यानि सोते-जागते हर किसी भी वक्त, जरूरत के अनुसार, एवं परिस्थिति के अनुकूल – उचित ज्ञान हमें याद आये।)

यह श्लोक बोलते समय हो सके तो आँखें बन्द करके ऐसा भांप लें कि हमारे माथे के कुछ दूर ऊपर एक अद्‌भुत ऊर्जा का श्रोत है – जिससे सुनहरी किरण-रूपी तरंगें निकल रही हैं और हमें हर प्रकार के ज्ञान एवं विद्या ग्रहण करने की शक्ति प्रदान कर रही हैं। पहले झूठ-झूठ ही सही, लेकिन जैसे-जैसे आपका विश्वास और दृढ़ होता जायेगा, वैसे-वैसे वह झूठ सच में बदलता जायेगा और आप सचमुच महसूस कर सकते हैं कि जब यह श्लोक कह रहे हैं उस समय सारे शरीर में कुछ अजीब किस्म की चुबन-जैसी तरंगें फैल रही हैं – जैसे मानो कोई विद्युत की लहर चल रही हो ।

२. दूसरे श्लोक में हम धन्वन्त्री भगवान को नमन करते हैं।

धन्वन्त्री भगवान उस दैवी शक्ति का प्रतीक है जो सभी जीव जन्तुओं का स्वास्थ्य रक्षक है। साधारणतः शरीर का हर एक cell अपना-अपना कार्य सुचारु रूप से करता है जिसके कारण रक्त-चाप या शुगर, नमक इत्यादि किसी भी कारक को एक सामान्य स्तर से ज्यादा ऊपर-नीचे होने नहीं देता। शरीर के इस गुण को अंग्रेजी में homeostasis (होमियोस्टॅसिस) कहते हैं। लेकिन मेडिकल साइन्स (medical science) इस गुण को दैवी शक्ति नहीं समझते। वे सिर्फ यह कहते हैं कि शरीर अपने आप को ठीक रखने की क्षमता रखती है, लेकिन यह कैसे अपने-आप होता है, हमें पता नहीं है। हमारे पूर्वज इस गुण को पहचानते थे और उस शक्ति को सूचित करने के लिये उन्हें यह नाम दिया है।

अर्थ – उस धन्वन्त्री भगवान को (नमन है), जो वासुदेव है यानि धरती के मालिक का रूप है,

- अमृत कलश हस्ताय **(नमः)** **=** जिसके हाथ में अमृत कलश है, **(हस्त = हाथ)**
- सर्वामय विनाशाय **(नमः)** **=** जो सभी बीमारियों को विनाश करने वाला है,
- त्रैलोक्य नाथाय श्री महा विष्णवे नमः **=** तीनों लोकों को चलानेवाली शक्ति जिसे भगवान विष्णु का नाम दिया गया है, उसे नमन है।

इस श्लोक में धन्वन्त्री को सर्वामय विनाशक कहा गया है।

आमय = व्याधि यानि बीमारी ; सर्वामय = सर्व आमय यानि सभी बीमारियाँ। हर एक जीव राशि के अन्दर एक आत्म रक्षा शक्ति है जिसे immune system कहते हैं। इस श्लोक द्वारा हम अपने शरीर की इम्यूनिटी (immunity) यानि आत्म रक्षा शक्ति को और मजबूत और सबल बना रहे हैं।

३. तीसरे श्लोक में गुरु और शिष्य दोनों एक दूसरे की भलाई के लिये प्रार्थना करते हैं।*

- सह नाववतु = हम दोनों की रक्षा हो !
- सह नौ भुनक्तु = हम दोनों को पोषण प्राप्त हो
- सह वीर्यं करवावहै = हम मिलकर वीर्य के ऐसे कार्य करें जो सभी के हित में हो
- तेजस्वि नावधीतमस्तु = हम दोनों बहुत ही तेजस्वी बनें
- मा विद्विषावहै = हम दोनों में कभी द्वेष यानि ईर्ष्या, गुस्सा या भेद-भाव न हो

मा विद्विषावहै – यही गुरु–शिष्य परंपरा एवं उनके आपसी सम्बन्ध की खरी कसौटी है जिसके लिये नालन्दा और तक्षशिला के जमाने के पहले से ही भारतवर्ष प्रचलित है। असली गुरु वही है जो शिष्यों में पक्षपात न करे। वह हमेशा यह चाहे कि शिष्य मुझसे भी आगे बढ़े और शिष्य की तरक्की से उसे कभी जलन न हो। अच्छा शिष्य वह है जो यह कभी न सोचे कि गुरुजी मुझसे ज्यादा किसी और शिष्य को चाहते हैं और उस कारण से वह गुरु के हर कार्य को गलत समझे।

इस गुण के जीते–जागते उदाहरण हैं LMNT के पितामह श्री गुरुजी। अपने हर एक शिष्य की तरक्की से उन्हें इतनी प्रसन्नता होती है कि किसी की तरक्की की नयी खबर के बारे में दूसरों को बताते हुये खुशी के मारे उनकी आँखों से आँसू भी निकल पड़ते हैं। हम धन्य हैं कि ऐसे गुरुजी के पावन सान्निध्य में हम जिंदगी के कुछ अनमोल पल बिता रहे हैं।

* कई आश्रमों में इस तीसरे मंत्र को भोजन के पहले भी कहते हैं ताकि बनानेवाले भक्ति से बनायें, परोसनेवाले प्यार से वितरण करें, खानेवाले प्रसाद के रूप में उसे ग्रहण करें और वितरण बिना भेदभाव का ऐसा हो कि कोई यह न महसूस करें कि दूसरे को ज्यादा और मुझे कम दिया जा रहा है ।

शुभ कामना मंत्र (हर दिन कक्षा के अंत में)

पहले दो श्लोक में हथेलियों को ऐसे रखना कि उँगलियाँ नीचे की ओर झुकी हुयी हों। और इस भावना से श्लोक कहना कि हम विश्व को अपना आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

१ ॐ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्याय्येन मार्गेण महीं महीशा ः
गोब्राह्मणेभ्यः शुभम् अस्तु नित्यं लोकास्समस्ताः सुखिनो भवन्तु।

२ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया ः
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखम् आप्नुयात्।

निम्न मंत्र के लिये हथेलियों को अंदर की ओर घुमा लें और एक cup-जैसा रखें। हथेलियों के अंदर अपना ध्यान केंद्रित करते हुये यह भावना मन में लायें कि हमें ग्यारह प्रकार के गुणों का वरदान प्राप्त हो रहा है।

३ ॐ श्रद्धां मेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलं
तेजः आयुष्यं आरोग्यं देहि मे हव्यवाहन। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

यह मंत्र कहने के बाद सारे शरीर पर हथेलियों को फेर लें ताकि हमारे शरीर के हर सैल्ल तक सब प्रकार की शक्तियां प्राप्त हों।

मंत्रों का अर्थ

- पहले श्लोक में हम अच्छी government यानि सरकार के लिये प्रार्थना करते हैं।
- स्वस्ति का मतलब सभी प्रकार की धन–दौलत का प्रचुर मात्रा में रहना। इसे शुभिक्षा या समृद्धि भी कहा जाता है। प्रजा को स्वस्ति तभी मिलेगी जब राजा न्याय के मार्ग पर राज्य परिपालन करे। और राज्य को स्वस्ति यानि सभी संपत्तियां तभी प्राप्त होंगी जब उस देश में गोमाता, ब्राह्मण यानि शिक्षित लोग शुभ-मंगल रहें।
- अर्थ – महीश यानि राजा न्याय के मार्ग पर इस धरती का परिपालन करे, प्रजाओं के लिये स्वस्ति हो, गोमाता तथा शिक्षित लोग को नित्य ही शुभ हो, तथा समस्त लोक यानि सभी सुखी रहे।
- ' समस्त लोक ' – इस के अन्तर्गत सभी जीव–राशि, पेड़–पौधे, नदी–तालाब इत्यादि सब कुछ आ जाते हैं। हमारे पूर्वज सदियों से अपनी निजी मंगल की कामना के साथ–साथ अन्य जीव–राशियों तथा वातावरण के मंगल के लिये भी प्रार्थना करते आये हैं। इसी को आजकल eco-friendly, environmental protection इत्यादि आधुनिक शब्दों से जाना जाता है जिसे हमारे पूर्वजों ने अपने दिनचर्या का अटूट हिस्सा बना लिया था।

दूसरे श्लोक का अर्थ – सभी सुखी हों, सभी निरामय यानि बीमारी–रहित हों, सभी का नजरिया,सोच–विचार इत्यादि भद्र हो यानि सज्जनों–जैसा हो, एवं किसी को कभी भी दुःख न भोगना पड़े। पहले श्लोक के अन्त में जो दूसरों की मंगल कामना की गयी है उसी को इधर दुहराया गया है।

हमारे पूर्वजों का मनोविज्ञान के प्रति कितना गहरा ज्ञान था - उसका परिचय इस श्लोक में मिलता है। उन्हें पता था कि स्वास्थ्य के लिये मन और नजरिया ऐसा होना चाहिये कि सभी को हर वक्त, हर चीज़ में अच्छाई के अलावा और कुछ भी नजर न आये। 'सर्वे भद्राणि पश्यन्तु ' का यही अर्थ है।

तीसरे श्लोक में हम अग्नि भगवान से अपने लिये प्रकार के निम्न गुणों का वरदान मांग रहे हैं–

श्रद्धा	हम जो भी काम करें उसमें पूर्ण श्रद्धा ओर लगन हो तभी कामयाबी मिलेगी
मेधा	ज्ञान की गहराई तक पहुंचने तथा उसके सूक्ष्मों को समझने की क्षमता
यशः	कीर्ति यानि दूसरों द्वारा अपने गुणों की प्रशंसा एवं स्वीकार दूर दूर तक फैलना
प्रज्ञा	इसके कई अर्थ हैं, जिसमें प्रमुख है आत्मा की जानकारी। इधर इसका अर्थ है सफलता के लिये आवश्यक सभी पहलुओं की जानकारी
विद्या	विषय–ज्ञान
पुष्टि	पोषण – इधर शरीर और मन के विकास के लिये उचित वातावरण को सूचित करता है।
श्रियं	श्री यानि धन–दौलत एवं हर एक प्रकार की संपत्ति
बलं	बल, शक्ति, हर प्रकार के कार्य करने की क्षमता
तेजः	वह आभा या गुण जिससे, बिना पहचान के ही, दूर से ही हमें किसी के प्रति यह लगता है कि वह व्यक्ति पूजनीय या सम्मान के योग्य है। इसी आभा को सन्तों और देवताओं की तस्वीरों या फोटो में माथे के पीछे एक पीले सूरज–जैसा दिखाया जाता है।
आयुष्यं	उमर, आयु
आरोग्यं	स्वास्थ्य, निरोगी जीवन। लंबी आयु हो मगर आरोग्य न हो, वह किस काम का ?
देहि मे	मुझे दीजिये
हव्यवाहन !	हे अग्नि देवता ! हव्य = आहुति में दी गयी चीज़ें ; वाहन = ले जानेवाला ; हव्य वाहन यानि अग्नि भगवान, जिसे हम देवताओं का कूरियर (courier) यानि डाकिया समझ सकते हैं।

हमने जो ग्यारह शक्तियाँ मांगी हैं उन्हें अलग–अलग energy centres से प्राप्त करना है, जिन्हें अलग–अलग देवताओं का नाम दिया गया है। और अग्नि वह दूत है जो हमारी प्रार्थना को उन विभिन्न देवताओं तक पहुँचायेगा, इसलिये हम अग्नि भगवान से इस प्रार्थना द्वारा अर्ज करते हैं।

अंत में तीन बार शांति इसलिये कहा जाता है क्योंकि किसी भी कार्य करते समय तीन प्रकार की बाधायें आ सकती हैं।

पहला विघ्न है – अपने ही शरीर–मन से; यानि अगर स्वास्थ्य बिगड़ गया या मानसिक परेशानी हो तो काम या अभ्यास में मन नहीं लगेगा।

दूसरा – अन्य व्यक्ति/जीव–जंतुओं से – उदाहरण के लिये हम पढ़ने बैठें तो उसी समय कुत्ते का जोर–जोर से भौंकना, या मच्छर या मक्खी का भिनभिनाना इत्यादि।

तीसरा – भूकंप, बारिश या आग–जैसे प्राकृतिक कारणों से हमारे कार्य में रुकावट आ सकती है।

इन तीनों विघ्नों पर हमारा कोई कंट्रोल नहीं है। इसलिये हम दैवी शक्तियों से शांति की सहायता मांगते हैं ताकि हमारा कार्य निर्विघ्न होकर हम पूर्ण कर सकें।

डॉ. लाजपतराय मेहरा की न्यूरोथेरेपी – एक संक्षिप्त परिचय

अमृतसर में जनमे डॉ. लाजपतराय मेहराजी ने करीब चालीस वर्ष पूर्व मुंबई में न्यूरोथेरेपी की नींव डाली। पहले पहल डॉ. मेहराजी ने सन् 1947 में नाभी ठीक करना शुरू किया था। उन्होंने सबसे पहले घर पर ही इस उपचार को शुरू किया था। धीरे-धीरे कमर दर्द, गर्दन दर्द, सन्धिवात और अलग-अलग बीमारियों के रोगी उनके पास आने लगे। पहले रिश्तेदार और जान-पहचान वाले, और बाद में दूर-दूर से और अनेक प्रदेशों से मरीज़ों ने आना शुरू किया। रोगियों की संख्या बढ़ने के साथ उन्होंने एक अलग सेंटर खोला और इस थेरेपी को सन् 1976 में " न्यूरोथेरेपी " नामकरण किया।

विभिन्न प्रकार की बीमारियों के मरीज़ आने के कारण डॉ. मेहराजी बीमारियों के बारे में विज्ञान की पुस्तकों से शोध करने लगे और उनसे नये-नये उपचार ढूँढने लगे। इस प्रकार सर्दी जुकाम से लेकर कैंसर जैसी बीमारियों तक के मरीज़ों को राहत मिलने लगी। अब तक इस इन्स्टीट्यूट में एक लाख पचास हज़ार के ऊपर रजिस्टर्ड मरीज़ उपचार ले चुके हैं, जिनके परिणाम-स्वरूप 70-80 प्रतिशत तक रोगी ठीक हो चुके हैं। इस सेन्टर द्वारा ँहर रोज़ औसतन सौ मरीज़ इस उपचार का लाभ उठाते हैं।

न्यूरोथेरेपी क्या है एवं कैसे कार्य करती है?

यह एक भारतीय उपचार पद्धति है जिसकी खोज मुंबई के डॉक्टर लाजपतराय मेहरा ने की है। शरीर के अंदर ही उसे ठीक रखने के लिये हर प्रकार की केमीकल बनाने की क्षमता है। पर किसी कारण-वश – जैसे आहार-विहार पर नियंत्रण न हो, गलत तरीके से उठना-बैठना, दूषित वातावरण, मानसिक तनाव, अपने समर्थ से अधिक मानसिक या शारीरिक कार्य, न्यूट्रिशन की कमी, डर या क्रोध इत्यादि से – शरीर के अंगों एवं ग्रंथियों के कार्य पर असर होता है जिससे उनका कार्य धीमा हो जाता है या बिगड़ जाता है। इससे उन ग्रंथियों से बनने वाले केमिकल या हौरमोन्स में कमी आ जाती है। इसके कारण शरीर का एसीड-अल्कली इत्यादि का बैलेंस बिगड़ जाता है और एकाध चीज़ की कमी से बीमारी आ जाती है। तो न्यूरोथेरेपी में हम शरीर के विभिन्न अंगों पर खास प्रकार के दबाव द्वारा उन ग्रंथियों को उकसा कर उनके कार्य को सुचारु रूप से चलाते हैं।

न्यूरोथेरेपी में किसी भी प्रकार की दवाई या साधन का इस्तेमाल नहीं होता। ये उपचार देते समय थेरेपिस्ट दोनों तरफ कुर्सियों का सहारा लेकर अपने पैरों से मरीज के हाथ, पैर, जांघ इत्यादि पर दबाव देते हैं। मरीज को किसी भी प्रकार की तकलीफ़ नहीं होती। यह उपचार एक दिन के बच्चे से लेकर सौ साल के उमर तक हर व्यक्ति करवा सकता है। बिल्कुल छोटे बच्चों को एवं बुजुर्ग तथा कमजोर व्यक्तियों को हाथ से एवं बड़ी उम्र के व्यक्तियों को पैरों से उपचार देते हैं।

दूसरे विधाओं में दवाइयाँ देते हैं जो शरीर के अंदर के केमिकल के आधार पर बनायी जाती हैं। पर वह शरीर के बाहर की चीज़ है, तो शरीर उसे जितना चाहिये उतना आत्मसात नहीं कर पाता। कभी-कभी तो बीमारी एक तरफ रह जाती है और उन दवाइयों के गलत परिणाम से अन्य भयानक बीमारियाँ जन्म लेती हैं। जैसे मधुमेह (diabetes) का रोगी जब बरसों तक दवाइयाँ खाता रहता है तब आगे जाकर उन दवाइयों के बुरे असर "साइड इफेक्ट" की वजह से उन मरीजों के कानों पर एवं आँखों पर बुरा असर होता है, एवं ह्रदय रोग या किडनी फेल्यूर जैसी बीमारियाँ आ जाती हैं। न्यूरोथेरेपी इन सब "साइड इफेक्ट्स" से बचाती है क्योंकि इसमें किसी भी प्रकार की औषधि का सेवन ही नहीं होता।

यदि शरीर की रोग-प्रतिकार शक्ति किसी कारण कम हो और उस समय अगर कोई वायरस या बैक्टीरिया शरीर पर हमला करता है तो शरीर उसका मुकाबला नहीं कर पाता और बीमारी के वश हो जाता है। ऐलोपैथी में उसे खत्म करने के लिये जो दवाई दी जाती है, वह बैक्टीरिया को तो शायद खत्म कर लेती है, पर वाइरस पर दवाई असर करने तक वाइरस अपना रूप बदल लेता है जिससे वह दवा असर नहीं कर पाता। लेकिन उन दवाइयों से पेट खराब होता है, लिवर और पाचन संस्थान बिगड़ जाती है, भूख मिट जाती है तथा शरीर की हितकारी बैक्टीरिया भी मर जाती हैं। इस कारण कभी-कभी वह व्यक्ति कुछ महीने बाद दुबारा रोग का शिकार बन जाता है और यह विष चक्र चलते रहता है।

पर न्यूरोथेरेपी उपचार द्वारा शरीर की रोग-प्रतिकार शक्ति को बढ़ा दिया जाता है जिससे वाइरस या बैक्टीरिया दोनों को खत्म करने की शक्ति शरीर में ही निर्माण होती है, और इस प्रकार बिना किसी दवा या साइड इफेक्ट के शरीर को स्वस्थ किया जाता है । इस तरीके से मलेरिया के बैक्टीरिया को भी खत्म किया गया है जिसके रिपोर्ट हमारे पास हैं ।

कुछ वंशानुगत बीमारियाँ होती हैं या कुछ ऐसी जेनेटिक बीमारियाँ होती हैं जिनका "मेडिकल डिक्शनरी" में कोई इलाज नहीं । पर क्योंकि ये शरीर के अंदर की ही बिगडी हुयी समस्या हैं, इसी लिये शरीर के अंगों को उद्दीप्त करने पर उन बीमारियों में भी आराम मिलता है । उदाहरण के लिये - पॉरकिंन्सन, मोटर न्यूरॉन डिसार्डर (MND), मल्टीपल स्क्लेरोसिस (MS), मस्क्यूलर डिस्ट्रोफ़ी, थॅलेस्सीमिया, गिल्लन बॉर सिन्ड्रोम (GBS), डाउन सिंड्रोम इत्यादि ।

कभी-कभी आपदाओं विपत्तियों में फँसने या एक्सीडेन्ट होने से कई प्रकार की शारीरिक कमियाँ, या उम्र भर का दर्द सहना होता है । ऐसी बीमारियों में भी न्यूरोथेरेपी लाभप्रद है ।

न्यूरोथेरेपी में नाभी को केन्द्र मानकर इलाज किया जाता है । नाभी को ठीक करने से पेट की बहुत सारी समस्यायें ठीक होती हैं । पाचन क्रिया से सम्बंधित बहुत सारी बीमारियाँ जैसे कब्ज, गैस, अम्लपित्त, पेट दर्द, भूख न लगना, अल्सर, डायरीया (diarrhea) - इन सब के लिये न्यूरोथेरेपी राम-बाण का काम करती है ।

भारतवर्ष में यह प्राचीन काल से माना जाता है कि किसी भी बीमारी की जड पेट से शुरू होती है । न्यूरोथेरेपी भी यह मानती है । यदि किसी को हायपोथायरॉइड्-इज़्म (hypothyroidism) है तो उसका कारण ज़रा समझें - थायरॉइड् ग्लैंड का बेसिक केमिकल टाइरोसिन ॲमीनो एसिड है जो कि पाचन के दौरान इन्टेस्टाइन में बनता है । यदि पाचन ठीक न हो तो वह नहीं बनेगा, तो थायरॉइड् ग्रंथीके T_3 -T_4 हौर्मोन्स भी नहीं बनेंगे और रक्त में TSH बढ़ जायेगा । थायरॉइड् काम करने के कारण जो केमिकल थायरॉइड् द्वारा बनते हैं वो नहीं बनेंगे, और शरीर में उनकी कमी आ जायेगी । सारे शरीर पर उसका असर होगा । यदि पाचन ठीक होता तो टाइरोसिन ॲमीनो एसिड ठीक से बनता, थायरॉइड् का फंक्शन ठीक रहता और हम बीमार नहीं होते ।

इसी प्रकार यदि ओस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis) यानि हड्डियों में कॅल्शियम की कमी है तो खून में भी कैल्शियम की कमी होगी । यह इस लिये हो रहा है क्योंकि कैल्शियम एबज़ार्ब (absorb) नहीं हो रहा है । उसके लिये कितनी भी कैल्शियम की गोली खायें, वो कमी पूरी नहीं होगी । यदि इन्टेस्टाइन (intestine) ठीक से काम नहीं कर रहा और पाचन ठीक से न हो तो कैल्शियम इन्टेस्टाइन में एबज़ार्ब नहीं होगा, और कैल्शियम रक्त में भी नहीं पहुँचेगा और रक्त में ही अगर कैल्शियम कम हो तो हड्डियों में कैल्शियम की कमी आयेगी ही ! न्यूरोथेरेपी इन्टेस्टाइन के फंक्शन को ठीक करती है। अंगों के सुचारु रूप से काम करने पर पाचन तंत्र ठीक हो जायेगा, जिससे कैल्शियम एबज़ार्ब होने लगेगा और इस प्रकार से ओस्टीयोपोरोसिस जैसी बीमारी भी ठीक हो सकती है ।

यदि हड्डियों में कैल्शियम ज्यादा हो जाय तो भी न्यूरोथेरेपी उसे ठीक कर सकती है। कैल्शियम ज्यादा होने पर हम पैराथायराइड ग्लैंड को उकसायेंगे जो कि कैल्शियम को हड्डियों से निकालकर ब्लड में डालेगा । साथ में हम "हेपारिन" नामक रक्त संचार बढ़ाने का " ट्रीट्मेंट " यानि उपचार देते हैं, जो रक्त संचार बढ़ाकर जो कैल्शियम रक्त में बढ़ा है उसका ठीक से विघटन होकर अनुपयोगी वस्तु की तरह शरीर से बाहर निकल जायेगा । इस प्रकार बहुत-सी ऐसी बीमारियाँ जैसे - एंकैलोज़िंग स्पोंडिलायसिस या किडनी स्टोन जैसी बीमारियों में आराम आ जाता है ।

शरीर में लिवर एवं लंग्ज में हेपारिन (heparin) नामक केमीकल बनती रहती है जो शरीर में गुठलियाँ या थक्के (clots) होने नहीं देता । अगर रक्त संचरण में गुठलियाँ (clots) का निर्माण होने लगे तो इसका मतलब है कि शरीर में हेपारिन नहीं बन रहा । तो ये गुठलियाँ ह्रदय में जाकर रोकथाम कर सकती हैं जिससे मरीज़ की मौत भी हो सकती है । या अगर यही गुठलियाँ ब्रेन में जाकर वहाँ रक्त संचार में रोकथाम करती हैं तो पैरालाइसिस (paralysis) हो जाता है ।

हम पैंक्रियास, लिवर एवं लंग्ज़ को एक्टीवेट (activate) यानि उकसाने से हेपारिन बनने लगता है जो उन गुठलियों को डिज़ाल्व (dissolve) या खत्म करती है । धीरे-धीरे मरीज़ के रक्त की सारी गुठलियाँ निकलने लगती हैं एवं जो गांठें काफ़ी समय से सूखी हुयी हैं वे भी निकल जायेंगी और पैरालाइसिस या ह्रदय रोग या ह्रदय में ब्लाकेज भी ठीक होने लगते हैं ।

अगर ब्रेन में या रक्त में कोई वायरस घुस जाने के कारण ब्रेन की फंक्शन्स बिगड़ जाय या वह व्यक्ति बीमार हो जाय तो - उसकी रोग प्रतिकारक शक्ति कम हो जाती है, और अनेक प्रकार के वायरस से हुयी छोटी छोटी बीमारियाँ भी भयानक रूप धारण कर लेती हैं । इसमें न्यूरोथेरेपी में थायमस ग्रंथी और लिम्फ ग्रंथियों को उद्दीप्त करके रोगी की रोगप्रतिकार शक्ति को बढाते हैं जिससे रोगी ठीक हो जाता है । इसी प्रकार एड्स या कैंसर जैसी भयानक रोगों में भी आराम आता है ।

वैसे तो कोलेस्ट्रॉल शरीर के लिये बहुत जरूरी है क्योंकि इसी से शरीर स्टीरॉइड (steroid) होरमोन्स बनाता है जो मनुष्य को हर प्रकार के विपद से भिड़ने या भागने में मदद करती हैं । लेकिन यदि लिवर बराबर कार्य न करता हो तो शरीर में कोलेस्ट्रॉल का संचय या जमावट होने लगता है और वह धमनियों के अंदर की दीवारों पर जमने लगती है । इससे धमनियाँ धीरे-धीरे सँकरी हो जाती हैं जिससे रक्त संचार में बाधा आती है और ह्रदय में विकार, किडनियों में विकार और नाना प्रकार के रोग जन्म लेते हैं । न्यूरोथेरेपी लिवर के फंक्शन को ठीक करके कोलेस्ट्रॉल की स्तर को शरीर में सही रखती है जिससे कई बीमारियाँ आने के आसार ही खत्म हो जाते हैं ।

स्त्रियों को माहवारी में चार दिन (72 घंटे) ही ब्लीडिंग होनी चाहिये । यही उपयुक्त है । इस बात का कुछ लडकियों को पता ही नहीं होता । स्त्रियों के माहवारी के बहुत सारे प्रोब्लेम उनके खाने-पीने, वातावरण और आदतों के कारण आते हैं - जिससे हौरमोन्स में गडबडी आ जाती है और उसके कारण माहवारी या ज्यादा आती है या कम आती है । यह नारमल नहीं है - इसमें यदि हायपोथायरॉइड् (hypothyroid) हो या रक्त में कैल्शियम या हिमोग्लोबिन (hemoglobin) कम हो, या यदि यूट्रस या ओवरी में सिस्ट (cyst) या फ़ायब्रायड (fibroid) हो तो ब्लीडिंग ज्यादा होती है - इन सभी प्रकार की गड़बड़ियों को हम न्यूरोथेरेपी द्वारा ठीक कर सकते हैं । यदि माहवारी में चार दिन से ज्यादा ब्लीडिंग हो तो विकलांग बच्चे पैदा हो सकते हैं । ऐसे बच्चों को भी न्यूरोथेरेपी उपचार द्वारा काफी लाभ प्राप्त होता है ।

माहवारी कम आने के कई कारण हैं - शरीर के अंदर के कुछ केमिकल का न बनना, या प्रोलेक्टीन लेवल बढ़ना या हौरमोन्स में गडबडी, या ओवरी में या यूट्रस में सिस्ट का होना या यूट्रस का जगह पर न होना इत्यादि । इनमें से कोई एक कारण से भी माहवारी कम हो सकती है या नहीं भी होती है । इसमें भी पाचन को ठीक करके, यूट्रस को सेट करके या सिस्ट के लिये उपचार देने से गडबड़ी के मूल कारण खत्म होते हैं और माहवारी ठीक से आने लगती है । यदि यूट्रस छोटी size का हो तो वह औरत मां नहीं बन सकती । ऐसी औरतों को जब हम जननांगों में रक्त संचार बढ़ाने का उपचार देते हैं, तो उससे यूट्रस नौरमल शकल की आ जाती है और वह औरत मां एक स्वस्थ संतान को जनम दे सकती है।

हमारा पेन्क्रियाज़ सोमेटोस्टेटीन (somatostatin) नामक हौरमोन बनाता है जो ॲब्नारमल ग्रोथ (abnormal growth) को रोकता है । तो हम न्यूरोथेरेपी द्वारा पेन्क्रियाज़ को खास समय के लिये उकसाकर फ़ायब्रायड (fibroids) या सिस्ट (cyst) को ही नहीं बल्कि ब्रेन के ट्यूमर (tumour) को भी खत्म कर पाते हैं ।

LMNT के बारे में कुछ सामान्य प्रश्न और उनके उत्तर **(FAQ's)**

☯ न्यूरोथेरेपी क्या है ?

न्यूरोथेरेपी या LMNT एक वैकल्पिक उपचार पद्धति है जो मुंबई के डॉ. लाजपतराय मेहरा जी की सृष्टि है। अपने साठ साल के अनुभव और प्रयास से उन्होंने एक औषध-रहित चिकित्सा पद्धति की खोज की है जिसमें किसी भी बीमारी में दवाई दिये बिना ही राहत पहुँचा सकते हैं। यह योग-प्राणायाम-जैसा ही एक experiential therapy यानि अनुभव से प्राप्त पद्धति है, जिसमें खास तरीकों से शरीर की विभिन्न ग्रंथियों को उकसाकर शरीर के अंदर रक्त संचार की गड़बड़ियों को ही नहीं, बल्कि होरमोन्स, एन्ज़ाइम्स और विटामिन्स इत्यादि की असंतुलन को भी सुधारते हैं।

☯ इस अद्‌भुत विज्ञान के जनक कौन हैं ? उनका जनम कब और कहां हुआ था ? इनका कर्म क्षेत्र कहां है?

इस अद्‌भुत विज्ञान के जनक हैं युग पुरुष धन्वन्त्री-स्वरूप परम पूजनीय डॉ. लाजपतराय मेहरा जी । इनका जनम अमृतसर में 23.8.1932 को हुआ था । इनका कर्म क्षेत्र मुंबई है। सन् 1996 से इन्होंने महाराष्ट्र के सूर्यमाल नामक गांव में एक आश्रम की स्थापना की है और सन् 1999 नवंबर से वहां इस थेरेपी की प्रशिक्षण दी जेती है, जिसके कारण इन्हें लोग प्यार से गुरुजी कहते हैं ।

☯ LMNT का पूरा नाम क्या है ? इस थेरेपी का जनम कहाँ और कब हुआ ?

LMNT का पूरा नाम है Dr. Lajpatrai Mehra's Neurotherapy (डॉ. लाजपतराय मेहराज़ न्यूरोथेरेपी).
गुरुजी ने अपने ग्यारहवें उम्र से इस थेरेपी को बिना नाम के शुरू किया था । सन् 1976 के बाद से मुंबई में यह थेरेपी ' न्यूरोथेरेपी ' के नाम से जाना जाता था ।
कुछ साल पहले internet से देखा गया कि अनेक लोग न्यूरोथेरेपी के नाम से अलग-अलग प्रकार की चिकित्सा कर रहे हैं । सो अपनी विशिष्टता रखने के लिये सन् 2003 के बाद से यह थेरेपी LMNT के नाम से जानी जाती है ।

☯ इस थेरेपी की खासियत क्या हैं ?

डॉ. लाजपतराय मेहराज़ न्यूरोथेरेपी की अतुलनीयता / अनुपमता निम्नलिखित है -

- यह एक दवाई रहित नैसर्गिक उपचार पद्धति है । सो इस में साइड-इफेक्ट की कोई गुंजाइश ही नहीं । दवाइयों और अस्पताल की तुलना में कम खर्च में राहत मिलती है।
- यह आंतरिक अंगों को ठीक करके बीमारी के मूल कारण को ही समाप्त करती है ।
- यह सिस्टम को ठीक करती है, सिर्फ सिम्प्टम (symptom) यानि लक्षणों को ही नहीं ।
- पेट और पाचन संस्थान को ठीक करना ही उपचार की पहली कड़ी है ।
- नाभी ही शरीर का केंद्र बिंदु है । नाभी का खिसकना ही बीमारियों का मूल कारण है । मूल कारण को ठीक कर दें तो बीमारी के सभी लक्षण अपने आप ठीक होंगे ।
- नाभी के सभी ओर की दर्दों को निकाल दें तो बीमारी ठीक होती जायेगी ।
- LMNT के रोग-निदान एवं डाइग्नोसिस के अपने निजी तरीके तो हैं ही, साथ में आधुनिक जांच पड़ताल से प्राप्त ज्ञान - जैसे रक्त की जांच या X-ray से खींची गई तस्वीर - इत्यादि के साथ भी समन्वय रखते हैं ।
- चिकित्सा पद्धति (medical science) से प्राप्त विज्ञान का उपयोग एकदम विभिन्न और अतुलनीय तरीके से करती है - जिसमें दवाइयों के उपयोग को नकारा जाता है ।
- यह पद्धति सीखने के लिये सरल है और सभी आसानी से इसका अभ्यास कर सकते हैं ।
- इसे हम वैज्ञानिक पद्धति इसलिये कहते हैं - क्योंकि इसके उपचारों को ठीक रूप से समझकर चाहे कोई भी कितने ही बार एक ही व्यक्ति पर या अलग-अलग व्यक्तियों पर प्रयोग करे फिर भी एक-जैसे निष्कर्ष या परिणाम निकलते हैं ।
- किसी भी उम्र के व्यक्तियों को तथा कितने भी बड़े समूह को सिखाया जा सकता है ।

- पैरों से हाथों से मरीज के शरीर पर दबाव डालना इस थेरेपी का मुख्य अंश है । फिर भी थेरेपिस्ट यानि चिकित्सक की आयु या वजन का चिकित्सा के परिणाम के साथ कोई संबंध नहीं है । थेरेपिस्ट चाहे आठ साल का बच्चा हो या साठ साल के बुजुर्ग हो, चाहे महिला हो या पुरुष - अगर सही जगह और क्रम से प्रेशर देते हैं, तो परिणाम भी एक-जैसे ही आते हैं ।
- खास कर मंद बुद्धि, ADHD, dyslexia, autism जैसे जन्म-जात बीमारियों से ग्रस्त बच्चों की जिंदगी में यह थेरेपी काफी सुधार लाने में सक्षम हैं।

☯ ॲक्यूप्रेशर में भी जगह-जगह पर दबाव दिया जाता है । तो क्या LMNT ॲक्यूप्रेशर पर आधारित है ?

नहीं । यह एक लाजवाब थेरेपी है जिसका किसी भी अन्य थेरेपी से कोई सम्बन्ध नहीं है। न्यूरोथेरेपी में हम फिजियोलोजी के तत्वों के आधार पर शरीर के रक्त और लिम्फ के संचार को सुधार कर विभिन्न ग्रंथियों की कार्यों को सुधारते हैं जब कि ॲक्यूप्रेशर में वे त्वचा के नीचे की सूक्ष्म एनर्जी मेरीडियन्स (energy meridians) को उकसाते या सुधारते हैं।

न्यूरोथेरेपी की डाइग्नोसिस प्वाइंट, 6 second के लिये प्रेशर देना, एवं किस क्रम से उक्साना - ये सभी गुरुजी Dr. Lajpatrai Mehra जी की साठ वर्षों की तपस्या की निजी खोज हैं।

☯ भोजन लेने और उपचार में कितना अंतर चाहिये ?
LMNT उपचार से पहले पेट जितना खाली रहे उतना अच्छा है । नाशता के एक घंटे बाद तथा दुपहर के भारी भोजन के दो-ढ़ाई घंटे बाद उपचार ले सकते हैं ।

☯ LMNT उपचार के दौरान किन-किन चीज़ों से परहेज करनी चाहिये ?
- नौन-वेज यानि माँसाहारी खाना - जैसे मटन, चिकन, मछली इत्यादि
- धूम्र-पान या मद्य-पान का सेवन न करना
- इमली, निंबू, टमाटर, दही, लस्सी जैसी खट्टी चीजें न खाना - यह परहेज खास कर उन्हीं के लिये है जिनको शरीर के एक या अनेक जोड़ों में दर्द है ।

☯ क्या सभी रोगियों को खट्टी चीजों से परहेज करना जरूरी है ? या किस किस्म के रोगियों खट्टी चीजों से परहेज करना जरूरी है ?
सभी रोगियों को खट्टी चीजों से परहेज करने की आवश्यकता नहीं है । जिन्हें जोड़ों में दर्द हो, (जैसे कि घुटने, पीठ या कमर में दर्द), उन्हें खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिये । क्योंकि उससे दर्द बढ़ते हैं । जिन्हें ऐसिड़ोसिस की बीमारियाँ हों, उन्हें भी तब तक नहीं खानी जब तक स्वास्थ्य पूर्ण रूप से नहीं सुधरती । बाद में जरूरत हो तो खा सकते हैं । अगर दर्दें वापस आती हैं तो कुछ महीनों तक बिल्कुल बंद करना चाहिये, जब तक कि शरीर पूर्ण रूप से सुधर न जाये ।

☯ क्या सभी रोगियों को नौन वेज यानि माँसाहारी भोजन से परहेज करना जरूरी है ?

जी हाँ, रोगियों को ही नहीं, सभी लोगों को माँसाहारी भोजन से परहेज करना बेहतर है ।

☯ सभी रोगियों को नौन-वेज यानि माँसाहारी भोजन से परहेज करना क्यों जरूरी है ?
हमारा दावा है कि शरीर में बीमारी आने का मूल कारण है पाचन संस्था का ठीक रूप से काम न करना । माँसाहारी भोजन भारी प्रोटीन और वसा का बना है जो आसानी से पचता नहीं है । आजकल शहर में रहने वाले कोई खास शारीरिक परिश्रम नहीं करते जिससे कि ऐसे भारी प्रोटीन खाने की जरूरत पड़े । जब कोई व्यक्ति हमारे पास उपचार के लिये आता है, उसका मतलब है कि उसकी पचन संस्था तो बिगड़ी हुयी है । नहीं तो वह बीमार पड़ता नहीं था ! ऐसी अवस्था में उसका शरीर माँसाहारी भोजन को पचाने और उससे पोषण तत्वों को अवशोषण करने में असमर्थ होगा । अगर भोजन ठीक से न पचे तो उससे शरीर में toxins यानि अनचाहे पदार्थ की जमावट होने लगती है, जिससे लिवर, त्वचा और किडनीज़ पर बोझ पड़ता है क्योंकि उन्हें ही उन toxins को बाहर निकाल फेंकने के लिये ज्यादा काम करना पड़ता है ।

एक और ध्यान देनेवाली बात भी है । जिन प्राणियों को बेचने के लिये पाला जाता है, उन्हें कई होरमोन्स की गोलियां दी जाती हैं ताकि वे जल्दी मोटे बने और पालक की ज्यादा लाभ मिले । एवं ये जानवर बीमारियों का शिकार न हों, इसलिये उनके आहार में विभिन्न ऐन्टीबायोटिक या अन्य गोलियां दी जाती हैं जो उनके शरीर में चमड़ी या मांस में ही रह जाती हैं । तो इन सब का दुष्प्रभाव उनके मांस खानेवाले के स्वास्थ्य पर पड़ेगा ही । इसलिये ही गुरुजी कहते हैं कि स्वस्थ जीवन के लिये माँसाहारी भोजन से दूर रहना ही उत्तम है ।

यह तजुर्बे की बात है कि MD, MS या MND जैसी बीमारियों में अगर रोगी ने हमारे उपचार लेकर कुछ ठीक होने के बाद एक ही बार मांसाहारी भोजन का सालन (juice) भी ले लिया तो महीनों का हमारा परिश्रम एक ही दिन में मिट्टी में मिल जाता है कि दुबारा उसे ठीक करके वापस उसी स्थिति तक लाना अत्यन्त मुश्किल हो जाता है। इसी से आप अनुमान लगा सकते हैं कि मांसाहारी भोजन कितना नुकसानदायक है।

☯ उपचार लेने के लिये कोई खास पोषाक की जरूरत है क्या ?
लिबाज ढीला हो और हमारी संस्कृति का ध्यान रखते हुये ऐसा हो कि संपूर्ण शरीर ढ़का रहे।

☯ इस प्रकार के पैरों से दबाव देने से पेशंट को थोड़ा दर्द तो महसूस होगा जरूर?
नहीं । यही तो खासियत है न्यूरोथेरेपी की ! ऐक्यूप्रेशर में दबाव एक बिंदु पर दिया जाता है, जिसमें कभी थोडा दर्द महसूस होने की संभावना है । पर न्यूरोथेरेपी में एक बडे एरिया (area) पर दबाव दिया जाता है । बिल्कुल छोटे बच्चों को एवं बुजुर्ग तथा कमजोर व्यक्तियों को हाथ से एवं बड़ी उम्र के व्यक्तियों को पैरों से उपचार देते हैं । थेरेपिस्ट को यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि कैसे तलवों के बीच वाले नरम भाग से दबाव डाला जाय ताकि छह-आठ साल के बच्चे को भी तकलीफ न पहुँचे । यह उपचार एक दिन के बच्चे से लेकर सौ साल के उमर तक हर व्यक्ति करवा सकता है।

☯ हर दिन के उपचार के लिये कितना समय लगेगा ?
वैसे तो यह व्यक्ति के शरीर की उस दिन की स्थिति पर निर्भर करता है। पर आम बीमारियों के लिये करीब तीस मिनट प्रति दिन काफी होता है। उसमें भी यह नहीं कि लगातार उपचार दिया जायेगा । फौरमुला के अनुसार बीच-बीच में कुछ मिनटों के लिये gap भी हो सकते हैं ।
जहां जरूरत हो, कुछ बीमारियों के लिये कम अंतर में छोटे-छोटे उपचार भी दिये जा सकते हैं जो कि उनके घरवालों को सिखाया जाता है ताकि राहत जल्दी मिले ।

पुरानी बीमारियों में जल्दी राहत पाने के लिये : गुरुजी की सलाह है कि रोगी पहले स्तर पर 20-25 दिन तक सूर्यमाल में स्थित हमारे आश्रम अस्पताल में भर्ती हों, जहां पूरे जांच-पड़ताल के बाद उपचार शुरू किया जाता है । पहले पाचन संस्थान को सुधारने में ही काफी दिन लग जाते हैं । उसके बाद उनकी बीमारी के लिये उचित उपचार दिया जाता है । उसके बाद उनको अपने प्रांत लौटकर अपनी नजदीकी न्यूरोथेरेपी सेन्टर से यह चिकित्सा को जारी रखना है। पहले कुछ सप्ताह तक रोज उपचार लें, फिर जैसे-जैसे शरीर सुधरता है, एक दिन छोड़कर एक दिन लें, फिर सप्ताह में दो दिन और फिर एक दिन - ऐसे उपचार कम कराते जायें ।

अगर आप ऐसी जगह से आ रहे हैं, जहां कोई न्यूरोथेरेपिस्ट उपलब्ध नहीं है, तो रोगी कोई ऐसे रिश्तेदार अपने साथ में ले आये जिन्हें यह उपचार सिखाया जा सकता है । और अपने घर में कुछ महीने ये उपचार लेने के बाद दोनों follow up के लिये आश्रम में दुबारा कुछ दिनों के लिये आ सकते हैं ताकि नये उपचार आपको सिखाया जा सके ।

☯ कितने दिनों तक उपचार लेना है ?
सभी व्यक्तियों के लिये एक-जैसा समय लागू नहीं होता । हर व्यक्ति के शरीर की रचना, कौन-सी बीमारी है, शरीर के कितने अंगों पर उसका प्रभाव हुआ है„ कितने सालों से है एवं खाने-पीने में कहां तक परहेज निभाया जाता है,- इन सभी पर निर्भर है। फिर भी यह निश्चित है कि नियमित रूप से उपचार और परहेज का पालन करने से कई बीमारियाँ दो-चार महीनों में ही ठीक हो जाती हैं। जन्मजात बीमारियों के लिये कुछ साल लग

सकते हैं। पुरानी बीमारियों के लिये अनेक महीने लगते हैं। जो बीमारी कई सालों से आयी हुयी है क्या उसे ठीक होने में कम से कम उतने महीने नहीं लगेंगे ?

☯ नतीजे की उम्मीद कितनी जल्दी कर सकते हैं ?
डॉ. लाजपतराय मेहरा न्यूरोथेरेपी सिर्फ लक्षणों को दूर नहीं करती, वह सारे शरीर के अंगों की क्रिया शीलता को ठीक करती है। देश भर में अनेक लोगों के मुँह से यह सुनने को आया है कि एकाध दिनों के अन्दर ही उनके शरीर में छोटे बडे प्रभाव दिखने लगते हैं – भूख और नींद सुधरने लगते हैं, एनर्जी बढ़ जाती है, कमजोरी कम होने लगती है, शरीर हल्का लगता है, जीने का मजा आ रहा है, इत्यादि। तो इन सब चीजों में सुधार आने से, चाहे उस बीमारी को पूर्ण रूप से ठीक होने में देरी क्यों न लगे, अन्य बीमारी आने के आसार तो टल जाते हैं ! यह एक बहुत बड़ा फायदा है इस थेरेपी का, जो शायद अन्य दवाई चिकित्सा पद्धतियों में संभव नहीं है।
वैसे तो फीवर, जुकाम, सर्दी-खांसी, बदहजमी, कब्जी, पेट दर्द जैसी छोटी-मोटी बीमारियाँ आती ही हैं हमें चेतावनी देने के लिये । इन बीमारियों को एलोपैथी द्वारा इलाज कराने से वह रोग के लक्षण को दबा देता है, जिसका नतीजा है कि बड़ी बीमारयां शरीर में पनपने लगते हैं । तो जैसे ही ऐसी लक्षण शरीर में दिखने लगते हैं तो विलंब न करते हुये तुरन्त ही उपचार किया जाय तो तीन-चार दिनों के अंदर काफी आराम मिल जायेगा – यह तजुर्बा है । लेकिन पूर्ण रूप से ठीक होने के लिये एकाध महीनों तक कम से कम सप्ताह में एक उपचार लेने से तकलीफ दुबारा नहीं आयेगी ।

☯ इस उपचार के दौरान गोलियां ले सकते हैं क्या ?
न्यूरोथेरेपी में हम कोई दवाई का प्रयोग नहीं करते । अगर आप पहले से ही कोई दवाई या गोली ले रहे हैं, उसे हम बंद करने के लिये भी नहीं कहते । अगर कोई दर्दों के लिये हमारे पास आये तो कुछ दिनों के उपचार के बाद जब उनकी दर्दें एकदम बंद हो जाते हैं तब हम उनसे कहते हैं कि अपने डॉ. से कहिये कि अब मुझे दर्दें बिल्कुल नहीं हैं, क्या मुझे अब भी गोलियां उतनी मात्रा में ही लेना है ? फिर डॉक्टर खुद ही उन्हें गोलियां बंद करने के लिये कहते हैं ।

☯ अगर उपचार से फायदा हो जाता है तो आपके उपचार के दौरान हम अपने आप ही गोली बंद करना चाहें तो कर सकते हैं क्या ?
वैसे तो डॉक्टर की राय लिये बिना दवा कम करने की सलाह हम किसी को नहीं देते हैं । पर अगर अपनी जिम्मेदारी पर पेशंट painkiller के अलावा अन्य दवाई बंद करना चाहें तो निम्न तरीका अपनायें ।

अगर आप दिन में अलग-अलग किस्म की एक-एक गोली ले रहे हैं, तो जिस गोली को बंद करना चाहते हैं, उस dose का केवल ¼ गोली तोड़ कर अलग रख लें और बाकी ¾ गोली खा लें । उस दिन अन्य किसी भी समय कोई भी गोली कम न करें । ऐसा ही तीन दिन करें और चौथा दिन अलग रखा हुआ तीन दिन का ¼ गोली को खा लें । यानि आपने चार दिनों में चार गोली की जगह पर तीन गोलियां खायी है । अगर आपको शरीर में अव भी अच्छा लग रहा है, तो पांचवें दिन से आप और ¼ गोली कम कर सकते हैं, यानि अब ¾ गोली की जगह पर ½ गोली लें । लेकिन इस बार आठ दिन तक ½ गोली लेते रहें । और यह भी तय कर लें कि इस दौरान आपने LMNT उपचार जरूर लेते रहना है ताकि कोई गड़बड़ी न हो । अगर आपको लगे कि गोली बंद करने से आप को कुछ अच्छा नहीं लग रहा है, तो और चार या आठ दिन तक ½ गोली पर रहें, जब तक आपको ठीक लगे । उसके बाद और ¼ गोली कम कर दें यानि अब ½ गोली की जगह पर ¼ गोली ही लें । यह dose चार, आठ या बारह दिन तक लें जब तक आपको अच्छा लग रहा है। उसके बाद दो सप्ताह के लिये एक दिन छोड़कर एक दिन ¼ गोली लें । फिर कुछ दिनों के लिये सप्ताह में दो दिन ¼ गोली लें । ऐसे करते हुये धीरे-धीरे आप गोली को बंद करें तो आपके शरीर में कोई तकलीफ नहीं होगी । लेकिन हमेशा याद रखें कि गोली बंद करते हुये आप LMNT उपचार को बंद न करें जब तक आप कई दिन बिना दवाई के ठीक हो जायें ।

अगर आप एक ही किस्म की गोली दिन में तीन बार (यानि सुबह, दुपहर और शाम को) ले रहे हैं तो पहले दिन सुबह की ¼ गोली बंद करें, दूसरे दिन दुपहर की ¼ गोली बंद करें और तीसरे दिन शाम की ¼ गोली बंद करें और खुद आजमा कर देख लें कि किस समय आप को गोली की ज्यादा जरूरत होती है और

अपने शरीर के अनुसार कितने दिन और किस समय गोली बंद करना ज्यादा लाभदायक है, यह खुद निर्णय कर सकते हैं ।

LMNT उपचार लेते समय इस प्रकार धीरे-धीरे आप गोली कम करते जायें तो आप को दवा बंद करने के side effect नहीं होंगे और उपचार का पूर्ण लाभ प्राप्त होगा ।

- LMNT द्वारा किन किन बीमारियों को ठीक किया जा सकता है ?

चूंकि इस चिकित्सा पद्धति में बीमारी के मुल कारण को ध्यान में रखकर उपचार किया जाता है, सो इससे प्रायः सभी बीमारियों में राहत मिलती है। पर निम्न बीमारियों या लक्षणों में अत्यन्त प्रभावशाली नतीजे प्राप्त हुये हैं -

Acidity, Allergy, Arteriosclerosis, Asthma, Bedsores, Body/joint Pains, Bronchitis, Cervical/Lumbar Spondylosis, Club foot, Cold and cough, Constipation, Coronary Heart Disease, Slipped Disc, Diabetes, Fever, Food poisoning, IBS, Gall stones, Headache, Herpes Zoster, Hole in the Heart, Infertility (बांजपन), Kidney Stones, Malaria, Menstrual Disorders, Nerve weakness, Paralysis, Pellagra, Piles, Scars, Sleep Disorders, Side-effect of medicines, Ulcers, Viral infections, etc.

निम्न बीमारियों में कहा जाता है कि इनका कोई इलाज नहीं हो सकता । सच तो यह है कि इन बीमारियों में भी LMNT उपचार द्वारा अनेक रोगियों में काफी अच्छे रिजल्ट प्राप्त हुये हैं - CP (Cerebral Palsy), Epilepsy (fits), hepatitis, thalassemias, sickle cell anemia, aplastic anemia, MD एवं DMD, MND, MS, Kidney failure, Polio एवं HIV में भी !

जैसे ऊपर लिखा गया है, गुरुजी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि मंद बुद्धि, ADHD, dyslexia, autism इत्यादि जन्म-जात बीमारियों से ग्रस्त बच्चों की जिंदगी में यह थेरेपी काफी सुधार लायी है - ऐसे उनके माता-पिता खुद कहते हैं ।

- सालाना कितने लोग इस थेरेपी से लाभान्वित होते हैं ?

पिछले पांच साल से बढ़ते बढ़ते आज की तारीख में देश भर में कम से कम 600 सेन्टर होंगे जहां LMNT पद्धति ही एक मात्र उपचार है।
एक दिन में कम से कम 20 पेशंट उपचार लेते हैं - ऐसे अनुमान लगायें
(वास्तव में कुछ सेन्टर में प्रति दिन की संख्या कम से कम इस से दुगुना होती है)
600 सेन्टर में 12,000 पेशंट प्रतिदिन ।
एवं 25 दिन प्रति महीने के हिसाब से कुल मिलाकर 3,00,000 पेशंट
यानि सालाना कम से कम 3½ करोड़ मरीज इस थेरेपी से लाभान्वित हो रहे हैं ।

- गुरुजी की दृष्टिकोण या सोच क्या है ?

जितनी जल्दी हो सके, देश भर में कम से कम 10,000 LMNT सेन्टर की स्थापना करना ।
आइये आप भी इस थेरेपी को सीखें और इस महत्वपूर्ण अभियान में भागीदार बनें ।

- ऐलोपैथी में सिरदर्द हो या कोई भी बीमारी हो तो उस बीमारी के सभी रोगियों को एक-जैसी ही गोली देते हैं एवं उसी को पाँच-सात दिन लेना पडता है। वैसे ही, अलग-अलग बीमारियों के लिये अलग-अलग गोलियां लेनी पड़ती है। क्या LMNT उपचार में अलग-अलग बीमारियों के लिये अलग-अलग फौरमुले दिये जाते हैं ?

उत्तर - नहीं ! LMNT में शरीर की उस दिन की स्थिति को ध्यान में रखते हुये उपचार किया जाता है । सो एक ही बीमारी के सभी लोगों को एक ही उपचार चलेगा ऐसा नहीं है, क्योंकि सभी की शरीर की स्थिति एक जैसा होगा ऐसा नहीं । हमारा तजुर्बा है कि कई रोगों के लिये एक ही ट्रीट्मेंट या formula देते हैं और उसी से सभी रोगी ठीक हो जाते हैं। कभी ऐसा भी होता है कि एक या अनेक व्यक्तियों को एक ही बीमारी होने पर भी अलग-अलग लोगों को एवं अलग-अलग दिन अलग-अलग ट्रीट्मेंट देने की जरूरत पड़ सकती है ।

ऐसा ही होना चाहिये। और यही LMNT यानि न्यूरोथेरेपी की सफलता का राज़ है। अब इस तथ्य को विस्तार से समझिये –

ऐलोपैथी (allopathy) में लक्षणों यानि symptoms से ही बीमारियों के नाम जुडे हुये हैं। जब कई लक्षण एक साथ आते हैं, और वही लक्षणों के झुंड जब बार-बार अन्य-अन्य लोगों में दिखते हैं, तो उसे एक बीमारी का नाम दिया जाता है। और यह नाम इसलिये है, कि जब डॉक्टर एक दूसरे से बात करें तो उस एक नाम से उस बीमारी के कई लक्षण एक साथ ध्यान में आ जायेंगे – जिससे उन्हें दवाइयाँ देने में आसानी हो। बस। ऐलोपैथी बीमारी के लक्षणों के प्रति ज्यादा ध्यान देती है और उन लक्षणों को दूर करने को ही कामयाबी समझती है, जब कि ऐसा नहीं है।

NT में हम ग्रंथियों के कार्य को सुधार कर रोग के मूल कारण को ठीक करते हैं, न कि सिर्फ उसके लक्षण को। और सच बात तो यह है कि सभी रोग – चाहे उन्हें लाखों नाम क्यों न दिये जायें – वे सभी ही *आठ-दस ग्रंथियों में से कुछ के ठीक रूप से काम न करने से ही आते हैं।* और यही मूल कारण है, जो अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग लक्षण यानि symptoms के रूप में आते हैं। एक ही व्यक्ति में भी अलग-अलग दिन अलग-अलग लक्षण दिख सकते हैं, लेकिन गौर करने पर पता चलेगा कि उनका मूल कारण तो एक ही है – यानि चन्द ग्रंथियों के ठीक से काम न करना।

एक छोटे उदाहरण से हम यह आसानी से समझ सकते हैं। पेट में अगर खाना ठीक से न पचे तो उससे रोगी को कभी सरदर्द, तो कभी गैस, कभी दस्त या उल्टियें तो कभी छाती में जलन – ऐसे कई लक्षण या symptom एक ही दिन या अलग-अलग दिन होंगे। अगर नाम के तौर पर देखा जाय तो सरदर्द को माइग्रेन (migraine), छाती में जलन को ऐसिडिटी (acidity), गैस को फ्लैटुलेन्स (flatulence), दस्त को डायरिया (diarrhea), उल्टी को वॉमिटिंग (vomiting), इत्यादि कहेंगे – और हर एक symptom के लिये अलग-अलग दवाइयाँ दी जाती हैं।

ध्यान दीजिये कि लक्षण अलग होने पर भी इन सब का मूल कारण एक ही है – यानि अपचन। सो उस अपचन को ठीक करने के लिये LMNT में हम जो भी ट्रीट्मेंट देंगे, उससे उस कारण से आये सभी लक्षण (यानि सरदर्द, गैस, दस्त, उल्टियाँ इत्यादि) दूर हो जायेंगे। यही न्यूरोथेरेपी यानि LMNT की खासियत है – कि लगता है कि ये चार अलग बीमारियाँ हैं। लेकिन हमें पता है कि इन सबका एक ही मूल कारण है। तो उस एक मूल कारण को ठीक करो तो ये चारों ही नहीं, बल्कि उससे अधिक बीमारियाँ या लक्षण भी ठीक होंगी एवं दुबारा भी नहीं होंगी। यह ध्यान देनेवाली बात है।

एक ही व्यक्ति के लिये अलग-अलग दिन अन्य-अन्य ट्रीट्मेंट देने का लौजिक (logic) भी यही है। जैसे हम ट्रीट्मेंट देने लगते हैं, वैसे वे ग्रंथियाँ सुधरने लगते हैं और उनमें परिवर्तन आ जाता है। यानि शरीर की स्थिति बदल गयी। *LMNT शरीर की स्थिति के अनुसार उपचार करती है।* यही कारण है कि अगले दिन के उपचार में हमें पिछले दिन के ट्रीट्मेंट को बदलने की ज़रूरत पड सकती है।

बीमारियों और इस चिकित्सा के प्रति विशेष जानकारी

☯ शरीर में बीमारियाँ क्यों आती हैं ?

न्यूरोथेरेपी के अनुसार बीमारियों आने के निम्न कारण हैं –

- पाचन ठीक न होने से विटामिन्स ठीक से ऐब्जोर्ब नहीं होंगे – तो उनकी कमी से
- दोनों किडनीज़ एक-जेसा काम न करने के कारण शरीर में ऐसिड-ऐल्कली का संतुलन बिगड जाने से
- जेनेटिक (यानि genes से संबन्धित) बीमारियों से या
- कोई भी ग्लैंड यानि ग्रंथी ठीक से काम न करने से यानि हायपो (hypo) होने से
- किसी भी ग्लैंड के कैमिकल्स ज्यादा होने से यानि ग्लैंड हायपर (hyper) होने से
- या वे कैमिकल्स अपने उचित स्थान पर उचित मात्रा में न पहुँचने से

कैमिकल्स अपने उचित स्थान पर ठीक से न पहुँचने के कारण निम्न प्रकार हैं –

- या तो खाना अनपचा ही रह जाता है (UDF) जिस के कारण उस ग्लैंड के raw materials ठीक से या ठीक मात्रा में नहीं बन रहे हैं,
- या उस ग्रंथी को उकसानेवाले ग्रंथियों से उसे order यानि आदेश नहीं मिल रहा (जैसे हायपोथैलमस से पोस्टीरियर पिट्यूट्री को या पिट्यूट्री ग्लैंड से थायरोइड ग्लैंड को आदेश न मिलना इत्यादि)
- या उस ग्रंथी को पर्याप्त मात्रा मे रक्त नहीं पहुँचता
- या उस ग्लैंड का स्टिमुलेशन (stimulation) ठीक रूप से नहीं हो रहा है – जैसे कि इन्फेक्शन या इन्फ्लमेशन की बीमारियों में होता है।

ऊपर लिखे गये सभी का एक मुख्य कारण है हमारे सोच-विचार, टेन्शन भरी जीवन-शैली, तथा आहार-निद्रा के सामान्य नियमों को न पालन करना । शरीर का पूर्ण इलाज तभी होगा जब मनुष्य इन सब चीजों में खास बदलाव लाये ।

☯ न्यूरोथेरेपी में बीमारियों को कैसे ठीक किया जाता है ?

अलग-अलग तरीके अपनाये जाते हैं। न्यूरोथेरेपी मूल कारण को ठीक करती है, न कि सिर्फ लक्षण को। हम बीमारी का ही इलाज नहीं करते बल्कि ग्रंथियों के कार्य को सुधारते हैं, जिससे वह बीमारी तो ठीक हो ही जाती है, साथ ही दूसरी कोई बीमारी आने के आसार या संभावना भी खत्म हो जाते हैं।

- हम शरीर पर –
- निर्धारित यानि खास जगहों पर
- निश्चित समय के लिये एवं
- निर्धारित sequence यानि क्रम में – खास किस्म का प्रेशर डालते हैं ।
  इस प्रकार से हम ग्रंथियों में रक्त का प्रवाह बढाते हैं।
- या उचित जगह पर खास तरीकों से दबाकर या घिसकर शरीर के glands को उकसाते हैं। खास कर इन्फेक्शन या इन्फ्लमेशन से आयी बीमारियों को ठीक करने के लिये यह तरीका अत्यन्त प्रभावशाली है।

ग्लैंड्स के कार्यों को सुधारने के लिये निम्न तरीका अपनाया जाता है –

- सबसे पहले UDF को ठीक करके पेट को set करते हैं।
- और उचित ट्रीट्मेंट देकर LMNT के pain points के दर्दों को निकालते हैं।
- Clots को खोलने के लिये Heparin नामक treatment देकर रक्त संचार को बढ़ाते हैं।
- माँस-पेशियों की सही कार्य करने के लिये शरीर में कैल्शियम की अवशोषण को बढ़ाते हैं

इन सब तरीकों से जो ग्लैंड्स (glands) पहले ठीक से काम नहीं कर रहे थे, वे ठीक से काम करने लगते हैं और बीमारी ठीक हो जाती है।

यहां पर एक और बात ध्यान देने वाली है। हमारे शरीर के हर कार्य के लिये हमें ऐनर्जी (energy) यानि ऊर्जा शक्ति की जरूरत है, जो हमें खाने से प्राप्त होती है। हमारे दैनिक कार्यों के लिये जो शक्ति चाहिये, अगर उससे ज्यादा शक्ति भोजन से प्राप्त हो तो हमें दिन भर उत्साह और स्फूर्ति महसूस होती है।

भोजन से ऊर्जा प्राप्त करने के लिये यह अनिवार्य है कि पाचन तथा अवशोषण ठीक से होना चाहिये

भोजन को अन्न नलिका द्वारा मुंह से मलाशय तक गुजारने में भी काफी ऊर्जा यानि शक्ति की जरूरत पड़ती है और यह मुख्यतः उस पर निर्भर करता है कि खाने में क्या-क्या चीजें शामिल हैं। आम तौर से लोगों की सोच यही है कि पका हुआ भोजन आसानी से पचेगा और कच्चा भोजन पचेगा नहीं, जब कि सच्चाई इसके ठीक विपरीत है। सलाद, अंकुरित भोजन या फल इत्यादि को पचाने में तथा उनके अवशेष को मल द्वारा निकालने के लिये शरीर को बहुत कम मेहनत करनी पड़ती है। लेकिन तली हुयी चीजें, मसालेदार खाना, पनीर, छोले या मैदा इत्यादि से बनी चीजों को पचाने में बहुत शक्ति खर्च होती है। इसलिये ही कुछ लोगों को ऐसे खाना खाने के बाद थकान-सी महसूस होती है या नींद आ जाती है।

इनमें सब से हानिकारक है डब्बा-पैक चीजें एवं नौन-वेज यानि मांसाहारी भोजन। डब्बा-पैक चीजों में कई केमीकल्स डाले जाते हैं ताकि वे लम्बे समय तक रहें और जल्दी खराब न हों। इन केमीकल्स के कारण भी दुष्परिणाम हो सकते हैं। मांसाहारी भोजन से जो ऊर्जा मिलती है, उस से कई गुना ज्यादा मेहनत उसे पचाने के लिये लगती है, खास कर तब जब मनुष्य की पाचन शक्ति कमजोर हो। इसलिये ही गुरुजी हमेशा कहते हैं कि अंडे या भारी प्रोटीन खाने से कोई लाभ नहीं है, जब हम उसे पचाने में असमर्थ हैं। और अगर पचा भी सकते हैं, फिर भी उन्हें खाने की जरूरत नहीं, जब हमें कम मेहनत में फल-सब्जियों से उससे ज्यादा ऐनर्जी मिल सकती है।

जब हम बीमार पड़ते हैं, हम चाहे लेटे ही क्यों न रहें, उस समय भी हमारे ह्रदय, श्वसन संस्थान एवं ब्रेन के कार्यों के लिये थोडी बहुत ऊर्जा की आवश्यकता रहती है। इसलिये ही बीमारी के समय बहुत ही हल्का-फुल्का खाना दिया जाता है, और वह भी भूख से कुछ कम मात्रा में ही होना चाहिये ताकि शरीर को उसे पचाने और अवशेष आगे भेजने में खास मेहनत न करनी पडे। अच्छा या उपयुक्त खाना वह है जिसे लेने के बाद तुरंत ही व्यक्ति को स्फूर्ति और शक्ति महसूस होती है। इसका सब से बढ़िया उदाहरण है नारियल पानी अथवा उस मौसम के फलों का ताजा रस या सब्जियों का सूप इत्यादि। खाने-पीने का उचित ध्यान न देना ही शरीर में बीमारियों की नींव है।

☯ क्या बीमारी ठीक होने के बाद दुबारा नहीं आयेंगी ?

न्यूरोथेरेपी मूल कारण को ठीक करती है, न कि केवल लक्षणों को । जब मूल कारण ठीक हो जाता है तब यह एक बीमारी ही नहीं पर उस मूल कारण से सम्बन्धित सारे लक्षण दूर हो जाते हैं । पर जैसे कि ऊपर लिखा गया है, बीमारी आने का एक मुख्य कारण है गलत सोच-विचार तथा आहार-निद्रा-व्यायाम के सामान्य नियमों को न पालन करना । कुछ बीमारियाँ तो टेन्शन से इतने जुड़े हैं कि जो व्यक्ति कई दिनों से बिल्कुल नौरमल है, उसे जरा-सा भी टेन्शन हो जाय कि बीमारी वापस आ जाती है । सो ऐसे व्यक्तियों को पूर्ण राहत प्राप्त करने के लिये न्यूरोथेरेपी के उपचार के अलावा जीवन शैली और सोच-विचारों की दिशा को बदलने की भी जरूरत पड़ती है। ऐसा नहीं किया गया तो यह बीमारी नहीं तो दूसरी कोई बीमारी आयेगी ।

☯ न्यूरोथेरेपी के अनुसार स्वस्थ जीवन के कुछ नियम :-

सुबह उठते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये :-

- सूर्य चढ़ने से पहले ही उठें ।
- उठते समय हरि का नाम लेकर अच्छे विचारों के साथ उठें ।
- उठते समय जल्दी से या झट से न उठें । 10-15 seconds बिस्तरे पर ही बैठ कर बाद में उठें ।
- सुबह ठंडे पानी में ही नहायें ।

खाना खाते व पानी पीते समय निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिये :-

- नहाने के कम से कम 45 मिनट बाद नाश्ता करें ।
- खूब चबाकर खायें । खाना खाते समय पानी न पियें । पर भोजन के आधे घंटे बाद पी सकते हैं । एवं एक साथ बहुत ज्यादा पानी न पीकर हर घंटे बाद एक गिलास पानी पीना ज्यादा लाभदायक है।
- नमक, शक्कर, या पापड कम मात्रा में खायें । चाय, काफ़ी एवं मैदा से बनी चीज़ों से दूर रहें ।
- आम व्यक्ति एक दिन में कम से कम दो लीटर पानी पी सकते हैं । लेकिन दूध, चाय या तरबूज के ऊपर तुरन्त पानी न पियें ।
- सीज़न (season) के ही नहीं, बल्कि जिस प्रान्त में रहते हैं वहां के अनाज, फल तथा सब्जियाँ ही खायें । इसका खास मतलब है कि जहां जो चीज नहीं उगता वहां वह चीज न खायें तो बेहतर है।
- Non-veg यानि माँसाहार भोजन एवं शराब से दूर रहें ।
- शरीर में दर्दें हो तो उन्हें खट्टी चीजें नहीं खानी चाहिये ।
- रात खाने के बाद कम से कम दो घंटे बाद ही सोयें ।
- खडे-खडे पानी न पियें । वैसे ही, जो भी खायें बैठकर ही खायें ।

रात को सोने से पहले और सुबह उठने के बाद निम्न चीजों का ध्यान रखना चाहिये :-

- रात के खाने के बाद कम से कम दो घंटे बाद ही सोना चाहिये । और रात को 10.30 से पहले सोना ही उत्तम है ।
- सोते समय करवट लेकर लेटें और करवट लेकर हाथों का सहारा लेकर ही उठें ।
- सोते समय मन और शरीर ढीला एवं रिलैक्स होकर सोना चाहिये । सिर के नीचे हाथ रखकर नहीं सोयें । सीधी टांगों से सोयें ।
- खिडकियें खोल कर सोयें एवं अंधेरे में ही सोना चाहिये ।
- अंधेरा खत्म होने से पहले यानि सूर्य चढ़ने से पहले ही उठ जायें ।
- उठते समय हरि का नाम लेकर अच्छे विचारों के साथ उठना ।
- उठते समय जल्दी से नहीं उठना चाहिये । उठने के तुरन्त बाद ठंडे पानी नहीं पीना । गुनगुना पानी पीयें या कुछ देर बाद शरीर गरम होने के बाद ठंडा पानी पी सकते हैं
- सभी मौसम में ठंडे पानी में नहाना ही उत्तम है, एवं नहाने के कम से कम 45 मिनट बाद ही जो भी खाना हो उसे ले सकते हैं ।

न्यूरोथेरेपी उपचार के दौरान ध्यान रखनेवाली आम बातें

पेशंट के लिये चेतावनी

- उपचार लेने से पहले अपनी जेब खाली कर दें और मोबाइल (mobile) फोन को switch off कर दें । हाथ में घड़ी, चाबी, चूड़ी या कड़ा इत्यादि पहन रखा हो तो उसे खोल कर अपने रिश्तेदारों को दें या अपनी ही जिम्मेदारी में उचित जगह में रखें ।
- नीचे लिखे कारणों के अलावा औरतों को मासिक धर्म के दौरान उपचार नहीं लेना है - स्राव अत्यधिक ज्यादा या बहुत ही कम (scanty) हो या मैन्सस में दर्द या क्लौट हो ।
- चिकित्सा के दौरान ही नहीं, पर हमेशा ही करवट से लेटें और करवट लेकर ही उठें ताकि पेट और पीठ की माँस-पेशियों पर जोर नहीं पड़े ।
- जहां तक हो सके, LMNT उपचार से पहले पेट जितना खाली रहे उतना अच्छा है । नाशता के कम से कम एक घंटे बाद तथा दुपहर के भोजन के दो-ढ़ाई घंटे बाद उपचार ले सकते हैं । अगर भारी भोजन किया हो तो ज्यादा गॅप (gap) के बाद लेना बेहतर है ।

  कारण **:** हमारे उपचार के दौरान पेशंट को बारी-बारी से सीधा लेटना, करवट में सोना, उल्टा लेटना इत्यादि करना पड़ता है । अगर पेट में भारीपन रहे, ऐसे बार-बार स्थिति बदलने में परेशानी होगी।
- जहां हो सके, उपचार लेने से पहले पेशाब कर के ब्लैडर (bladder) खाली कर दें तो बेहतर होगा - यह अनुभव से प्राप्त ज्ञान है।
- थेरेपिस्ट आप के जांघ के नीचे तकिया लगाते वक्त आप अपने कमर को उठाना नहीं । वैसे ही टांग के नीचे तकिया लगाते समय आप टांग को उठाना नहीं, वरना थेरेपिस्ट को चोट लग सकती है। थेरेपिस्ट को यह ट्रेनिंग दी जाती है कि वे खुद अपने आप सब कुछ कर लेंगे ।
- उपचार के दौरान किसी भी समय माथे को उठाना नहीं । सीधे लेटकर उपचार लेते समय, अगर जरूरत न हो तो सिर के नीचे तकिया न लें । पर करवट में लेटते समय की उपचारों के लिये तकिया जरूर लें । उपचार के दौरान थेरेपिस्ट से या अन्य किसी से बात न करें । शांत चित्त से रिलॅक्स रहकर लम्बी सांस लेते हुये नाभी के आसपास की संवेदनायें पर ध्यान देते रहें ।
- कभी-कभी पेशंट कहते हैं कि थेरेपिस्ट कम वजन दे रहे हैं । इस थेरेपी में हम रक्त नलिकाओं को दबाते हैं ताकि रक्त का बहाव उन ग्रंथियों की तरफ हो जहां पहले नहीं पहुँच रहा था । इसमें वजन का कोई काम नहीं । अगर थेरेपिस्ट कम वजन का हो या कम प्रेशर डाले पर जगह सही है तब भी उपचार उतना ही प्रभावशाली होगा ।
- साधारणतः हमारे प्रेशर से आपको दर्द महसूस नहीं होना चाहिये । अगर दर्द हो रहा हो तो थेरेपिस्ट से जरूर कह दें तो वे पैर रखने का angle या तरीका बदल लेंगे । इस से चिकित्सा का प्रभाव कम नहीं होगा । पर दर्द होने के बावजूद आपने नहीं कहा तो उपचार के बाद भी दर्द रहेगा या कमजोरी महसूस हो सकती है, सो इस बात का ध्यान रखे ।
- अगर थेरेपिस्ट से कुछ अन्य बात कहना या पूछना हो तो उपचार के बीच में जो गॅप का समय है उस समय कह सकते हैं । वरना उपचार के दौरान एवं बीच के उस समय में नाक से साधारण लंबी सांस लें और नाक द्वारा ही सांस छोड़ते रहें । इससे हर सैल्ल में ऑक्सीजन एवं कारबन डाय ऑक्साइड का आदान प्रदान ठीक प्रकार से होता रहेगा और शरीर के कार्य अच्छी तरह से होंगे । आप जितना रिलॅक्स रहें, उतना ज्यादा इस चिकित्सा का लाभ आप को मिलेगा ।
- उपचार के बाद अपनी सारी चीजों को वापस समेट कर सुरक्षित रख लें ।

डा० लाजपतराय मेहरा के न्यूरोथेरेपी (LMNT) के थेरेपिस्ट एवं अन्य इच्छुक व्यक्तियों के लिये कुछ सामान्य नियम / चेतावनी

लिबाज

उपचार देते समय आपका ऐसा लिबाज हो जिसमें पूर्ण शरीर ठीक से ढ़का हो । कपड़े न टाईट (tight) हों, न बहुत ढीले - क्योंकि इन दोनों से उपचार के दौरान थेरेपिस्ट को ही ज्यादा परेशानी होगी ।

सबसे बढ़िया है - पायजामा-कुर्ता ; सलवार-कमीज; फुल पैंट के साथ फुल शर्ट या बंद गले का T shirt इत्यादि । औरतों को जीन्स पैंट, स्लीवलेस (sleeve-less) कमीज, या साड़ी, या पुरुषों को धोती या हॉफ पैंट (Half pant) पहनकर यह ट्रीट्मेंट देना हमारी संस्कृति के अनुसार उतना उचित नहीं समझा जाता है।

पेशंट से वर्ताव

- पेशंट या उनके रिश्तेदारों से बात करते समय हमेशा मुस्कुराते हुये मधुर, मीठी आवाज में बात करें । हर पेशंट अपना रिश्तेदार है - इस भाव से उनसे बात करना चाहिये ।
- पेशंट की सेवा के लिये तत्पर रहना हमारा कर्तव्य ही नहीं, हमारे हित में है । पेशंट की बीमारी का गलत लाभ न उठायें । उपचार देते समय पूर्ण लगन के साथ दें । हमेशा यह ख्याल मन में रहे कि वे पहले से ही दुखी हैं और उन्हें हमारे व्यवहार से और दुख न पहुँचे । उनका आशीर्वाद ही हमारी असली ' फीस ' है, जिसका मोल नहीं हो सकता ।
- इस थेरेपी में भरोसा और श्रद्धा मुख्य भूमिका निभाते हैं । गुरुजी हमेशा कहते हैं कि पेशंट भगवान का ही रूप है और अगर आप का चश्मा सही है तो थेरेपिस्ट चाहे औरत हो या मर्द, वे किसी भी पेशंट को उपचार दे सकते हैं । हमारी भारतीय संस्कृति इतनी महान है कि पेशंट हर चिकित्सक को श्रद्धा की नजर से ही देखते हैं, चाहे वह औरत हो या मर्द । देश भर में 600 से भी ज्यादा सेन्टर हैं, जिनमें से बहुत कम सेन्टर हैं जहां औरतें थेरेपिस्ट बनी हैं । अन्य जगहों पर मर्द थेरेपिस्ट ही होते हैं और उनसे औरतें भी उपचार लेकर संतुष्ट हैं जो इस बात का गवाह है।

  फिर भी औपचारिकता के लिये मर्द थेरेपिस्टों के लिये एक चेतावनी - जहां तक हो सके, लडकियों, औरतों या छोटे बच्चों को उपचार देते समय, उनकी मम्मी, पति या अन्य किसी रिश्तेदार को साथ रहने के लिये कहें । इससे चिकित्सा देने-लेने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी ।

उपचार शुरू करने से पहले की सावधानियां

- अगर आपकी जेब में मोबाइल (mobile) है, तो उसे निकालकर कुछ दूरी पर silent mode में रख दें । जब तक एक पेशंट का उपचार पूरा खत्म नहीं होता तब तक मोबाइल को हाथ तक न लगायें क्योंकि उसकी तरंगों का आप पर एवं पेशंट पर दुष्प्रभाव पडेगा । वैसे ही, पेशंट को भी जेब खाली कर सब चीजें निकालकर अपनी जिम्मेदारी में सुरक्षित रखने के लिये कहें ।
- पहले पेशंट का नाम एवं पता पूछना और कार्ड के ऊपर लिखे नाम और पता के साथ मिला लेना ताकि अनजाने में कोई गलती न हो । जहां हो सके, उपचार लेने से पहले उन्हें पेशाब कर के आने के लिये कह दें ताकि ब्लैडर (bladder) खाली हो तो नतीजे और अच्छे होंगे ।
- यहां आने से पहले उन्होंने क्या खाया है और कितने बजे खाया है - ये दोनों बातें पूछ लें और फिर निर्णय लें कि कितने बजे उपचार शुरू करना है । यह भी पूछ लें कि उनको शुगर या बी पी तो नहीं है ? कुछ पेशंट इन बीमारियों के लिये गोली लेते हों तो कार्ड बनाते समय उसके बारे में याद नहीं रहती । बाद में आपके पूछने के बाद ही याद आती है। अगर इन में से कोई है तो कार्ड में उचित जगह पर चिन्ह लगा दें और मुख्य चिकित्सक को इस बात की खबर दें ।

☯ साधारणतः औरतों के मैन्सस यानि मासिक धर्म के दौरान उपचार नहीं दिये जाते । उपचार से पहले यह बात उनको बता दें । इसके बाद अगर वे कहें कि बहुत ही ज्यादा ब्लीडिंग हो रही है या बहुत ही कम स्राव आ रहा हो तो उसे ठीक करने के लिये उचित उपचार देना ही पेशंट के हित में है । सो उन दिनों वह दे सकते हैं । पर जब तक जरूरत न हो तो कोई अन्य उपचार न दें ।

☯ पेशंट को लिटाने से पहले यह ध्यान रहे कि गलीचा एवं चादर फ्लॅट (flat) हो एवं उसके नीचे कोई छोटी-मोटी चीज न रहे । अगर चादर के बीच में कोई तह रहे तो वह उपचार के दौरान पेशंट की पीठ को चुभ सकता है । Bone यानि हड्डी अगर flat surface यानि समतल सतह पर रहे तो वह सौ किलो वजन भी सह सकता है । लेकिन अगर bone के नीचे एक pen या pencil कुछ भी हो तो हाथ पर एक छोटा-सा powder का डब्बा गिरने से भी bone टूट सकता है । चादर या गलीचा ज्यादा नरम या ज्यादा कड़क न हो - इसका भी ध्यान रहे ।

☯ हर पेशंट को हर दिन करवट से लेटने-उठने के लिये कहना । अगर उनको पता नहीं है, तो कैसे करवट से लेटना है, यह खुद करके दिखाना है । पहले टांग टेढ़े कर के लेटना । लेटने के बाद टांग सीधा करना । कहना कि उठते समय धडाम से उठना नहीं, वरना कानों के अन्दर बैलेंस बनाने के लिये जो तरल फ्लूइड रहता है, उस में उथल-पुथल होने के कारण चक्कर आ सकते हैं।

☯ कभी-कभी पुराने पेशंट भी कुछ दिन के gap के बाद आने से करवट से लेटना है यह भूल जाते हैं । तब पूछना नहीं कि आपको क्यों याद नहीं है । शांति से समझाना कि उन्हें कैसे लेटना है । जो बात हमारे लिये आम है, वह उनके लिये नयी है, सो भूल जाना स्वाभाविक है।

☯ छोटे बच्चे, बहुत कमजोर व्यक्ति या अगर पेशंट को ऑस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis) हो, तो उन्हें केवल हाथ से उपचार देना है।

☯ सब से पहले नाभी के आस-पास हमारे LMNT के सभी pain points में दर्द या कड़कपन कितना है यह चैक करें । दर्द कितना है, उसका एक अंदाज लगाकर दर्द के अनुसार कार्ड पर प्लस (+) या माइनस (-) साथ के साथ लिख दें ।
अब एक प्रश्न मन में आ सकता है कि *कैसे पता चलेगा कि कितना + या -- लिखना है ?* प्लस (+) का मतलब दर्द है । और माइनस (-) का मतलब दर्द नहीं है । दर्द कितना है यह सूचित करने के लिये गुरुजी ने एक आसान तरीका निकाला है -

- पहले नरम उँगलियों से LMNT के दर्द के किसी भी प्वाइंट पर दबाना है।
- अगर हल्के से छूने पर ही पेशंट चिल्ला उठते हैं तो वह चार नंबर का दर्द है । सो चार प्लस (++++) लिखना है
- उँगली जरा सा अंदर जाने के बाद कडकपन या दर्द महसूस हो तो उसे तीन प्लस (+++) कहेंगे ।
- ऊपर त्वचा नरम है, पर कुछ और अंदर जाने पर कडकपन लगे तो उसे दो प्लस (++) लिखें ।
- अगर काफी अंदर तक त्वचा या मस्सल नरम लगे, फिर हल्का कडकपन महसूस हो तो + लिखें
- अगर त्वचा या चर्बी मक्खन-जैसा नरम लगे और पेशंट दबाने पर कोई reaction नहीं करते तो उस भाग के नीचे रक्त संचार एकदम सही है, तो (–) लिखें ।

☯ साधारणतः प्रेशर देने की अवधि 6 सेकंड की होती है । जब तक आप पूर्ण रूप से काबिल न हों, हर दिन अपने किसी मित्र के साथ यह चैक करायें कि आप ठीक 6 सेकंड के बाद ही अपनी स्थिति बदलते हैं या कुछ आगे पीछे तो नहीं हो रहा है ? कुछ प्वाइंट को अलग-अलग गिनती से देने से विभिन्न केमीकल बनते हैं, सो कितनी बार किसी प्वाइंट पर प्रेशर देना है - इसमें भी कोई गलती न हो - यह ध्यान रहे ।

उपचार के दौरान की चेतावनियां

- अगर पेशंट चेहरे को सिकोड़ लें या आपसे कहें कि उनको दर्द हो रहा है तो उनसे बहस किये बगैर पैर की angle बदल लें या वजन कम कर लें । दर्द उन्हें ही पता होगा, आपको नहीं। इसलिये नहीं कहना कि मैंने कई पेशंट देखे हैं, किसी ने तो ऐसा नहीं कहा इत्यादि । कभी-कभी इसी दर्द के डर से पेशंट उस थेरेपिस्ट से उपचार लेना नहीं चाहते या अपनी थेरेपी के प्रति इतने negative हो जाते हैं कि सैन्टर आना ही बंद कर सकते हैं - इस तरह के बहस से आपको और थेरेपी को नुकसान होगा ।
- यह एक विशिष्ट उपचार पद्धति जिसकी इज्जत आपने ही रखनी है। याद रहे कि आप के मन में कितनी श्रद्धा है उसी से पेशंट के मन में भी इस थेरेपी के प्रति श्रद्धा आयेगी । आपकी तरंगें एवं सकरात्मक सोच चिकित्सा की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं ।
- जहां संभव हो, आँखें बंद करके उपचार दें ताकि आपके अच्छी भावनाओं के साथ ऐल्फा वेव्ज़ (alpha waves) का प्रभाव भी पेशंट को जल्दी ठीक होने में मदद करेगा । मन में यह विचार लायें कि इस उपचार से पेशंट धीरे-धीरे ठीक होते जायेंगे, क्योंकि गुरुजी की कृपा से इस थेरेपी द्वारा मुझे यह क्षमता प्राप्त हुयी है। अगर आप उपचार के दौरान या गॅप में कुछ ऐसी हरकत करेंगे जिससे थेरेपी की गरिमा कम हो तो उससे आपको और थेरेपी दोनों को नुकसान होगा । सो ट्रीट्मेंट देते हुये एवं बीच के गॅप (gap) में पेशंट से या अन्य किसी से कुछ भी अनावश्यक बातें न करें ।

तकिया रखने के नियम

- जिस भाग पर प्रेशर देना है, उस स्थल के नीचे जरूरत के अनुसार तकिये रख दें । चाहे पेशंट कहे कि उन्हें जल्दी है, फिर भी तकिये ठीक से लगाये बिना उपचार न दें ।
- जांघ के नीचे तकिया रखने से पहले पेशंट से कहें कि वे पैर अपने आप न उठायें । तकिया रखने का ढंग - उनके दोनों घुटनों के नीचे अपना एक हाथ रखकर उन्हें थोडा ऊपर उठाना, फिर दूसरे हाथ से तकिये को घुटनों के नीचे ऐसे सरका देना कि किनारा कूल्हों के पास हो ।
- Pan, Gal-Spl, इत्यादि देते समय दोनों जांघों के नीचे एक तकिया जरूर दें । पर तकिया पेशंट के कमर के नीचे न आये, वरना उपचार के दौरान या उसके बाद उन्हें कमर दर्द हो सकता है । एवं पेशंट से कहें कि जरूरत न हो तो सिर के नीचे तकिया न लें ताकि स्पाइन सीधा रहे ।
- Liv^0 या Mu^0 के उपचार में दो तकिये चाहिये । एक जांध के नीचे; दूसरा कंधे के नीचे ऐसे रखें कि कंधा का ज्वाइंट अच्छी तरह से उस पर टिका रहे । तकिये को पीठ के नीचे ज्यादा अंदर भी न ढकेलें - केवल इतना कि तकिया का किनारा छाती के साइड के साथ चिपके रहे ।
- वैसे तो WD के लिये तकिये की जरूरत नहीं । पर अगर किसी की मस्सल्स बहुत कमजोर हैं, तो तकिया कहीं नरम, कहीं कड़क, ऐसा न हो । सबसे बढ़िया है एक चादर को तह करके रखना ।
- जिनको सरवाइकल स्पौन्डीलोसिस हो तो 'Pan' उपचार लेते समय चक्कर आ सकते हैं । तो उन्हें सिर के नीचे एक पतला तकिया दे सकते हैं ।
- करवट में लिटाकर देने वाले सभी उपचारों में सिर के नीचे भी एक तकिया दें ताकि गर्दन उस पर आराम से टिका रहे । खास कर जिन्हें गर्दन दर्द या सरवाइकल स्पौन्डीलोसिस हो उनके लिये यह चेतावनी अनिवार्य है।
- Acid या Fluid प्वाइंट देते समय मुड़े हुये घुटने के नीचे एक या दो तकिया रख दें जिस से कि उनका ऊपर का घुटना कमर के लेवल (level) से नीचे न हो । इसके अलावा उनका कंधा बाहर की ओर रहे । अगर कंधा अंदर की ओर झुका रहे तो जांघ का पीछे भाग उठ जायेगा जिससे उपचार देते समय उनको दर्द ज्यादा महसूस हो सकता है।
- Parkhoo प्वाइंट देते समय पर सिर के नीचे तकिया जरूर दें जिससे गर्दन सीधी रहे । दोनों घुटनों के बीच में एक या दो तकिये रख दें ताकि उनका ऊपर का घुटना कमर के लेवल (level) से नीचे न हो । यह खास कर उनके लिये अनिवार्य है जिनकी जांघें बहुत पतले हैं । पर उपचार के दौरान उनका कंधा अच्छी तरह छाती

की ओर झुका रहे, और दोनों घुटने छाती के काफी नजदीक हो, ताकि फीमर हड्डी के किनारे पर ट्रीट्मेंट देने में आसानी हो ।

- BOF (Bottom of feet) के लिये 1½ तकिये पैरों के नीचे जरूर देना है । और अगर हो सके 1½ तकिये छाती के नीचे भी दें ताकि छाती या पसलीयों पर प्रेशर न आये ।
- छाती पर उपचार करते समय पीठ के नीचे तकिया न रहे इसका ध्यान रहे ।
- 'कटका' या 'मोटर न्यूरौन प्वाइंट (motor neuron point)' जैसे स्पेशल उपचारों के लिये चार तकियों की जरूरत होगी ।

अन्य चेतावनियां

- कुर्सी को पेशंट के शरीर से ज्यादा दूर नहीं रखना चाहिये । Liv, Mu इत्यादि प्वाइंट देते समय कुर्सी के पैर का कोना पेशंट के हाथ के किसी भी भाग को छूना नहीं चाहिये । ट्रीट्मेंट देते समय उनके हाथ को बाहर की तरफ धक्का लगेगा । अगर कुर्सी के पैर पर उनके हाथ का प्रेशर लगे तो उन्हें बहुत दर्द होगा । वैसे ही, हाथ के नीचे, फर्श पर कुछ है या नहीं यह देखना है ।
- जब दोनों पैरों से उपचार देना है, जैसे कि PAN, WD, GAS में होता है, तब निम्न नियमों का पालन करें –
    - गुरुजी इस बात पर जोर देकर कहते हैं कि कुर्सी को पकड़कर दोनों पैरों को एक साथ पेशंट के शरीर पर रखना नहीं । पहले एक पैर बिना प्रेशर के उनके शरीर के उचित स्थान पर रख दीजिये । फिर कुर्सी पर अपना पूरा वजन दोनों हाथों पर लेते हुये दूसरे पैर को सही जगह पर बिना प्रेशर के रखना । उसके बाद जब आप पूरे बैलेंस के साथ अच्छी तरह और बिल्कुल सीधे खडे हों, तभी पेशंट पर अपना पूरा वजन डालें, अन्यथा नहीं । ऐसे कहने के दो कारण हैं – जैसे ही आपके एक पैर का स्पर्श पेशंट को मिलेगा वे सतर्क होकर हलचल किये बिना रिलॅक्स होकर लेटेंगे । दूसरी बात यह कि हर समय एक जैसा नहीं रहता । कभी किसी कारण कुर्सी पर आप का हाथ फिसल जाय या कहीं मोच आ जाय तो आप अपने बैलेंस संभाल नहीं पायेंगे तो आपको या पेशंट को कोई नुकसान न पहुँचे, इसलिये ही गुरुजी इस बात को बार-बार दोहराते हैं ।
    - ध्यान दें कि दोनों पैरों पर समान वजन रहे । वजन ठीक आप के शरीर के सेन्टर (center) में रहे । बीच-बीच में इस पैर से उस पैर पर वजन न बदलें । अगर आप को ही अपना बैलेंस सही नहीं लग रहा है, तब पेशंट को भी तकलीफ महसूस होगी । अनजाने में अगर आप पैरों की उँगलियों को कड़क कर लें या बीच-बीच में अगर आप उनको हिलाते हैं तो पेशंट की माँस-पेशियां गलत तरीके से खींची जायेंगी और उपचार के बाद उन्हें काफी देर तक दर्द रहेगा ।
    - हमेशा तलवे के बीच भाग से ही प्रेशर दें, न कि पंजे से या एढ़ी से । पंजे से प्रेशर दें तो उनके जांघ पर चुभन-सी महसूस होगी, साथ में आपकी पिंडलियों में दर्द हो सकता है । । अगर एढ़ी से प्रेशर दें तो उपचार के बाद काफी देर तक पेशंट को उस जगह पर दर्द महसूस होगा ।
- Gal & Spl देते समय पैर सीधा रहे तो better results आते हैं । अगर पेशंट अपने आप पैरों कै सीधा करेंगे तो muscles tight ही रहेंगे । तो ट्रीट्मेंट देते समय उन्हें तकलीफ होगी । इसलिये पैर side में न गिरे उसके लिये पैरों के दोनों side पर support के लिये दो तकिये रख देना ज्यादा अच्छा है ।
- 'Liv' या 'Mu' देते समय हाथ के नीचे flat तकिया होना चाहिये । अगर तकिया ऊपर-नीचे हो तो हाथ में या उँगलियों में दर्द आ जायेगा । नहीं तो telephone directory जैसे कोई मोटी किताब हो तो बेहतर है।
- ' Liv° ' या ' Mu° ' उपचार देते समय पेशंट का हाथ उतनी ही दूरी पर रहे जैसे कि Liv या Mu देते समय रखते हैं । एवं armpit के पास powder देना अच्छा है । नहीं तो पसीना पैर में लगेगा तो आपको अच्छा नहीं लगेगा । पैर ऐसा रखना है कि तलवा उसके body के ठीक parallel हो – पैर की बड़ी उँगली या एढ़ी – इन दोनों में कोई भी अंदर की तरफ मुडना नहीं चाहिये ।

- वैसे तो उपचार देते समय पेशंट से बात नहीं करनी है। लेकिन जब उपचार में अलग-अलग फारमुले दिये जाते हैं तब हर फौरमुला के बाद जो gap है, उसके दौरान पेशंट से जरूर पूछना कि उन्हें कैसे लग रहा है। अगर उनको किसी प्वाइंट या फौरमुला के बाद तकलीफ बढ़ जाती है तो तुरन्त मुख्य चिकित्सक की राय लें कि उपचार में कुछ बदलाव करना है क्या ? और इस बात को कार्ड पर अच्छी तरह से लिख दें ताकि भविष्य में दुबारा वह प्वाइंट न दिया जाय, या अगर देने की जरूरत पडे तो उचित सावधानी बरती जाय ।

- उपचार के बाद सभी pain points में दर्द या कड़कपन दुबारा चैक करें और कार्ड पर उचित जगह पर लिख दें । [उदाहरण → अगर उसे ट्रीट्मेंट से पहले 'Pan' में अतीव दर्द हो तो Pan^{++++} लिखना है । Treatment के बाद दुबारा चैक करना है । अगर दर्द पहले से थोडा बहुत कम हुआ तो जहाँ पहले चार प्लस यानि Pan^{++++} लिखा था उसी जगह के नीचे दो प्लस यानि Pan_{++} लिखना है । अगर दर्द काफी कम हुआ लेकिन थोडा-सा रह गया तो Pan_{+} लिखना है । अगर दर्द पूरा ही निकल गया तो जहाँ पहले Pan^{++++} लिखा था उसी जगह के नीचे एक ही माइनस (-) यानि Pan_{-} लिखना है ।]

- दर्द चैक करने के साथ ही साथ पेशंट को भी दिखा दें या बता दें कि किन किन जगहों का दर्द कितना कम हुआ है।
  यहाँ गुरुजी के तजुर्बे की एक अनोखी झलक हमें देखने को मिलता है । पिछले 6 दशकों में उन्होंने अपने पेशंटों को कितनी गहराई से समझा है, उसी के आधार पर उन्होंने यह तरकीब निकाली है । यह क्यों और कैसे लाभ देता है, जरा उनके ही शब्दों में सुनें -
  " इस तरह उन को दर्द कम होता हुआ दिखा या बता देने से उनको इस थेरेपी में विश्वास बहुत बढ़ जाता है । उनको लगता है कि यह जादू है ।
  इसके अलावा एक और मुख्य उपयोग है -
  कभी-कभी पेशंट दो-चार दिनों के ट्रीट्मेंट लेने के बाद कई दिन नहीं आयेंगे । जब दुबारा उन्हें तकलीफ होती है, तब आकर कहेंगे कि उन्हें ट्रीट्मेंट से लाभ नहीं हुआ, क्योंकि उनके दर्दें वैसे के वैसे वापस आ गयीं । LMNT में pain points के दर्दों को निकालना या खत्म करना ही उपचार का मुख्य पहलू है । ऐसी हालत में पिछले दिन उनके कार्ड पर ट्रीट्मेंट के पहले और ट्रीट्मेंट के बाद किस प्वाइंट में + है और किस में - है, उसे देखकर हमें पता चलेगा कि पेशंट को उस दिन के ट्रीट्मेंट से सचमुच लाभ हुआ था या नहीं । फिर हम निर्णय ले सकते हैं कि पुराने ट्रीट्मेंट को दुबारा देना है, या दूसरा ट्रीट्मेंट देना है । इसमें ध्यान देनेवाली बात यह है कि जब तक कोई ट्रीट्मेंट NT के pain points के दर्द को कम करता है, तब तक उसे बदलकर दूसरे ट्रीट्मेंट देने की जरूरत नहीं । "

- उपचार पूरा खत्म होने के बाद पेशंट को आराम से करवट लेकर उठने के लिये कहें । अगर दर्द के पेशंट हो तो थोडा चलने फिरने के लिये कहें और फिर पूछें कि उपचार से कैसे लगा । यकीनन वे कहेंगे कि उन्हें अच्छा लगा । तब विश्वास दिलायें कि आप नियमित रूप से उपचार लेते जायें और परहेज का पालन करें तो बहुत ही अच्छा लगेगा ।

- ये सब करने बाद ही आपको या उनको मोबाइल (mobile) पर किसी से बात करना हो तो कर सकते हैं, इस से पहले नहीं । अगर आप खुद नियमों का पालन करेंगे तो पेशंट भी इस नियम का पालन करेंगे जिससे आप के एवं थेरेपी के प्रति इज्जत की भावना बढ़ेगी ।

- अगर उपचार के दौरान या तुरन्त बाद पेशंट को चक्कर-सा लगे तो घबराना नहीं । इसका मतलब हमारे उपचार द्वारा पाचन संस्थान इतनी सुधर गयी कि पैंक्रियास से इन्सुलिन निकला जिसके कारण रक्त में शुगर की मात्रा कम हो गयी है । यह तातकालिक है । उन्हें कुर्सी पर बिठाना और पास खड़े होकर उनको support देना जब तक उनकी घबराहट दूर न हो । जरूरत हो तो आधे गिलास पानी मे थोड़ा गुड़ घोलकर उन्हें पिलायें और कहें कि कुछ देर तक आराम करके उसके बाद ही घर के लिये रवाना हों ।

- कुछ लोगों को उपचार के बाद माथे में रक्त का बहाव बढ़ जाने के कारण थोड़ी देर के लिये सिर भारी लग सकता है। अगर ऐसा हो तो पेशंट से कहें कि घबराना नहीं । उन्हें कुर्सी पर बिठाकर हथेली को गर्दन के पीछे cup-जैसा रखकर muscles एवं नसों को एकाध सेकंड के लिये पीछे की ओर खींचकर धीरे से छोड देने से सिर का भारीपन निकल जायेगा ।

- दूसरे पेशंट को बुलाने से पहले नीचे की दरी को साफ कर तकिये को दुबारा ठीक से बिछा दें ताकि उसमें धूल, मिट्टी या कोई अनचाहा तह नहीं रह जाय ।

- इस थेरेपी में भरोसा और श्रद्धा मुख्य भूमिका निभाते हैं । गुरुजी हमेशा कहते हैं कि पेशंट भगवान का ही रूप है और अगर आप का चश्मा सही है तो थेरेपिस्ट चाहे औरत हो या मर्द, वे किसी भी पेशंट को उपचार दे सकते हैं । हमारी भारतीय संस्कृति इतनी महान है कि पेशंट हमेशा चिकित्सक को श्रद्धा की नजर से ही देखते हैं, चाहे वह औरत हो या मर्द । देश भर के 600 से भी ऊपर सेन्टर में से बहुत कम सेन्टर हैं जहां औरत थेरेपिस्ट बनी हैं । अन्य जगहों पर मर्द थेरेपिस्ट ही होते हैं और उनसे औरतें भी उपचार लेकर संतुष्ट हैं जो इस बात का गवाह है।

  फिर भी औपचारिकता के लिये मर्द थेरेपिस्टों के लिये एक चेतावनी - जहां तक हो सके, लडकियों, औरतों या छोटे बच्चों को उपचार देते समय, उनके मम्मी, पति या अन्य किसी रिश्तेदार को साथ रहने के लिये कहें । इससे चिकित्सा देने-लेने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी ।

- वैसे तो अपने किसी भी उपचार के बाद पेशंट को अच्छा ही लगता है । फिर भी हमें पेशंट को उपचार देने में जलदबाजी नहीं दिखानी चाहिये । अगर पुराना पेशंट हो और कार्ड नहीं मिल रहा हो तो बिना दर्द के प्वाइंट चैक किये अंदाज से या अपनी याददाश्त से "कल वाला उपचार" दोहराना नहीं । क्योंकि गलत उपचार से पेशंट की तकलीफ बढ़ सकती है । इधर गुरुजी की एक चेतावनी हमेशा याद रखें कि पेशंट को हमारे उपचार से तुरन्त लाभ हो या न भी हो, पर हमारी किसी भी असावधानी के कारण उसे कोई नुकसान न पहुँचे, यह ध्यान दें ।

- उपचार के बाद पेशंट से कहना कि वे अपनी चीजें समेट लें और आधे घंटे बाद भोजन कर सकते हैं ।

मुख्य चिकित्सक के लिये उपयोगी सलाह

- सबसे पहले कार्ड पर नाम, उम्र, पूरा पता एवं अन्य सभी जानकारी ठीक से लिखवा लें । उसके बाद ही पेशंट से उनकी बीमारी के बारे में पूछें ।
- अपनी थेरेपी के बारे में पेशंट को समझा दें और कार्ड पर उचित जगह पर उनकी लिखित सहमति ले लें कि वे बिना किसी के जबरदस्ती किये, अपनी स्वेच्छा से यह थेरेपी ले रहे हैं ।
- मरीज और उनके रिश्तेदारों से हमेशा हँसमुख चेहरे के साथ पूर्ण विश्वास और सांत्वना भरे शब्दों से मृदुल आवाज में बात कीजिये । सहानुभूति आपके होंठों से नहीं, बल्कि हृदय से आनी चाहिये ।
- पेशंट अपनी कहानी सुनाते समय आप जल्दीबाजी ना दिखाइये । शांत रहकर पेशंट की हर बात को वैसे के वैसे कार्ड पर लिख लें । जब पेशंट ने सारा किस्सा बता दिया हो तो जरूरत के अनुसार उचित प्रश्न पूछें । अगर उनके पास कोई रिपोर्ट हो तो उन्हें लेकर रख लें । बड़ी बीमारी हो तो कोई जल्दीबाजी न करें । कहना कि रात को आराम से बैठ कर उन्हें study करेंगे एवं अपने seniors या गुरुजी के साथ discuss करेंगे । इससे उनके मन में आपके और थेरेपी के प्रति श्रद्धा बढ़ेगी ।
- डाइग्नोसिस करते समय सब से पहले जो जो प्वाइंट या फौरमुला इस पेशंट को नहीं देना है उसे लिख कर उनको [ब्लॉक] कर लें ।
- फिर उस दिन के pain points एवं अन्य लक्षणों के अनुसार जो उपचार देना है वह तय करके पेशंट को उपचार लेने के लिये भेज दें ।
- उसी रात को शांत चित्त से रिपोर्ट की study करें । फिर पेशंट की कही हुयी हर बात को याद करते हुये, बीमारी की सभी पहलुओं को ध्यान में रख कर जो जो फौरमुला इन्हें भविष्य में देना है - वे सभी उसी दिन लिख डालें जब आपकी याद में सब ताजी-ताजी रहे ।
- न कम बोलें, न बहुत ज्यादा । हमेशा मुस्कुराते रहें । उसका कोई खर्च नहीं लगता । पर उससे फायदा बहुत है ।
- अगर कोई उदास हो या चिन्तित हो उन्हें उससे बाहर लाने की कोशिश करें । कभी-कभी नरम हाथों से पेशंट के हाथ को सहलाना भी उदासी को तरने में चमत्कार ला देता है । टेन्शन कम करने के लिये गुरुजी हँसी-मजाक में पूछते हैं " क्या हुआ भाई ? क्या पांचसौ का नोट खो दिया ?" यह सुनते ही वह व्यक्ति मुस्कुरा देता है । आप भी हालात के अनुसार ऐसा कुछ तरकीब अपना सकते हैं ।
- अगर किसी छोटे बच्चे को चिकित्सा देना है या उसके नाभी के आसपास दर्द के प्वाइंट का पता लगाना है तो उसके साथ आये हुये पालक से कहें कि वे बच्चे के हाथ या उँगली को पकडे रहे ताकि उसे डर नहीं हो, तो बच्चा शांत रहेगा ।
- रोगी की बीमारी की जानकारी अत्यन्त गोपनीय है । उनके निकटतम रिश्तेदारों के अलावा अन्य किसी भी व्यक्ति या दूसरे रिश्तेदार पूछे तो भी बताना नहीं ।
- जहां तक हो सके पेशंट से झूठ बोलना नहीं, पर बुरी खबर हो उनके रिश्तेदारों से कहना कि वे उचित समय देखकर पेशंट से कह दें । शब्द ऐसी होनी चाहिये कि उन्हें दुःख न पहुँचे और सांत्वना मिले ।
- ट्रीट्मेंट लिखने के बाद पेशंट से जरूर कहना है कि उन्हें नॉन वेज यानि निरामिष भोजन, मैदा, ठंडे पेय एवं व्यसन की चीजों से दूर रहना ही है, अन्यथा उपचार का लाभ नहीं होगा । जिन्हें जोड़ों में दर्द, बुखार, बंद नाक इत्यादि हो उन्हें खट्टी चीजें खाना मना है ।
- पुरानी बीमारियों के रोगी कुछ ही दिनों के उपचार के बाद यह पूछ सकते हैं कि उपचार और कितना दिन लेना पडेगा - यह स्वाभाविक है । उनसे प्यार से समझाना कि जो बीमारी कई बरसों से आयी है, उसे ठीक करने के लिये कुछ महीने तो हमें दीजिये ! सभी पेशंट को एक जैसा समय नहीं लगता । उपचार की सफलता अनेक कारकों पर निर्भर है जिसमें मानसिक तनाव, रहन-सहन, खान-पान एवं सोने-उठने के तौर-तरीके महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं । आप नियमित रूप से उपचार कराते जायें तो लाभ जरूर मिलता जायेगा ।

- फौरमुला लिखने की शैली (style) बदलना नहीं, वरना थेरेपिस्ट confuse हो सकता है । लिखावट की गलती से 'Pan' की जगह पर 'Para' या 'Gal' की जगह पर 'Gas' देने से उपचार में उचित लाभ नहीं होगा । इसके विपरीत ऑटो इम्यून डिसार्डर में 'Thrd' की जगह पर 'Th' लिख दिया तो थेरेपिस्ट ने 'Thymus' दे दिया तो कुछ पेशंटों को शायद नुकसान भी हो सकता है । इसलिये ध्यान रहे कि आपकी लिखावट हमेशा साफ सुथरा और संदर अक्षर हो ताकि थेरेपिस्ट को पढ़ने में दिक्कत न हो एवं उपचार देने में कोई गलती न हो ।
- मंद बुद्धि, डाउन सिन्ड्रोम, मल्टीपल स्क्लेरोसिस, मस्कुलर डिस्ट्रोफी जैसी बीमारियों में न्यूरोथेरेपी उपचार से काफी लाभ पहुँचता है । पर कभी ऐसा भी हो सकता है कि एकाध दिनों के लिये सर्दी खाँसी, उल्टियां इत्यादि छोटी मोटी लक्षण दिखें जो खाने पीने की गड़बड़ी के कारण हो सकती हैं – तो उपचार-पद्धति में खास बदलाव नहीं लाना । सिर्फ यह याद रखें कि उस दिन कोई ऐसे प्वाइंट न दें जिससे वह लक्षण बढ़ जाये, पर उस बीमारी के लिये जो भी अन्य प्वाइंट देना है वह देते जायें ।

  उदाहरण के लिये डाउन सिन्ड्रोम (Down Syndrome) के एक बच्चे की मां ने कहा कि आज मेरे बच्चे को थोडा लूज़ मोशन यानि दस्त हो रहा है । वैसे तो ऐसे बच्चों में हायपो थाइरौइड्-इज़्म के कारण कब्जी होती है । हो सकता है कि बच्चे ने उस दिन दूध पीने के तुरन्त कुछ देर बाद पानी पिया है जिसके कारण उसे दस्त हुये हैं – गुरुजी की यह एक महत्वपूर्ण खोज है कि बच्चों में दस्त आनेका यह भी एक मुख्य कारण है।

  लेकिन आपने अगर मां के कहने के कारण उसे दस्त रोकने के लिये उपचार दिया तो दूसरे दिन ही उसकी कब्जी बहुत बढ़ जायेगी जिससे उसे तकलीफ बढ़ सकती है और ऐसा भी हो सकता है कि जो लाभ उपचार से प्राप्त होना चाहिये वह भी नहीं मिले ।

  तो ऐसी परिस्थिति में आपको सिर्फ यह करना है कि उस दिन आप ‘Spl’, 'constipation', 'Gas I' इत्यादि कोई ऐसा प्वाइंट नहीं दें जिससे मोशन बढ़ सकती है । बाकी जो भी उचित हो वह उपचार करते जायें । अगर एकाध दिन के बाद भी दस्त रहा तो Ulta Normal formula दे सकते हैं ।
- हमेशा रोगी को सकारात्मक शब्दों से उत्साह बढ़ाते जायें । गुरुजी कैसे मरीजों को टेन्शन से मुक्त करते हैं, उसका एक नमूना पेश है – "घबराना नहीं ! आप धीरे-धीरे ठीक होते जायेंगे । जब आप पूर्ण रूप से ठीक हो जायेंगे तब मुझे एक कप चाय पिला देना – मगर शक्कर कम !"
- कहने की जरूरत नहीं कि अधिक घबराया हुआ व्यक्ति भी इन शब्दों को सुनते ही मूस्कुराता हुआ कहता है कि जरूर! चाय क्या, मैं आपको खाना ही खिला दूंगा ! यहां गौर करनेवाली बात है कि उसका ध्यान अपनी बीमारी की घबराहट से हटकर सकारात्मकता में बदल गया ।
- गुरुजी का सबसे मुख्य उपदेश – नाम और यश कमाना हो तो श्रद्धा और सबुरी दोनों की जरूरत है । कीर्ति और अपयश वैसे ही फैलते हैं जैसे सुवास और दुर्गन्ध । आप के उपचार से पेशंट को लाभ पहुँचने पर उसकी खुशबू धीरे-धीरे आजू-बाजू के दस लोगों तक ही फैलेगी जैसे अगर बत्ती की खुशबू कमरे के अंदर के लोगों को ही मोहित करती है । और 6 महीने या एक साल के अंदर आप पॉपुलर हो जायेंगे, आपके पीछे भीड़ लगेगी ।
- इसके ठीक विपरीत, अगर आपकी नीयत या व्यवहार लोगों को न भाये या अपने उपचार से एक पेशंट की भी हालत खराब हो जाय तो चन्द घंटों या दिनों में वह समाचार अनेक लोगों तक पहुँच जायेगी, जैसे गटर का ढक्कन खोलने पर वास ऐसे फैलता है कि सारे मुहल्ले को तुरन्त पता चल जाता है । और नतीजा सिर्फ आप की सेन्टर के लिये ही नहीं, पर LMNT की भी बदनामी होगी, यह ध्यान रहे ।

  गुरुजी के मुँह से → **Treatment** देते समय किन चीजों पर ध्यान देना है –
  अगर आप कामयाब होना चाहते हैं तो एक अच्छे थेरेपिस्ट को *हमेशा अपने साथ रखना चाहिये* कि कभी आपसे गलती हो जाय तो वह जरूर आप को बतायेगा । इसलिये हमेशा थेरेपिस्ट को पूरा ज्ञान दे दो और ट्रीट्मेंट लिखते समय उसे साथ में जरूर रखना । इससे कोई छोटा नहीं हो जाता ! पेशंट से पूरी कहानी समझो कि उसको तकलीफ कैसे हुयी । बीमारी का कारण क्या है, वह खुद तुम्हें बतायेगा ।

चिकित्सा केन्द्र के लिये आवश्यक वस्तुयें

- एक कारपेट (carpet) या दरी
- साफ सुथरा बेड कवर या चादर
- साफ कवर सहित सामान्य साइज के तीन या चार तकिये – न बहुत नरम या बहुत कड़क और न ही अधिक मोटे या न ही बहुत पतले हों ।
- जहां हो सके ऊपर की ये सभी चीजें सूती हों तो बेहतर होगा ।
- वजनदार एवं थेरेपिस्ट की हाईट के अनुसार उचित ऊंचाई की दो कुर्सियां ।
- कमजोर पेशंटों के लिये एक बेड जो न ज्यादा नरम हो और न ही ज्यादा कड़क ।
- घर्षण से बचाने के लिये सादा टाल्कम पाउडर एक डब्बा (बिना सुगन्ध के मिले तो बेहतर)
- वैसे तो पाउडर की जगह पर तेल, पानी या आटा भी पर्याप्त है पर सेन्टर में हम इनका प्रयोग नहीं करते क्योंकि उससे कपडे खराब होंगे । यह इसलिये लिखा गया कि अगर आप किसी ऐसी जगह में हों जहां पावडर नहीं है, फिर भी हम इन चीजों से सफलता पूर्वक उपचार कर सकते हैं ।

LMNT की मुख्य मान्यतायें (Important features of LMNT)

हर एक थेरेपी की अपनी मान्यतायें होते हैं जिनके आधार पर वह कार्य करती है। उदाहरण के लिये – बीमारियाँ क्यों आती हैं – इस विषय पर विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों में क्या कहते हैं यह देखें –

- **Allopathy -** शरीर में बीमारियों आने के पाँच मुख्य कारण मानते हैं –
  - ✓ इन्फेक्शन (संक्रमण)
  - ✓ पोषण तत्व की कमी
  - ✓ डीजेनेरेशन (degeneration)
  - ✓ Wasting of tissues जन्मजात या जीन्स के गडबडी से आयी बीमारियाँ

- **Ayurveda -** शरीर में तीन दोषों में असन्तुलन के कारण ही बीमारियाँ आते हैं –
  - ✓ वात (wind or gas)
  - ✓ पित्त (bile)
  - ✓ कफ (mucus)

- **Homeopathy -** Vital force का कम होना या निम्न तीन humors में असन्तुलन से बीमारियां आती हैं –
  - ✓ सोरा (Psora)
  - ✓ सिफिलिस (Syphilis)
  - ✓ साइकोसिस (Sycosis)

- **Biochemic System -** शरीर की cells के अन्दर बारह salts होते हैं । इनमें किसी की कमी आने से बीमारियाँ आती हैं ।

- **Naturopathy** नैचुरोपॅथी - हम अगर प्रकृति के नियमों को तोडें या उनके साथ नहीं चलेंगे तो हमारे शरीर में toxins यानि अनावश्यक फालतू चीजें इकट्ठी हो जाती हैं, जिससे शरीर की vital force यानि जीवनी शक्ति को नुकसान पहुँचता है और शरीर बीमारियों का शिकार बन जाता है ।

- **Dr. Lajpatrai Mehra's Neurotherapy -** हमारे शरीर में बीमारी आने के निम्न कारण हैं –
  - ✓ या तो कुछ glands के ठीक से काम नहीं करते,
  - ✓ या वे सही मात्रा या सही समय में अपने chemicals या hormones नहीं बनाते,
  - ✓ या उनके कैमीकल्स अपने उचित स्थान में नहीं पहुँचते हैं ।
  - ✓ अगर शरीर की पाचन संस्थान, लंग्ज़ एवं kidneys ठीक से काम करे तो बीमारी आ ही नहीं सकती।

इनके अलावा न्यूरोथेरेपी की अपनी कई मान्यतायें हैं जिसके आधार पर उपचार किया जाता है । ये मान्यतायें दो प्रकार के हैं – एक जो गुरुजी को अपने अनुभवों से प्राप्त हैं, और दूसरे वे जो मेडिकल साइन्स की फिजियोलोजी (physiology) के तत्वों पर आधारित हैं, पर जिनकी व्याख्या को गुरुजी अपने अनोखे दृष्टिकोण से बदलकर एक औषध–रहित उपचार पद्धति के अंतर्गत उपयोग में लाये हैं –

वे मान्यतायें जो कि गुरुजी की अपनी ओरिजिनल सोच हैं –

- ✓ *नाभी ही शरीर का केन्द्र है।* बीमारी चाहे कोई भी हो, उसके साथ–साथ नाभी के आसपास कुछ खास जगहों पर दबाये या बिना दबाये ही दर्दें भी महसूस होंगी । उन दर्दों को ठीक कर दो तो बीमारी अपने आप ठीक होती जायेगी ।
- ✓ शरीर पर खास जगहों पर निश्चित समय के लिये, निर्धारित sequence में प्रेशर डालकर हम नाभी के इन दर्दों को निकाल सकते हैं । इस प्रकार से या अन्य खास तरीकों से दबाने या घिसने से, हम शरीर के ग्लैंड को खास क्रम से उकसाकर विभिन्न केमीकल बना सकते हैं। इन तरीकों से जो ग्लैंड पहले काम नहीं कर रहे थे, वे ठीक से काम करने लगेंगे एवं बीमारी ठीक हो जायेगी।

[चेतावनी **:** जिस point पर हम pressure दे रहे हैं, वह बिल्कुल accurate 6 seconds time का ही देना चाहिये, 6 seconds से ऊपर नहीं जाना।[1]]

- ✓ *फेफड़े (lungs), किडनीज़ (kidneys), एवं abdomen यानि पाचन संस्थान ठीक रहे तो कोई बीमारी आ ही नहीं सकती।*
- ✓ गुरुजी की सर्व श्रेष्ठ खोज है कि बडी-बडी बीमारियों आने का मुख्य कारण है - भोजन का ठीक से न पचना या उसका ठीक से अवशोषण न होना। खाना ठीक से न पचने से खाये हुये चीज़ हमें stools में अनपचा ही दिखाई देंगे। कैल्शियम एवं अन्य मिनरल्स तथा विटामिन्स ऐब्ज़ोर्ब (absorb) नहीं होंगे। कैल्शियम की कमी से माँस-पेशियों तथा ग्लैंड्स ठीक से काम नहीं करेंगी।
- ✓ जैसे ऊपर लिखा है, शरीर में बीमारी आने के तीन मुख्य कारण हैं - glands का ठीक प्रकार से काम न करना, या उन glands की कैमिकल्स का कम-ज्यादा होना, या कैमिकल उचित जगह पर या उचित मात्रा में न पहुँचना। मूल कारण को ठीक करने से बीमारी अपने आप ठीक होगी।
- ✓ कई बीमारियों में गुरुजी ने 'Pan' के प्वाइंट में दर्द पाया है। सो गुरुजी कहते हैं कि हम 'Pan' के प्वाइंट को विभिन्न तरीकों से उकसाकर कई बीमारियों को ठीक कर सकते हैं।
- ✓ तजुर्बे से यह पता है कि बायीं कमर के पीचे Mu^0 प्वाइंट में दर्द का होना रक्त में पानी की कमी यानि एसिड बढ़ने की लक्षणों से जुड़ा है। जब कि दायीं कमर के पीचे Liv^0 प्वाइंट में दर्द का होना रक्त में पानी ज्यादा यानि ऐल्कली बढ़ने बढ़ने की लक्षणों से जुड़ा है।
- ✓ ऐसिड - ऐल्कली का बैलेंस बिगडने से तरह-तरह के रोग आते हैं। ऐसिड बढने से शरीर के बायीं side में दर्दें हो सकती हैं। ऐल्कली बढने से muscles कडक हो जायेंगी तथा भयंकर बीमारियाँ आती हैं।

वे मान्यतायें जो फिजियोलोजी **(physiology)** के तथ्यों पर आधारित हैं -

- ✓ Body में कई मुख्य कैमिकल दो या दो से अधिक जगहों (अंगों) में बनते हैं। एक जगह के बिगड जाने से वह कैमीकल नहीं बनेगा। तब हम दूसरे जगह को न्यूरोथेरेपी द्वारा उकसाते हैं, जिससे वह कैमिकल निकलती है और बीमारी ठीक होती है।
- ✓ कई endocrine disorders को हम पिट्यूट्री को उकसाकर को ठीक कर सकते हैं, क्योंकि पिट्यूट्री ग्लैंड का प्रभाव कई endocrine glands पर है।
- ✓ सभी हौरमोन्स के raw materials तीन ही तत्वों से बने हैं - cholesterol, tyrosine amino acid एवं proteins. इन तीन चीज़ों को ठीक से बनने एवं ऐब्ज़ोर्ब (absorb) होने के लिये पाचन संस्थान यानि digestive system का ठीक होना जरूरी है, जिसे हम न्यूरोथेरेपी द्वारा ठीक करते हैं।
- ✓ ब्रेन के मुख्य कैमिकल्स में से किसी एक की भी कमी आने से सेन्ट्रल नरवस सिस्टेम बिगड जाता है। तब हम न्यूरोथेरेपी द्वारा intestines का enteric nervous system को उकसाकर ब्रेन की उस बीमारी को ठीक करते हैं। उदाहरण - पॉरकिन्सन, मोटर न्यूरौन डिज़ार्डर इत्यादि।
- ✓ Vitamin K & folic acid को छोडकर अन्य vitamins शरीर में नहीं बनते। उन्हें खाना से ही प्राप्त करना है।[2] कुछ खास विटामिन की कमी के साथ पीठ के पीछे भाग में कुछ दर्दें भी जुड़ी हुयी हैं। जैसे ही हम न्यूरोथेरेपी उपचार द्वारा पाचन संस्थान को ठीक करते हैं, एवं उन दर्द के प्वाइंट से दर्द निकालने लगते हैं, vitamins की कमी से आयी लक्षण कम होने लगते हैं। इस प्रकार हम विटामिन की कमी की बीमारियों को बिना दवा के ठीक करते हैं।
- ✓ जब Thymus gland की cells अपने शरीर की cells को ही मारने लगते हैं तो उसे Auto immunity कहते हैं। इससे आई बीमारियों को auto immune disorder कहते हैं। ऐसी बीमारियों में मरीज़ो को steroids की दवाइयाँ दी जाती हैं जिनके दुष्परिणाम यानि side-effects होते हैं। न्यूरोथेरेपी का control adrenal gland पर है जो कि thymus को दबाता है। तो न्यूरोथेरेपी में ऐसी बीमारियों को ठीक करने

---

[1] उदा - कैन्सर के पेशंट को (2) Pan - 6 second के लिये ही देना है, तो सोमैटोस्टैटिन बनेगा जो cancer को खत्म करता है। लेकिन अगर हम 6 second से ज्यादा timing दे दें जैसे अगर 12 second हो जाय तो (2) Pan के बदले (4) Pan हो जायेगा जिससे Glucagon बनेगा जो कि cancer cells को energy यानि शक्ति देगा

[2] इसके लिये भी पाचन संस्थान का ठीक होना जरूरी है।

के लिये हम adrenal cortex को उकसाकर शरीर में ही steroids बनाते हैं जिसके side-effects नहीं होते।

- ✓ योग से हमें पता है कि दायीं और बायीं नाक से श्वास लेने में फर्क है, वैसे ही LMNT की अनुपम खोज है कि दोनों ओवरीज़, दोनों किडनीज़, एवं adrenal gland के दोनों मेडूला (यानि अंदरी भाग) – ये अलग–अलग काम करते हैं। इसके कुछ उदाहरण हैं –
  - Left kidney 80% acid फ़िल्टर करती है
  - Right kidney 80% alkali फ़िल्टर करती है
  - Left ovary 80% estrogen बनाती है
  - Right ovary 80% progesterone बनाती है
  - Adrenal Medulla Left 80% epinephrine बनाती है
  - Adrenal Medulla Right 80% norepinephrine बनाती है
- ✓ गुरुजी ने यह भी खोज किया है कि बायें हाथ की अनामिका उंगली का दर्द रक्त में ऐसिड बढ़ने से सम्बन्धित है। जब कि दायें हाथ की अनामिका उंगली का दर्द ऐल्कली बढ़ने से है।
  मुँह से श्वास छोड़ते हुये 'हा ' की आवाज जैसे निकालने से बायें हाथ की अनामिका उंगली का दर्द निकलेगा। (left hand ring finger- इसे सूचित करने के लिये 4^{th} LT लिखते हैं)
- ✓ मुँह से श्वास छोड़ते समय 'हू ' की आवाज जैसे निकालने से दायें हाथ की अनामिका उंगली का दर्द निकलेगा। (right hand ring finger – इसे सूचित करने के लिये 4^{th} RT लिखते हैं)
- ✓ यहां तक कि गाल के दोनों बाजू की लार ग्रंथियाँ भी अलग–अलग स्राव निकालती होंगी। इसमें अब भी खोज जारी है।
- ✓ दाहिनी साइड से चबायेंगे ऐल्कली बढ़ेगी तो Mu^0 का दर्द निकलेगा ?
- ✓ बायीं साइड से चबायेंगे तो ऐसिड बढ़ेगी तो Liv^0 का दर्द निकलेगा ?

LMNT के विभिन्न फारमुले तथा उनके उपयोग

न्यूरोथेरेपी की सफलता इस मुख्य तथ्य पर आधारित है कि मानव शरीर का विकास नाभी को केन्द्र रखकर रचाया गया है। शरीर में अन्य अंगों के स्थान की आपसी दूरी (relative position) नाभी के सम्बन्ध में अपनी-अपनी एक निर्धारित दूरी पर होती है। हमारे पूर्वजों ने सदियों से ही इस चीज का महत्व समझा है कि इस आपसी दूरी में जरा-सा भी अदल-बदल हो तो वह शरीर के अंगों के कार्य में उथल-पुथल पैदा कर देगा। इसे विभिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से जाना जाता है - जैसे हिन्दी में नाभी का खिसकना, पंजाबी में धरन, पिछोटी, UP या MP में डूटी, बाइगोला इत्यादि। और वे यह भी जानते थे कि यह एक मुख्य कारण है जिसे अगर ठीक नहीं किया जाय तो किसी भी बीमारी का रूप धारण कर सकती है।

ऐसा क्यों होता है, इसका कारण हम आसानी से समझ सकते हैं। सुचारु रूप से कार्य करने के लिये शरीर के हर अंग को कैपीलरीज़ (capillaries) द्वारा रक्त तथा नर्व्ज़ (nerves) द्वारा संदेश - बिना किसी रुकावट के - चौबीसों घंटे मिलते रहना चाहिये। शरीर में abdomen यानि उदर के अंदर हर अंग इतनी खूबी से pack करके यानि जमा करके रखा गया है कि वहाँ कोई खाली या फालतू जगह नहीं रहती। किसी भी असाधारण हलचल से अगर अंगों के अंदरूनी अंतर में फर्क आ जाये तो किसी भी capillary नस या नर्व के झुण्ड पर दबाव आ सकता है। ये capillary या नर्व इतनी महीन होती हैं कि उस दबाव से उनके अंदर रक्त के प्रवाह में रुकावट पैदा होगी। सबसे पहले पेट खराब होगा ओर धीरे-धीरे सारा शरीर का संतुलन बिगड़ेगा ही। यही कारण है कि बुजुर्ग लोग हमेशा चेतावनी देते हैं कि छोटे बच्चों को कभी एक हाथ से नहीं उठाना - हमेशा दोनों हाथों से उठाना - नहीं तो बच्चे को लूज़ मोशन या सख्त कब्जी कुछ भी हो सकती है।

LMNT उपचार में हम शरीर के निर्धारित जगहों पर खास किस्म का प्रेशर देते हैं। और इस पद्धति से पिछले कई सालों से भारतवर्ष के कई शहरों और गाँवों में LMNT के उपचार केंद्र चल रहे हैं। इस उपचार की खासियत यही है कि सभी जगह कामयाबी है। कहीं से भी यह सुनने को नहीं आया कि हमारे उपचारों से किसी को नुकसान हुआ है।

फिर प्रश्न आयेगा कि क्या किसी भी प्वाइंट को किसी भी क्रम में उकसा सकते हैं ?

उत्तर - नहीं। हम अंगों को अपने मनमानी क्रम में नहीं उकसा सकते। उसके लिये कुछ सामान्य नियम हैं जिनका पालन करना आवश्यक है।

नाभी को ठीक करने के लिये फॉरमुला बनाते समय गुरुजी हमेशा इस चीज पर ध्यान देते हैं कि जो भी प्वाइंट एक दूसरे के विपरीत हैं (opposite pair of points) उनको एक के बाद एक उकसाया जाय। यानि नाभी के दायीं भाग के किसी प्वाइंट को उकसाने के बाद तुरन्त नाभी के बायीं भाग के प्वाइंट को उकसाना है - जैसे - 'Gal' के बाद 'Spl', 'Liv ' के बाद 'Mu' इत्यादि । वैसे ही, अगर हमने नाभी के ऊपरी भाग को उकसाया तो उसको बैलेंस करने के लिये नाभी के नीचे भाग को उकसाना है। जैसे 'Pan' के बाद 'WD' जिसका उदाहरण हमें New Genes formula में मिलता है।

जब कई प्वाइंट एक के बाद एक देना पडे तो क्रम यह है कि पहले ऐल्कली कम करने के प्वाइंट को उकसाया जाय और बाद में ऐसिड कम करने के प्वाइंट को उकसायें। अंत में acid alkali बैलेंस का भी ध्यान रखना है - जिसके लिये गुरुजी Chest Only एवं Round Arrow का उपयोग करते हैं। इन सब चीजों को ध्यान में रखकर फॉरमुला बनायें तो उसमें कामयाबी जरूर मिलेगी।

अगर peristalsis (यानि आंतडियों की सामान्य गति) के विरुद्ध उकसाना हो तो वह कुछ ही निश्चित समय के लिये कुछ खास प्रोब्लेम के लिये कर सकते हैं - जिसका उदाहरण हम - Ulta Normal, Ulta kidney clear formula या दस्त या लूज़ मोशन को ठीक करने के उपचार इत्यादि में देख सकते हैं। लेकिन इस उपचार को कुछ दिन देने के बाद में शरीर को वापस ठीक करने के लिये नौरमल फॉरमुला का उपचार देना है।

इन सब के अतिरिक्त हरि की कृपा की भी जरूरत है। अगर वह हो तो अनुभव के अनुसार कोई अन्य क्रम या अपने फॉरमुला भी बना सकते हैं। लेकिन सब में यह ध्यान देना है कि क्रम ऐसे हो कि शरीर के अंगों के कार्य शैली या peristalsis के अनुकूल ही उकसायें।

इसके कुछ उदाहरण हैं - 'Gal' के बाद 'Liv ' ; Round Normal formula, LSTF (Left side treatment formula) इत्यादि, जिनके बारे में आगे बताया गया है।

पेट और पाचन संस्थान को सुधारने के कुछ फॉरमुले

पेट का ठीक होना बहुत ज़रूरी है और उसमें पैंक्रियास, गौल ब्लैडर, और लिवर - इन सब ग्रंथियों का ठीक होना ज़रूरी है जिससे खाना पचाया जा सके ताकि वे एवं सभी अन्य ग्रंथियाँ जो जो कैमिकल बनाते हैं उन्हें ठीक प्रकार से बना सकें।

वैसे तो मामूली परेशानियों के लिये एक सहज उपाय है - Organ Clearance, जो हर किसी को लाभ देता है। इससे हम सम्बन्धित रक्त धमनियों में उस organ की तरफ रक्त का प्रवाह बढ़ा देते हैं जिससे उसके आसपास के सैल्स एवं टिशुज़ को ऑक्सीजन की मात्रा अधिक मिलती है और उनकी कार्य क्षमता बढ़ जाती है।

यह नाम इसलिये रखा गया कि यह सारे शरीर के organs यानि विभिन्न अंगों को जानेवाली रक्त धमनियों की रुकावटें दूर करता है, जिससे नाभी के आजूबाजू के अंगों का दर्द निकल जाता है। यह उपचार छोटे बच्चों तथा बुजुर्ग लोगों के लिये रोज या दिन में दो बार भी दे सकते हैं।

चूंकि दुनिया में कई तरह के लोग हैं जिनकी शारीरिक रचना अलग-अलग हैं, इसलिये कई किस्म के फौरमुले बनाये गये हैं जो पाचन संस्थान के विभिन्न अंगों को सुचारु रूप से काम करने के लिये उकसाते हैं। पेट ठीक करने का जो सबसे पहले फॉरमुला बनाया गया वह इस प्रकार है-

Normal Treatment Formula - (8) Pan (1) Gal (1) Spl (1) Liv – 3 points (1) Mu – 3 points

इस फॉरमुला को नौरमल फॉरमुला कहा जाता है क्योंकि यह पाचन संस्थान की ग्रंथियों को उकसाकर शरीर को नौरमल रखने में मदद करता है। यह सबसे आम फॉरमुला है, जो छोटी-मोटी बीमारियों के लिये हर किसी को दे सकते हैं, एवं स्वस्थ व्यक्ति को भी अपने शरीर को संतुलित रखने के लिये दे सकते हैं।

जैसे ऊपर कहा गया है, इस फॉरमुला में ग्रंथियों को एक खास क्रम से उकसाया जाता है। और फॉरमुला को इसी क्रम से देना है यह ध्यान रहे। अगर क्रम में कुछ अदल-बदल की तो उस व्यक्ति को सख्त कब्जी हो सकती है।

इसमें हर एक प्वाइंट किस मतलब से दिया गया है यह समझें -

- (8) Pan पैंक्रियास के पाचक एन्जाइम एवं ड्युओडेनम में काइम (chyme) की ऐसिड को सोडियम बाइकारबोनेट द्वारा न्यूट्रलाइस (neutralize) यानि शांत करने
- (1) Gal गौल ब्लैडर को तथा ऐसेंडिंग कोलन की ऊपरी भाग को उकसाने
- (1) Spl ट्रैन्स्वर्स कोलन (transverse colon) की बायीं भाग को तथा डिसेंडिंग कोलन (descending colon) की ऊपरी भाग को उकसाने के लिये
- (1) Liv 3 points : लिवर को तथा एसेंडिंग कोलन (ascending colon) के मध्य भाग को उकसाने के लिये
- (1) Mu 3 points : इन्टेस्टाइन के म्यूकस मैम्ब्रेन को उकसाने तथा डिसेंडिंग कोलन (descending colon) के मध्य भाग को उकसाने के लिये

Fast treatment : Fast : Gas : Gas I : Gal : Spl : Liv : Mu :

इनके बाद में बीमारी और पेशंट के दर्दों के अनुसार जरूरत हो तो Rt.Ov, Lt.Ov.अथवा 'WD' दे सकते हैं।

इस फॉरमुला में भी ऊपर के Normal formula के उन्हीं प्वाइंट को उकसाया जाता है। लेकिन फर्क यह है कि Normal फॉरमुला देते समय हम जांघ या हाथ पर तीन (या चार) जगह पर 6 सैकंड के लिये दबाव डालते हैं, जब कि Fast formula देते समय हम किसी भी प्वाइंट पर 1-2 सैकंड से ज्यादा समय नहीं रुकते। एवं दबाव देने की जगह को इतनी नजदीक रखकर बदलते हैं कि हाथ या पैर पर करीब 18 से 20 जगह पर दबाव डाला जाता है, जिससे result यानि नतीजा Normal फॉरमुला से भी अच्छा है।

ऊपर के दोनों फॉरमुला में कोई भी एक देने के बाद नीचे के Ajay Normal फॉरमुला देने से पाचन और अवशोषण शक्ति सुधर जाती है जिससे हर ग्रंथी ठीक से काम करने लगती है।

Ajay Normal Formula (mild) - (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 points (1) Gas ' I ' – 6 points

यह Normal formula का एक अन्य रूप-जैसा है। इसमें (1) Gas ' I ' – 6 points देने से जेजुनम और ईलियम को उकसाते हैं, जिससे पचे हुये चीजों का अवशोषण ठीक से हो। इस AjayNormal formula में 'Spl' को नहीं दिया गया है। सो इस फॉरमुला से ऑटो इम्यून डिसार्डर के पेशंटों को बहुत लाभ हुआ है – जैसे MD यानि मस्कुलर डिस्ट्रोफी, MND यानि मोटर न्यूरौन डिज़ॉर्डर, मायोपॅथी (myopathy) इत्यादि ।
{ 'Spl' को उकसाने से लिम्फोसाइट्स के कार्य बढ़ जायेंगे। ऑटो इम्यून डिसार्डर उसे कहते हैं जिसमें थाइमस ग्लैंड के सैल्स अपने ही शरीर के सैल्स को मारने लगे। और ऑटो इम्यून डिसार्डर में लिम्फोसाइट्स हायपर होते हैं यानि वे जरूरत से ज्यादा काम करते हैं। अतः उन्हें उकसाने से बीमारी और बढ़ जायेगी। }

इन तीनों फॉरमुला का महत्व –

Normal formula या Fast treatment से हम पाचन शक्ति को सुधारते हैं जब कि Ajay Normal formula से पचे हुये तत्वों का ऐब्जोर्पशन (absorption) यानि अवशोषण ठीक से होता है। जब इन दोनों फॉरमुला को एक के बाद एक देते हैं, तो पाचन पूर्ण रूप से ठीक होने लगता है, जिससे खाना के सभी तत्व ठीक से पचते हैं तथा उनका अवशोषण भी सही रूप से होता है। याद रहे कि सभी ग्रंथियों एवं एन्जाइम्स के बेसिक कैमिकल (basic chemicals या raw materials) यानि मूल पदार्थ भोजन के पचने और अवशोषण के बाद ही आंतडियों में बनाये जाते हैं। चाहे वह थायरौइड ग्रन्थी के T_3, T_4 हौरमोन्स का बेसिक कैमीकल टाइरोसिन आमीनो एसिड हो, या कैल्शियम के ऐब्जोर्प्शन (absorption) के लिये 1,25 DCC हो, सभी के लिये पाचन संस्थान का ठीक होना जरूरी है।

NAN / FAN फॉरमुला को उपयोग करने का तरीका

जब ऊपर के दोनों को एक साथ देना है तो उसे NAN or FAN कहा जाता है – जिसका क्रम है

I Normal formula II Ajay Normal formula इसे संक्षेप में **NAN** कहते हैं

या

I Fast treatment II Ajay Normal formula इसे संक्षेप में **FAN** कहते हैं

Fast formula के पहले अगर (10) Medulla दें और बाद में Fast treatment दें तो और अच्छा होगा। (10) Medulla - Vagus nerve यानि 10^{th} cranial nerve को उकसाती है।

(10) Medulla – डायाबीटीस तथा कैन्सर के रोगियों को नहीं देना। हृदय रोग के मरीजों को (10) Left Medulla ही देना है।

इन तीनों फौरमुले के उपयोग – पेट की सभी समस्याओं के लिये, जैसे –

- अपचन (मन्दाग्नि)
- अजीर्ण
- डकार
- भूख नहीं लगना
- गैस की तकलीफ
- पेट में अल्सर
- नाभी के ऊपरी भाग में दर्द

इसके अलावा ये निम्न बड़ी बीमारियों में भी उपयोगी हैं –

- मस्कुलर डाइस्ट्रोफी, (Muscular dystrophy)
- मोटर न्यूरौन की बीमारियाँ (Motor Neuron Disorders)
- गिल्लन बॉर सिंड्रोम (Guillain-BarréSyndrome)

एक और महत्वपूर्ण उपयोग भी है – अगर हमारे किसी उपचार से पेशंट को विपरीत असर हो जाये, तो पहले दिये गये ट्रीट्मेंट के (विपरीत) असर को नौरमल यानि सामान्य करने के लिये NAN या FAN दे सकते हैं। इसके बारे में सन् 2001 का निम्न किस्सा सुनिये –

चंडीगढ़ में LMNT कैम्प का दूसरा दिन था। बहुत प्रचार किया गया था, भीड़ भी काफी थी। दुपहर का भोजन चल रहा था। उसी समय भीड़ में से एक औरत आयी। कहने लगी कि "मेरे बच्चे स्कूल से आ जायेंगे, मैं गुरुजी से मिलने तक इन्तजार नहीं कर पा रही हूं; मुझे कल के ट्रीट्मेंट से बहुत लाभ हुआ था, सो आज भी वही दे दीजिये " भीड़ बहुत होने के कारण गुरुजी को लंच में disturb करना उचित नहीं लगा। तो बिना अन्य जांच किये उनको पहले दिन वाला उपचार दिया गया। जैसे ही उपचार खत्म हुआ वह जोर–जोर से रोने लगी और कहने लगी कि मेरे सारे शरीर में दर्दें आ गयीं जो पहले नहीं थीं ! तो हम सब हैरान हो गये।

जब गुरुजी ने सारी बातें सुनी, उन्होंने उस औरत को चैक करने के अलावा, तुरन्त कार्ड (card) मंगाया और कार्ड देखने के बाद जो आदेश दिये वे सभी थेरेपिस्टों के लिये महत्वपूर्ण है –

" पहली बात यह है कि पेशंट के कहने पर अपनी कार्य शैली बदलना नहीं। अगर उन्हें बहुत जल्दी है, तो बेशक उनको उपचार दिये बगैर दूसरे दिन आने के लिये कहें। लेकिन किसी भी हालत में आप उनके pain points जांचे बिना उपचार नहीं देना। दूसरी बात यह कि अपने ट्रीट्मेंट से किसी को अच्छा न लगे तो NAN का एक उपचार दें तो उन्हें आराम हो जायेगा "

यह कहने की जरूरत नहीं कि NAN के एक ही उपचार के बाद उस औरत की दर्दें खत्म हो गयीं और वह गुरुजी और की जयकार करती हुयी वापस घर लौटीं। बाकी Page 19 में देखें।

Ulta Normal formula

जैसे कि ऊपर कहा गया है, Normal formula में 'Gal ' के बाद 'Spl' और 'Liv' के बाद 'Mu' देते हैं जो कि नौरमल पेरिस्टैल्सिस (peristalsis) यानि आंतड़ियों के अंदर लहर–जैसी गति जो अपने आप चलती रहती है – उसे बनाये रखता है। और उससे मामूली–सी कब्जी हो तो वह भी ठीक हो जाती है। लेकिन अगर किसी पेशंट को इस क्रम को बदल कर उपचार करें तो देखा गया कि उससे आंतड़ियों की गति धीमी हो जाती है, जो कि मामूली लूज़ मोशन (loose motions) यानि दस्त को ठीक करने के काम आता है। यानि उपचार क्रम इस प्रकार होगा – (8) Pan <u>(1) Spl (1) Gal</u> <u>(1) Mu – 3 points (1) Liv – 3 points</u>

इस फॉरमुला को उन्हीं के लिये उपयोग करना है, जिनको मोशन नरम हों, और उन्हें दिन में दो–तीन बार जाना पड़े। चूंकि इसमें नौरमल क्रम को बदला गया है, तो उसे सूचित करने के लिये कुछ प्वाइंट के नीचे एक <u>line</u> यानि रेखा खींचते हैं। ताकि थेरेपिस्ट को ध्यान आये – जिससे वह आदत के अनुसार Normal क्रम न दें। दूसरी बात है कि हर दिन उस रेखा को देखने के बाद हमें ध्यान आयेगा कि हर दिन पेशंट से उसके मोशन के बारे पूछना है, और कुछ दिनों के बाद जैसे ही उसके मोशन कडक यानि केले जैसे गट्ठ हो जाते हैं, उसके बाद से इस उपचार को बदलकर कम से कम एक दिन के लिये उन्हें नौरमल फॉरमुला (Normal formula) का उपचार देना है। मोशन कड़क आने के बाद भी यही उपचार देने से उन्हें कब्जी की शिकायत हो सकती है।

उपयोग – मामूली लूज़ मोशन (loose motions) यानि दस्त, हाई बी पी इत्यादि ।

अगर त्वचा में मामूली–सी खुजली (itching) हो और उन्हें लूजं मोशन भी हो तो उसे भी Ulta Normal उपचार से ठीक कर सकते हैं।

ऐसिड़ोसिस तथा ऐल्कलोसिस **Acidosis and Alkalosis**

LMNT की विशेषता है कि शरीर के कुछ खास प्वाइंट पर दर्द की जांच कर के पेशंट का उपचार किया जाता है। हर व्यक्ति का शरीर हर दिन एक–जैसा नहीं होता। लेकिन शरीर की उस दिन की स्थिति हमें उस व्यक्ति के नाभी के आस–पास के कुछ खास pain points से पता चल जाता है। उनमें मुख्य हैं – 'Gas', 'Liv^0 ' एवं 'Mu^0' के pain points.

अनुभव के आधार पर गुरुजी ने यह खोज की है कि कई बीमारियाँ में रोगियों को Mu^0 में दर्द होता है, जब कि कुछ अन्य बीमारियों में Liv^0 में दर्द देखा गया है। लक्षणों और दर्दों पर गहन अध्ययन और विचार करने के बाद उन्होंने आम तकलीफों को दो मुख्य किस्म में बाँटा है। उनकी यह thought process या सोच अपने में एक revolutionary concept यानि क्रांतिकारी अंदाज है जिसने बीमारियों को डाइग्नोसिस करने के approach यानि पद्धति को ही अत्यन्त सहज और आसान बना दिया है –

- वे बीमारियाँ या लक्षण जो शरीर में या रक्त में पानी की कमी से आती हैं, उन्हें हम ऐसिडोसिस (acidosis) की बीमारी कहते हैं, जैसे कब्ज(constipation), low blood pressure (लो बी पी), शरीर में यूरिक ऐसिड, कारबोनिक ऐसिड या लैक्टिक ऐसिड का बढ़ जाना, पाइल्स यानि बवासीर, बन्द नाक, सूखी खाँसी इत्यादि। ऐसी बीमारियों या लक्षणों के साथ अधिकांश लोगों में Mu^0 में दर्द पाया गया है।
- वे बीमारियाँ जो रक्त में या शरीर के किसी भी भाग में पानी बढ़ जाने से आती हैं उन्हें ऐल्कलोसिस (alkalosis) की बीमारियाँ कहते हैं – जैसे, हाई बी पी (High BP), लूज़ मोशन यानि दस्त, swelling यानि शरीर में सूजन, नाक का बहना, सफेद बलगम के साथ खाँसी, इत्यादि। ऐसी बीमारियों या लक्षणों के साथ अधिकांश लोगों में Liv^0 में दर्द पाया गया है।
- इनके अलावा कई बीमारियाँ ऐसी हैं जो एक खास अंग या संस्थान की गड़बड़ी से आती हैं, जिनके लिये अलग–अलग उपचार पद्धतियां अपनायी गयी हैं।
- Acidosis के कारण कई बीमारियाँ या लक्षण दिख सकती हैं, लेकिन उन्हें ठीक करना आसान है।
- Alkalosis के कारण जो बीमारियाँ आती हैं, वे गिनती में कम हैं, लेकिन वे आसानी से ठीक नहीं होते। उन्हें ठीक करने के लिये काफी मेहनत और समय लगता है।

न्यूरोथेरेपी में पाया गया है कि 30-35 साल के उमर तक अधिकांश लोगों को Mu^0 में दर्द होता है और उनको ऐसिडोसिस की बीमारियाँ अक्सर होती हैं। उमर बढ़ने के साथ ऐल्कली की बीमारियाँ आने लगती हैं। लेकिन याद रहे कि हमेशा ऐसा ही होगा, ऐसा नहीं है। हमने पाया है कि बच्चों में फिट्स, CP जैसी बीमारियों का एक मुख्य कारण है ऐल्कली का बढ़ जाना।

ध्यान रहे –

गुरुजी की खोज है कि Mu^0 में दर्द होने का मतलब रक्त की ऐसिडिटी (acidity) बढ़ी हुयी है। रक्त की ऐसिडिटी पेट की ऐसिड से भिन्न है। पेट की ऐसिड को हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड कहते हैं। यह सिर्फ पेट में होता है, रक्त में नहीं। रक्त में कई acids घुली हुयी हैं, जो रक्त की ऐसिडिटी (acidity of blood) को बनाये रखते हैं। इनमें कुछ हैं – ऐमीनो ऐसिड्स, यूरिक ऐसिड, लैक्टिक ऐसिड, फोलिक ऐसिड, कारबोनिक ऐसिड इत्यादि।

ऐमीनो ऐसिड्स ठीक मात्रा में बनने के लिये प्रोटीन्स का पाचन ठीक से होना चाहिये – जिसके लिये पेट की ऐसिड ठीक मात्रा में बननी चाहिये। और यह तभी बनेगी जब पेट में रक्त का प्रवाह ठीक प्रकार से हो। यूरिक ऐसिड का चयापचय यानि अदल–बदल करने की मुख्य जिम्मेदारी लिवर की है। अगर लिवर ठीक से काम न करे, तब रक्त में यूरिक ऐसिड की मात्रा सामान्य से बढ़ेगी, जो गाऊट (gout यानि गठिया नामक बीमारी) या जोड़ों में दर्द होने का एक मुख्य कारण है। लैक्टीक ऐसिड एवं कारबोनिक ऐसिड तब बढ़ती हैं, जब श्वसन संस्थान ठीक प्रकार से कार्य न करे। इनके अलावा डायाबीटीस की बीमारी में कीटो ऐसिड (keto acids) नामक ऐसिड बढ़ जाती हैं, जो कि डायाबीटीस की मरीजों में ऐसिड़ोसिस होने का एक मुख्य कारण है। इन सभी acids को बैलेंस करने के लिये किडनीज़ से भी बाइकारबोनेट अयोन्स (bicarbonate ions) का ठीक समय में तथा सही मात्रा में निकलना जरूरी है।

न्यूरोथेरेपी की खोज है कि जब हम Mu^0 नामक प्वाइंट द्वारा लेफ्ट किडनी को उकसाते हैं, तब ऐसिड़ोसिस के लक्षणों में राहत मिलती है, जब कि जब हम Liv^0 द्वारा नामक प्वाइंट देते हैं, वह राइट किडनी को उकसाता है, जो ऐल्कलोसिस की बीमारियों में लाभ देता है। इसलिये ही गुरुजी का कहना है कि लेफ्ट किडनी अधिकांश ऐसिड को फिल्टर करती है, यानि रक्त की ऐसिडिटी को कम करती है एवं राइट किडनी अधिकांश ऐल्कली बढ़ने की लक्षणों को कम करती है।

जब 'Gas' के प्वाइंट में दर्द है, तब वह यह बतलाता है कि पेट में रक्त संचार कम है, जिससे हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड ठीक से नहीं बन पाने के कारण अपचन होगा। ऐसे लोगों को भूख कम ही लगती है।

कुछ लोगों को Mu^0 में दर्द होता है लेकिन 'Gas' के प्वाइंट में दर्द नहीं, जब कि कुछ लोगों में 'Gas' एवं 'Mu^0' दोनों में दर्द हो सकता है। हमें LMNT के pain points देखकर ही उपचार करना चाहिये। अगर Mu^0 में ज्यादा दर्द हो तब ही ATF का उपचार दें। इस एक ही फॉरमुला से कई सारे लक्षण एक साथ गायब हो जायेंगे। बाद में Mu^0 का दर्द निकलने के बाद अन्य उचित उपचार देने से पूर्ण राहत मिलेगी।

ऐसिड़ोसिस के मुख्य लक्षण	ऐल्कलोसिस के मुख्य लक्षण
Mu^0 एवं Acid'के प्वाइंट में दर्द बायीं अनामिका उँगली में दर्द	Liv^0, ' Gas' एवं 'Fluid' के प्वाइंट में दर्द दायीं अनामिका उँगली में दर्द
कब्जी के साथ बहुत ही कडक मोशन या टट्टी का आना, रोज पेट साफ नहीं होना	नरम या पतली टट्टी, बार-बार टट्टी का आना loose motions या UDF[3] का आना
बंद नाक	नाक से पानी बहना
सूखी खाँसी या कडक पीले बलगम के साथ खाँसी	सफेद बलगम या पतली बलगम (कफ) के साथ खाँसी
मासिक धर्म में अधिक स्राव का जाना या ब्लीडिंग 5-6 दिन या उससे अधिक होना	मासिक धर्म में बहुत कम स्राव या एकाध दिनों के लिये ही ब्लीडिंग होना
माइग्रेन सिरदर्द जो अक्सर एक या दोनों कनपट्टी के ऊपर ही होता है	माथे के ऊपरी भाग में दर्द जो पूरेमाथे में भी फैल सकता है।
मसल यानि माँस-पेशियों का नरम और लूज़ (loose) हो जाना	माँस-पेशियों का कडक और टाइट (tight) हो जाना जिसे स्पैस्टिसिटी (spasticity) कहते हैं ।
हायपो थाइरौइड्-इज़म [4] का होना	हायपर थाइरौइडिज़्म हो सकता है।

[3] **UDF** का मतलब **U**n **D**igested **F**ood in stools यानि टट्टी में अनपचा खाना का आना जैसे , टमाटर, भिंडी इत्यादि के बीज, पालक, मेथी, धनिया, करीपत्ता इत्यादि के पत्ते, या मूंगफली, चना, मटर, भुट्टा इत्यादि साबुत वैसे के वैसे आना।

[4] चूंकि ग्रंथियों के ठीक काम करने के लिये मसल का ठीक रहना जरूरी है , तो मसल लूज़ (loose) या नरम होंगे तो वे हाइपो ही रहेंगे यानि कम ही काम करेंगे।

साधारण बीमारियाँ - कब्जी, पाइल्स यानि बवासीर, मुहासे, भगन्दर, मल द्वार में फीशर, रूसी या सीकडी (खोरी निकलना) समय से पहले बालों का झडना या सफेद होना, यूट्रस या मलाशय का प्रोलैप्स [5] इत्यादि	साधारण बीमारियाँ फिट्स, एपीलेप्सी यानि मिरगी, सेरेब्रल पैल्सी cerebral palsy (CP)
स्पौन्डीलोसिस जैसे हड्डी या टिशूज़ को खा जानेवाली बीमारियाँ (degenerative diseases)	कैन्सर या ट्यूमर जैसे बढ़ने की प्रवृत्ति वाली बीमारियाँ (proliferative diseases)
ऐसी बीमारियाँ जहाँ कैल्शियम की जमावट हड्डियों में गलत जगह में हो जाता है – जैसे स्पर Spur, बाम्बू स्पाइन यानि Ankylosing spondylytis	कैल्शियम की कमी की बीमारियाँ जैसे – क्रैम्प्स Cramps, बोलेग्ज़, Bowlegs, रिकेट्स Rickets इत्यादि
लो बी पी – ब्लड वौल्यूम कम होने के कारण	हाई बी पी – ब्लड वौल्यूम बढ़ने के कारण
रुमैटिक यानि वात दर्द की बीमारियाँ (rheumatic heart disease को छोड़कर)	आरथ्राइटिस के दर्द / घुटने की आरथ्राइटिस / रुमैटिक हार्ट डिज़ीज़ Rheumatic heart disease इत्यादि
शरीर के बायीं तरफ के अंगों में दर्द – उदा बायीं आँख में बेंगापन, बायीं कंधे में जकडन (frozen left shoulder)	शरीर की दायीं तरफ के अंगों में दर्द – उदा दायीं आँख में बेंगापन, दायीं कंधे में जकडन (frozen right shoulder)
ऐसिड़ोसिस को कम करने के **LMNT** उपचार ATF (Acid trt. Formula), Left Raman treatment, Round arrow, Adr, Left Chest only, Left Vitamin formation etc. Mu^{0+++} में दर्द नहीं हो तो ATF नहीं देना	ऐल्किलोसिस को कम करने के **LMNT** उपचार UDF treatment, ALTF (Alkali trt. formula), Right Raman treatment, Right Chest only, (½) Ku – 40 secs / 60 secs /80 secs, Right Vitamin formation etc. कुछ लोगों में Th+Ch से भी ऐल्कली कम होती है

ऊपर के chart से हम आसानी से समझ सकते हैं कि कैसे ऐसिड़ोसिस या ऐल्कलोसिस को ठीक करने से हम एक ही साथ कई लक्षणों या बीमारियों को ठीक कर सकते हैं।

Acidosis तथा alkalosis – ये दोनों मूल कारण हैं जिनसे अन्य बीमारियाँ निर्माण होती हैं। सो इनको ठीक करने के लिये दो अलग उपचार बनाये गये, जिन्हें Acid treatment formula (ATF) तथा Alkali treatment formula (ALTF) कहते हैं।

[5] प्रोलैप्स का मतलब कोई भी अंग अपने निर्धारित जगह से हटकर दूसरे किसी अंग या जगह पर घुसना। मसल लूज़ रहेंगे तो कोई भी अंग अपने जगह पर से हटकर दूसरे जगह पर आयेंगे ही।

Acid treatment formula (ATF)

रक्त में ऐसिड बढ़ने को ऐसिडोसिस (acidosis) कहते हैं – जो कई विभिन्न लक्षणों और बीमारियों का मूल कारण है। यह फॉरमुला acidosis की बीमारियों को ठीक करने का मुख्य उपचार है ।

जब Mu^0 में दर्द ज्यादा है और Liv^0 में दर्द नहीं है या बहुत ही कम है, तब ही इस फॉरमुला का प्रयोग करते हैं। ऐसे लोगों में बायीं हाथ के अनामिका उँगली में दायीं हाथ से अधिक दर्द होता है। एवं उनमें अक्सर शरीर के बायीं तरफ के अंगों में दर्द होता है, न कि दाहिने तरफ की अंगों में। कुछ लोगों को 'acid' के प्वाइंट में भी दर्द होता है।

गुरुजी की साठ वर्षों की अटूट तपस्या और लाखों पेशंटों में पाये अनुभव के आधार पर कुछ अन्य लक्षण एवं उनसे संबन्धित बीमारियाँ नीचे दिये गये हैं जो सही उपचार करने में मदद कर सकते हैं।

1. ऐसिडोसिस यानि ऐसिड बढ़ने का एक मुख्य पहलू है – <u>शरीर में पानी की कमी</u>, जिसके कारण विसर्जन संस्थान से सम्बन्धित आंतडी, नाक, बाल, एवं त्वचा इत्यादि पर निम्न लक्षण दिखते हैं –

- *सख्त कब्जी और उससे संबन्धित बीमारियाँ –*
  - ✓ पाइल्स यानि बवासीर
  - ✓ मल द्वार के आसपास फिशर यानि फट जाना – इसे anal fissure कहते हैं।
  - ✓ फिस्टूला यानि भगन्दर (anal fistula)
- बन्द नाक, सूखी खाँसी, या पीला गाढ़ा बलगम के साथ खाँसी
- जलन के साथ पीले रंग का पेशाब आना
- आँखों का लाल होना एवं उसमें खारिश होना – आँसू की ग्रंथियों में सूखेपन के कारण
- चेहरे पर मुहासे या झाईं जिन्हें pimples, acne या black heads कहते हैं – उपचार अगले पृष्ठ पर देखें
- बाल का झडना, रूसी या सिकरी, कम उमर में ही बालों का सफेद होना
- त्वचा का सूख जाना, मौके या मस्से, ऐलरजी, सोरियासिस – यह एक चमडी की बीमारी है

2. निम्न बीमारियों में Mu^0 में दर्द पाया गया है -

- प्रोलैप्स आफ रेक्टम (prolapse of rectum) - रेक्टम (मलाशय) का अपने जगह से नीचे आ जाना
- प्रोलैप्स आफ यूट्रस (prolapse of uterus) – गर्भाशय का अपने जगह से नीचे आ जाना
- हरनीया (hernia) - किसी अंग का अपने निर्धारित जगह से हठकर किसी अन्य अंग या भाग के अन्दर प्रवेश करना।

ये तीनों अलग–अलग बीमारियाँ हैं। लेकिन इन तीनों में एक चीज सार्वजनिक (common) है – यानि ये सभी माँस–पेशियाँ ढीली होने के कारण होती हैं।

इनके अलावा रक्त नलिकायें सम्बन्धित दो बीमारियाँ हैं। ये भी माँस–पेशियाँ ढ़ीली होने के कारण ही आयी हैं – तथा ये माँस–पेशियां ढीली होनेका एक मुख्य कारण है acidosis.

- varicose veins वैरिकौस वेइन्स यानि नीली शिरायें
  (वैरिकौस का मतलब है – फूल जाना। नलिकाओं एवं उनकी valves की माँस–पेशियां ढीली होने के कारण उनमें खराबी आ जाती है जिससे वे आसानी से फूल जाती हैं।)
- low BP यानि बी पी का कम होना
- नलिकाओं की माँस–पेशी ढीली होने से प्रेशर यानि दबाव कम होगा, तथा पानी की कमी के कारण रक्त का वौल्यूम कम होगा, इन दोनों कारणों से बी पी कम हो जाती है।

3. जैसे ऊपर कहा गया है, जब रक्त में ऐसिड़ बढ़ जाती है, तो अनुभव से पता चला है कि muscles यानि माँस–पेशियाँ ढ़ीली पड़ जाती हैं। किसी भी ग्रंथी का स्राव ठीक से निकलने के लिये उसके आस–पास की माँस–पेशियों का ठीक से संकुचित होना आवश्यक है। अगर muscles ढीली होंगी तो ग्रंथी का संकुचन ठीक से नहीं हो पायेगा, जिससे उस का स्राव ठीक से नहीं निकलेगा यानि वह ग्रंथी हाइपो ही होगी।

हमारे शरीर की एक मुख्य ग्रंथी है – थायरौइड ग्लैंड – जो शरीर की मेटाबौलिज़्म यानि चयापचय का ध्यान रखता है। ऐसा कह सकते हैं कि यह वह मुख्य मिस्त्री है, जिसकी आज्ञा या निगरानी बिना अन्य ग्रंथियाँ या अंग ठीक से काम नहीं करेंगे। GIT की सारी फंक्शन्स (functions) थायरौइड ग्लैंड पर निर्भर हैं। जब थायरौइड ग्लैंड कम काम करेगा तो पाचन ठीक से नहीं होगा, जिसके कारण आंतड़ियों की मोटिलिटी (motility) यानि गति ठीक नहीं होगी। इसके परिणाम से बड़ी आंत में अवशेष के पदार्थ बहुत देर से पहुँचेंगे जिससे उस व्यक्ति को सख्त कब्जी होगी।

जब थायरौइड ग्लैंड कम काम करने लगता है तो T_3, T_4 हौरमोन्स सही मात्रा में नहीं निकलेंगे। इसके कारण दो मुख्य लक्षण दिख सकते हैं –
बच्चों में → बहुत ही सख्त कब्जी -- मन्द बुद्धि भी हो सकता है
औरतों में → मासिक धर्म तारीख से पहले आना या मैन्सस में अधिक स्त्राव निकलना
जब बरसों तक ऐसी हालत रहे, तब रक्त में T_3, T_4 की मात्रा नौरमल से बहुत कम हो जाती है, तब उसे हायपो थाइरौइडिज़्म (hypo-thyroidism) कहते हैं। इसका एक मुख्य सूचक है कि TSH की मात्रा भी बढ़ जाती है।

4. ऐसिड बढ़ने से हड्डी और ज्वाइंट्स में दो विरुद्ध लक्षण दिखते हैं। कुछ लोगों में ऐसी बीमारियाँ आते हैं जिनमें जोड़ या हड्डी घिस जाते हैं जिसे डीजैनरेशन (degeneration) कहते हैं। इनमें प्रमुख हैं –
rheumatism - रुमैटिज़्म या वात रोग
cervical spondylitis - सरवाइकल स्पौन्डीलाइटिस, गर्दन के मनकों में सूजन
lumbar spondylitis - लम्बार स्पौन्डीलाइटिस, पीठ में कमर के मनकों में सूजन
इसी से गुरुजी कहते हैं कि जो भी बीमारी डीजैनॅरेशन के कारण आई हो या उससे सम्बन्धित हो उसे हम ATF देकर ठीक कर सकते हैं।

5. कुछ और लोगों में हड्डियों या <u>जोडों के बीच में कैल्शियम</u> जम जाता है जैसे –
Bamboo spine (ankylosing spondylitis) – बैम्बू स्पाइन (= ऐन्काइलोज़िंग स्पौन्डीलाइटिस)
Spur - स्पर (हड्डी का बढ़ जाना)

6. Mu^0 में दर्द हो तो उसके साथ निम्न दर्द या लक्षण भी पाये जाते हैं
- बिना कारण जोडों में दर्द ।
- सिर दर्द जो अक्सर temples यानि कनपट्टी के पास होता है। इसे माइग्रेन (migraine) कहते हैं।
- पेट या ड्युओडेनम में अल्सर यानि छाले

ATF फॉरमुला के दो मुख्य रूप हैं – एक जिसमें 'Adr' दिया जाता है और दूसरा जिसमें 'Thymus Chest' दिया जाता है। लेकिन उनके अलग-अलग उपयोग हैं।

a. (8) Pan (1) Gal (3) Mu^0 (1) acid (4) Lt. Ch. Only (6) Adr
b. (8) Pan (1) Gal (3) Mu^0 (1) acid (4) Thymus+Chest

(8) Pan : पैंक्रियास के पाचक एन्ज़ाइम द्वारा ड्युओडेनम में काइम की ऐसिड को शांत करने
(1) Gal : गौल ब्लैडर का बाइल भी काइम की ऐसिड को शांत करेगा
(3) Mu^0, (1) acid : इन दोनों प्वाइंट के दर्द निकालने के लिये
(6) Adr : शरीर में इन्फ्लमेशन को खत्म करेगा चाहे वह इन्टेस्टाइन में हो या अन्य जगह में,एवं रक्त की ऐसिड को भी कम करेगा।

अधिकांश लोगों को पहले फॉरमुला – जिसमें 'Adr' है – उसी से अधिक लाभ पाया गया है। अगर डायाबीटीस का पेशंट हो तो ATF के साथ में Loveleen Sulta ulta देने से और लाभ होगा। ' Left Chest Only ' से कारबन डाई ऑक्साइड निकलेगी, और ऐसे देखा गया है कि इससे भी Mu^0 का दर्द निकलता है यानि इससे भी ऐसिड कम होगी।

लेकिन अगर किसी को Mu^0 के दर्द के साथ निम्न किसी भी लक्षण हो –

• अगर मार लगा हो	• कोई वाइरस या बैक्टीरिया से इन्फेक्शन हुआ हो
• चेहरे पर मुहासे या शरीर में फोड़े हो	• हाल ही में आये खुजली, ऐलेर्जी या त्वचा रोग हो

तो उन्हें 'Th+Ch' वाला फॉरमुला देना है। 'Thymus Chest' देने से शरीर में कहीं भी दर्दें या इन्फेक्शन से ऐलेर्जी हो तो वह कम होगी। लेकिन डायाबीटीस के रोगियों को 'Thymus' या 'Thymus Chest' नहीं देना, क्योंकि डायाबीटीस को ऑटो इम्यून डिसार्डर माना जाता है जिसमें थाइमस ग्लैंड हाइपर होता है।

लेकिन डायाबीटीस के हर रोगी को 'Thymus' से नुकसान होगा – ऐसा भी नहीं है। अगर किसी पेशंट को 'Adr' देने के बाद वे कहें कि उन्हें 'Adr' अच्छा नहीं लगा – तो समझना उन्हें 'Thymus' या 'Thymus Chest' देना चाहिये। कुछ मिसाल ऐसे भी हैं कि 'Thymus Chest' देते देते उनकी ब्लड शुगर भी कम हो गयी !

- मुहासे वाइरल इन्फेक्शन के कारण होते हैं। अतः मुहासों के उपचार में 'Adr' नहीं देना। उसमें ' Thymus + Chest' दें और उसके बाद पसीने की ग्रंथियों को उकसाने के लिये (3) Swt दें। यानि मुहासों के लिये उपचार इस प्रकार होगा –

  (8) Pan (1) Gal (3) Mu^0 (1) acid (4) Thymus+Chest (3) Swt

ऐसिड ट्रीट्मेंट फॉरमुला की एक मुख्य चेतावनी

Page 13 में चंडीगढ़ में LMNT कैम्प के दूसरे दिन के एक किस्से के बारे में लिखा गया था। शाम को उस घटने को विस्तृत रूप से जो गुरुजी ने समझाया उनके ही शब्दों में प्रस्तुत है –

" वह औरत काफी depressed थी। हमने पाया है कि डिप्रेशन का एक मुख्य कारण है रक्त में ऐसिड का बढ़ना। तो मैंने चैक करके Acid treatment देने के लिये कहा था क्योंकि उनके Mu^0 के प्वाइंट में जबरदस्त दर्द था। यही कारण है कि ट्रीट्मेंट के बाद वह इतनी खुश हुयी कि लोग कहने लगे कि चमत्कार हो गया।

कल उसकी ऐसिड बढ़ी हुयी थी, जिसे हमने अपना उपचार द्वारा निकाल दिया था। आज उन्होंने कहा कि कल वाला ट्रीट्मेंट से आराम मिला तो आपने वही ट्रीट्मेंट दे दिया। फिर उन्हें दर्दें आयी क्यों ? क्योंकि आज वही उपचार दुबारा दिया गया तो उसके शरीर में ऐसिड बहुत कम हो गयी या यूं कहें कि ऐल्कली बढ़ गयी जिसका एक मुख्य लक्षण है शरीर में दर्दों का बढ़ना ! जब मैंने चैक किया तो आज Liv^0 में दर्द पाया। वह पहले से ही उदास थी, तो उसे दर्द सहन नहीं हुआ इसलिये वह रो पड़ी। जब उसे NAN का उपचार दिलवाया उसका शरीर नौरमल हो गया तो उसे आराम मिला।

इससे यह सीख मिलती है कि Acid treatment देने से पहले Mu^0 का दर्द जरूर चैक करना है। अगर Mu^0 में दर्द नहीं है तो Acid treatment नहीं देना ! दूसरी बात यह है कि एक ही व्यक्ति को अलग-अलग दिन pain points के अनुसार अन्य उपचार की जरूरत पढ़ सकती है "

आशा है कि सभी न्यूरोथेरेपिस्ट गुरुजी के इन आदेशों का पालन करेंगे !

भारी और हल्का उपचार

गुरुजी आजकल कुछ सालों से ऊपर के हल्के उपचार ही दे रहे हैं जिससे अच्छे नतीजे पाये गये हैं। लेकिन एक दशक पहले तक वे नीचे के भारी उपचार देते थे जिससे भी लाभ होता था। जानकारी के लिये उन्हें नीचे दिया गया है।

Normal Ajay Normal formula (पुराना)

I (8) Pan (3) Gal (3) Spl (7) Liv (5) Mu

II (8) Pan (3) Gal (7) Liv (6)Gas ' I '

Acid Treatment Formula (पुराना)

a. (8) Pan (3) Gal (7) Mu^0 (3) acid (4) Ch. Only (6) Adr या

b. (8) Pan (3) Gal (7) Mu^0 (3) acid (4) Thymus+Chest

एक दिन गुरुजी के ख्याल में आया, कि जो ग्रंथी पहले से ही खराब है उसे पहले कम उकसाना चाहिये ताकि वे धीरे-धीरे काम करने लगे। कुछ दिनों के बाद जरूरत हो तो उन्हें भारी उपचार यानि ज्यादा स्टिमुलेशन (stimulation) दे सकते हैं।

हल्का उपचार तो सभी रोगियों को दे सकते हैं। लेकिन खास तौर से उनको देना है जिन्हें severe या क्रौनिक (chronic) बीमारी है – यानि उनके बहुत सारे ग्रंथियाँ या तो बिगडे हुये हैं या कम काम कर रहे हैं। जैसे कि कैन्सर (cancer), हेपाटाइटिस (hepatitis), सिरहोसिस (cirrhosis), रयूमैटोइड आरथ्राइटिस (rheumatoid arthritis) इत्यादि ।

{ इसकी idea तो गुरुजी को pulse-polio मोहिम से मिला था। पोलियो drops का dose बहुत ही mild होता है। पहले dose का असर कुछ सप्ताहों तक ही है लेकिन दूसरे dose का असर कई महीनों तक रहता है। सो एक भारी उपचार देने के बजाय 2-3 हल्का उपचार देना बेहतर है।

(8) Pan (1) Gal (2) acid (4) <u>Lt. Ch. Only trt.</u> का चमत्कार – गुरुजी की कलम से

"रोगी कोमा (coma) में था यानि बेहोश था। यह ट्रीट्मेंट दो बार देने से pH 7.32 से pH 7.4 में बदल गया। इसमें 'Gal' दिया गया, और 'Mu^0' नहीं दिया गया, क्योंकि उनकी दोनों किडनीयें खराब थीं, जिनके कारण उसका क्रेटिनाइन (creatinine) बहुत बढ़ा हुआ था।

हम समझते हैं कि हमारे इस ट्रीट्मेंट द्वारा कारबोनिक अॅन्हाइड्रेस (carbonic anhydrase) बना, जो रेड ब्लड सैल्ल RBC's में रहता है। इसका काम CO_2(कारबन डाय ऑक्साइड) को पानी में मिक्स करके कारबोनिक ऐसिड बनाना है। RBC's के दो भाग हैं – एक हीमोग्लोबिन है, जो ऑक्सीजन को लंग्ज़ से उठा लेता है और शरीर में दूसरी जगह उस ऑक्सीजन को छोड़ देता है, और दूसरी वस्तु एक तरल पदार्थ है, जिस में कारबोनिक अॅन्हाइड्रेस है, जिसका काम CO_2 को पानी में मिलाकर कारबोनिक ऐसिड में बदल देना है। सो जब रक्त के सैल्ल शरीर में घूमते हुये CO_2 को उठा लेती हैं, और लंग्ज़ में जाने के बाद उस तरल पदार्थ से पानी को अलग कर देती है, यानि कारबोनिक ऐसिड को CO_2 और पानी में बदल देती हैं। और श्वास द्वारा वह CO_2 बाहर निकल जाती है, तो बाकी पानी रक्त में रह जाता है जिस से pH 7.32 से pH 7.4 हो जाता है। ऐसा होने में खाली पांच-दस मिनट ही लगेंगी। और रोगी जो कोमा में है, कोमा से बाहर निकल जायेगा। साधारणतः रोगी pH 7.1 पर कोमा में जाता है। और pH 6.8 होने पर उसकी मृत्यु हो जाती है। दर असल यह रोगी किसी दूसरे कारण से कोमा में गया था। "

जिनके जोड़ों के बीच या टिशूज़ में कैल्शियम की जमावट हो उनको Thymus तथा Adrenal दोनों की जरूरत है । उनके लिये गुरुजी ने एक नया क्रम बनाया है –

I (8) Pan (3) Gal (7) Liv (4) acid (4) Thymus+Chest
II (8) Pan (3) Gal (7) Liv (4) Mu^0 (3) acid (10) Adr

इस उपचार से कुछ पॉरकिन्सन के पेशंट को तथा जिन CP के बच्चों को सख्त कब्जी है एवं जिनकी माँस-पेशियों में उम्र के कारण कड़कपन आ जाती है उन्हें उन्हें लाभ प्राप्त हुआ है।

Alkali Treatment Formula (ALTF)

जिन्हें alkalosis की बीमारियाँ या लक्षण होते हैं, उन्हें अगर हम Liv^0 यानि दांई किडनी के प्वाइंट को चैक करें तो पता चलेगा कि Liv^0 में ज्यादा दर्द है, और उन में Mu^0 यानि बांई किडनी के प्वाइंट में कम दर्द है। उनके लिये गुरुजी ने एक फॉरमुला बनाया जो कि दाहिनी बाजू के अंग यानि 'Gal', 'Liv', 'Liv^0', 'Rt. Ov.' इत्यादि के दर्दों को कम करता है। फिर देखा कि उससे ऐल्कलोसिस (alkalosis) के लक्षण खत्म होते हैं, जिसलिये उसका नाम Alkali Treatment Formula (ALTF) दिया गया।

ऐसा भी हो सकता है कि रोगी की अल्कालीन जो अधिक दिख रही है, वह असल में नौरमल है। लेकिन उस के पेट में एसिड की मात्रा कम होने से उस की अल्कालीन नौरमल होने पर भी अधिक दिखाई देगी। ऐसे लोगों को चेक करने पर अक्सर 'Gas' के प्वाइंट में भी दर्द होता है, एवं पूछने पर पता चलेगा कि उस रोगी को टट्टी (संडास) में अनपचा खाना आता है। इस का अर्थ है कि उस के पेट (Stomach) में रक्त का प्रवाह पर्याप्त

नहीं है जिससे हायड्रोकलोरिक एसिड(HCl) उचित मात्रा में नहीं बन रहा है, जिससे प्रोटीन्स ठीक से नहीं पचेंगे। *** (अगले पृष्ठ पर विस्तृत व्याख्या देखें)

दूसरी बात है कि पेट की एसिड का pH 3 से नीचे 1 तक जाने से उतनी सख्त एसिड होने से कोई वाईरस इत्यादी जिन्दा नहीं रह सकता। अगर पेट में ऐसिड ठीक मात्रा में नहीं बने तो बैकटेरिया या वायरस भी जिन्दा रह जाता होगा।

तो इसका मतलब यह है कि Liv^0 में दर्द होने पर भी पहले हमें ALTF नहीं देना चाहिये। हमें पहले UDF formula देना है। UDF को ठीक करने के लिये सबसे पहले गुरुजी यह फॉरमुला देते थे –

(10) Medulla (1) Gas Only – 6 points x 3 treatments

- इसमें (10) Medulla – वेगस नर्व को उकसाने के लिये देते हैं, जो पाचन संस्थान के कई अंगों को उकसायेगा तथा पेट की ऐसिड को तीनगुना बढ़ायेगा।
- Gas Only – से हम पेट को उकसाते हैं जिससे HCl, pepsin (पेप्सिन) इत्यादि ठीक से बनें।
- UDF formula देने से पेट में हायड्रोकलोरिक एसिड बढ़ जायेगी। और ऐसा पाया गया है कि कई रोगियों को इसी से ऐल्कली (alkali) के लक्षण एक दम कम हो जाते हैं।

ऊपर के उपचार के बाद कई नये UDF formula बनाये गये हैं जिसमें अलग-अलग किस्म के पेशंटों के लिये अन्य प्वाइंट जोड़े गये हैं। लेकिन सभी UDF formula में मुख्य एवं अनिवार्य है – **Gas Only.**

गुरुजी ने निम्न कई बीमारियों के प्रायः सभी पेशंटों में पाया है कि उन्हें संडास में अनपचा खाना आता है – जैसे

- ✓ फिट्स,
- ✓ कैन्सर,
- ✓ रयुमॅटॉइड आर्थराईटिस,
- ✓ सारे शरीर में दर्दें,
- ✓ एड्स (AIDS),
- ✓ इडियोपैथिक स्कोलीयोसिस, (idiopathic scoliosis),
- ✓ हायपो थाइरौइड्-इज़म या हायपर थाइरौइडिज़म,
- ✓ सारे शरीर में गांठें इत्यादी।

और इन सभी बीमारियों के पेशंटों को UDF के उपचार से तुरन्त आराम मिलता है।

- सभी UDF formula के अन्त में Fast ट्रीट्मेंट के बाद Mild Ajay Normal formula देना है – जिसमें (8) Pan से पैंक्रियास के पाचक एन्जाइम्स निकलेंगे और 'Gas I' से अवशोषण बढ़ेगा – ये दोनों पाचन क्रिया को सुधारने के लिये बहुत जरूरी हैं।

ध्यान दें – डायाबीटीस और कैन्सर के रोगियों को UDF formula में (10) Medulla नहीं देना है

जब कुछ दिन UDF formula देने के बाद अगर संडास यानि टट्टी ठीक से आने लगे और 'Gas' का दर्द निकल जाये, फिर भी उन्हें 'Gal', 'Liv' 'Liv^0' इत्यादि कई प्वाइंट में दर्द हो तभी ALTF formula देना है।

☯ ALTF फॉरमुला के कई रूप हैं जो अलग-अलग किस्म के पेशंटों को लाभ पहुँचाते हैं।

नीचे का फॉरमुला प्रायः सभी को लाभ देता है और खास कर उन रोगियों के लिये बहुत अच्छा है जिन्हें नाभी की दाई तरफ की ग्रंथियों में अधिक दर्द है, जब कि नाभी की बाई तरफ की ग्रंथियों में कम दर्द होता है।

- **Gal (1) Liv – 3 points (1) Rt.Ov (1) Liv^0 (2) Rt. Ch. Only x 3 trt**

ऐल्कली (alkali) की मात्रा बढ़ने से शरीर में रक्त का वौल्यूम यानि आयतन बढ़ेगा जिससे रोगी का Blood Pressure (यानि रक्त चाप) भी बढ़ जायेगा, और अगर एसिड बढ़ जायेगी तो रक्त के वौल्यूम कम हो जाने के कारण रोगी का रक्त चाप नौरमल से कम हो सकता है, जिसे लो बी पी कहते हैं।

ALTF का उपचार देने के बाद बढ़ा हुआ रक्त चाप कम होने लगता है। जिससे हम समझते हैं कि इस उपचार से ऐल्कली कम होती है। इसलिये ही इस उपचार का नाम Alkali ट्रीट्मेंट formula रखा गया है।

- अगर 'Gal', 'Liv' इत्यादि में दर्द है लेकिन Liv^0 में दर्द न हो तो नीचे का उपचार काफी है –
  (1) Gal (1) Liv – 3 points (1) Rt.Ov (2) Rt. Ch. Only x 3 treatments
- अगर 'Rt.Ov' में भी दर्द नहीं है तो नीचे का उपचार दें –
  (1) Gal (1) Liv – 3 points (2) Rt. Ch. Only x 3 treatments

  ऐसे अलग-अलग उपचार इसलिये बनाये गये क्योंकि किसी भी अंग को जरूरत न हो तो नहीं उकसाना। दर्द होने पर ही उकसाना, वरना नहीं।

*** { व्याख्या – पीछे के पन्ने से – जब पेट में HCl ठीक से बनेगी, तभी पेट का pH 3 या उससे नीचे जायेगा। उस pH में ही पेट में पैप्सिनोजन से पैप्सिन बनेगा जो खाने के प्रोटीन को बड़े बड़े टुकडों में पचा देगा। बाद में ड्युओडेनम तथा जेजुनम में पैंक्रियास का एनजाईम (ट्रिप्सिनोजन या ट्रिप्सिन) उन प्रोटीन के बड़े टुकडों को छोटे टुकडों में बना देगा, जिन्हें आंतड़ियों के अन्य एन्जाईम, और-महीन टुकड़ों में पचाकर उन्हें इलियम में सोख देंगी। और उस पचे हुए पदार्थ जिसमें nutrients यानि पोषण तत्व तथा इलेकट्रोलाईट्स हैं, उसे लिवर और अन्य सैल्स में भेज दिया जाता है आगे काम आने के लिये। हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड ठीक से नहीं बने तो शरीर की कई सारे हौरमोन्स और एन्जाइम्स नहीं बनेंगी, और उस से बड़ी-बड़ी बीमारियाँ आयेंगी ही। डाइग्नोसिस की यह निराली सोच सारी मानव जाति के लिये गुरुजी की एक महत्वपूर्ण खोज है }

मुख्य लक्षण जिनके लिये ALTF देना है – (पहले Liv^0 का दर्द चैक कर लें)

Liv^0 में दर्द / दायीं हाथ के अनामिका उँगली में दर्द	नाक का बहना
मासिक धर्म में स्राव कम होना / एकाध दिनों के लिये ही आना	दस्त
सिर के ऊपर या पीछे के भाग में दर्द	शरीर के दायीं तरफ के अंगों में दर्द

मुख्य बीमारियाँ

Fits या कोन्वल्शन्स (convulsions) यानि कँपन के दौरे पडना	Epilepsy मिरगी
स्पैस्टीसिटी यानि माँसपेशियाँ कडक हो जाना	CP सेरेब्रल पैल्सी
BP हाई बी पी	कर्करोग यानि कैन्सर
ट्यूमर या सिस्ट (cyst)	हकलाना या तुतलाना इत्यादि

1,25 DCC फौरमुला (1,25,dihydroxycholecalciferol)

यह एक अनूठा फॉरमुला है जिसमें गुरुजी ने physiology के तथ्यों का अभ्यास करके अपनी ही अनोखी शैली में एक दवाई–रहित उपचार में परिवर्तन किया है। *रक्त में कैल्शियम की मात्रा बढ़ाने के लिये यह फॉरमुला देते हैं।* साथ ही यह फॉरमुला किडनीज़ की फंक्शन्स को सुधारने एवं सभी आवश्यक तत्वों के पाचन और अवशोषण में भी मदद करता है।

1,25 DCC का फंक्शन यानि कार्य – 1,25 DCC एक हौरमोन है जिसका कार्य है कि कैल्शियम का अवशोषण कराना। इसका raw material यानि मूल पदार्थ कोलैस्टेरॉल (cholesterol) है। यह स्टेरॉल (sterol) वंश का है, अतः इसे स्टीरौइड हौरमोन (steroid hormone) कहते हैं। 1,25 DCC के कार्य को ठीक से समझने के लिये हमें पहले यह समझना है कि शरीर में कैल्शियम कैसे अंदर पहुँचता है और कैसे उसका निकास होता है।

भोजन में दही, दूध, पालक, मूली, कांदा यानि प्याज (onion) तथा फलों में केला (banana) इत्यादि खाने से कैल्शियम बहुत मिलती है। उसका अवशोषण ईलियम के विल्लाइ (villi) द्वारा किया जाता है और वहाँ से वह रक्त में मिल जाता है। लेकिन ईलियम में उसके अवशोषण तब ही होगा अगर रक्त में पर्याप्त मात्रा में 1,25 DCC हो। नहीं तो सारा का सारा कैल्शियम टट्टी द्वारा निकल जायेगा।

और एक बात भी है। समझो रक्त में कैल्शियम की मात्रा ठीक है लेकिन 1,25 DCC नहीं है। तो किडनीज़ में जब रक्त की चीजें फिल्टर होते हैं तो उनकी tubules कैल्शियम को वापस reabsorb यानि पुनर्शोषण नहीं करेंगी और रक्त का कैल्शियम पेशाब द्वारा निकलता जायेगा। 1,25 DCC दो विभिन्न अंगों पर प्रभाव डालकर रक्त में कैल्शियम की मात्रा बढ़ाता है –

एक तो वह ईलियम के विल्लाइ (villi) की सैल्स पर प्रभाव डालता है कि वे कैल्शियम तथा फॉस्फेट (phosphate) का अवशोषण करें, जिसके लिये वह इन्टेस्टाइन के सैल्स में एक खास किस्म का calcium binding protein तैयार कराता है जो कैल्शियम को cell के cytoplasm के अन्दर पहुँचाने में उपयोगी है। इस प्रोटीन को तैयार करने के लिये 1,25 DCC को करीब दो दिन लगते हैं। लेकिन 1,25 DCC निकल जाने के बाद भी यह प्रोटीन सैल्स के अन्दर कई सप्ताहों तक रहता है जिससे इन्टेस्टाइन द्वारा कैल्शियम के ऐब्ज़ोर्पशन यानि अवशोषण पर काफी दिनों तक असर रहता है। चूंकि इस calcium binding protein को बनने के लिये 48 घन्टे लगते हैं, *सो अगर दुबारा **1,25 DCC** देना हो तो एक दिन छोड़ कर देना है।*

1,25 DCC का दूसरा काम है कि वह किडनीज़ के tubules पर प्रभाव डालता है कि वे कैल्शियम का पुनर्शोषण करें और कैल्शियम को पेशाब द्वारा बाहर जाने न दें और उसके बदले फॉस्फेट को बाहर जाने दें अगर रक्त में 1,25 DCC न हो तो भोजन का कैल्शियम का 90% भाग संडास द्वारा निकल जायेगा और बाकी 10% पेशाब द्वारा निकल जायेगा।

1,25 DCC शरीर में कैसे बनता है ?



हमारे शरीर में कैल्शियम के अवशोषण तथा उपयोग में विटामिन D का महत्वपूर्ण स्थान है। हमारी चमड़ी के नीचे 7-hydroxycholecalciferol (7,HCC) नामक कैमीकल जमा रहता है, जो विटामिन D का निष्क्रिय रूप है। सूरज की धूप के ultraviolet किरण पड़ने पर यह D_3 (या Cholecalciferol) के रूप में बदल कर रक्त में मिल जाता है। जब यह रक्त लिवर में पहुँचता है तो लिवर उसे 25HCC (25-hydroxycholecalciferol) नामक कैमीकल में बदल देता है जो विटामिन D का एक और रूप है। इस रूप में vitamin D की जितनी जरूरत है उतनी मात्रा में लिवर से निकलेगा और बाकी लिवर में ही स्टोर रहता है, भविष्य में काम आने के लिये।

जब यह रक्त parathyroid gland में पहुँचता है और अगर रक्त में कैल्शियम की मात्रा 9-11 mg/dl से कम हो तो parathyroid gland से Parathormone (PTH) नामक हौरमोन निकलता है। ये सारे चीज रक्त में भ्रमण करते हुये किडनीज़ में पहुँचते हैं। तब किडनीज़ 25 HCC को 1,25 DCC नामक हौरमोन में बदल देती हैं। लेकिन इस कार्य के लिये PTH का होना जरूरी है। PTH के बिना 1,25 DCC का उत्पादन हो ही नहीं सकता। संक्षेप में –

- सूर्य की किरणें → चमडी → 7,HCC
- 7,HCC → रक्त द्वारा → लिवर → 25, HCC
- 25, HCC → रक्त द्वारा → पॅरा थायरौइड ग्रंथी → PTH निकलेगा
- 25, HCC + PTH → रक्त द्वारा → किडनी → 1,25 DCC

सब से मुख्य बात यह है कि हड्डियों की मजबूती के लिये धूप अति आवश्यक है। यही कारण है कि खेत में या धूप में काम करने वालों को ऑस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis) या हड्डियों की अन्य परेशानियां विरल ही आती हैं। शहर में लोग अक्सर धूप से कतराते हैं सो उनकी हड्डियाँ मजबूत नहीं होती। अगर कभी ज्यादा बोझ उठाना पडे तो उन्हें हड्डियों की तरह-तरह की बीमारियाँ आ जाती हैं। अगर रोज 10-15 मिनट सुबह की कोमल धूप की किरणों से रीढ़ की मनकों पर सेक लेने की आदत बना लें तो स्वास्थ्य के लिये अत्यन्त लाभदायक होगा।

LMNT यानि न्यूरोथेरेपी में हम शरीर में **1,25 DCC** कैसे बनाते हैं ?

भारत में क्योंकि धूप काफी होती है इसलिये यहां पर D_3 (या Cholecalciferol) बनाने की जरूरत काफी हद तक नहीं रहती। ऊपर कहे तथ्य के अनुसार हमें समझ में आता है कि अगर लिवर, PTH और किडनीज़ ठीक से काम करें, तभी 1,25 DCC बनेगा, वरना नहीं।

उसी के आधार पर पहले गुरुजी ने यह फॉरमुला बनाया जिसमें लिवर, पॅरा थायरौइड ग्लैंड तथा किडनीज़ को क्रम पूर्वक उकसाते हैं → **(7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0** जिसे **Pure 1,25 DCC** का नाम दिया गया है। इसमें देखा गया है कि कुछ ही दिनों के उपचार के बाद रक्त में कैल्शियम की मात्रा बढ़ जाती है।

यह formula बहुत powerful यानि शक्तिशाली है। इस फॉरमुला से आंतड़ियों में खाली कैल्शियम ही सोखी जायेगी (absorb होगी)। बाद में गुरुजी ने अपने अनोखे तजुर्बे से इस फॉरमुला को और प्रभावशाली बनाने के लिये ऊपर के फॉरमुला में और दो प्वाइंट यानि (8) Ch.Only (20) ↑|↓ को भी मिला दिया। यानि अब पूरा फॉरमुला इस प्रकार होगा – **(7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20)** ↑|↓

*इसे **1,25 DCC formula** कहते हैं*। आम तौर से अधिकांश रोगियों को यही फॉरमुला देते हैं।

इस उपचार से देखा गया कि यह खाली कैल्शियम ही को नहीं पर हर प्रकार के इलेक्ट्रोलाइट (electrolyte) को भी सोख लेगा। लेकिन इस फॉरमुला का पूरा लाभ उठाने के लिये रोगी को रोज कम से कम आधे घंटे के लिये धूप में रहना चाहिये। इसमें (20) ↑|↓ spine के 31 जोडी नर्व्ज़ (nerves) को उकसाने के लिये है। इससे ऐसिड भी कम होता है।

Chest Only – यह वायु तत्व का नियंत्रण करता है। (8) Ch. Only में हम पहले छाती की बायीं साइड पर घिसते है, और बाद में दायीं साइड पर घिसते है, तो कई पेशंटों में ऐल्कली कम होता हुआ देखा गया है, यानि इससे ऐसिड के लक्षण बढ़ते हैं। पर अगर (8) Ch. Only (20) ↑|↓ एक साथ देते हैं तो दोनों मिलकर ऐसिड-ऐल्कली का बैलेंस यानि संतुलन को बनाये रखते हैं।

1,25 DCC formula में हर प्वाइंट क्यों दिया है यह समझें –

- {सूरज की किरणें – चमडी के कैमीकल को vitamin D_3 (Cholecalciferol) में बदलने
- (7) Liv – लिवर D_3 को 25, hydroxycholecalciferol (25 HCC) में बदल देगा
- (4) Para – पॅरा थायरौइड ग्लैंड को उकसाने से वह PTH बनायेगा
- (7) Liv^0 (7) Mu^0 – किडनीज़ को उकसाने – जिससे वे 25 HCC को 1,25 DCC में बदल देंगी
- (8) Ch.Only (20) ↑|↓ देने से इन्टेस्टाइन कैल्शियम एवं सभी इलेक्टोलाइट्स को सोख लेते हैं

ध्यान दें आजकल यह पाया गया है कि Chest Only के दोनों साइड के उपचार अलग-अलग काम करते हैं। Left Chest Only से Mu^0 का दर्द कम होता है, यानि वह ऐसिडोसिस के लक्षणों को कम करता है। जब कि Right Chest Only से Liv^0 का दर्द कम होता है, यानि वह ऐल्कॅलोसिस के लक्षणों को कम करता है।

फिर Physiology से पता चला कि कैल्शियम के ठीक प्रकार से अवशोषण होने के लिये उसके साथ magnesium का binding यानि जोडना जरूरी है। Magnesium तो लिवर में स्टोर रहता है। और लिवर का गोदाम है गौल ब्लैडर। तो उपचार को इस प्रकार बदला गया –

I (3) Gal (7) Liv – मैग्नीशियम को बाइंडिंग करने के लिये
II 1,25 DCC formula → (7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch.Only (20) ↑|↓

इस उपचार से रोगियों को बहुत अच्छा लगने लगा। वे कहते थे कि digestion तथा absorption यानि पाचन तथा अवशोषण सुधर गया। फिर गुरुजी को ख्याल आया कि vitamin B_{12} के अवशोषण के लिये पेट में intrinsic factor का बनना जरूरी है, तभी ईलियम में पहुँचने पर Vitamin B_{12} लिवर में स्टोर होगा। अन्यथा पेट और आंत के एनजाईम vitamin B_{12} को पचा जायेंगे यानि समाप्त कर देंगे। लिवर में Vitamin B_{12} का स्टॉक (stock यानि जमावट) 5 से 6 साल का रहता है। अगर किसी को Vitamin B_{12} कमी के लक्षण हैं मतलब कई सालों से उसके शरीर में Vitamin B_{12} स्टोर नहीं हो रहा है। Intrinsic factor ठीक से बनने के लिये यह जरूरी है कि पेट में रक्त संचार ठीक से हो। LMNT में इसके लिये हम 'Gas Only ' देते हैं।

तो जिन्हें कैल्शियम तथा vitamin B_{12} दोनों की कमी हो, उन्हें 1,25 DCC फॉरमुला से ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाने के लिये निम्न प्रकार से उपचार देना बेहतर पाया गया है –

I (1) Gas Only – 6 points – पेट को उकसाने – intrinsic factor बनाने के लिये
II (3) Gal (7) Liv – लिवर में स्टोर हुआ मैग्नीशियम के लिये – मैग्नीशियम से जुड़ने से ही कैल्शियम का अवशोषण ठीक होगा
III 1,25 DCC formula → (7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20) ↑|↓
– यह क्रम कैल्शियम तथा B_{12} इत्यादि सारे पोषण तत्वों के अवशोषण के लिये है।

कैल्शियम की कमी तथा हायपो थाइरौइड्–इज़्म **- (calcium deficiency and hypo-thyroidism)**

कैल्शियम की मात्रा प्लास्मा में साधारणतः 9.00 से 11.00 mg/dl. तक होनी चाहिये। कैल्शियम कीं अत्यधिक कमी हो जाने पर हार्ट भी फेल हो सकता है। और ऐसा न हो, इसलिये जरूरत पड़ने पर पैराथाईरौइड ग्लैंड का PTH यानि पैरॅथौरमोन osteoclasts से कहेगा कि वे हड्डियों से कैल्शियम निकाल कर प्लास्मा यानि रक्त में डालें।

कैल्शियम की मात्रा 11.00 mg/dl. के ऊपर जाने पर थाइरौइड ग्लैंड से कैल्सिटोनिन (calcitonin) नाम का हारमोन निकलेगा जो osteoblasts से कहेगा कि वे उस excess (यानि ज्यादा) कैल्शियम को हड्डियों में डालें। कैल्शियम दूध, दही, पनीर, गुड़ और तिल में पाया जाता है। काले तिल में ज्यादा है। केले में कैल्शियम कम और पोटैशियम ज्यादा है।

ध्यान दें कि Calcitonin का PTH पर कोई कंट्रोल नहीं है । कैल्सीटोनिन का कंट्रोल तो सिर्फ osteoclasts एवं osteoblasts के ऊपर है। यह प्रभाव भी बढ़ते बच्चों में ही ज्यादा पाया जाता है। कैल्सीटोनिन के असर से रक्त में कैल्शियम की कमी होने के कुछ ही घंटों के अंदर PTH भारी मात्रा में निकल जाता है, जो कि कैल्सीटोनिन के प्रभाव को नाकार देता है (Guyton 10thEd. p909) हायपो थाइरौइड्–इज़्म (hypo-thyroidism) का मतलब है T_3 , T_4 कम होना – और थायरौइड ग्लैंड का यह कार्य पिट्यूटरी ग्लैंड पर निर्भर है। कैल्सीटोनिन का कार्य कैल्शियम की मात्रा पर ही निर्भर है। कैल्सीटोनिन के कम कार्य करने से ऑस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis) होगा जिसमें हड्डियाँ खोखली हो जाती हैं।

अगर रक्त में कैल्शियम की मात्रा 9 mg/ dl. से कम हो तो माँस-पेशियाँ ठीक से काम नहीं कर सकतीं। सभी ग्रंथियों को ठीक से काम करने के लिये तथा अपना स्राव को नियमित रूप से बाहर निकालने के लिये उनके आजू-बाजू के माँस-पेशियों को ठीक से काम करना जरूरी है। अगर थायरौइड ग्रंथी के T_3, T_4 हौरमोन्स ठीक मात्रा में न निकले तो उसे हायपो थाइरौइड्–इज़्म (hypo-thyroidism) कहा जाता है। रक्त में कैल्शियम की कमी के कारण थायरौइड ग्लैंड ठीक से काम करने में असमर्थ होगा। तो यह भी हायपो थाइरौइड्–इज़्म का एक मुख्य कारण हो सकता है। इस अनुमान के आधार पर गुरुजी ने सोचा कि जिनको हायपो थाइरौइड्–इज़्म है उनको

1,25 DCC फॉरमुला देने से लाभ होगा। खास तौर से जिन बच्चों को हायपो थाइरौइड्-इज़म के कारण मन्द बुद्धि के लक्षण हैं, उन्हें 1,25 DCC फॉरमुला से बहुत लाभ हुआ है। ऐसे बच्चों के उपचार में गुरुजी की यह सोच अपने में निराली और लाजवाब है (unique approach) ।

{जब ब्लड में कैल्शियम की मात्रा 11 mg /dl से अधिक हो तो पैराथाइरौइड ग्रंथी इन्टेस्टाइन और ओस्टीयोक्लास्ट्स (osteoclasts) को रोकेगा कि वे हड्डियों से और कैल्शियम न सोखें। तथा पेशाब द्वारा कैल्शियम को बाहर जाने देगा}

1,25 DCC formula सम्बन्धित कुछ अन्य मुद्दे

इस फौरमुला में (8) Ch. Only के साथ (20) ↑|↓ दिया गया है। इसमें गुरुजी का एक अनूठा अबलोकन हम आपके सामने प्रस्तुत करते हैं।

देखा गया है कि Ch. Only से ऐल्कली कम होती है यानि ऐसिड की लक्षण बढ़ते हैं जब कि राउंड ऐरो से ऐसिड कम होती है यानि ऐल्कली के लक्षण बढ़ते हैं। इतना ही नहीं, (20) ↑|↓ को बैलेंस करने के लिये (8) Ch. Only चाहिये जब कि (4) Ch. Only को बैलेंस करने के लिये (10) ↑|↓ पर्याप्त है।

चूंकि न्यूरोथेरेपी का उपचार बीमारी के लिये नहीं, बल्कि शरीर की स्थिति को ध्यान में रखकर किया जाता है, सो इस अवलोकन का उपयोग गुरुजी ने एक अद्भुत तरीके से किया है।

- 1,25 DCC के उपचार देने से पहले रोगी के Liv^0 - Mu^0 में दर्द कितना है यह चैक करना चाहिये। साथ में रोगी से पूछना चाहिये कि उसे लैट्रीन में टट्टी मध्यम आती है या कड़क। गुरुजी की साठ वर्षों की तपस्या के दौरौन उन्होंने यह पाया है कि सभी मरीजों को एक जैसा फॉरमुला लागू नहीं होता। रोगी की स्थिति के अनुसार ट्रीट्मेंट बदलने से ज्यादा लाभ होगा।
- आम तौर पर लोगों को लैट्रीन केला-जैसा होता है। अगर रोज पेट साफ हो तो निम्न फॉरमुला देना है यानि **(7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch.Only (20) ↑|↓**
- अगर संडास यानि लैट्रीन बहुत ही ज्यादा कडक हो और छोटे-छोटे टुकडों में हो (बकरी की संडास की तरह) और एक या दो दिन छोड़कर आये या काफी मुश्किल के साथ ही आती हो तो समझना रोगी को सख्त कब्जी की शिकायत है। ऐसे लोगों को Mu^0 में दर्द होता है। इसका मतलब है कि उनके शरीर में ऐसिड बहुत ज्यादा है। हमें ऐसिड को और कम करना है और ऐल्कली को ज्यादा कम नहीं करना है।
  जैसे ऊपर कहा गया है, जब हम (8) Ch. Only देते हैं तो ऐसिड कुछ बढ़ेगी, जिसको और कम करने के लिये (20) ↑|↓ काम करेगा □ लेकिन जब हम (4) Ch. Only देते हैं तो उससे ऐसिड इतनी नहीं बढ़ेगी। यानि जिनको बहुत ही कडक संडास आये और कब्जी भी हो, उन्हें उपचार को इस प्रकार बदलना है -
  (7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 <u>(4) Ch. Only (20) ↑|↓</u>
- अगर मध्यम संडास आती हो, यानि टट्टी गोबर-जैसी हो, उसका मतलब उनके शरीर में ऐल्कली कुछ बढ़ी हुयी है। तो उन्हें Mu^0 पहले देना और Liv^0 बाद में देना; और (20) ↑|↓ पहले देना और (8) Ch. Only बाद में। इसे ***Ulta 1,25 DCC*** कहते हैं जिसका उपचार इस प्रकार होगा -
  (7) Liv (4) Para <u>(7) Mu^0 (7) Liv^0</u> <u>(20) ↑|↓ (8) Ch. Only</u> - (नीचे <u>line</u> इसलिये दिया गया है ताकि थेरेपिस्ट को ध्यान हो कि इधर क्रम बदला गया है।)
- अगर दिन में तीन-चार बार संडास आये और बहुत पतली टट्टी हो तो उसका मतलब उनके शरीर में ऐल्कली काफी बढ़ी हुयी है। तो उपचार में हमें ऐसिड ज्यादा बढ़ाना है। जब हम (20) ↑|↓ देते हैं तो ऐसिड ज्यादा कम होगा लेकिन जब हम (10) ↑|↓ देते हैं तो उससे ऐसिड उतना ज्यादा कम नहीं होगा। तो ऐसे लोगों के लिये उपचार इस प्रकार होगा - (7) Liv (4) Para <u>(7) Mu^0 (7) Liv^0</u> <u>(10) ↑|↓ (8) Ch. Only</u>
  [*व्याख्या* - (10) ↑|↓ को बैलेंस करने के लिये (4) Ch. Only ही देना चाहिये। (8) Ch. Only देने से (4) Ch. Only की तुलना में ऐल्कली और कम होगी जो पतली टट्टी वाले पेशंटों के लिये जरूरी है]

- ध्यान दें – किडनीयें अगर बिगड़ जायेगी तो ऐसी अवस्था में 1,25 DCC नहीं बनेगा और उन रोगीयों को ऑस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis) हो सकता है जिसमें हड्डियाँ इतनी खोखली बन जाती हैं कि वे जरा-सा प्रेशर को भी सह नहीं सकतीं।

संक्षेप में **1,25 DCC** फॉरमुला का उपयोग

- ✓ रक्त में कैल्शियम की मात्रा बढ़ाने के लिये
- ✓ ऑस्टीयोपोरोसिस = हड्डी का खोखली हो जाना
- ✓ मैन्सस में अधिक मात्रा में ब्लीडिंग हो तो
- ✓ मन्द बुद्धि और हायपो थाइरौइडिज़्म
- ✓ जिन्हें सोते समय क्रैम्प्स आते हों – अक्सर हाई बी पी के पेशंटों में ऐसा हो सकता है।
- ✓ पेट और पाचन संस्थान को सुधारने के लिये – खास कर Liv^0 – Mu^0 दोनों में दर्द हो और अपचन के साथ कमर या पिंडलियों में दर्द भी हो तो तब यह फॉरमुला बहुत ही लाभदायक है।

Pure 1,25 DCC का उपयोग

जैसे ऊपर लिखा गया है, Pure 1,25 DCC बहुत ही शक्तिशाली और strong उपचार है। सो इसका बहुत ही कम उपयोग करते हैं। पर अगर प्योर (Pure) 1,25,DCC में Vitamin B_{12} मिला दिया जाये तो उस का नाम है – **Pure Genes formula** यानि **(7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Lt Parkhoo**

इस फॉरमुला के द्वारा जीन्ज़ की गड़बड़ीयों (genetic disorders) को सुधार सकते हैं। इस formula को भी आम तौर से प्रयोग नहीं करते क्योंकि यह बहुत ज्यादा strong यानि प्रभावशाली है। सिर्फ **genetic disorders** यानि जीन्स सम्बन्धी बीमारियों में इसका उपयोग करते हैं।

- ☯ गोंध हड्डियों को ज्यादा ताकत देता है। इसलिये ही गांवों में औरतों को डिलीवरी के बाद गोंध का लड्डू खिलाया जाता है, ताकि बच्चा और जच्चा दोनों की हड्डियाँ मजबूत और स्वस्थ रहें।

Gas 'I' treatments तथा Dopamine

हमारी आंतडियों में 100 मिलियन यानि दस करोड़ न्यूरॉन्स होते हैं जिन्हें enteric neurons अर्थात् आंतडियों की न्यूरॉन्स कहा जाता है। और ये न्यूरॉन्स भी कम मात्रा में वही कैमीकल बनाते हैं जो ब्रेन में ज्यादा मात्रा में बनते हैं। LMNT में हमने देखा है कि Gas'I' प्वाइंट से आंतडियों को उकसाया जा सकता है।

एक बार गुरुजी के पास एक पॉरकिन्सन बीमारी (Parkinson's disease) के पेशंट आये जिनको Gas'I' प्वाइंट में काफी दर्द था। तो गुरुजी उनको Gas 'I' ट्रीट्मेंट देने लगे। जब उन्होंने (12) Gas'I' दिया तो देखा गया कि उस पेशंट के हाथ की कँपकँपी बहुत ही कम हो चुकी थी। फिज़ियोलोजी (physiology) से हमें पता है कि पॉरकिन्सन की बीमारी डोपॅमीन (dopamine) नामक कैमीकल की कमी से आती है। तो गुरुजी को लगा कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि (12) Gas 'I' से dopamine बन रही हो ? नहीं तो पॉरकिन्सन के पेशंट को उस उपचार से लाभ कैसे पहुँचा ? फिर डोपॅमीन के प्रति Taber's Dictionary में पाया गया कि यह एक ऐसा कैमीकल है जो अलग-अलग मात्रा में शरीर में अलग-अलग प्रभाव लाती है।

Dopamine (डोपॅमीन)

डोपॅमीन एक कैमीकल है जो ब्रेन के बैसल गैंग्लिया (basal ganglia) नामक भाग में बनता है। इसके अलावा यह ऐड्रीनल मैडूला (adrenal medulla) में भी बनता है। बनने के बाद उसे शरीर की जरूरत के अनुसार नौर-एपीनेफरीन (norepinephrine) में बदल दिया जाता है। यह शरीर में टाइरोसिन ॲमीनो ऐसिड (tyrosine amino acid) के अदल-बदल से बनता है।

शरीर में एक चीज़ को दूसरे में अदल-बदल करने के काम को मेटाबॉलिज़्म (metabolism) यानि चयापचय कहते हैं। टाइरोसिन ॲमीनो ऐसिड दूध के केसीन (casein) नामक प्रोटीन में पाया जाता है। सो यह ठीक से बनने के लिये दूध ठीक से पचना चाहिये एवं टाइरोसिन ॲमीनो ऐसिड के चयापचय के लिये विटामिन C तथा फोलिक ऐसिड की जरूरत है। यह सब तभी होगा जब पाचन संस्थान ठीक से काम करे।

डोपॅमीन का एक मुख्य कार्य है ब्रेन से अन्य कुछ भागों को संदेश ले जाना। इसलिये इसे एक न्यूरो ट्रान्स्मीटर (neuro-transmitter) कहते हैं। इसका गुण है अंगों के अनचाहे हलचल को रोकने का संदेश ले जाना। इसलिये इसे inhibitory neuro-transmitter यानि रोकनेवाला न्यूरो ट्रान्स्मीटर कहते हैं।

डोपॅमीन दवाई का शरीर पर असर

दवाई की मात्रा *	शरीर पर उसका असर
प्रति मिनट में 2 से 5 µgm	किडनी तथा आंतडियों के आरटरीज़ के अंदरी व्यास को फैलाता है। अगर किडनीज़ के अंदर रक्त का प्रवाह बढ़ेगा तो सिस्टोलिक बी पी कम होगी।
प्रति मिनट में 5 से 15 µgm	हृदय की संकुचन शक्ति बढ़ेगी, रक्त ज्यादा मात्रा में तथा ज्यादा तेजी से निकलेगा जिससे बी पी बढ़ेगी।
प्रति मिनट में 15 µgm से अधिक	इस मात्रा में यह α-adrenergic receptors को उकसाता है जिससे शरीर के सारे रक्त नलिकायें सिकुड़ जाती हैं। यह पॉरकिन्सन बीमारी के पेशंटों को तथा जिन्हें shock के कारण अत्यन्त लो बी पी हो उनको दिया जाता है। **

* दवाई की कुल मात्रा रोगी के वजन के अनुसार गणना करके रक्त में चढ़ायी जाती है। मरीज का वजन जो भी हो, दवाई को उतनी मिनट के लिये चढाना है।

** Shock उसे कहते हैं जब शरीर में किसी भी कारण से venous blood यानि शिराओं से हृदय में पहुँचती हुयी रक्त की मात्रा इतनी कम हो जाय कि टिशूज़ के नौरमल काम-काज के लिये पर्याप्त ऑक्सीजन न मिल पाये (माइक्रो ग्राम µgm = एक ग्राम का दस लाखवां भाग)

गुरुजी ने अनुमान लगाया कि जब (12) Gas 'I' से पॉरकिन्सन के पेशंट को लाभ हो रहा है, तो (6) Gas 'I' से कम डोपॅमीन बननी चाहिये जो शायद हाई बी पी को कम करेगा। इसी अनुमान से जब उन्होंने हाई बी पी के एक पेशंट को (6) Gas 'I' दिया तो देखा गया कि उस व्यक्ति की सिस्टोलिक बी पी कम हो गयी। तब से कई बरसों से हाई बी पी के पेशंटों को सिस्टोलिक बी पी कम करने के लिये (6) Gas 'I' दिया जाता है जिससे उनको बहुत लाभ होता है। इससे गुरुजी अनुमान लगाते हैं कि यह उपचार 2 – 5 µ gm/kg/min के डोपमीन के dosage-जैसा काम कर रहा है।

इसके बाद यह सोच आई कि जब (6)Gas'I' हाई बी पी को कम करता है तो (9) Gas 'I' से शायद ज्यादा डोपॅमीन बनेगा जिससे बी पी बढ़ेगी - जिसे हम लो बी पी के उपचार में उपयोग कर सकते हैं। लेकिन लो बीपी के पेशंट कभी-कभी आते हैं तो इस तथ्य को ज्यादा पेशंट पर test कर नहीं पाये।

इन सब से ऐसे सोचते हैं कि Gas 'I' उपचार के निम्न प्रभाव होंगे -

(12) Gas 'I' - इससे पॉरकिन्सन बीमारी के पेशंटों को बहुत लाभ होता पाया गया है।

(9) Gas 'I' - इससे शायद बी पी बढ़ेगी - यह और ज्यादा पेशंटों पर test करना है।

(6) Gas 'I' - इससे सिस्टोलिक बी पी कम होती है।
सो यह उपचार हाई बी पी के पेशंटों के लिये बहुत अच्छा है

(3) Gas 'I' - यह इन्टेस्टाइन यानि आंतडियों को उकसायेगा जिससे जेजुनम, ईलियम इत्यादि सब ठीक से काम करेंगे। आजकल इस उपचार के बदले में (1) Gas ' I ' – 6 points देते हैं जो ज्यादा लाभदायक है।

Gas 'I' ट्रीट्मेंट देते समय थेरेपिस्ट के लिये मुख्य चेतावनी

ऊपर के उपचारों का असर जो लिखा गया है, वह इस पर आधारित है कि Gas 'I' देते समय हर प्वाइंट पर 6 सेकंड का ही दबाव दिया जाता है। अगर हाई बी पी के पेशंट को (6) Gas 'I' देना है तो ट्रीट्मेंट देते समय थेरेपिस्ट किसी से बात नहीं करनी चाहिये और यह देखना चाहिये कि हर जगह पर 6 seconds से ज्यादा दबाव न हो। अगर हर जगह पर 6 सेकंड के बदले 9 सेकंड का दबाव दिया गया तो (6) Gas 'I' का (9) Gas 'I' हो सकता है जिससे पेशंट की बी पी और बढ़ सकती है - इसका ध्यान रहे।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

2010 के बाद से UDF formula देते समय मोशन के अनुसार Ajay Normal formula में निम्न बदलाव करने हैं -

अगर व्यक्ति को नॉरमल मोशन आये तो (4) Gas 'I' – 3 points दें

अगर व्यक्ति को कब्जी हो या कड़क मोशन आये तो (6) Gas 'I' – 3 points दें

अगर व्यक्ति को लूज़ मोशन आये तो (1) Gas 'I' – 6 points दें

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

LMNT के मेडूला उपचार **Medulla treatments of LMNT**

न्यूरोथेरेपी उपचार का एक मुख्य पहलू है – विभिन्न ग्रंथियों के रक्त संचार को सुधारना। जब लोगों को न्यूरोथेरेपी के उपचार से लाभ प्राप्त हुये तो उन्हें इस थेरेपी में विश्वास होने लगा। विभिन्न रोगों के मरीज गुरुजी के पास उपचार के लिये आने लगे। पहले तो दर्दें तथा पेट की तकलीफों के मरीज आते थे। धीरे-धीरे गुरुजी की सेवा भाव से मोहित होकर और इस उपचार की सफलता के बारे में सुनकर वैसे रोगी भी आने लगे जिन्हें अन्य उपचारों से खास लाभ नहीं होता था।

इनमें प्रमुख थे मन्द बुद्धि के बच्चे। गुरुजी ने उन्हें पेट set करने के उपचार दिये तो बच्चों के माता-पिता बताते थे कि बच्चे के शरीर के हलचल और हरकतों में काफी सुधार जरूर है। लेकिन उन बच्चों के ब्रेन के विकास में बहुत ज्यादा परिवर्तन नहीं दिखता था। तो गुरुजी ब्रेन के कार्यों के बारे में पढ़ने लगे। और उन्हें पता चला कि कॅरोटिड आरटरीज़ (carotid arteries) यानि जो धमनियाँ ब्रेन के लिये रक्त ले जाती हैं वे गर्दन से निकलकर कान के बगल से जाती हैं।

अभ्यास करते हुये पता चला कि ब्रेन का एक मुख्य भाग है जिसे मेडूला ओब्लॉन्गॉटा (Medulla oblongata) कहते हैं, जो ब्रेन स्टेम (brain stem) के पोन्स (Pons) नामक भाग के नीचे स्थित है। शरीर के किसी भी अंग से ब्रेन तक तथा ब्रेन से अन्य अंगों तक जो भी नर्व जाती हैं वे इस भाग से होकर ही जाती हैं। यानि ब्रेन के हर प्रकार के कार्य के लिये मेडूला ओब्लॉन्गॉटा के अन्दर से नर्व्ज़ को गुजरना पडेगा ही। इस चित्र में हम देख सकते हैं कि यह भाग माथे के अंदर करीब-करीब उसी जगह स्थित है जहां कान और गर्दन के बीच की त्वचा है।



गुरुजी ने हरि को ध्यान किया तो उनके मन में यह ख्याल आया कि इस जगह को उकसाने से ब्रेन की बीमारियों में लाभ होनी चाहिये। ऐसा सोचकर वे उस जगह पर अपने अंगूठों से बारी-बारी से घिसाई करने लगे तो हरि की कृपा से कई बच्चों में खास फर्क पाये गये।

फिर आयी बात कि इस उपचार को क्या नाम दिया जाय। गुरुजी को लगा कि जब इस नये उपचार द्वारा ब्रेन के कार्य सुधरते हैं, इसका मतलब है कि यह उपचार मेडूला के द्वारा जानेवाले सभी नर्व्ज़ के कार्य को ठीक करता होगा, इसलिये उसे मेडूला ट्रीट्मेंट (Medulla treatment) कहा गया।

फिर हरि की कृपा से तरह-तरह की बीमारियों के लिये कई विभिन्न उपचार मिलते गये और देखा गया कि अलग-अलग संख्या में गर्दन के दोनों बाजुओं में कानों के नीचे उपचार करने से ब्रेन के विभिन्न अंगों के कार्यों को ही नहीं बल्कि किडनी या अन्य भागों को भी क्रियान्वित किया जा सकता है। चूंकि ये सभी उपचार एक ही जगह पर दिये जाते हैं, इसलिये सभी को एक ही नाम दिया गया, लेकिन नाम के पहले संख्या को सूचित करने का एक सिस्टम बनाया गया।

सबसे पहले (6) Medulla के कार्यों की खोज हुयी। फिर आयी (10) Medulla, (30) Medulla इत्यादि। धीरे-धीरे research और अभ्यास करते-करते पता चला कि ब्रेन के कई अंगों को इन उपचारों द्वारा उकसाया जा सकता है। अब कई अलग-अलग ट्रीट्मेंट प्राप्त हुये हैं जो ब्रेन के अन्दर के विभिन्न भागों तथा विभिन्न क्रेनियल नर्व को उकसाते हैं जो सामान्यतः विश्वास के बाहर है। इन उपचारों को "कुदरती देन या हरि-कृपा" कहने के अलावा अन्य किसी प्रकार से इनके चमत्कारिक प्रभाव का बयान नहीं कर सकते।

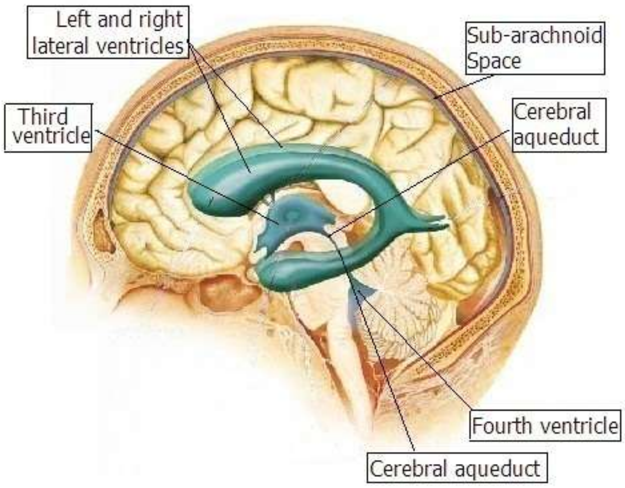
इन उपचारों के असर इतने कमाल के हैं – जिनके नतीजे देश भर के कई केंद्रों में पाये गये हैं – जो यह साबित करते हैं कि न्यूरोथेरेपी के पीछे 'हरी' यानि प्रभु का कितना बड़ा हाथ है। इसी कारण से गुरुजी के शिष्य इस विद्या के प्रति लिखे गये इस पुस्तक को **"न्यूरोथेरेपी वेद"** कहते हैं ।

वेद किसी एक मनुष्य द्वारा लिखा नहीं गया है, बल्कि वह ईश्वरी कृपा से प्राप्त ज्ञान है जो ऋषि मुनियों को ध्यान के दौरान प्राप्त हुआ था, जिसे उन्होंने समाज कल्याण के लिये दूसरों को सिखाया था। इस नज़र से देखा जाय तो न्यूरोथेरेपी (LMNT) के जनक डॉ. लाजपतराय मेहराजी भी किसी ऋषि-मुनि से कम नहीं हैं।

(6) Medulla

यह गुरुजी को प्राप्त हुआ सबसे पहला मेडूला ट्रीट्मेंट है। इसे देने से निम्न नतीजे पाये गये थे-

- शरीर का तापमान अगर नौरमल से कम हो तो उसे बढ़ाया जा सकता है।
- जिन्हें भूख या प्यास नहीं लगती उन्हें इस उपचार के तुरन्त बाद भूख वा प्यास लगने लगती है।
- हायपोथैलमस ब्रेन के 3rd वैन्ट्रीकल का दीवार बनाता है। मेनिन्जाइटिस (meningitis) नामक बीमारी में ब्रेन के 3rd ventricle नामक भाग में ब्लोकेज यानि रुकावट हो जाता है जिसके कारण CSF (ब्रेन के अंदर का फ्लूइड) 4th ventricle में नहीं जा पाता। एक बार गुरुजी के दिमाग में यह सोच आयी कि जिनको मेनिन्जाइटिस के कारण ब्रेन में तकलीफ आयी उनको इस उपचार से लाभ होगा। जब ऐसे पेशंटों को (6) Medulla दिया गया तो प्रभु की कृपा से सचमुच उनको लाभ हुआ। तो गुरुजी सोचते हैं कि यह उपचार 3rd और 4th वैन्ट्रीकल के बीच के सेरेब्रल ॲक्वीडक्ट (cerebral aqueduct) नामक रास्ते को खोल सकता है। (CSF = Cerebro-spinal fluid)



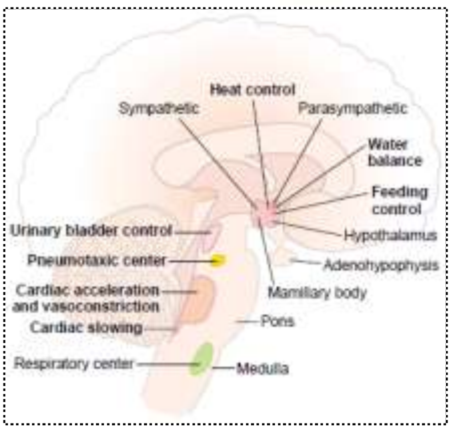
- ऐपिलेप्सी (epilepsy) यानि मिरगी की बीमारी तथा पैरालाइसिस (paralysis) के पेशंटों को भी इस उपचार से लाभ होता है।

ऊपर के कई सारे प्रभावों से गुरुजी ने अनुमान लगाया कि इस उपचार से हायपोथैलमस को उकसा सकते हैं। उसी अनुमान से इस उपचार का प्रयोग उन सब जगहों पर किया गया जहाँ हायपोथैलमस का कार्य है और उसमें काफी सफलता प्राप्त हुयी है।



हायपोथैलमस के निम्न अन्य उपयोग हैं, जिनके लिये भी (6) Medulla का प्रयोग किया जा सकता है -

- हायपोथैलमस द्वारा ऐन्टीरियर पिट्यूट्री के लिये TSH.RH, FSH.RH इत्यादि रिलीजिंग होरमोन्स (releasing hormones) बनाने के लिये, जिससे TSH, FSH इत्यादि निकलेंगे। (6) Medulla से हम ऐन्टीरियर पिट्यूट्री को आदेश दे सकते हैं, जो हम एन्डोक्राइन ग्रंथियों की बीमारियों को ठीक करने के लिये उपयोग करते हैं।



- यह सैंसरी नर्व्ज़ से आनेवाले संदेश को रोकता है जिससे दर्द का एहसास होने नहीं देता। यह काम एन्डॉर्फिन्स (endorphins) नामक केमीकल्स भी करते हैं।

कुछ और कार्य हैं जिसके लिये भी यह उपचार उपयोगी हो सकता है, जिसे उचित पेशंटों पर try करना है :-

- हायपोथैलमस के mamillary bodies नामक भाग को उकसाने -(Guyton 10th ed. p 684) के अनुसार mamillary bodies का फंक्शन है GIT की activity (यानि पेट एवं आंतडियों के कार्यों) का समग्र नियंत्रण - कम से कम खाना खाते समय की कुछ प्रक्रियायें - जैसे खाते वक्त जीभ से होंठों को चाटना एवं निगलने की प्रक्रिया को उकसाना इत्यादि।

(Taber's 18th edn.p 243 में लिखा है कि ये न्यूक्लियाई (nucleui) गन्ध सम्बन्धी इंपल्सों के (impulses) एक मुख्य रिले स्टेशन (प्रसारण केंद्र) हैं यानि नाक से ब्रेन तक गन्ध का एहसास करने के लिये इनकी जरूरत है।

- ब्रेन के मेडूला ओब्लोंगेटा में एक जगह है जहाँ से ब्रेन के एक बाजू के नर्व्ज़ शरीर के दूसरे बाजू की ओर आर–पार होती हैं – उसमें अगर कोई ब्लौकेज हो तो वह इस उपचार द्वारा ठीक होना चाहिये। इसे pyramids के crossing point कहते हैं।
- हायपोथैलमस में Optic chiasma (ओप्टिक कैयाज़्मा) नामक भाग है जिसमें आँखों के retina की अन्दरी बाजू की फाइबर्स (fibres) ब्रेन की एक बाजू से दूसरी बाजू की ओर आर–पार होती हैं।
- इन प्रभावों के अलावा, ऐसा लगता है कि इस उपचार से हम 6th Cranial nerve यानि छटी क्रेनियल नर्व को भी उकसा सकते हैं, जिससे हम पुतलियों के inferior oblique और lateral rectus नामक muscles से आयी गड़बड़ियों को ठीक कर सकते हैं। शायद यह कुछ किस्म के बेंगापन (squint) को ठीक करने में उपयोगी हो सकता है ??? इस प्रकार के रोगी ज्यादा मात्रा में हमारे पास नहीं आये हैं। आगे जाकर इस तथ्य को रोगियों पर test करना है।
- हायपोथैलमस सोमैटोस्टैटिन (somatostatin) नामक होरमोन भी बनाता है, जो एक इन्हीबिटरी होरमोन है (inhibitory hormone). सोमैटोस्टैटिन ग्रोथ हौरमोन को रोकता है – तो गुरुजी अनुमान लगाते हैं कि शायद इस उपचार से बच्चों की हाइट (height) यानि शरीर की कद के बढ़ने में रुकावट आ सकती है। अतः हम 13 से 20 साल के उमर के लड़के–लड़कियों को – जो हमारे पास हाइट बढ़ाने के उपचार के लिये आते हैं – उनको हम (6) Medulla नहीं देते, जब तक कि उसकी खास जरूरत न हो।

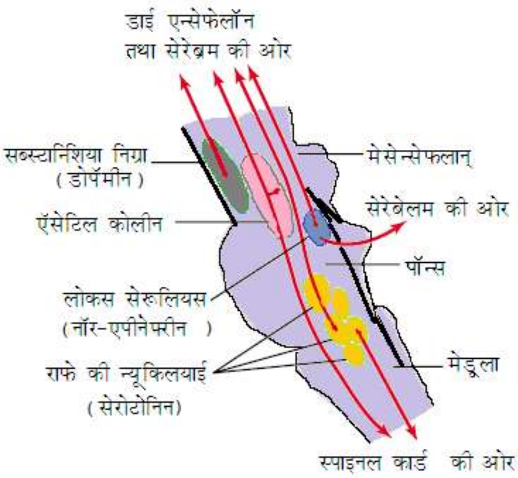
-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(8) Medulla

(8) Medulla देने से व्यक्ति को कुछ ही देर में गहरी नींद आने लगती है। अतः हम मानते हैं कि यह उपचार सेरोटोनिन (serotonin) नामक केमीकल को उकसाता है, जो नींद लाने के लिये आवश्यक है।

सेरोटोनिन कई जगहों में बनाया जाता है जिनमें मुख्य हैं – हायपोथैलमस, CNS के कुछ भागों में, तथा इन्टेस्टाइन के एन्टेरिक (enteric) न्यूरॉन्स। यह mental depression को control करता है। यानि शरीर में सेरोटोनिन की कमी से मनुष्य में उदासी या नींद नहीं आना इत्यादि हो सकते हैं।

- इस केमीकल के निकास को कई कारक कंट्रोल करते हैं जिनमें मुख्य हैं – stress यानि तनाव, सही समय पर न सोना, रक्त में ग्लूकोज़ की मात्रा, तथा व्यायाम। यानि इनमें कोई एक में भी गड़बड़ी हो तो सेरोटोनिन उचित मात्रा में नहीं निकलेगा। क्या डायाबीटीस के उपचार में (8) Medulla लाभ देगा ? यह try करना है।
- बढ़ते बच्चों के लिये भी डोपॅमीन एवं सेरोटोनिन दोनों जरूरी हैं।



- (Guyton 10th ed. p 520, 680) → सेरोटोनिन ब्रेन स्टेम के Medulla में नहीं, बल्कि median raphe (राफे) नामक भाग में बनता है। सो गुरुजी कहते हैं कि (8) Medulla उपचार द्वारा ब्रेन के **raphe** को उकसा सकते हैं, एवं राफे की गड़बड़ी से जो कोई बीमारी आये, उसे इस उपचार से ठीक कर सकते हैं।
- जब हेमोरेज (hemorrhage)[6] होता है, तब रक्त के platelets से सेरोटोनिन निकलता है जो उस जगह के blood vesssels को constrict यानि सिकुडवाता है, जिससे उस भाग में रक्त का प्रवाह कम हो जाता है । इस तरह वह प्लैटलैट्स के कार्य को एवं healing में मदद करता है। तो

[6] hemorrhage = असाधारण रूप से शरीर के अंदर या बाहर अत्यधिक रक्त बहने लगना। जब शरीर के अंदर ही अंदर होता है, उसे internal hemorrhage कहते हैं, और जब वह रक्त शरीर के अंदर ही जम जाता है, उसे हेमाटोमा कहते हैं (hematoma)। जब खून शरीर से बाहर निकल जाता हैं, उसे external hemorrhage कहते हैं।

क्या (8) Medulla Injury treatment में लाभ देगा ? यह try करना है src अगर हमें vascular permeability यानि रक्त नलिकाओं के अंदर चीजों की यातायात बढ़ानी है तो (8) Medulla देना है। {Ross & Wilson 9th ed. p 67, 226, 376 }

यह smooth muscles की contraction में मदद करता है एवं इन्टेस्टाइन की स्रावों को बढाता है।[7] यानि जहाँ कहीं भी हमें smooth muscles के कार्य को बढ़ाना हो तो (8) Medulla का उपयोग करना है। लेकिन यह इन्फ्लमेशन में histamine–जैसा काम करता है, एवं inflammation को बढ़ाता है।

यानि इन्फ्लमेशन की बीमारियों में **(8) Medulla** नहीं देना।

- इसके अलावा सेरोटोनिन हायपोथैलमस तथा extra neural tissues एवं Gastro-intestinal Tract में भी पाया जाता है। यह pancreatic juice के production यानि उत्पादन को रोकता है। शायद इसलिये ही कुछ लोगों को भोजन के तुरन्त पश्चात सोने से अपचन की शिकायत होती हो ???
- यह temperature यानि शरीर के तापमान का नियंत्रण करता है। ???
- (Taber's 18th edn.p 1745 – सेरोटोनिन mast cells में तथा carcinoid tumours में पाया जाता है। यह एक vaso-contrictor यानि रक्त नलिकाओं को सिकुड़ने का केमीकल है, जो sensory perception यानि संवेदना महसूस करने के लिये जरूरी है। यानि सेरोटोनिन से बी पी बढ़ सकती है सो कैन्सर में तथा high BP में (8) Medulla नहीं देना।
- सेरोटोनिन bananas यानि केले के फल में पाया जाता है (Taber's 18th edn.p 984) । इसलिये ही गुरुजी केले के छिलके की अंदरी सफेद परत को खाने के लिये कहते हैं ताकि हमारे शरीर में सेरोटोनिन की कमी न हो।
- पीनियल ग्लैंड में सेरोटोनिन बनने का जिक्र Guyton / Taber में नहीं है। Walter Pieropaoli की किताब में शायद यह लिखा गया है – देखना है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(10) Medulla

वेगास नर्व, दस नंबर की क्रेनियल नर्व है जो कि पेट(abdomen) की सब ग्रंथियों को उकसाती है। इसके असर से पेट की ऐसिड़ तीन गुना ज्यादा बढ़ जायेगी । यह एसिड़िक या कैन्सर की रोगीयों को नहीं देनी चाहिये। लोगों का कहना है कि कम चबाने के कारण संडास (stools) में अनपचा खाना आता है जब कि ऐसा नहीं है – गुरुजी दावे के साथ साबित करते हैं कि पेट की ऐसिड़ कम होने के कारण ही ऐसा होता है, जिसे हम (10) Medulla से ठीक करते हैं। (10) Medulla का प्रभाव डिसैन्डींग कोलन पर नहीं होता। डिसैन्डींग कोलन पर S,4,5 ट्रीट्मेंट का प्रभाव होता है – यह ध्यान रखना।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(12) Medulla

इसके दो अलग–अलग किस्म के प्रभाव देखे गये हैं –

इस से रात में या सोये पड़े उठनेवाले रोगीयों को जो फिट्स आती है उसे इस उपचार देने से फिट्स बहुत ही कम होते हैं या पूरा ही बन्द हो जाते हैं। ब्रेन में हिप्पोकैंपस (hippocampus) नामक भाग है जो फिट्स को कंट्रोल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। सो गुरुजी का अनुमान है कि इस उपचार से हिप्पोकैंपस के कार्य में सुधार ला सकते हैं।

लेकिन (12) Medulla उपचार का एक दूसरा प्रभाव है – जिन बच्चों की संडास में छोटे–छोटे ¼" से ½" तक के छोटे कीडे नजर आते है – उन्हें सोने से पहले यह उपचार देने से दूसरे ही दिन सुबह टट्टी में बहुत सारे कीड़े निकलते हुये देखा गया है। ऐसे तीन दिन देने से सारे कीड़े निकल जाते हैं। लेकिन यह क्यों और कैसे होता है, इसका राज केवल हरि जानते हैं। और यह उपचार अचानक ही गुरुजी को कैसे ज्ञात हुआ – यह एक और मिसाल है कि उनके ऊपर हरि की असीम कृपा है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

[7] Smooth muscles वे हैं जो involuntary actions यानि अनैच्छिक कार्यों का नियंत्रण करते हैं। ये खास कर पेट, आंतडियों, लंग्ज़ यानि फेफडे, पेशाब की थैली, यूटेरस एवं सभी रक्त नलिकायें के अन्दर तथा glands के ducts के अन्दर पाये जाते हैं।

(15) Medulla

यह उपचार भी एक अनोखा मिसाल है हरि की कृपा का। यह उपचार सबसे पहले उस समय प्राप्त हुआ जब किसी पेशंट को साँस की तकलीफ हुयी। { food poisoning से या कोई अन्य कारण ??? } जब गुरुजी ने (15) Medulla दिया तो उसको तुरन्त ही आराम पहुँचा। फिर गुरुजी ने किताबों से देखा कि Medulla में एक respiratory center यानि श्वसन केन्द्र है जो साँस लेने के लिये जरूरी है। और वह तब कार्य करता है जब ब्रेन से ॲसेटिल कोलीन निकलता है। उस उपचार के बाद गुरुजी ने अनुमान लगाया कि (15) Medulla ॲसेटिल कोलीन को बनाता या उकसाता होगा।

उस अनुमान के बाद, जहाँ–जहाँ ॲसेटिल कोलीन की जरूरत है वहाँ (15) Medulla दिया गया तो कमाल के results यानि नतीजे आने लगे। इनके कुछ अन्य उदाहरण देखिये –

- पैरा–सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टेम, आंतड़ियों के नर्वस सिस्टम, smooth muscles तथा क्रैनियल नर्व के कार्यों को उकसाने के पहले (15) Medulla देने से और भी अच्छे results आते हैं – मुख्यतः पाचन संस्थान के कार्यों के लिये इसका योगदान महत्वपूर्ण है।
- यह voluntary muscles यानि ऐच्छिक माँस–पेशियों के कार्य के लिये जरूरी है। अतः MND, GBS इत्यादि बीमारियों में (15) Medulla x 6 treatments देने से बहुत लाभ पाया गया है।
- Acetylcholine receptors की कमी से ही myasthenia gravis नामक बीमारी होती है। इस बीमारी का एक लक्षण है पलकों का अपने आप गिर जाना। इसमें (15) Medulla से बहुत लाभ देखा गया है।
- अगर Medulla oblongata में acetyl choline न हो तो lungs कार्य नहीं करेंगे। शायद यही कारण है कि साँस की तकलीफों के लिये (15) Medulla लाभदायक सिद्ध हुआ है। यह उपचार मुख्यतः उनके लिये बहुत अच्छा है जो कहते हैं कि उनको रात को सोते समय साँस रुक–रुक कर चलती है।
- खाना खाने के बाद अगर बर्तन को ठीक से साफ न किया जाय तो Botulinum नामक बैक्टीरिया पनप सकते हैं। इस दूषित भोजन खाने से ये बैक्टीरिया श्वसन केंद्र काम नहीं करता, और साँस न ले पाने के कारण रोगी की मौत हो सकती है। उन्हें (15) Medulla से बहुत लाभ होता देखा गया है।
- Acetylcholine सोमेटोस्टैटिन (somatostatin) को रोकता है। यानि अगर ट्यूमर इत्यादि को ठीक करने के लिये (2) Pan देना हो तो उन्हें (15) Medulla नहीं देना।
- Acetyl choline एवं epinephrine दोनों ही Prostaglandins को उकसाते हैं।
- यह सबसे नई खोज है – (Taber's 18th edn.p 376) : ॲसेटिल कोलीन choline (कोलीन) नामक amine से बना हुआ है, जो lecithin में पाया जाता है, जो कि बाइल (bile) का एक मुख्य अंग है। अगर बाइल ठीक से न बने तो फैट्स ठीक से नहीं पचेंगे। अतः जिनको फैट्स पचाने में तकलीफ है, शायद उनके शरीर में ॲसेटिल कोलीन ठीक से नहीं बनेगा – ऐसा भी तो हो सकता है ! यानि जिनके शरीर में ॲसेटिल कोलीन ठीक से नहीं बन रहा है उनके फैट्स के पाचन को भी सुधारने से ही वे पूर्ण रूप से ठीक होंगे – MD, DMD या MS के मरीजों को उपचार करते समय यह ध्यान देने वाली बात ह।
- एवं अगर choline बनाना हो तो हमें New Gal treatment देना है। ॲसेटिल कोलीन के कुछ अन्य कार्य हैं, जिनके लिये (15) Medulla देकर उचित पेशंटों पर test करना है।
- यह पसीने की ग्रंथियों को उकसाता है। शायद मुहासों के लिये इससे भी लाभ होगा। यह try करना है।
- सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टेम से जब ॲसेटिल कोलीन निकलता है – उससे सलाइवा यानि लार ज्यादा निकलती है तथा आंतड़ियों से vaso active intestinal peptide नामक कैमीकल निकलती है जिसके कारण लार ग्रंथियों की रक्त नलिकायें dilate हो जाती हैं। अर्थात् जिनके मुँह सूख जाते हैं, उन्हें (15) Medulla से लाभ होगा। UDF formula में हम (15) Medulla देते हैं, उसका एक और लाभ है कि लार ठीक से निकलेगी।
- ॲसेटिल कोलीन के प्रभाव से प्रोटीन्स, फैट्स तथा कारबोहाइड्रेट्स को acetyl-coenzyme A नामक कैमीकल में बदला जाता है जो fatty acids तथा sterols बनाने का precursor यानि मूल पदार्थ है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(20) Medulla

- यह उपचार देने के बाद पॉरकिन्सन की बिमारी के पेशंटों को जबरदस्त लाभ मिला है, जिससे अनुमान लगाया गया कि यह ब्रेन के substantia nigra नामक भाग को उकसाता है जहाँ डोपॅमीन (dopamine) नामक केमिकल बनता है। Dopamine अधिकांश एक inhibitory chemical यानि रोकने वाली केमीकल है जो ब्रेन के बैसल गैंग्लीया (basal ganglia) नामक भाग में कार्य करता है। उसका कार्य है शरीर के हाथ-पैर इत्यादि के अनचाहे हलचल को रोकना। यह अन्य जगहों में बनकर हायपोथैलमस तथा लिम्बिक सिस्टम (limbic system) में भेजा जाता है।
  (Guyton 10th ed. p 680) - डोपॅमीन अन्य जगहों में शायद उकसाने का कार्य करता है।
- डोपॅमीन का एक दूसरा कार्य है – prolactin को रोकना। उसी अनुमान से जब (20) Medulla उन औरतों को दिया गया जिनके शरीर में Prolactin की मात्रा ज्यादा है, तो उनके Prolactin levels कम होते देखे गये।
- कई औरतें जिनके breasts यानि स्तन के size (यानि आकार) नौरमल से बडे हैं, उनको इसी उपचार से कम होता हुआ देखा गया है। शायद इसका कारण यही है कि prolactin बढ़ने से breasts आकार में बढ़ते हैं।
- चूंकि डोपॅमीन अंगों के हलचल को रोकता है, इसलिये fits के उपचार में भी (20) Medulla दिया जाता है जिससे कई पेशंटों को लाभ मिलता हुआ देखा गया है।
- Guyton 10th ed. p 852 – डोपॅमीन एवं सेरोटोनिन दोनों ग्रोथ होरमोन GH की secretion rate यानि निकास की गति को बढ़ाते हैं, यानि हाईट (height) बढ़ाने के लिये (20) Medulla और (8) Medulla दोनों देना चाहिये।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(30) Medulla

यह भी एक गजब का उपचार है जिसके प्रति "ईश्वरी अनुग्रह " के अलावा यह कहना कठिन है कि इस उपचार की प्रेरणा गुरुजी के मन में कैसे आयी। इस उपचार के कई विभिन्न उपयोग हैं।

- मुख्यतः यह inflammation के सूजन को तुरन्त ही कम कराता है। अतः यह पोलियो के पेशंटों को तथा घुटने में दर्द के साथ गर्मी और लाली भी हो तो तुरन्त आराम पहुँचाता है।
- जब किसी को नाभी के बायीं side पर 'Mu' वाले प्वाइंट पर दर्द हो तो हम समझते हैं कि आंतडियों में इन्फ्लमेशन (inflammation) होने के कारण दर्द होता है। ऐसे लोगों को टट्टी में आव (mucus)भी आ सकती है। इस उपचार से 'Mu' प्वाइंट का दर्द तथा आव का आना दोनों में तुरन्त लाभ मिलता है।
- दवाइयों के दुष्प्रभाव को खत्म करने में इस उपचार का बहुत बडा हाथ है। उदाहरण के लिये - पेशंट आकर कहते हैं कि उनको कुछ साल पहले किसी ऑपरेशन या इंजेक्शन (injection) के बाद से कोई सूजन या दर्द आया, जो पहले नहीं था – इसका मतलब हम समझते हैं कि वह दर्द उस इंजेक्शन के दवाई के side effect से आया है । उसके लिये जब हम (30) Medulla देते हैं तो बरसों पुराना दर्द भी एक या दो उपचारों में खत्म हो जाता है।
- वैसा ही यह उपचार बिच्चू या साँप काटने के जहर को या किसी भी जड़ी-बूटी के वजह से कोई खुजली इत्यादि हो तो उसे भी खत्म कर देता है।
- मासिक धर्म में अगर दर्द हो तो (30) Medulla के 1 या 2 उपचार के बाद दर्द खत्म होते देखे गये हैं। {Taber - Dysmenorrhia – primary में लिखा है कि प्रोस्टाग्लैन्डिन्स के बढ़ने से यूट्रस के मस्सल ज्यादा सिकोडने से शायद वहाँ इस्कीमिया यानि रक्त के प्रवाह में रुकावट हो जाती है। सोचा जाता है कि मैन्सस में दर्द का यही शायद मुख्य कारण है। (30) Medulla देने से मैन्सस की दर्दें कम होती हैं, ऐसे कई औरतों पर साबित हो चुका है, सो हमें यकीन हो गया है कि यह उपचार प्रोस्टाग्लैन्डिन्स के कार्य को सुधारता है।}
- Rheumatoid Arthritis, Multiple sclerosis जैसे auto immune disorders में बहुत लाभ मिलता है।
- अस्थमा में पेशंट को तुरंत ही आराम पहुँचता है – शायद ब्रोंकियोल्स (bronchioles) रिलैक्स होते हैं।
- इस उपचार से सिस्टोलिक बी पी तुरंत ही कम हो जाती है।
- Paralysis के पेशंटों के उपचार में (30) Medulla बहुत उपयोगी है। खास कर जो पैरालाइसिस हाई बी पी के कारण हुआ हो।

ऊपर के कई सारे लक्षणों से गुरुजी को ऐसा लगा कि यह उपचार शरीर में कुछ प्रकार के प्रोस्टाग्लैन्डिन्स (Prostaglandins) नामक केमीकल्स को उकसाता है या उनके कार्य को सुधारता है

प्राणियों के शरीर में 14 तरह के प्रोस्टाग्लैन्डिन्स होते हैं जब कि मानव शरीर में 13 किस्म के प्रोस्टाग्लैन्डिन्स होते हैं जिनके अलग-अलग नाम होते हैं। प्रोस्टाग्लैन्डिन्स शरीर के कई जगह में बनते हैं और जहाँ बनते हैं उसी जगह के आसपास ही काम करते हैं।

Prostaglandins A एवं E - ये बीपी को कम कराते हैं। Prostaglandin F - बीपी को बढाता है

Prostaglandins E_2 और Interleukin #1 दोनों मिलने से fever यानि बुखार आती हैं।[8]

प्रोस्टाग्लैन्डिन्स किडनीज़ के रक्त नलिकाओं को dilate करवाते हैं, नमक और पानी को किडनीज़ द्वारा बाहर निकालते हैं जिससे हाई बीपी कम होगा।

ये ऑटो इम्यून डिसार्डर में T-suppressor cells को उकसाते हैं जिससे MS (multiple sclerosis) जैसी बीमारियों में लाभ होता है।

हम हृदय रोग के मरीजों को (30) Medulla नहीं देते ताकि अनजाने में उन्हें नुकसान न पहुँचे। क्योंकि यह नहीं पता कि (30) Medulla का उपचार किन-किन प्रोस्टाग्लैन्डिन्स को उकसाता है।

प्रोस्टाग्लैन्डिन्स के कार्यों के अनुसार (30) Medulla के कुछ अन्य उपयोग इस तरह हो सकते हैं -

- ये सारे शरीर की छोटी नाडियों (capillaries) के अन्दरी दीवार को एकाएक मजबूत बनाते हैं। इसका ऊमदा उपयोग गुरुजी ने परप्यूरा (purpura) बीमारी के इलाज में किया है। इस बीमारी में त्वचा के नीचे जगह-जगह पर अपने आप या हल्का-सा दबाने पर ही कहीं भी capillaries फट जाती हैं, जिससे हेमोरेज (hemorrhage) यानि नलिकाओं से रक्त निकल कर आसपास की टिशूज़ में जमने लगता है। गुरुजी ने अनुमान लगाया कि प्रोस्टाग्लैन्डिन्स के उपचार से इसे ठीक किया जा सकता है - क्योंकि वे रक्त नलिकाओं के अन्दरी दीवार को मजबूत बना सकते हैं। जब पेशंट को (30) Medulla दिया गया तो उसे तुरन्त ही यह लाभ हुआ कि दबाने पर वह जगह नीला नहीं पड़ा, जो कि पहले होता था। जिससे यह साबित हुआ कि (30) Medulla किसी अतुल तरीके से शरीर में प्रोस्टाग्लैन्डिन्स को उकसाता है।
- नर्वस सिस्टम (nervous system) पर प्रोस्टाग्लैन्डिन्स का काफी प्रभाव है। शायद यही कारण है कि MND, GBS जैसे नर्वस सिस्टम की बीमारियों में (30) Medulla से पेशंटों को बहुत आराम पहुँचता है।
- आँख की पुतली फैली हुई हो तो वह छोटी हो सकती है।
- प्रोस्टाग्लैन्डिन्स कोलेस्ट्रॉल के उत्पादन को रोकते हैं। यानि जिन्हें रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा बढ़ी हुयी हो उन्हें (30) Medulla से लाभ होगा।
- यह प्लैटलैट्स की जमावट को तथा रक्त में अनचाहे थक्के बनने की प्रक्रिया को रोकता है। इसलिये ही यह उपचार MS यानि मल्टीपल स्क्लेरोसिस (multiple sclerosis) की बीमारी में लाभ देता है।
- RBC's के अन्दर अगर कोई गड़बड़ी हो जिससे उनमें defect पैदा हो, तो प्रोस्टाग्लैन्डिन्स उन्हें सुधारकर नौरमल बनाती हैं। इस प्रकार वे RBC's की गड़बड़ी की बीमारियों में काम आते हैं।
- प्रोस्टाग्लैन्डिन्स gastric ulcer यानि पेट में घाव या छाले होने से बचाते हैं।
- संभोग के समय पुरुषों की सेमीनल वैसीकल्स (seminal vesicles) - यानि वह थैली जिसमें semen (वीर्य) स्टोर किया जाता है - एवं औरतों का वजैना (vagina) यानि योनि अधिक मात्रा में प्रोस्टाग्लैन्डिन्स बनाते हैं। सो संभोग से पहले पति को (30) Medulla लेना है और संभोग के तुरन्त बाद पत्नी को (30) Medulla देने से गर्भदान में बहुत लाभ होगा। जो हमारे पास बांजपन के उपचार के लिये आते हैं, उन्हें क्लिनिक में अन्य उपचार देते जायें। साथ में (30) Medulla का उपचार दोनों को सिखा दें और कहें कि पति पत्नी एक दूसरे को दें तो जल्दी फायदा हो सकता है।
- **Delivery** यानि प्रसव के समय में fetus के membranes अधिक मात्रा में prostaglandins बनाते हैं जो uterus के contractions यानि गर्भाशय के सिकोडने की क्षमता को बढाकर बच्चे को नारमल delivery

[8] Interleukin #1 – एक केमीकल है जो न्यूट्रोफिल्स, मैक्रोफैजस एवं लिम्फोसाइट्स के कार्य को उकसाता है।

होने में मदद करता है।[9] हमने पाया है कि (30) Medulla देने के कुछ घंटों के बाद labor pain के spasms यानि प्रसूति वेदना के दौरे आते हैं और बच्चा नौरमल डिलीवरी में पैदा होता है। यह उन औरतों के लिये भी लाभदायक है जिनको ultrasound करने के बाद पता चला कि यूटेरस में बच्चे का सिर सही दिशा में नहीं है। (Dystocia = difficult labor)

- जब बच्चा बाहर निकलता है उस समय में placenta के अलग होने के जगह से कुछ prostaglandins निकलते हैं जो vaso-constrictors हैं, यानि वे रक्त नलिकाओं को संकुचित करते हैं। शायद यह इसलिये है कि शरीर से ज्यादा रक्त न निकल जाये। तो डिलीवरी के बाद भी (30) Medulla देने से शायद लाभ हो सकता है – यह उचित पेशंट पर try करना है।
- Acetyl choline एवं epinephrine दोनों ही Prostaglandins को उकसाते हैं।
- Prostaglandins, norepinephrine तथा epinephrine मिलकर erythropoietin के उत्पादन को बढाते हैं – जो बोन मैरो (bone marrow) को RBC's बनाने का संदेश देते हैं। जब किडनी ठीक से काम न करने के कारण शरीर में RBC's की कमी हो, तो इन सारे अंगों को उकसाकर हम ऐरीथ्रोपोयेटीन के उत्पादन कर सकते हैं। उसका फॉरमुला ऐसा होगा – यह उचित पेशंट पर try करना है।

  I (15) Medulla (6) Lt. Swt - ॲसेटिल कोलीन तथा ऐपीनैफ़रीन के लिये

  II (30) Medulla (6) Right Swt (6) Lt. Swt - ऐरीथ्रोपोयेटीन बनाने के लिये
- Prostaglandins E_1 & I_1 शायद GFR यानि किडनीज़ के अंदर फिल्ट्रेशन की गति तथा किडनीज़ के अंदर रक्त के प्रवाह को कम होने को रोक सकते हैं (Guyton 10th ed. p 290).

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

ऊपर के सभी उपचार के बाद खोज किये गये **(2) Medulla** और **(4) Medulla** के उपचार **:** सो इनको इधर दिया गया है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(2) Medulla

यह उपचार 2nd Cranial nerve यानि दो नंबर की क्रेनियल नर्व को उकसाता है जो कि आँखों से निकलकर माथे के पीछे तक जाती है। (2) Medulla उपचार के बाद ब्रोड़मैन्ज़ एरिया (Brodmann's area) नंबर 17,18 की घिसाई करने से आँखों तथा स्पीच की प्रोब्लेम में बहुत लाभ देखा गया है। (2) Medulla से ataxia एटैक्सीया एवं पॉरकिन्सन के रोगीयों को काफी आराम हुआ है।

Guyton 10th ed. p 586 में लिखा है कि रेटीना से चार किस्म के न्यूरो ट्रान्स्मीटर निकलते हैं – ॲसेटिल कोलीन, डोपॅमीन, GABA तथा indolamine. तो गुरुजी ने अनुमान लगाया कि (2) Medulla से GABA निकलता है। GABA का मुख्य काम है कि वह हाथ-पैर इत्यादि अंगों के अनावश्यक हलचल को रोकता है। इसी सोच से जिन्हें पार्किन्सन की बीमारी है, उन रोगियों को (2) Medulla x 6 treatments दिया गया तो उनके हाथ का हिलना तुरंत ही काफी कम हुआ। तो यह शायद जाहिर है कि (2) Medulla उपचार GABA को उकसाता है। गुरुजी ऐसा भी सोच रहे हैं कि इसी उपचार से ब्रेन के Pons के भाग को भी उकसा सकते हैं। इसमें और खोज जारी है।

[9] प्रसूति के समय गर्भ के मेम्ब्रेन्स (fetal membranes) से प्रोस्टाग्लैन्डिन्स भारी मात्रा में निकलती हैं जो यूट्रस के सिकोड़ने की शक्ति को कई गुना बढ़ा देते हैं। - Guyton

(4) Medulla

पहले पहले यह उपचार इस प्रकार दिया जाता था – (4) Medulla clockwise + ♀ T1/T2
जिससे निम्न लक्षणों में राहत देखा गया –

- सरवाईकल के नर्व्ज़ C1-C4 की तकलीफें
- दाहिने और बायी छाथी का दर्द
- माईट्रल वाल्व का दर्द,
- स्पलीन का दर्द ,
- डायाफ्राम के ऊपरी भाग का दर्द
- सरवाइकल मनका नंबर 1 से 4 तक के दर्द निकलेंगे तथा T1/2 देने से राईट और लैफ्ट चैस्ट पेन)
- सरवाईकल के नर्व्ज़ C5-C8 की गड़बड़ी के कारण जो निम्न दर्दें आती हैं –
  भुजायें, कोहनी, हाथ, कलाई, हथेली, उंगलियाँ इत्यादि इत्यादि के सभी दर्द निकल जाते हैं

इस उपचार के साथ Raman treatment भी दिया जाये तो दोनों हाथों की चौथी ऊंगली का दर्द निकल जाता था जिसे हम RA (Rheumatoid arthritis) की एक निशानी समझते हैं।
पहले Raman treatment गर्दन के दोनों बाजुओं पर देते थे तो पाया गया कि इस उपचार से ऐसिड कम होती है यानि अल्कालीन बहुत बढ़ जायेगी।

सो उस उपचार को Liv^0 – Mu^0 का दर्द चेक करने के बाद ही देनी चाहिये। और यह उपचार उनको देना है जिन्हें Mu^0 में ज्यादा दर्द है और Liv^0 में दर्द कम है या नहीं है।

अगर इस उपचार को दर्द चैक किये बिना ही दें और उस रोगी को अगर Liv^0 में दर्द हो और Mu^0 में दर्द न हो तो यह उपचार देने के तुरन्त बाद से दर्दें बहुत बढ़ सकता है क्योंकि अल्कालीन बढ़ने का एक लक्षण है माँस-पेशियों में कड़कपन और उसके कारण दर्दों का आना। सो उपचार देते समय इस बात का ध्यान रहे।
आजकल Left Raman तथा Right Raman treatment ऐसे विभाजन किया गया है।

अगर पेशंट को Mu^0 में या बायें हाथ की अनामिका उँगली में दर्द हो और Liv^0 में नहीं तो Left Raman देना है। और अगर Liv^0 में दर्द हो या दाहिने हाथ की अनामिका उँगली में दर्द हो तो Right Raman देना है। और अगर दोनों में समान दर्द हो तो गर्दन के दोनों बाजुओं पर देना है। आगे अनुभव से समझ आयेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

क्रेनियल नर्व (Cranial nerves) के लिये मेडूला उपचार
इसके बाद कुछ उपचार हैं जो कई पेशंटों पर आजमाने के बाद यह निश्चित है कि ये वही काम करते हैं जो उस नंबर की क्रेनियल नर्व (cranial nerve) करती है।

(1) Medulla	गन्ध के एहसास के लिये – यानि जिसका नाक बन्द न हो और फिर भी उन्हें गन्ध महसूस न हो उन्हें इस उपचार से लाभ होता है।
(2) Medulla	आँखों तथा स्पीच के लिये, GABA को उकसाने के लिये
(3) Medulla	डबल विज़न यानि जिन्हें दो-दो दिखते हों – जैसे कि मल्टीपल स्क्लेरोसिस बीमारी में
(4) Medulla	स्प्लीन तथा माइट्रल वाल्व का दर्द तथा छाती के दर्द के लिये। सरवाइकल स्पोन्डीलोसिस या स्पोन्डीलाइटिस के लिये । एवं लंग्ज़ को उकसाने।
(5) Medulla	जबडे, गाल, दाँत या होठों के सभी प्रोब्लेम के लिये। सभी प्रकार के खाँसी के लिये। ब्रेन या माथे के कई सारे प्रोब्लेम में उपयोगी

(6) Medulla	भूख, प्यास एवं शरीर के तापमान बढ़ाने तथा शरीर के दर्दों को कम करने। ब्रेन के हायपोथैलमस को उकसाता है जिससे रिलीज़िंग हौरमोन्स निकलेंगे और ऐन्टीरियर पिट्यूट्री को अपने हौरमोन बनाने के लिये उकसायेंगे – जिससे हम निम्न ग्रंथियों को उकसा सकते हैं – थायरौइड ग्लैंड, ओवरीज़ या टैस्टीस, प्रोलैक्टीन, ग्रोथ हौरमोन एवं ऐड्रीनल कौरटेक्स । यह शायद 6th क्रेनियल र्नव द्वारा आँखों के muscles को कंट्रोल करता है। कुछ प्रकार के डबल विज़न को भी ठीक कर सकता है।
(7) Medulla	Bell's palsy जिसमें मुँह का एक तरफ टेढा होता है। आँख बन्द करने में तथा खुलकर हँसने में प्रोब्लेम के लिये।
(8) Medulla	कान के सभी प्रोब्लेम के लिये एवं सेरोटोनिन के लिये जो नींद लाने के लिये तथा अतीव उदासी को ठीक करने के लिये जरूरी है। इस से ब्रेन के मेडूला और पौन्स (pons) के बीच के रॅफे (raphe) भाग की हर बीमारी को ठीक कर सकते हैं।
(9) Medulla	भोजन का स्वाद या निगलने के प्रोब्लेम के लिये। खाते समय ठसका हो तो इस उपचार से तुरन्त – बगैर पानी पिये ही – ठीक कर सकते हैं।
(10) Medulla	यह वेगस नर्व द्वारा डिसेनडिंग कोलन को छोडकर पाचन संस्थान के सारे भाग को उकसाता है। लंग्ज़ को सिकोडता है। हृदय की तेज गति को कम करता है। हृदय रोग के मरीजों को (10) Left Medulla ही देना है।
(11) Left Medulla	कंधे को उठा नहीं पाना। कंधा जकड जाना और दर्द होना – उसके लिये देना है। frozen shoulder के लिये उत्तम उपचार है।
(11) Right Medulla	मार लगने पर या अन्य कारणों से कंधा अपने जगह से नीचे उतर जाये तो उसे ठीक करने के लिये देना है। इसे shoulder dislocation कहते हैं
(12) Medulla	ब्रेन के हिप्पोकैम्पस (hippocampus) नामक भाग को उकसाता है। जो fits नींद में आये या नींद से उठने के तुरन्त बाद आये उसे ठीक करने। पेट या आंतडियों में कीडे या किरमी को तुरन्त ही खत्म करता है।

क्रेनियल नर्व के अलावा निम्न मेडूला उपचार अन्य केमीकल्स के कार्यों को उकसाते हैं –

(15) Medulla	ॲसेटिल कोलीन acetylcholine – माँस-पेशियों को उकसाने के लिये तथा श्वसन सम्बन्धी बीमारियों में, खास कर जिन्हें रात को कुछ देर तक सांस रुक जाने-जैसा एहसास हो
(20) Medulla	डोपॅमीन – पॉरकिन्सन, बच्चों में निमोनिया या जिन औरतों में प्रोलैक्टीन की मात्रा बढ़ी हुयी हो
(30) Medulla	प्रोस्टाग्लैन्डिन्स – इन्फ्लमेशन, दवाइयों के दुष्प्रभाव, पेट में अल्सर, अस्थमा या सांस की तकलीफें इत्यादि। हृदय के मरीजों को नहीं देते।

क्रेनियल नर्व की कार्यों की संपूर्ण एवं विस्तुत जानकारी आगे दी गयी है। (Page)

ध्यान दें कोई भी क्रेनियल नर्व के उपचार करने से पहले **(15) Medulla x 1 treatment** देने से ज्यादा लाभ होगा (Give acetylcholine before any stimulation of SNS or PSNS.)

पाचन संस्थान को सुधारने के अन्य फौरमुले - **Other formulas for setting the abdomen**

Chole Treatment

अक्सर गुरुजी के पास लोग आते थे जो कहते थे कि उन्हें तली हुयी चीज खाने के बाद छाती में जलन-सी होती है (Chest burning sensation)। उनको NAN formula देने के बाद कुछ देर तक आराम रहता, लेकिन फिर से जलन शुरू हो जाती थी।

आम तौर पर ऐसा कहा जाता है कि पेट में ऐसिड बढने के कारण ही छाती में जलन हो रही है जब कि हमेशा ऐसा नहीं होता। यह गुरुजी की अनुपम खोज है कि निम्न कारणों से छाती में जलन-सी होती है

- लिवर या गौलब्लैडर (gall bladder) sluggish हैं यानि मन्द गति से काम कर रहे हैं।
- शरीर में कोलसिस्टोकाइनिन (cholecystokinin) या सिक्रेटिन (secretin) नहीं बन रहे।
- या ऐम्पूला औफ वैटर (ampoulla of vater) में कोई blockage है। (इसके बारे में नीचे देखें)

अगर पेशंट बतायें कि उन्हें तली हुयी चीज़ें खाने के कुछ देर बाद परेशानी होती है - जैसे, पेट भारी-भारी लगता है, या खट्टी डकार आते हैं, या उन्हें छाती में जलन-सी होती है,[10] तो इसका मतलब है कि उनका लिवर या गौलब्लैडर sluggish है यानि वे ठीक से काम नहीं कर रही हैं। पाचन संस्थान का दस्तूर है कि ड्युओडेनम (duodenum) एवं जेजुनम (jejunum) की motility यानि गति तब तक कम रहेगी जब तक जो भोजन ड्युओडेनम में है, वह ठीक से पच नहीं जाये। इसलिये उसमें से खाना जल्दी आगे नहीं बढता, और खाना आगे बढ़ने तक पाइलोरिक स्फिन्क्टर pyloric sphincter नहीं खुलेगा। इसके कारण ऐसिड-युक्त खाना ज्यादा देर तक पेट में ही रहता है, जिससे जलन महसूस होती है और यह लगता है कि ऐसिड बढ़ गयी है जब कि सच तो यह है कि ऐसिड नौरमल है लेकिन लिवर या गौल ब्लैडर कम काम कर रहे हैं। तो फैट्स के पाचन को ठीक करने के लिये, पहले उनको हम गौल ब्लैडर तथा लिवर का ट्रीट्मेंट देंगे -

(3) Gal (7) Liv x 2 treatments या (1) Gal (4) Liv x 2 treatments दें।[11]
इसी से रोगी को तुरन्त ही काफी आराम मिल जाता है।

दूसरी बात - जेजुनम की मोटिलिटी (motility)[12] तब तक भी कम रहेगी जब तक ड्युओडेनम (duodenum) में proteins ठीक से नहीं पचें। ऐसे पेशंट कहेंगे कि उन्हें मूंगफली खाने से, या राजमा, छोले या नौन-वेज (non-veg) जैसी भारी प्रोटीन्स खाने के बाद खट्टी डकार आती हैं या पेट भारी-भारी लगता है इत्यादि। सो उसके लिये कोलिसिस्टोकाइनिन (CCK यानि cholecystokinin) हौरमोन की ज़रूरत है जो पैंक्रियास को संदेश देगा कि वह digestive enzymes यानि सभी पाचक एन्ज़ाइम्स भेजे।

अब CCK को उकसाने का कार्य तो वेगस नर्व का है, जो कि हम LMNT में (10) Medulla द्वारा करते हैं। साथ में हमें इन्टेस्टाइन की (motility) यानि गति को बढ़ाना है ताकि जो भोजन पहले से है वह आगे बढ़े, तथा Secretin, CCK होरमोन्स तथा पैंक्रियास के पाचक स्राव निकलेंगे। हमने पाया है कि Gas 'I' उपचार से इन्टेस्टाइन के कार्य तथा उसकी motility बढ़ती ह।

CCK का मुख्य कार्य है - गौल ब्लैडर को बाइल भेजने के लिये उकसाना। यही कार्य हम 'Gal' से करते हैं। इन तीनों से निम्न उपचार बनाया गया जो अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ -

Chole treatment formula (10) Medulla (6) Gas I (3) Gal.

(10) Medulla - वेगस यानि दसवां क्रेनियल नर्व द्वारा पाचन संस्थान को उकसाने के लिये
(6) Gas I - जेजुनम और ईलियम को उकसाने, जिससे Secretin, CCK तथा पाचक स्राव निकलेंगे
(3) Gal - गौल ब्लैडर को उकसाने जिससे फैट्स को पचाने के लिये बाइल निकलेगा

---

[10] शायद 80% से ज्यादा patients को ऐसा ही होता है।

[11] अगर क्रौनिक (chronic) यानि पुराणी बीमारी हो तो (1) Single point Liver x 6 trt. अत्यन्त लाभदायक है।

[12] कोई भी चीज़ या वस्तु एक जगह से दूसरे जगह की ओर जिस speed या रफ्तार या तेजी से बढती है, उसे motility कहते हैं। इधर इसका मतलब है खाना कितनी तेजी से पेट से बडी आंत की ओर चलती है।

इस उपचार के बाद देखा गया कि फैट्स और भारी प्रोटीन अच्छी तरह से पचने लगते हैं। चूंकि पाचन का मुख्य भार Cholecystokinin हौरमोन का है, तो इस उपचार का नाम संक्षेप में Chole रखा गया।

अन्य उपयोग –

- कुछ पेशंट जिनको छाती में जलन होती थी उनको High BP भी होती थी। जब उनको यह उपचार दिया गया तो देखा गया कि उनकी सिस्टोलिक बीपी कम होती है। गुरुजी ने काफी सोच-विचार कर के उस पर अभ्यास किया कि यह कैसे हुआ – जिसका अनुमान इस प्रकार है –
- हमारी पाचन संस्थान सही तरह से काम करने के लिये PSN यानि पैरा-सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टेम का ठीक से काम करना बहुत ही जरूरी है। PSN का एक मुख्य काम है पाचक अंगों को सही समय पर रक्त का प्रवाह बढा देना। जब PSN का काम बिगड जाता है तो खाना पचेगा कैसे ? हाई बी पी के पेशंटों में देखा गया है कि उनकी नाभी के ठीक ऊपरी भाग में बहुत दर्द रहता है। उस भाग में दर्द है यानि उनके इन्टेस्टाइन – खास तौर से ड्युओडेनम एवं जेजुनम – को ठीक से रक्त नहीं मिल रहा है। इसलिये गुरुजी ने अनुमान लगाया कि उनके शरीर में Secretin और CCK के कार्य ठीक प्रकार से नहीं हो पायेंगे। शरीर विज्ञान से प्राप्त जानकारी की गहराई तक जाकर अपने एक अनोखे व original दृष्टिकोण से गुरुजी ने उस ज्ञान को उपयोग करके एक अनुपम उपचार की खोज कैसे की है देखिये।
- इतना ही नहीं, PSN ठीक से काम करने से शरीर में इन्सुलिन बढ़ेगी तो रक्त में शुगर की मात्रा कम होगी। इसलिये ही शायद यह उपचार डायाबीटीस के कुछ मरीजों को अच्छा लगा। लेकिन डायाबीटीस के कुछ अन्य मरीजों को (10) Medulla देने पर उनको अच्छा नहीं लगा। सो शायद (10) Medulla उनको नुकसान करता है। तो इस बात को ध्यान में रखना है कि जिन डायाबीटीस के मरीजों को (10) Medulla अच्छा न लगे उन्हें (10) Medulla नहीं देना।
- कुछ किडनी फेल्यूर (kidney failure) के पेशंटों में इस उपचार से क्रेटीनाइन (creatinine) एवं शुगर दोनों कम होते पाये गये है। जब कि कुछ और लोगों में उल्टा असर भी देखा गया है। अतः किडनी फेल्यूर के रोगियों को यह उपचार नहीं देते कि कोई गड़बड़ी न हो – इस का ध्यान रहे।
- *कई मरीजों पर प्रयोग करके देखा गया कि यह उपचार निम्न बीमारियों में भी लाभ देता है –*
  - ✓ कैटेरैक्ट (cataract) यानि मोतिया,
  - ✓ रेटीनाइटिस पिग्मेंटोज़ा (retinitis pigmentosa)
  - ✓ night blindness यानि शाम को कम दिखना (इसे रतौंधी या रतिंधा भी कहते हैं)
- यह उपचार देने से एब्डोमन एक दम ठीक हो जाता है। पाचन तथा अवशोषण ठीक होने के कारण सब ग्रंथियाँ ठीक प्रकार से काम करने लग जाती हैं। यह उपचार मन्द बुद्धि के बच्चों को बहुत लाभ देता है। अगर प्रेगनैन्सी के दौरान किसी औरत को हाई बी पी हो जाये तो उसकी किडनीज़, ब्रेन तथा लिवर में arterial spasm हो जाते हैं, यानि आरटरीज़ में जकड़न-सी आ जाती है जिससे वे ठीक तरह से संकुचित नहीं हो पाती और यही असर बच्चे के उन अंगों पर भी पड़ेगा ही।
- (Guyton 10th ed. p 951) प्रेगनैन्सी में हाई बी पी होने के कारण किडनीज़ पर निम्न प्रभाव पड़ते हैं – यूरिन द्वारा असाधारण मात्रा में प्रोटीन्स निकल जाते हैं तथा किडनीज़ के अन्दर रक्त का प्रवाह तथा glomerular filtration rate (यानि किडनीज़ की फिल्टर करने की गति) दोनों ही कम हो जाते हैं – इसका मतलब उस औरत के शरीर से toxins यानि अनावश्यक व फालतू चीजें ठीक तरह से निकल नहीं पायेंगी। उन सबका असर बच्चे पर पड़ेगा ही !
- इस उपचार को पेट set करने के लिये उपयोग करना है तो निम्न प्रकार देने से और अच्छे नतीजे आते हैं – I (10) Medulla (6) Gas 'I' – सिक्रेटिन के लिये II (10) Medulla (3) Gal –CCK के लिये

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Vater treatment formula

कभी कुछ ऐसे पेशंट आते थे जिनको ऊपर के उपचारों से लाभ जरूर हुआ लेकिन कुछ दिन बाद दर्दें वापस आ जाती थीं। Pain points चैक किया तो 'Gal' 'Liv' इत्यादि points में काफी दर्द पाया गया। (3) Gal (7) Liv दिया गया तथा अन्य उपचार दिये गये, तो भी खास फर्क नहीं मिला।

तो गुरुजी ने काफी सोच-विचार के बाद यह अनुमान लगाया कि बाइल आने के रास्ते में यानि Ampoulla of Vater में अगर कोई blockage हो तो बाइल गौल ब्लैडर में ही जमने लगेगा और उस का असर लिवर पर भी पडेगा न ? फिर उन्होंने अपनी ही अनोखी शैली में सोचा कि इस Ampoulla of Vater को खोलने के लिये क्या-क्या करना है ?

- पाचन संस्थान के लिये वेगस दस नंबर के क्रेनियल नर्व को उकसाना है। (10) Medulla यह काम करेगा।
- यह तकलीफ बार-बार आती है तो शायद नाभी खिसकी हुयी है, उसे ठीक करना है। ONS से नाभी set होगा।
- पीनियल ग्लैंड को master gland कहते हैं। अगर पीनियल ग्लैंड ठीक से काम न करे तो भी शरीर की फंक्शन्स में गड़बड़ी होगी।
- गौल ब्लैडर तथा लिवर को ज्यादा उकसाना है कि उनका स्राव तेजी से निकले और जो भी रुकावट है वह flush out हो जाये, यानि जोर से बाहर ढ़केला जाय।

तो इस तरह से विचार करके निम्न फॉरमुला बनाया गया -

Vater treatment

I (10) Medulla (3) ONS (½) Ku-40 seconds (8) Gal (max.)
II (10) Liv (max.)

[याद रखने का तरीका है - 103, 408, 10 – समझे ?]

इस फॉरमुला में हर प्वाइंट का उपयोग दुबारा देखिये -

(10) Medulla	- वेगस दस नंबर के क्रेनियल नर्व को उकसाना है।
(3) ONS [Old Nabhi Set]	- नाभी को set करने के लिये
(½) Ku – 40 secs	- पीनियल ग्लैंड को उकसाने के लिये
(8) Gal (max.)	- गौल ब्लैडर को ज्यादा मात्रा में बाइल निकालने को उकसाने

यह उपचार देते ही पेशंट को इतनी relief मिली, कि क्या कहें ! तो इसका मतलब गुरुजी का अनुमान सौ फीसदी सही था और इस उपचार ने बाइल के रास्ते में Ampoulla of Vater तक जो भी रुकावट थी, उसे खोल दी होगी। इसलिये इस फॉरमुला को Vater treatment नाम दिया गया। इस ट्रीट्मेंट से पूरा पेट set' हो जाता है और 'Gal' - 'Liv ' इत्यादि के दर्दें भी निकल जाती हैं।

इस फौरमुले में LMNT उपचार की एक मुख्य speciality या खासियत का एक नमूना देख सकते हैं। LMNT में हम बीमारी का उपचार नहीं करते, बल्कि हम शरीर को सुधारते हैं। चूंकि हमारे उपचार से शरीर के केमीकल्स में बदलाव आती है सो उसे ध्यान में रखते हुये दूसरे दिन उपचार किया जाता है। यह उपचार गौल ब्लैडर और लिवर को सुधारने के लिये बनाया गया है। सो हर दिन के उपचार के बाद वे ग्रंथियाँ और अच्छी तरह से काम करने लगेंगी।

* इधर max. यानि maximum शब्द लिखने का एक खास मतलब है। और वह यह है कि सभी दिन (8) Gal या (10) Liv ही देना है - ऐसा नहीं है। हर दिन इस उपचार से पहले थेरेपिस्ट ने पेशंट के 'Gal' और 'Liv' का दर्द चैक करना है। पेशंट के दर्द के अनुसार कितना 'Gal' और 'Liv ' देना है - यह खुद निश्चय करना है। पहले कुछ दिन (8) Gal या (10) Liv दें। लेकिन कुछ दिनों के बाद जैसे-जैसे उन प्वाइंट की दर्दें कम होती जायेंगी, 'Gal' और 'Liv' की मात्रा कम करते जाना - जैसे (8) Gal की जगह पर (3) Gal या (10) Liv की जगह पर (3) Liv इत्यादि। जब दर्द पूरा ही निकल जाय और लक्षण सब ठीक हो जायें तो उपचार बंद कर दें।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Vater formula के उपयोग

- एम्पूला आफ वेटर में कोई ब्लोकेज हो तो उसे खोलने। इसका पता लगाने के लिये Ultrasound करवा सकते हैं। एक और तरीका भी है। अगर common bile duct में रुकावट हो तो रक्त में LAP यानि leucine amino-peptidase बढ़ा हुआ रहेगा। LAP प्रोटीन को पचानेवाला एक एन्ज़ाइम है, जो पैंक्रियास, लिवर और छोटी आंत में पाया जाता है (Taber's 18th edn.p 1096)। अगर LAP k} मात्रा नौरमल से ज्यादा हो तो हम समझते हैं कि एम्पूला आफ वेटर में ब्लोकेज है।
- पेट ठीक करने के लिये – खासकर जब तली हुयी चीज़ खाने के बाद छाती में जलन–सी महसूस हो तो।
- LMNT के 'Gal' और 'Liv' point में काफी दर्द हो तो उसे निकालने के लिये
- जिन्हें fats ठीक से पचते नहीं, यानि जिन्हें तली हुयी चीज़ या नौन–वेज (non-veg) खाने से खट्टी डकार आते हैं।
- इस ट्रीट्मेंट से पूरा पेट 'set' हो जाता है और 'Gal' वाले point का दर्द भी निकल जायेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

अगर ह्रदय रोग के मरीज हों तो उन्हें इस उपचार में कुछ बदल करना है। उन्हें (10) Medulla की जगह पर (10) Left Medulla देना है। अधिकांश लोगों में ब्लड टैस्ट में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा ज्यादा पायी गयी है। चूंकि कोलेस्ट्रॉल फैट्स के पचने के बाद ही बनता है तो हमें 'Gal' तथा 'Liv' को कम उकसाना है ताकि फैट्स ज्यादा न पचे और कोलेस्ट्रॉल न बढ़े।

तो ह्रदय की बीमारी के रोगियों के लिये उपचार इस प्रकार होगा –

I (10) Left Medulla (3) ONS (½) Ku-40 seconds (1) Gal

II (1) Liv

वैसे ध्यान रहे कि ह्रदय रोग के मरीजों को हमें पहले Angina treatment ही देना है। दो–चार दिनों के उस उपचार के बाद जब उनकी तबीयत थोड़ी–बहुत सुधर जाती है, उसके बाद यह उपचार दे सकते हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

New Gal treatment

यह फॉरमुला सन् २००६ में ही बना। जैसे–जैसे गुरुजी के पास पेशंटों की संख्या बढ़ती गयी वैसे ग्रंथियों के कार्य के बारे में जानकारी बढ़ती गयी। तो पता चला कि बाइल शरीर में कई कार्यों की देखभाल करती है। पहले Taber's dictionary में पाया गया कि बाइल के दो मुख्य गुण हैं –antiseptic यानि कीटाणु से बचाने वाली और laxative यानि कब्जी दूर भगानेवाली।

फिर देखा गया कि जिनको चमड़ी में कुछ भी प्रोब्लेम थी, उनको 'Gal' में दर्द होता था एवं उनमें से कई लोगों को कब्जी की शिकायत भी थी। चूंकि Chole Formula में 'Gal' को उकसाया जाता है, तो वह उपचार उन पेशंटों को दिया गया। उससे खुजली जरूर कम हो जाती थी लेकिन कुछ घंटों तक ही उसका असर होता था। और ऐसे लोगों का पेट हमेशा ही upset यानि बिगड़ा हुआ रहता था। तो गुरुजी ने सोचा कि पहले इनका पेट ठीक करना चाहिये, तब ही गौल ब्लैडर ठीक से काम करेगा।

आजकल यह निश्चित रूप से साबित हो चुका है कि (15) Medulla का उपचार ब्रेन में ॲसेटिल कोलीन बनाने के लिये उकसाता है। ॲसेटिल कोलीन (acetylcholine) एक न्यूरो ट्रान्स्मीटर (neuro-transmitter) है - जो पैरा–सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टेम (PSNS) के हर कार्य के लिये जरूरी है। सो जहाँ भी हम (10) Medulla देते हैं, उसके पहले (15) Medulla देने से नतीजे बहुत ही अच्छे आते हैं।

तो निम्न उपचार बनाया गया जिसे **New Gal treatment** का नाम दिया गया, जो इस प्रकार है

I Fast : Gas : Gas 'I' : Gal : Spl : Liv : Mu

II Ajay Normal Formula mild - (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 points (1) Gas ' I ' – 6 points

ये दोनों फॉरमुला मिलकर पाचन संस्थान के कार्यों को सुधारेंगे

III (6) TF 'Gal' + (1) Single point Gal x 6 treatments - गौल ब्लैडर को उकसाने

IV (15) Medulla V. Chole treatment formula

यह उपचार सभी प्रकार के चर्म रोगों के लिये बहुत ही ज्यादा लाभदायक पाया गया है। एक पेशंट जिनको बरसों पुरानी सोरियॅसिस (psoriasis) थी – उनको इस उपचार से एक महीने से भी कम समय में, चमड़ी वापस नौरमल में आ गयी कि कमाल ही हो गया।

अब एक और किस्सा सुनें जिसे भी हरि का खेल ही कहना है। उन दिनों गुरुजी के पास एक औरत आती थी जिसके बच्चे को औटिज़्म (autism) नामक बीमारी थी। इस बीमारी का एक मुख्य लक्षण है कि बच्चा बहुत ही हाइपर-ऐक्टिव (hyperactive) यानि उतावला था – एक सेकंड के लिये भी चुप रहना असंभव था उसके लिये। उसे हमारे किसी भी उपचार से खास फायदा नहीं हो रहा था। अब औटिज़्म की बीमारी के प्रति किताबों में या internet में बहुत ही कम लिखा गया है। यह किस कारण से आती है यह अब तक मालूम नहीं पड़ रहा है। गुरुजी उस औरत से प्रेगनैन्सी के समय के बारे में पूछ-ताछ कर रहे थे। लेकिन उन्होंने कहा कि प्रेगनैन्सी एवं डिलीवरी नौरमल थी और उस औरत को हाई बी पी या अन्य कोई बीमारी नहीं थी। सो उससे कुछ खास पता नहीं चला कि इस बच्चे को क्या उपचार दिया जाय। बातों बातों में अचानक ही उस औरत ने कहा कि प्रेगनैन्सी के कुछ महीने पहले उसे त्वचा में कुछ खुजली-जैसी हुयी थी।

बस्स ! उस एक बात को पकड़कर गुरुजी ने अनुमान लगाया कि माँ को उस समय गौल ब्लैडर की गड़बड़ी हुयी होगी। बच्चे को New Gal treatment दिया गया तो कुछ उपचारों के बाद देखा गया कि hyper activity यानि अतीव उतावलापन कुछ कम-सा हो गया था। और भी कुछ महीने उपचार देते गये तो वह और शान्त होने लगा। बाद में कई बच्चों के ऊपर आजमाकर पाया गया है कि औटिज़्म में यह उपचार काफी लाभ देता है। अगर बच्चा ज्यादा ही उतावला हो तो ऊपर के उपचार में III नंबर में 6 treatments की जगह पर 9 treatments देना और लाभकारी है।

फिर गुरुजी बाइल (bile) के प्रति और गहराई में अभ्यास करने लगे – बाइल के अन्दर कई सारी चीजें होती हैं जिनमें मुख्य हैं – mucin और lecithin. फिर उनके बारे में पढ़ा तो समझा कि-

- म्यूसिन (Mucin) सलाइवा में तथा चमडी, टेन्डन, कारटीलेज तथा टिशूज़ में भी पाया जाता है।
- लेसीथिन (lecithin) ब्रेन, नर्व्ज़ तथा टिशूज़ में भी होता है। Lecithin से choline बनेगा और choline से ॲसेटिल कोलीन बनेगा।

ये सब तो किसी भी मेडीकल किताब में पढ़ सकते हैं। लेकिन गजब की बात तो अब आगे है। इन सभी तथ्यों से गुरुजी ने एक अनोखा निष्कर्ष निकाला कि शरीर में किसी भी cartilage, tendon या tissue में कोई भी गड़बड़ी हो, या अगर peristalsis के waves को लाना हो तो उसे ऊपर के New Gal treatment से ठीक कर सकते हैं, क्योंकि बाइल पेरीस्टैल्सिस को उकसाता है Taber's 18th edn. p 217

इस उपचार से जो नतीजे आ रहे हैं वे विश्वास के बाहर हैं।

यह उपचार निम्न सभी लक्षणों के लिये अति उत्तम है –

- बहुत ही सख्त कब्जी दूर करने। अतीव गुस्सा जिन्हें हो, उनको शांत करने के लिये
- सोरियासिस, एक्ज़ीमा (eczema), मौके-मस्से, फंगल इन्फेक्शन (fungal infection) या अन्य कोई भी चर्म रोग के लिये
- pus (पू, पीप या मवाद) से कभी भी प्रोब्लेम आई हो या किसी रोग के कारण pus हो उसे ठीक करने – उदा – कान में पस या पानी निकलना
- औटिज़्म (autism) के बच्चों या अन्य बच्चों में उतावलापन (hyper activity) कम करने
- मार लगने या किसी बीमारी के कारण से टिशूज़ (tissues) या लिगामैन्ट (ligament) टूट गयी हो, या खत्म हो गयी हो, या कारटीलेज (cartilage) बनाना हो इत्यादि
- त्वचा में झुर्रियाँ हो तो उसे ठीक करने – चाहे बुढ़ापे में हो या कम उमर में
- हाथों में कंपन हो उसे ठीक करने – पॉरकिन्सन के पेशंट को भी लाभ प्राप्त हुआ
- आंतड़ियों में peristalsis के wave को उकसाने के लिये तथा भूख बढ़ाने के लिये इत्यादि।

याद रहे कि पहले रोगी के pain points चैक करना है। यह उपचार उनके लिये सबसे लाभ देगा जिन्हें right side के अंगों में दर्द हो जैसे – 'Gal', 'Liv' इत्यादि ।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

New Gal treatment के उपयोग संक्षेप में :

- पेट set करने।
- 'Gal', तथा 'Liv' के दर्दों को ठीक करने।
- कब्जी दूर करने।
- लिगामैंट या कारटिलेज अगर नष्ट हुआ हो तो उसे ठीक करने।
- दाद, सोरियासिस या अन्य चर्म रोगों के लिये बहुत अच्छा है

क्योंकि बाइल ऐन्टीसैप्टीक यानि कीटाणुनाशक का काम करता है। यही उपचार उन बच्चों को देना है जिनकी माँ को प्रेग्नैन्सी यानि गर्भावस्था के दौरान हाई बी पी या कोई चमडी की बीमारी या खुजली इत्यादि थी। पूछताछ से साबित हुआ है कि जिन औरतों के बच्चों को औटिज़म (autism) की बीमारी है, उनमें कुछ औरतों को प्रेगनैन्सी के दौरान चर्म रोग हुआ पाया गया है।

जो बच्चे बहुत ही ज्यादा हायपर (hyper) होते हैं, यानि वे एक क्षण के लिये भी चुप नहीं रह सकते – *चाहे उन्हें औटिज़म हो या नहीं,* उनके लिये भी यह उत्तम इलाज है।

उपचार का सबसे बेहतरीन तरीका

पहले ampoulla of Vater को खोलना है, बाद में गॉल ब्लैडर को उकसाना है। सो निम्न क्रम से देना है –

I Vater formula II New Gal treatment formula

अगर कोई बच्चा आप के पास लंबे समय उपचार के लिये आये और *पूछताच करने पर आप को पता लगे कि प्रेगनैन्सी यानि गर्भास्था के दौरान उसकी माँ की* BP बढ़ गयी थी – चाहे वे मन्द बुद्धि के बच्चे हों, या किसी अन्य बीमारी के लिये आप के पास आये हों – उन्हें सबसे पहले दस-पंधरह दिन तक यह उपचार ही देना है। और इससे काफी फायदा होगा। बाद में दूसरे उचित उपचार दे सकते हैं।

जिन्हें फैट्स नहीं पचते, उन्हें यह उपचार सप्ताह में एक-दो बार देते जाने से गौल स्टोन कभी होंगे ही नहीं। ऐपीनैफ़रिन भी गौल ब्लैडर के मस्सल को सिकोड़ता है । तो आनेवाले दिनों में इस उपचार में अगर (6) Lt. Swt जोड़ दें तो शायद और प्रभावशाली बन जाय – यह try करना है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

CCK Normal formula

यह एक और उपचार है जो सारे पाचन संस्थान को उकसाता है। इसका क्रम निम्न प्रकार है –

(10) Medulla	- वेगस नर्व को उकसाने
(1)Gas Only – 6 points	- पेट में प्रोटीन्स के पाचन को बढ़ाने
(1) Gal	- हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड zacid के लिये
(1) Gas ' I ' – 6 points	- इन्टेस्टाइन में अवशोषण को बढ़ाने
(2) S4, S5	- डिसेंडिंग कोलन को उकसाने

हर प्वाइंट के बीच में 10 सेकंड का गेप (gap) दें। इससे पाचन एवं अवशोषण सुधर जाता है। यह मामूली-सी कब्जी तथा आँखों के लिये भी अच्छा है। इस की अन्य उपयोगों पर और खोज जारी है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Formula No. 4

इस फॉरमुला को हरि का देन नहीं, हरि का खेल ही कहना चाहिये। इसके नतीजे इतने कमाल के हैं, लेकिन इस उपचार में उपयोग किया गया क्रम तथा प्वाइंट अन्य उपचारों से अलग है। यह अद्‌भुत उपचार गुरुजी के दिमाग में कैसे सूझा – यह हरि ही जाने।

गुरुजी के पास कई किस्म के पेशंट आते थे। साधारणतः सभी को अपने उपचारों से कुछ ही दिन में आराम मिल जाता था। लेकिन उनमें से कुछ लोग ऐसे थे जिन्हें कुछ दिनों के LMNT के सभी मुख्य ट्रीट्मेंट के बाद भी 'Pan' के प्वाइंट में तथा नाभी के आसपास बहुत ही ज्यादा या अतीव दर्दें थीं। और उन्हें अपचन की शिकायत हमेशा ही थी।

तो गुरुजी कई दिनों तक सोच रहे थे कि इन के लिये क्या किया जाय ?

अचानक एक ख्याल आया – अभी तक के फौरमुले में 'Pan', 'Gal', 'Liv' इत्यादि यानि पाचन संस्थान के work force यानि कार्यकारिणी अंगों को ही उकसाया गया। लेकिन जब उनसे बात नहीं बनी तो क्यों न अब major supervisory organs को उकसाया जाय ? यानि हर कार्य के लिये जिस अंग की प्रमुख जिम्मेदारी है, उसे उकसाना चाहिये।

- पाचन संस्थान को उकसाने की जिम्मेदारी Vagus nerve का है। सो उसे उकसाना है।
- अगर पाचन संस्थान ठीक से काम नहीं करे, तो कई सारे हौरमोन्स भी नहीं बनेंगे। सभी मुख्य endocrine functions की जिम्मेदारी ऐन्टीरियर पिट्यूट्री (anterior pituitary) की है। सो उसे उकसाना चाहिये।
- साथ ही, ब्रेन तक संदेश पहुँचाने के मार्ग में कोई रुकावट न हो, इसका भी ख्याल रखना है। ब्रेन के अंदर जाने का मार्ग है CSF तथा spinal cord. LMNT में हम इन दोनों को Round arrow नामक उपचार से उकसाते हैं।

  इन तीनों के बाद 'Pan' के दर्द को भी निकालना जरूरी है। तो फॉरमुला इस प्रकार बना –

  (10) Medulla (4) Thrd 'P' (20) ↑|↓ (8) Pan

- इसमें (10) Medulla से वेगस नर्व को तथा
- (4) Thrd 'P' से ऐन्टीरियर पिट्यूट्री को उकसाते हैं।
- (20) ↑|↓ से रीढ़ की हड्डी के दोनों बाजू में जो 31 जोडी स्पाइनल नर्व्ज़ हैं उन्हे उकसाते हैं, जिससे सभी ग्रंथियों में रक्त प्रवाह तथा उनको ब्रेन से संदेश भी सुचारु रूप से होगा
- (8) Pan – पाचक एन्ज़ाइम ठीक से बनने के लिये

यह फॉरमुला देने से उन पेशंटों को तुरन्त काफी आराम मिला। 'Pan' का दर्द निकल गया और देखा गया कि इससे पूरा पेट 'set' हो जाता है।

उन दिनों एक पेशंट आती थी जिसे एकदम कुछ भी नहीं दिखता था। उसे कई उपचार दिये गये लेकिन उसे हमेशा ही पेट में दर्द होता था। उस की तकलीफ दूर करने के लिये गुरुजी यह उपचार देकर नीचे उतर ही रहे थे कि वह अचानक चिल्ला उठी –

मुझे थोड़ा कुछ दिखने लगा है !

सारे क्लिनिक में सन्नाटा छा गया ! किसी को कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है!!

आप सोचिये, है क्या इसका कोई जवाब ? जिनको अब तक दिखता नहीं था, उन्हें एक उपचार के बाद कुछ दिखाई दे, उसे क्या कहेंगे ? न कोई दवा, न कुछ ! सिर्फ चार मिनट के लिये शरीर पर इधर-उधर दबाना, और उसे दिखने लगे ? क्या उसे हरि का खेल कहेंगे या नहीं ?

जरा रुकिये। कोई आम व्यक्ति शायद ऐसी एक घटना के बाद इस बात पर समय नहीं बर्बाद करेगा कि यह चमत्कार कैसे और क्यों हुआ। सभी को तो आम खाने से मतलब है न कि पेड़ गिनने से ! लेकिन गुरुजी साधारण व्यक्ति तो हैं नहीं !! सिर्फ नतीजों से खुश होना उन के लिये काफी नहीं। जब तक किसी चीज की गहराई तक नहीं पहुँच जाते, उन्हें नींद कैसे आती ? हरि की कृपा क्या हर एक को ऐसे ही प्राप्त होता है ?

वे दुबारा किताबों का अभ्यास करने लगे कि कौन-सा प्वाइंट ऐसा है जिससे अंधों को दिखने लगा। आँख के अंदर पहले जिस चीज की भी कमी थी वह बनी होगी तभी तो उसे दिखने लगा। शरीर में कुछ भी चीज बनाना – यह GH यानि ग्रोथ हौरमोन की जिम्मेदारी है, जो कि ऐन्टीरियर पिट्यूट्री से निकलता है। सो वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि इस उपचार द्वारा ऐन्टीरियर पिट्यूट्री से ग्रोथ हौरमोन को उकसाया गया।

उसके बाद यह उपचार आँख की बीमारियों के कई पेशंटों पर आजमाया जा चुका है। चाहे कैटरैक्ट हो (cataract) या आँखों में धुंधलापन या अँधापन इत्यादि कई अन्य पेशंटों को इस उपचार से लाभ पहुँचता है । [लेकिन सभी किस्म की आँख की बीमारियों के पेशंटों को एक-जैसा लाभ हुआ है – ऐसा भी नहीं है]

फिर आयी बारी नाम देने की। इसे क्या नाम दिया जाय ?

LMNT की शुरुआत में गुरुजी पेट के दर्दों की तीव्रता यानि कितना दर्द है – यह सूचित करने के लिये उपचार के पहले पेशंट को पूछकर हर प्वाइंट के ऊपर छोटे अक्षरों में उस भाग के दर्दों को नंबर दिया करते थे। एक नंबर का दर्द मतलब बहुत कम (यानि न के बराबर) एवं चार नंबर के दर्द का मतलब बहुत ही ज्यादा (यानि इतना दर्द कि हाथ लगाने से पहले ही पेशंट चिल्ला उठते हैं)। फिर उपचार के तुरन्त बाद उन्हीं प्वाइंट को दुबारा चैक कर हर प्वाइंट के नीचे वैसे ही उस भाग के दर्द का नंबर लिखा जाता था।

उदाहरण – अगर कार्ड पर Pan^4_2 लिखा हो तो उसका मतलब उपचार के पहले 'Pan ' के प्वाइंट में चार नंबर की बहुत ही ज्यादा दर्द था, लेकिन उपचार के बाद दर्दें थोड़ी कम हुयी हैं कि वे अब सह पाते हैं।

इस तरकीब से तुरन्त पता चल जाता कि पेशंट को उस दिन के उपचार से किन प्वाइंट में कितना लाभ हुआ। अगले दिन वही उपचार देना है या अन्य उपचार देना है – यह तय करने के लिये भी यह अत्यन्त उपयोगी तरीका था। और इससे पेशंट को बहुत तसल्ली हो जाती थी।

ऊपर का फॉरमुला पेट के चार नंबर का दर्द यानि तीव्र दर्द को ठीक करता है, इसलिये उसे **Number Four formula** या **Formula Number Four** का नाम दिया गया।

(10) Medulla (4) Thrd 'P' (20) ↑|↓ (8) Pan [याद रखने का तरीका – 104, 208]

इस फॉरमुला के मुख्य उपयोग जरा देखें – LMNT के अन्य उपचारों के बाद भी पेट में बहुत ज्यादा दर्द हो तो आँखों की बीमारियाँ जैसे – रेटीनाइटिस पिग्मेंटोज़ा, कैटेरैक्ट यानि मोतिया, रतौंधी या रतिंधा, आँखें कम दिखना, धुँधला दिखना, आँखों का नर्व (optic nerve) अगर सूख जाय इत्यादि

दर्द कितना है यह कार्ड पर सूचित करने का तरीका

पहले गुरुजी अकेले ही उपचार करते थे। जैसे-जैसे LMNT की मान्यता बढ़ने लगी और जब लोग इस थेरेपी को सीखने लगे तो उन्हें लगा कि – फॉरमुला में प्वाइंट के आगे भी तो नंबर आते हैं – जैसे (3) Gal, (4) Thrd इत्यादि ।

तो दर्द का नंबर और प्वाइंट के नंबर को समझने में थेरेपिस्ट से अनजाने में कोई गलती हो जाय तो उपचार में गड़बड़ी हो जायेगी। सो वे आजकल दर्दों को सूचित करने के लिये नंबर का उपयोग नहीं करते। उसके बदले में वे कार्ड पर हर प्वाइंट के ऊपर (+) या (–) लिखते हैं। (+) का मतलब दर्द है। और (–) का मतलब दर्द नहीं है। जितना दर्द है उतना ++++ लिखना है।

अब ऊपर के उदाहरण को कैसे लिखना है देखें –

उपचार के पहले Pan^{++++} ऐसे लिखना और उपचार के बाद उसी जगह के नीचे Pan^{++++}_{++} ऐसे लिखना है।

पेट दर्द ठीक करने के उपचार **Abdominal pain releasing treatment (APR)**

LMNT की आधार शिला ही नाभी के आसपास के दर्दों को चैक करके उपचार देना। तो इसमें आश्चर्य ही नहीं कि कुछ ही सालों में पेट के विभिन्न किस्म के दर्दों को दूर करने में गुरुजी प्रचण्ड निपुणता पा चुके थे। जैसे वे LMNT में सफलता प्राप्त करते गये, उनके पास कई प्रान्तों से तथा अलग-अलग आदतों के मरीज आने लगे। और अधिकतर उन्हें पेट दर्द की शिकायत थी।

तब तक गुरुजी को यह मालूम हो चुका था कि मनुष्य अपनी आदतों के वजह से ही बीमार पड़ता है, तो बीमारी चाहे एक ही हो, अलग-अलग आदतों और तौर तरीके के व्यक्तियों को अलग-अलग उपचार देना पड़ेगा। फिर भी वे एक ऐसा उपचार बनाना चाहते थे जो कि अधिकतम लोगों पर लागू किया जा सके।

- पेट या नाभी में तीव्र दर्द तब होगा जब GIT (gastro-intestinal tract) यानि अन्न नलिका के किसी या कई भागों में (infection) इन्फेक्शन हुयी हो। पुराना इन्फेक्शन इन्फ्लमेशन में बदल जाता है, सो हमें इन्फ्लमेशन को ठीक करना है।
- दूसरी बात यह है कि यह दर्द एक सूचक है कि पेट एवं आतंड़ियों को पर्याप्त रक्त नहीं मिल रहा है – तो वे ठीक से काम नहीं कर पायेंगे। सो उन के अन्दर जो भी भोजन है, उसका पाचन या अवशोषण किये बिना ही उसे बाहर निकाल दिया जायेगा। अब बड़ी आंत का कार्य है कि पचाये हुये भोजन से पानी का अवशोषण कर बाकी कचरा को बाहर फेंके। जब उसे पर्याप्त रक्त नहीं मिलेगा, तो वह भी अपना काम ठीक से नहीं कर पायेगा। जिससे बाहर फेंके जानेवाले कचरा में पानी की मात्रा ज्यादा होगी, जिसे ही दस्त कहते हैं।

अब लूज मोशन या दस्त का उपचार करने के लिये हमें क्या-क्या करना है जरा समझें -

- पेट की मोटिलिटी (motility) यानि गति को रोकना है - यह काम सिम्पैथेटिक नर्वस सिस्टेम का है जो कि ऐड्रीनल मैडूला द्वारा यह काम कराता है - ऐड्रीनल मैडूला को हम (6) Swt से उकसाते हैं।
- और LMNT में हमने पाया है कि जब हम (30) Medulla या (6) Adr देते हैं तो वह तुरन्त ही इन्फ्लमेशन को रोकता है। Page 39 देखें। इससे 'Mu' प्वाइंट का दर्द तुरन्त निकल जाता है या बहुत ही कम हो जाता है। इसके अलावा पाया गया है कि पेट के अंगों को उकसाने का क्रम बदलने पर भी आंतड़ियों की मोटिलिटी बदल जाती है, जो कि Ulta Normal Formula से कर सकते हैं (Page 19)

इन सब से जब दर्दों के साथ दस्त या लूज़ मोशन हो, उसे ठीक करने के लिये निम्न उपचार बनाया गया -

I (30) Medulla - प्रोस्टाग्लैन्डिन्स द्वारा इन्फ्लमेशन को रोकने के लिये।
II (6) Adr - ऐड्रीनल कौरटेक्स से कौरटीज़ोल (cortisol) द्वारा इन्फ्लमेशन को रोकने के लिये
(6) Swt - ऐड्रीनल मैडूला द्वारा आंतडियों की मोटिलिटी को रोकने
III Ulta Normal Formula - पेट के अंगों द्वारा आंतडियों की मोटिलिटी को रोकने।

कई पेशंटों को इस उपचार से बहुत ही लाभ मिला। पेट दर्द भी निकल जाता और दस्त भी रुक जाती। फिर देखा गया कि जिनको दस्त कम थी, उनको ऊपर के उपचार से लाभ हुआ लेकिन जिनको ज्यादा लूज़ मोशन होते थे, उन्हें इस उपचार से लूज़ मोशन बन्द नहीं हुये यानि उन्हें खास फर्क नहीं पड़ा।

ऐसा क्यों ? और उसके लिया क्या करें ? गुरुजी सोचते गये। अचानक उन्हें ख्याल आया कि जिनको ज्यादा लूज़ मोशन हैं, इसका मतलब उनमें इन्फेक्शन का प्रभाव जोरदार है यानि उनके शरीर में ज्यादा इन्फ्लमेशन होगी - और जब तक इन्फ्लमेशन खत्म नहीं होती पेट के अन्य अंगों को उकसाने का मतलब नहीं है। तो निश्चय किया कि इन्फ्लमेशन को खत्म करने के उपचार ज्यादा देना है और बाद में अन्य अंगों को उकसायें। ऐसे काफी सोच-विचार करने के पश्चात् अपने बरसों के अनुभव से उन्होंने पेट के दर्दों को लक्षणों के तौर पर तीन मुख्य प्रकारों में बाँटा - जिन्हें ठीक करने के लिये अलग-अलग उपचार भी बनाये गये। वे इस प्रकार हैं -

- जिन्हें पेट दर्द के साथ 4-5 बार तक लूज़ मोशन हो
- जिन्हें पेट दर्द के साथ 5-6 बार से अधिक लूज़ मोशन हो
- जिन्हें पेट दर्द है लेकिन कोई लूज़ मोशन नहीं है।

अब हर एक के उपचार पर जरा ध्यान दें -

- जिन्हें पेट दर्द के साथ 4-5 बार तक लूज़ मोशन हो उन्हें ऊपर का उपचार ही काफी है यानि-

I (30) Medulla (6) Swt
II (6) Adr (6) Swt
III Ulta Normal Formula (8) Pan <u>(1) Spl (1) Gal</u> <u>(3) Mu (3) Liv</u>

अगर इसे और थोड़ा प्रभावशाली बनाना है तो दुबारा (6) Adr (6) Swt इस प्रकार दें -

I (30) Medulla (6) Swt
II (6) Adr (6) Swt
III (6) Adr (6) Swt + Ulta Normal Formula

- जिन्हें पेट दर्द के साथ 5-6 बार से अधिक लूज़ मोशन हो उन्हें निमन उपचार दें -

I (30) Medulla II (6) Adr (3) Swt x 2 treatments*
III (6) Adr (3) Swt + Ulta Normal Formula

* साधारणतः इस उपचार के तुरन्त बाद ही पेशंट को पूरा ही अच्छा लगता है और मोशन भी रुकने लगते हैं। लेकिन अगर इस उपचार के बाद भी मोशन न रुकता हो तो मतलब अभी भी इन्टेस्टाइन ठीक नहीं हैं। सो जरूरत के अनुसार इसी उपचार को एकाध बार repeat करें यानि दुबारा दें। बाद में III नंबर का उपचार दें

ऊपर के उपचार से लाभ जरूर हो रहा था लेकिन उसमें भी कुछ पेशंट ऐसे मिल जाते थे, जिनको उपचार से पूरी राहत न मिले। फिर गुरुजी को ख्याल आया कि गौल ब्लैडर का बाइल तो ऐन्टीसेप्टिक है, एवं

स्प्लीन WBC's तथा antibodies बनाते हैं। सोचा कि इन दोनों प्वाइंट देने से इन्फ्लमेशन बढ़ सकती है। सो इन दोनों को इन्फ्लमेशन में नहीं उकसाना चाहिये। अतः ऊपर के उपचारों को इस तरफ बदला गया –

- जिन्हें पेट दर्द के साथ 4-5 बार तक लूज़ मोशन हो, उनके लिये –
  I (30) Medulla (6) Swt II (6) Adr (6) Swt
  III (6) Adr (6) Swt (8) Pan (1) Mu – 3 points (1) Liv – 3 points
- जिन्हें पेट दर्द के साथ 5-6 बार से अधिक लूज़ मोशन हो उन्हें निम्न उपचार दें –
  I (30) Medulla II (6) Adr (6) Swt x 2 treatments (जरूरत के अनुसार)
  III (6) Adr (6) Swt + (8) Pan (1) Mu – 3 points (1) Liv – 3 points

- इधर ''Liv'' और 'Mu' का क्रम नौरमल से उल्टा है – सो उनके नीचे एक लाइन दिया गया है।

ध्यान रहे – लूज मोशन को ठीक करने के लिये हम peristalsis की गति को रोकते हैं। कुछ दिन बाद जब उनके मोशन बिल्कुल नौरमल हो जाय तो कम से कम एक दिन के लिये NAN/FAN देना भूलना नहीं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

अब तीसरे किस्म के उपचार के बारे में देखा जाय –

सभी पेशंटों को पेट दर्द के साथ लूज़ मोशन होगा ऐसा हमेशा नहीं। कुछ ऐसे भी होते हैं जिन्हें सिर्फ पेट दर्द है, मगर उनको मोशन यानि संडास या लैट्रीन की कोई शिकायत नहीं। सो उनके लिये विचार धारा में कुछ बदल जरूरी है। मोशन का प्रोब्लेम नहीं है, इसका मतलब इन्टेस्टाइन की मोटिलिटी सही है। सो उसे छेड़–छाड़ नहीं करनी है। हमें सिर्फ abdomen के सारे अंगो को उकसाना है। और LMNT इस कार्य के लिये मशहूर है।

गुरुजी ने काफी सालों के अनुभव से ढूंढ लिया था कि शरीर के किन अंगों पर दबाने से पेट के कौन–से भाग का दर्द निकलता है। वे अब इस स्थिति पर पहुँचे हैं कि – किसी के भी चाहने या माँगने पर – पेट के किसी भी निर्धारित जगह के दर्द को ललकार के साथ कहकर निकाल सकते हैं। और सब से मजे की बात है कि उन्होंने इस ज्ञान को इतना सहज बनाकर कई लोगों को सिखा दिया है कि कोई भी यह कार्य कर सकेगा। तो उन्होंने एक बड़ा ही सहज तरीका निकाला – सोचा कि नाभी के ऊपर, नीचे, आगे, पीछे – सभी बाजुओं में रक्त संचार बढ़ा दो तो दर्द अपने आप निकल जायेगा। है न यह कमाल की सोच ? तो निम्न क्रम बनाया गया –

- जिन्हें पेट दर्द है लेकिन कोई लूज़ मोशन नहीं है उनके लिये निम्न उपचार दें –
  I (6) gas only (6) Gas I - नाभी के ऊपरी भाग को उकसाने
  II (3) Gal (3) Spl (7) Liv (5) Mu - नाभी के ऊपर के दायीं–बायीं भाग को उकसाने
  III (8) Pan (6) WD (8) Ch. Only (20) ↑|↓ - नाभी के नीचे के भाग को उकसाने
  IV (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20) ↑|↓ - किडनी तथा नाभी के पीछे के भाग को उकसाने

इस उपचार से पेट का दर्द तुरन्त निकल जाता है। बुजुर्गों को तथा जिनको कोई खास तकलीफ नहीं है, उन्हें भी यह उपचार देने से तुरन्त ताजगी और स्फूर्ति महसूस होती है। कई औरतें जिन्हें यह उपचार दिया गया, तो वे कहने लगीं कि उन्हें नयी जीवन मिली है। अब इसे और हल्का बनाया गया जिसमें और भी नतीजे अच्छे आ रहे हैं। अतः इस उपचार का एक और नाम दिया है –

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Jeevan Dhara Formula

यह एक बहुत ही प्रभावशाली उपचार है जो किसी भी उम्र के व्यक्तियों को लाभ देता है। इसमें नाभी के आसपास के सभी अंगों को एक क्रम से उकसाया जाता है। खास कर बडे उम्र के लोगों को यह उपचार देने के बाद उन्हें लगता है कि उन्हें नयी जीवन प्राप्त हुयी है, जिसके कारण इस उपचार को यह नाम दिया गया। पहले भारी उपचार इस प्रकार देते थे –

I (6) Gas Only (6) Gas 'I'
II (3) Gal (3) Spl (7) Liv (5) Mu
III New Genes formula (8) Pan (6) W.D (8) Ch. Only (20) ↑|↓
IV (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20) ↑|↓

ध्यान दे कि इन उपचारों में 'Gal' के बाद 'Spl' तथा 'Liv' के बाद 'Mu' दिया गया है – जो नौरमल peristalsis यानि आंतड़ियों की नौरमल गति को बढ़ायेगी। यह उपचार सभी को दे सकते हैं

आजकल इसी उपचार को और हल्का बनाया गया है जो ज्यादा प्रभावशाली है। यह किसी भी उमर के पेशंट को शरीर में थकान या कमजोरी दूर करने के लिये भी दे सकते हैं।

I (1) Gas Only – 6 points
II (1) Gal (1) Spl (1) Liv – 3 points (1) Mu – 3 points
III Ajay Normal Mild - (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 points (1) Gas ' I ' – 6 pts.
IV Mild kidney Clear formula (1) Liv^0 (1) Mu^0 (2) Ch. Only (5) ↑|↓
V Mild Genes formula (3) Pan (1) WD (2) Ch. Only (5) ↑|↓

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

ऊपर के सारे फॉरमुला पेट और आंतडियों के कार्य शैली को सुधारने के लिये उपयोग कर सकते हैं। आगे हम कुछ अन्य फॉरमुला देखेंगे, जो अन्य ग्रंथियों के कार्य को सुधारते हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

UDF formula लैट्रीन में अनपचा खाना दिखना

यह गुरुजी (डॉ. लाजपतराय मेहरा) की एक महत्वपूर्ण खोज है जो कि सारी मानव जौति के लिये वरदान साबित होने वाला है है। सो इस पर काफी विस्तृत रूप से लिखा गया है।

जैसे-जैसे LMNT पापुलर यानि प्रचलित होती गयी वैसे मरीजों की संख्या बढ़ती गयी । सभी में अच्छे नतीजे ही आ रहे थे, लेकिन पुरानी बीमारियों में देखा गया कि नतीजे कई दिनों के बाद ही आते थे और अक्सर कुछ दिनों के बाद उपचार का असर ना के बराबर होता था । तो गुरुजी इसके बारे में अभ्यास व अनुसंधान करने लगे, जिसका नतीजा ही इन पन्नों में दिये गये हैं।

मनुष्य जब पैदा होता है तो अक्सर स्वस्थ ही पैदा होता है । लाखों में एकाध ही बच्चे ऐसे होते हैं, जो मां के पेट से निकलने के तुरंत बाद या उससे पहले ही बीमार होते हैं । आम तौर पर बच्चे जन्म के बाद कुछ या कई महीनों तक स्वस्थ ही रहते हैं और बाद में अलग-अलग कारणों से बीमार होते हैं । शरीर में बीमारी क्यों आती है यह जानने के लिये हम यहां कुछ जानी-पहचानी बातें दोहराते हैं ताकि सब को पता चले कि गुरुजी कितनी गहराई तक जाकर इसकी छानबीन किये हैं ।

सबसे पहले यह समझें कि स्वस्थ मनुष्य के शरीर की कार्य प्रणाली किन-किन चीजों पर निर्भर होती है । हमारे शरीर में सोते-जागते, हर समय, हर कार्य किसी न किसी अंग की निगरानी से ही चलते हैं । चाहे हम लेटे ही रहें, फिर भी हमारा श्वास का चलना, हृदय की धड़कन, तथा रक्त का सुचारु रूप से प्रवाहित होना, यह सब हमारे ब्रेन के नियंत्रण से ही चलता है । जब हम कार्यरत हों, तब भी हमारे अंगों के हलचल तथा हमारी सोच के अनुसार कार्य की पूर्ति करना - इसमें भी ब्रेन के योगदान के बिना कोई कार्य नहीं हो सकता । पर ब्रेन अकेला कोई काम नहीं करता । वह अन्य कई अंगों को क्रम पूर्वक संदेश भेजता है और ये अंग ब्रेन के भेजे संदेश की आज्ञा का पालन करते हुये कार्य को इच्छानुसार पूर्ण करते हैं ।

जब हम शारीरिक श्रम करते हैं, उस समय हमारे शरीर के अंदर कई प्रकार के बदलाव आते रहते हैं । उदाहरण के लिये, अगर हमें लेटी अवस्था से उठ कर बैठना हो या खड़ा होना हो तो हर एक अंग की हलचल के लिये ब्रेन से अलग-अलग संदेश निरंतर निकलते रहेंगे । इसके अलावा हाथ-पैर में रक्त के द्वारा ओक्सीजन यानि प्राण-वायु भेजने के लिये हृदय को लेटी अवस्था की तुलना में थोडा तेज धडकना होगा एवं इस तेज धडकन के कारण रक्त चाप बहुत ज्यादा न बढ़ जाय इसका भी ध्यान रखना पड़ेगा । इन सब चीजों के लिये हमारे शरीर के अंदर अनेक कार्य चौबीसों घंटे हमारे सूझ-बूझ के बाहर एवं हमारे कंट्रोल के बगैर ही अनैच्छिक रूप से यानि अपने आप होते रहते हैं ।

कहने का मतलब यह है कि हर पल एक ही समय में कई पहलुओं का लगातार नियंत्रण किया जाता है । इन सब का तालमेल रखने के लिये अलग-अलग किस्म की कई केमिकल्स निकलती रहती हैं जो हर वक्त यह देखती रहती हैं कि शरीर के अंदर कहीं भी किसी भी प्रकार का असंतुलन न हो । जो केमिकल्स ब्रेन से निकलते हैं वे एक साथ कई अंगों को अलग-अलग कार्य करने के लिये उकसाते हैं या रोकते हैं । इन्हें न्यूरो ट्रान्स्मीटर (neuro-transmitters) कहते हैं । कुछ अन्य किस्म के केमिकल्स हैं जो शरीर के कुछ खास ग्रंथियों से निकलकर रक्त में मिलते हैं - ये भी अन्य अंगों को कार्य करने के लिये उकसाते हैं या रोकते हैं । इन्हें होरमोन्स (hormones) कहते हैं । इनके अलावा एक तीसरे किस्म के केमिकल्स होते हैं जो शरीर में कई चीजों को पचाते हैं या उनके चयापचय यानि अदला-बदली में मदद करते हैं । इन्हें एन्जाइम्स (enzymes) कहते हैं।

तो शरीर में हर कार्य का ताल-मेल सही प्रकार से तभी होगा, जब ये विभिन्न केमिकल्स (यानि न्यूरो ट्रान्स्मीटर, होरमोन्स एवं एन्जाइम्स) सही वक्त में और सही मात्रा में निकलें । अगर इन में से किसी एक केमिकल की भी कमी हो जाय, तो इन अंगों का ताल-मेल बिगड़ जायेगा । ऐसी अवस्था में भी उन अंगों पर निगरानी रखने वाले अंग काफी प्रयत्न करते हैं कि शरीर की कार्य प्रणाली पर उसका कोई असर न पड़े । और कुछ सालों तक तो वे कामयाब भी होते हैं । लेकिन जब इन केमिकल्स की मात्रा कुछ ज्यादा ही कम या ज्यादा हो जाय, तभी शरीर में वे रोग का रूप धारण कर लेते हैं ।

इन केमिकल्स की पूर्ति दो तरह से की जा सकती है । पहला तरीका यह है कि बाहर से दवाई देना । यही तरीका ऐलोपैथी (allopathy) और अन्य कुछ प्रणालियों ने अपनाया है । इससे शरीर को आवश्यक केमिकल्स

तो मिल जाते हैं, पर कुछ लोगों में उनके दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं, क्योंकि शरीर बाहरी वस्तुओं को आसानी से अन्दर आने नहीं देता और उनके विरुद्ध लड़ने लगता है ।

दूसरा तरीका यह है कि अगर हमें शरीर की ग्रंथियों को उकसाने का राज आता हो तो उसके माध्यम से भी इस कार्य को किया जा सकता है । यही कार्य न्यूरोथेरेपी करती है और इसमें काफी सफलता प्राप्त हुई है ।

अब ये केमिकल्स शरीर में कैसे तैयार होते हैं, इसकी एक तेज झलक । जैसे पहले ही लिखा गया है, हम जो भी खाना खाते हैं, चाहे वह शाकाहारी हो या मांसाहारी भोजन हो, वे केवल तीन ही तत्वों से बने हैं –

- ✓ कारबोहाइड्रेट्स (carbohydrates) यानि मीठा पदार्थ
- ✓ प्रोटीन्स (proteins) जैसे दाल, अनाज इत्यादि
- ✓ फेट्स (fats) यानि घी–तेल इत्यादि ।

जैसे आपको पता है, दुनिया के सारे खाद्य पदार्थ इन तीनों के अन्तर्गत आ जाते हैं । लेकिन याद रखनेवाली बात यह है कि ये पदार्थ वैसे के वैसे हमारे रक्त के अंदर घुस नहीं सकते । उन्हें मुंह, पेट, पैंक्रियास, लिवर और छोटी आंत के स्रावों के रासायनिक प्रक्रियाओं (chemical reactions) द्वारा तोड़ा जाता है । और उसके बाद उसे शरीर के अंदर अवशोषित (absorption) करके रक्त के अंदर भेजा जाता है । जब ये तत्व रक्त के द्वारा हर एक सैल्ल तक पहुँचते हैं, तो हर सैल्ल अपनी जरूरत के अनुसार जो चाहिये ले लेता है, और जो–जो केमिकल्स बनाने हों, उन्हें बना देता है । इस प्रकार से शरीर के कार्य चलते रहते हैं ।

शरीर के सारे एन्ज़ाइम्स, न्यूरो ट्रान्स्मीटर एवं अनेक होरमोन्स अलग–अलग ऐमीनो ऐसिड्स (amino acids) के मिश्रण से बने हुये हैं । ये ऐमीनो ऐसिड्स पेट और आंतडियों में प्रोटीन्स के ठीक से पचने के बाद बनती हैं, और आंतों द्वारा अवशोषण होने पर ही रक्त में पहुँच सकती हैं । कुछ होरमोन्स ऐसे हैं जो प्रोटीन्स से नहीं, बल्कि कोलेस्टेरोल (cholesterol) से बने हुये हैं । इन्हें स्टीरॉइड होरमोन्स (steroid hormones) कहते हैं । कोलेस्टेरोल एक ऐसी चीज है जो फेट्स के पचने पर लिवर द्वारा बनाया जाता है और बाद में लिवर ही उस कोलेस्टेरोल से बाईल (bile) बनाता है जो दुबारा फेट्स के पचने में मदद करता है ।

इसका मतलब यह हुआ कि अगर शरीर में प्रोटीन्स एवं फेट्स का पचन और अवशोषण ठीक से हो और अगर सभी ग्रंथियाँ ठीक से काम करें, तो शरीर में किसी भी केमिकल की कमी नहीं आयेगी । इसलिये ही गुरुजी कहते हैं कि अगर शरीर में प्रोटीन्स या फेट्स ठीक से न पचें या उनका अवशोषण ठीक प्रकार से न हों तो शरीर में कई एन्ज़ाइम्स और होरमोन्स की कमी आ जायेगी, जो शरीर में बीमारियाँ आने का कारण बन जायेंगी ।

अब बात आती है कि कैसे पता लगायें कि हमारे शरीर में प्रोटीन्स ठीक से पचते हैं या नहीं ? इसके लिये भी गुरुजी ने एक सरल और सहज तरीका ढूंढ़ निकाला है । जैसे ऊपर कहा गया है, मुंह द्वारा निगले जाने के बाद भोजन के हर कण पर रासायनिक रूप से प्रक्रिया होती है । तो यह भी स्पष्ट है कि रासायानिक प्रक्रिया के बाद खायी हुयी चीज की शक्ल–सूरत बदलनी चाहिये । पिछले छह दशकों से एक लाख से भी ज्यादा पेशंटों से पूछ–ताछ के बाद गुरुजी ने पाया है कि प्रायः सभी पुरानी बीमारियों के रोगियों ने निश्चित रूप से स्वीकार किया है कि उनको लैट्रीन (latrine) यानि टट्टी में निम्न चीजों में से कोई न कोई चीज अपनी ओरिजिनल (original) शकल या रंग में दिखती है, जैसे –

- ✓ टमाटर, बैंगन या भिंडी के बीज या उनके छिल्के
- ✓ चना, मटर, या मूंगफली के दाने
- ✓ धनिया, कड़ी–पत्ता, पालक या मेथी का पत्ता
- ✓ गाजर या बीट (beetroot) के सलाद (salad) के कच्चे टुकड़े
- ✓ तड़के में उपयोग किये गये सरसों, जीरा इत्यादि या अन्य चीजें ।

जरा गौर करने पर समझ में आयेगा कि ऊपर लिखी हुयी सारी चीजें – चाहे पत्ते के रूप में हों या सब्जी के रूप में – ये सभी प्रोटीन के ही अलग–अलग रूप हैं ।

हमने कई डॉक्टरों से इस बारे में चर्चा की है । सभी यही कहते हैं कि लैट्रीन में अनपचे खाने का आना स्वाभाविक है और उसका किसी भी बीमारी से कोई सम्बन्ध नहीं है । कुछ लोगों का कहना है कि खाना ठीक तरह से न चबाने के कारण ऐसा होता है । लेकिन गुरुजी दावे के साथ साबित करते हैं कि ऐसा नहीं है । अगर लैट्रीन में कोई भी चीज अनपची दिखाई दे, इसका मतलब है कि प्रोटीन्स ठीक से नहीं पच रहे हैं । अक्सर ऐसे

लोग यह भी कहते हैं कि उनकी टट्टी नरम है । कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पेट साफ करने के लिये उन्हें दिन में दो-तीन या उससे अधिक बार जाना पड़ता है ।

इस सिलसिले में गुरुजी एक आम बात बार-बार दोहराते हैं । मुर्गी को जो खाना दिया जाता है, उसमें खास तौर पर मारबल की बुक्की डाली जाती है ताकि अंडे की बाहरी परत मजबूत बने । क्योंकि वह मारबल (marble) को पचाने की क्षमता रखती है । इसी प्रकार एक स्वस्थ मनुष्य के पेट में हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड (hydrochloric acid) नामक ऐसिड़ तैयार होती है जो गटर साफ करनेवाली ऐसिड़ से भी ज्यादा सख्त होती है जो हर कठोर वस्तु को पचा सकती है । जो भी खाया गया हो, उस घोर ऐसिड में उसका रूप बदलना ही चाहिये - चाहे चबाया हो, या न चबाया हो ।

इस ऐसिड के मुख्य फंक्शन (function) यानि कार्य निम्न हैं -

पहला यह है कि वह ऐसिड इतनी घोर या सख्त होती है कि उसमें कोई वाइरस या बैक्टीरिया जिंदा नहीं रह सकता । दूसरा यह कि घोर ऐसिड निकलने के बाद ही पेट में पैप्सीन (pepsin) नामक एन्ज़ाइम निकलेगा, जो प्रोटीन्स को पचाने का कार्य शुरू करेगा । तीसरा – पेट से जो खाना ऐसिड़युक्त होता है, वह जब ड्युओडेनम में जाता है तो उसकी pH अगर 4.5 से कम न हो तो सिक्रेटिन हारमौन नहीं बनेगा जो लिवर को बाईल भेजने को उकसाता है जो कि घी, तेल इत्यादि को पचाने के लिये मदद करता है। सो पेट की ऐसिड़ बहुत ही सख्त होनी चाहिये।

पेट की इस कार्य प्रणाली का ज्ञान इतना प्रचलित हो चुका है कि आजकल दसवीं पास बच्चे को भी इस चीज का पता है । तो शायद वाचक को लग सकता है कि जो चीज एक बच्चा भी समझ सकता है, उसके बारे में इतनी बहस क्यों हो रही है ?

यहीं पर हमें गुरुजी के प्रगाढ़ अनुभव और अपारदर्शी ज्ञान की गहराई का प्रदर्शन मिलता है । पाचन और अवशोषण होने के बाद बचा हुआ अवशेष मल के रूप में शरीर के बाहर निकाल दिया जाता है । तो आप ही बताइये कि शरीर के अंदर जब इतनी रासायनिक प्रक्रियायें हो रही हैं, क्या उस के बाद भी मल के अंदर भोजन की कोई भी चीज अपने ओरिजिनल यानि पहले के रूप में दिख सकती है ? अगर ऐसिड और पैप्सीन ठीक मात्रा में निकले, तो जो भी खाया गया हो, उसका रूप एवं रंग बदलेगा ही - चाहे उसने चबाया हो या न चबाया हो ।

कई हजारों पेशंटों के ऊपर अनुसंधान के बाद गुरुजी ने ऐसा पाया है कि प्रायः सभी पुरानी बीमारियों में रोगी को टट्टी में अनपचा खाना दिखता है । जिन लोगों में टमाटर के छिलके या गाजर या चुकंदर (beetroot) के टुकडे अपने स्वाभाविक रंग या अपनी निजी शकल या रंग में में मल में दिखायी दे रहे हैं । तो गुरुजी कहते हैं कि उन लोगों के पेट की ऐसिड या आंतडियों के एन्ज़ाइम्स का भोजन की पदार्थों के ऊपर इतना प्रभाव भी नहीं है कि वह कम से कम उसके रंग को तो बदल सके । तो यही मतलब हुआ कि वे स्राव ठीक मात्रा में या उचित घनत्व (concentration) में नहीं बन रहे हैं । अगर पेट की ऐसिड इत्यादि ठीक मात्रा में या उचित pH का न हों तो प्रोटीन्स ठीक से नहीं पचेंगे । इतना ही नहीं, भोजन द्वारा आये कोई भी कीटाणु आसानी से रक्त के अंदर घुस सकते हैं !

जैसे कि ऊपर कहा गया है, शरीर के सारे एन्ज़ाइम्स, ब्रेन के केमिकल्स एवं स्टीरॉइड होरमोन्स को छोड़कर अन्य सभी होरमोन्स प्रोटीन्स से ही बने हुये हैं । जब कुछ प्रोटीन्स ठीक से पचेंगे नहीं तो उनसे जो भी केमीकल्स बनने हैं, शरीर में उनकी कमी आयेगी ! और इनकी कमी के कारण शरीर का संतुलन बिगड़ेगा और बीमारियाँ आयेंगी ही !!

इधर एक और बात ध्यान में रखना है । अगर खाने में कुछ प्रोटीन्स की कमी हो जाये तो भी एक स्वस्थ मनुष्य का लिवर कई ऐमीनो ऐसिड्स बना लेता है - जिन्हें नोन एसेन्शियल ऐमीनो ऐसिड्स (non essential amino acids) कहते हैं - जिन्हें वह जरूरत के अनुसार उचित समय में और उचित मात्रा में बनाते रहता है । शरीर की इस अद्भुत क्षमता के कारण ही पाचन संस्था ठीक न होने पर भी हम तुरंत बीमार नहीं पड़ते या छोटी-मोटी बीमारियों से जल्दी विमुक्त हो पाते हैं । लेकिन गलत आदतों और गलत खाने-पीने से जब बार-बार बीमारियाँ आती हैं, तब यह क्षमता घटती जाती है और शरीर बड़ी बीमारियों का शिकार बनने लगता है ।

लैट्रीन में अनपचे खाने का आना – इसे LMNT में UDF यानि Un Digested Food in stools कहते हैं । पहले तो कई सालों तक रोगियों को पता भी नहीं चलता कि भोजन का कुछ भाग अनपचा ही उनकी टट्टी में आ रहा है । बाद में जब उनको पता चलता है, तब भी वे यही समझते हैं कि टट्टी में अनपचे खाने का आना स्वाभाविक है । और तब तक वे किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त हो चुके होते हैं ।

पेट की ऐसिड़ अगर ठीक हो तो भूख ठीक से लगेगी, खाना ठीक से पचेगा, और कोई बिमारी शरीर में आसानी से आ नहीं सकती । इसी क्षमता को योग में जठराग्नि कहते हैं । सो पेट की ऐसिड़ बहुत ही सख्त होनी चाहिये । यही कारण है कि LMNT कहती है कि खाने के साथ पानी या ठंडा पेय इत्यादि न पियें ताकि पेट की ऐसिड़ शांत न हो जाये ।

दूसरा, पेट से जो खाना एसिड़–युक्त होता है, वह जब ड्युओडेनम (छोटी आंत का पहला भाग) में जाता है तो उन स्त्रावों का pH अगर 4.5 से कम होगा तभी सिक्रेटिन (secretin) नाम का हारमौन बनेगा, जो लिवर को बाईल बनाने को उकसाता है जो कि फेट्स यानि घी, तेल इत्यादि को पचाने में मदद करने के लिये जरूरी है । अगर सिक्रेटिन नहीं बने तो फेट्स का पाचन भी बिगड़ सकता है ।

तीसरा, याद रहे कि पाचन संस्थान की केमीकल्स भी प्रोटीन्स से ही बने हैं । अगर कुछ प्रोटीन्स ठीक से न पचे तो अन्त में पाचक एन्ज़ाइम्स भी ठीक से नहीं बनेंगे जिससे पाचन क्रिया और बिगड़ती जाती है । इस प्रकार एक विष–चक्र–सा (vicious cycle) बनता जाता है ।

जैसे ऊपर कहा गया है, अगर किसी के पेट या आंतडियों में बैक्टरिया या वाईरस जिन्दा रहता है तो हमें समझना चाहिये कि उसके पेट की ऐसिड़ कम है या नहीं बन रही है । ऐसे लोगों को भी UDF यानि लैट्रीन में अनपचा खाना आता ही होगा । इसलिये ही गुरुजी डंके के चोट पर कहते हैं कि UDF का आना ही कई बीमारियों का एक मुख्य कारण है ।

अब जरा समझें कि LMNT में इस समस्या को किस प्रकार से हल करते हैं । न्यूरोथेरेपी उपचार का मुख्य पहलू यह है कि हम किसी एक बीमारी के लिये उपचार नहीं देते, बल्कि हम शरीर के उस दिन की स्थिति के अनुसार उपचार करते हैं । और हर दिन शरीर की स्थिति के बारे में पता लगाने के लिये गुरुजी ने एक अद्भुत तरीका निकाला है, और वह है – नाभी के इर्द–गिर्द कुछ खास चुने हुये स्थलों पर दर्द का एहसास होना । इनमें मुख्य है छाती के बीच की हड्डी (sternum) के नीचे का भाग, जिसे अंग्रेजी में सोलार प्लेक्सस (solar plexus) कहा जाता है ।

वैसे तो किसी को UDF आ रहा है या नहीं, उनके stools-test करने पर आसानी से पता लगाया जा सकता है, मगर LMNT में एक और आसान तरीका है । देखा गया है कि पेट की किसी भी बीमारी में सोलार प्लेक्सस (solar plexus) और नाभी के बीच के भाग में दर्द होता है । इस भाग में दर्द होना यह सूचित करता है कि पेट तथा आंतड़ी के कुछ भागों में रक्त प्रवाह सही नहीं है । ऐसे लोग अक्सर कहते हैं कि उन्हें दिन में तीन–चार बार नरम टट्टी होती है । कुछ लोगों को खाने के तुरंत बाद ही मोशन जाना पडता है । यह सूचक है कि उनकी पाचन शक्ति कमजोर है, जिसके कारण उन्हें UDF होगा ही । यह दूसरी बात है कि उन्होंने कभी लैट्रीन के अंदर झांक कर देखा ही नहीं होगा । लेकिन अगर आप इसके महत्व को समझा दें और उन्हें गौर करने के लिये कहें तो वे दूसरे दिन ही आकर कहेंगे कि हां लैट्रीन में अनपचा खाना दिखता है !

कुछ लोगों के जीभ में छोटे–बड़े खरोंच या लकीरें होती हैं। इधर एक प्रचलित लोकोक्ति ध्यान रखने योग्य है – *चेहरा मन का प्रतिबिंब है, जीभ आंतों का आईना है ।* जीभ में लकीरों का होना - यह सूचक है कि आंतों के अंदर भी ऐसी ही खरोंचें होंगी जिसके कारण वे पोषक तत्वों का अवशोषण ठीक तरह से नहीं कर सकतीं ।

यदि छोटे बच्चे हों तो उनकी मां से पूछा जाता है कि बच्चे को दूध पीने के बाद उल्टी होती है तो उसमें दूध का दूध निकलता है, या दही । अगर दूध का दूध निकले तो इसका मतलब है कि बच्चे के पेट में हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड नहीं बनती है, वरना वह दूध नहीं आता, दही बनकर निकलता ! इसका मतलब बच्चे को UDF आता है ।

ऐसिड ठीक से बनने के लिये जरूरत है हिस्टामाईन (histamine), ॲसेटिल कोलीन (acetylcholine) और गैस्ट्रीन (gastrin)। तो इसका मतलब इन तीनों में से एक या सभी ठीक से कार्य नहीं कर रहे हैं।

UDF की समस्या को LMNT यानि न्यूरोथेरेपी में तीन स्तरों से सुलझाया जाता है, जिसके लिये कई किस्म के UDF फारमुले हैं । ये निम्न तरह से कार्य करते हैं –

- पेट में रक्त संचार को बढ़ाते हैं जिससे हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड, पैप्सीन तथा पेट के अन्य स्रावों का निकास बढ़े ।
- पेशंट की स्थिति को देख कर जरूरत के अनुसार गौल ब्लैडर, लिवर, पैंक्रियास और छोटी आंत के विभिन्न भागों में रक्त संचार को बढ़ाते हैं ताकि प्रोटीन्स और न्यूट्रिएन्ट्स (nutrients) यानि पोषक तत्वों का पाचन, अवशोषण तथा चयापचय ठीक तरह से हो ।
- इम्यूनिटी यानि रोग–प्रतिकार शक्ति को बढ़ाते हैं ताकि कीटाणुओं से रक्षा हो ।

इन सब विशिष्ट तरीकों से शरीर के होरमोन्स तथा केमीकल्स का उत्पादन सुधर जाता है, एवं सैल्स तथा टिशूज़ की दुरुस्ती तथा अन्य निर्वाह एवं रक्षात्मक कार्यों को बढ़ावा मिलता है ।

\- -

UDF का आना किसी को भी किसी भी उमर में हो सकता है । छोटे बच्चों को सब से पहले UDF तब आता है जब उनके दांत निकल रहे हों । छोटे बच्चों में कुछ उमर के बाद यह तब आने लगता है जब बच्चे ने कोई भी उटपटांग चीज खा ली हो या जब उसका लिवर कमजोर हो रहा हो । अक्सर देखा जायेगा कि लैट्रीन में UDF आने के कुछ दिन बाद बच्चे को एकाध दिनों के लिये पेट या सिर में दर्द या फीवर इत्यादि आ सकते हैं । अगर बचपन में ज्वांडिस (पीलिया) भी आया हो, तो उसका असर लिवर पर कई बरसों तक रहता है ।

फीवर का आना यह सूचित करता है कि लिवर को कुछ दिनों के लिये आराम चाहिये । बच्चे की जीभ पर एक सफेद परत–सी दिखाई पड़ती है । उस समय भूख नहीं लगती । उस हालत में मां–बाप ने अपनी जिद्द से कोई भी ठोस पदार्थ उन्हें खिलाना नहीं चाहिये । जब बच्चा कुछ मांगे, तब सब्जियों का पतला सूप या फलों का ताजा रस दे सकते हैं । उसे खेलने से मना करें और खूब सोने के लिये कहें । एकाध दिन ऐसे करने से वे जल्दी ही बगैर किसी दवाई के भी ठीक होंगे ।

बड़े व्यक्तियों में UDF अक्सर उन दिनों आने लगता है जब अनियमित या असीमित भोजन करते हैं । इसका आम उदाहरण है पार्टियों में या शादी–विवाह में भूख न होने पर भी दूसरों के आग्रह से खाना खा लेना । ऐसी अवस्था में बाद में एकाध दिनों के लिये उपवास रखना ही सब से उत्तम उपाय है । उपवास के दौरान शरीर को अंदरूनी दुरुस्ती के लिये समय मिल जाता है और वह जल्दी ही ठीक होने लगता है ।

UDF आने का एक और मुख्य कारण है आजकल की उपजाऊ प्रणाली । वर्तमान समय में फसलों के लिये यूरिया जैसी कृत्रिम खाद (फरटीलाइसर) और कीटनाशकों का उपयोग अत्यधिक मात्रा में हो रहा है । उस फसल को खाने के बाद वे केमीकल्स हमारे शरीर के अंदर जाते हैं और हमारे पाचन तंत्र को ही नहीं बल्कि हमारी इम्यूनिटी (रोग प्रतिकार शक्ति) को भी बिगाड़ते हैं । साथ ही, इस प्रणाली का एक और दुष्प्रभाव है कि कुछ सालों तक तो लगता है कि कमाई अधिक हो रही है पर दीर्ध काल के लिये यह नुकसानदायक है, क्योंकि इस से धरती की उर्वरा शक्ति या उपजाऊ क्षमता कम होती जाती है जो कि आने वाली पीढियों के लिये अहितकारी साबित होगा ।

जब सारे देश में ऐसी अवस्था है, तो ऐसा प्रश्न मन में उठ सकता है कि इसमें कोई क्या कर सकता है ? इसके लिये भी गुरुजी का एक महत्वपूर्ण और व्यवहार–योग्य सुझाव है । उन का अनुरोध है कि जिन बड़े–बड़े लोगों के पास अपनी जमीन हो, वे उस के कम से कम कुछ भाग में नैसर्गिक खाद का उपयोग करें और जब कभी कुटुम्ब में किसी के जन्म दिन या अन्य शुभ अवसर आये तब उस भूमि से उपजे हुये फसल को अपने परिवार के अन्य सदस्य तथा मित्रों में भेंट–स्वरूप दें । इससे धीरे–धीरे लोगों के मन में इस प्रकार के फसलों के प्रति तथा स्वास्थय के प्रति जागरूकता निर्माण होगी, और हमारी पुरातन कृषि पद्धति – जो सारे समाज के लिये हितकारी थी – उस दिशा में वापस लौटने के लिये अभिरुचि निर्माण होगी ।

कुछ लोगों का मानना है कि UDF का आना अपने में कोई बीमारी नहीं है, इसलिये इससे घबराना नहीं चाहिये । यह सच है कि यह कोई बीमारी नहीं है । UDF का आना सिर्फ यह सूचित करता है कि जो भी खाया गया है, उसे शरीर पचाने में असमर्थ है । लेकिन अगर इसे अनदेखा किया जाय तो यही बाद में बीमारियों की जड़ बनती है ।

गुरुजी ने पाया है कि दुनिया की बड़ी से बड़ी बीमारियों का कारण **UDF** का आना ही है ।

तो जैसे ही हमें संडास में कुछ भी अनपचा दिखाई दे, सब से पहले हमें अपनी भोजन–प्रणाली को बदलनी चाहिये । सब से बढिया है कि हम तुरंत ही प्राकृतिक चिकित्सा के किसी प्रशिक्षित व्यक्ति के मार्ग–दर्शन में आठ दिन के लिये नियमित रूप से उपवास करें । अगर ऐसा न हो सके तो कम से कम यह नियम बना लें कि भूख लगने के बाद ही खाना खायें । और पकाये हुये भोजन खाने के बजाय अंकुरित अनाज जैसे जीवित आहार (live food) और भरपूर मात्रा में मौसम के ताजे फलों का रस तथा सलाद इत्यादि लें, जिसे शरीर आसानी से पचा सके और जिससे शरीर को आवश्यक विटामिन, मिनरल्स (minerals) यानि खनिज धातु इत्यादि प्राप्त हो । साथ ही LMNT के उपचार लेते जायें । इसके अलावा विपरीत करणी, अग्निसार तथा नाडि–शुद्धि प्राणायाम जैसी योग–साधनायें भी पेट की जठराग्नि को उकसाने में सहायक होती हैं ।

अनेक प्रकार की रोगियों से पूछ–ताछ करने के बाद गुरुजी की खोज है कि सभी पुरानी बीमारियों के रोगियों को अनपचा खाना अक्सर आता है। इसके कुछ उदाहरण –

- ✓ बैम्बू स्पाइन (bamboo spine) यानि ऐन्किलोज़िंग स्पोन्डीलाईटिस (ankylosing spondylitis),
- ✓ डिफौरमिटी ऑफ बोन्ज (deformity of bones) यानि हड्डियों का टेढ़ा–मेढ़ा होना इत्यादि।
- ✓ कैंसर (cancer),
- ✓ हेपाटाईट्स बी (Hepatitis B),
- ✓ RA–पौसिटिव (RA positive),
- ✓ इडियोपैथिक रिकेट्स (Idiopathic rickets), सारे शरीर में गांठें,
- ✓ इडियोपैथिक स्कोलियोसिस (idiopathic scoliosis)

(किसी भी बीमारी के पहले 'इडियोपैथिक' – यह शब्द सूचित करता है कि यह बीमारी क्यों आयी इसका ठीक कारण मालूम नहीं है)

ध्यान रहे कि UDF का आना इतनी आसानी से खत्म नहीं होता, क्योंकि वह व्यक्ति के खान–पान तथा अनियमित जीवन शैली के कारण ही होता है । सो ऐसा नहीं कि कुछ दिनों के उपचार के बाद वह हमेशा के लिये खत्म हो जायेगा । हर चार–पांच महीनों के बाद उसे चैक करके ठीक कराना लाभकारी होगा ।

चूंकि सभी लोगों के खान–पान, रहन–सहन इत्यादि एक–जैसा नहीं होता, सो एक ही उपचार सभी मरीजों के लिये लागू नहीं होगा । पाचन संस्थान की कार्य शैली के गहन अभ्यास के बाद गुरुजी ने विभिन्न प्रवृत्तियों के मरीजों के लिये UDF को ठीक करने के अलग–अलग प्रकार के उपचार बनाये हैं । उनका मन्तव्य है कि पुरानी बीमारियों में – बीमारी चाहे कोई भी हो – UDF को ठीक करने का उपचार ही इलाज का सबसे पहला पडाव होना चाहिये । इसके अलावा ऐसा देखा गया है कि जब टट्टी में अनपचा खाना आना बंद हो जाता है, उसी से रोगी की बीमारी में चमत्कारिक सुधार देखा जाता है । उसके बाद शरीर की स्थिति के अनुसार अन्य उपचार देने से नतीजे और अच्छे पाये गये हैं ।

गुरुजी की इस कथन की सच्चाई का प्रमाण कर्नाटक के डॉ. कृष्णमूर्ति जालिहाल के निम्न वृत्तान्त से मिलता है । डॉ. कृष्णमूर्ति जी पिछले चालीस वर्ष तक कई बडे–बडे अस्पतालों में मशहूर सरजनों (surgeons) के साथ anesthetist के रूप में काम कर चुके हैं । कुछ साल पहले वे ऐलोपैथी की सेवा से निवृत्त हुये और अब वे केवल न्यूरोथेरेपी द्वारा लोगों का इलाज कर रहे हैं । उन्हीं के शब्दों का उल्लेखनीय अनुवाद प्रस्तुत है –

'जब पेशंट हमारे पास LMNT उपचार के लिये आते हैं तो पहले पडाव में – चाहे बीमारी कोई भी हो – हम उनको केवल UDF का उचित उपचार देते हैं । उसके बाद दूसरे पडाव में ही हम बीमारी के अनुसार जो भी उपयुक्त LMNT उपचार हो, वह देते हैं ।

कई मरीजों पर प्रयोग करने के बाद हमारा यह तजुर्बा है कि उन दस दिनों में ही उनके बहुत सारे लक्षण ठीक हो जाते हैं, जब कि हमने उनकी बीमारी के लिये जो खास LMNT उपचार है, वह नहीं दिया है । इतना ही नहीं, कुछ दृष्टान्तों में मरीजों के रिश्तेदारों ने हम से कहा है कि दस ही दिनों के LMNT उपचार के बाद ही रोगी के स्वभाव, दृष्टिकोण, एवं प्रकृति में कमाल के परिवर्तन आये हैं । एक ने बताया कि "पहले मेरे पिताजी हर छोटी बात के लिये चिड़ जाते थे । लेकिन आपके दो चार दिनों के (UDF) उपचार के बाद ही पिताजी का चिड़चिड़ापन पूरा ही निकल गया कि हम सभी हैरान हैं कि यह हुआ कैसे ?"

जब टट्टी में अनपचा खाना दिखायी दे, हम उसे UDF कहते हैं, जिसके बारे में पहले ही लिखा गया है।

उपचार - I (½) Ku – 20 secs x 6 treatments
II Big Toe Gas x 6 treatments (पेट में HCl को बढ़ाने के लिये)
III (10) Organ clearance + Sacral clearance (L1-L5)

UDF के बारे में कुछ सामान्य प्रश्न और उनका उत्तर

a) UDF का पूरा नाम क्या है ?
b) Lab test किये बगैर हो कैसे पता लग सकता है कि किसी को UDF आ रहा है ?
c) UDF की पहचान क्या है ?
d) और इससे क्यों बीमारियाँ आती हैं ?

a) UDF का पूरा नाम है - *undigested food in stools* यानि संडास में अनपचा खाना आना। यह साधारणतः laboratory में stools test करने से पता चल सकता है।
b) अगर छोटे बच्चे हों तो वे दूध पीने के तुरंत बाद अगर उल्टी करें तो दूध का दूध ही निकलेगा, जब कि उसे दही बनकर निकलनी चाहिये। अगर बडे उमर के हों तो उन्हें नाभी के ऊपर 'Gas' वाले point में बहुत दर्द होगा। इसका मतलब है कि उसके पेट में ऐसिड या तो नहीं बन रही है या कम बन रही है। इससे हम बगैर किसी test किये ही समझ सकते हैं कि उसे UDF की तकलीफ होगी। ऐसे लोगों की एक और पहचान है कि उनके जीभ के बीच में काफी cuts होते हैं ।
c) UDF की सहज पहचान है - टमाटर के छिलके, या मटर मूंगफली इत्यादि के दाने, या भिंडी टमाटर जैसे सब्जियों के बीज, या पालक मेथी धनिया जैसे पत्ते, या कैरट (carrot), बीट (beetroot) जैसे सलाद (salad) इत्यादि -- संडास में साबुत अनपचा यानि वैसे के वैसे आते हैं
d) इससेबीमारियाँ क्यों आती हैं ? *ये सभी प्रोटीन्स् हैं।* भोजन में खाया हुआ कोई भी पदार्थ संडास में अपने original रूप में नहीं दिखना चाहिये। अगर ये प्रोटीन्स् साबुत ही निकल रहे हैं, तो इसका मतलब है कि आंतरी (intestines) में प्रोटीन्स् पच ही नहीं रहे। शरीर के अनेक हौरमोन्स (hormones) एवं एनज़ाइम्स (enzymes) के मूल पदार्थ प्रोटीन्स् से ही बनते हैं। अगर प्रोटीन्स् ठीक से पचे नहीं तो वे hormones या enzymes ठीक से नहीं बनेंगे। एवं उनके अभाव में glands ठीक से काम नहीं कर पायेंगे। शरीर का हर एक कार्य के नियंत्रण के लिये किसी एक हौरमोन या एन्ज़ाइम की जरूरत है। इसीलिये ही गुरुजी बार-बार कहते हैं कि UDF का आना ही बीमारियों का मुख्य कारण है।

UDF किन बीमारियों में पाया जाता है ?

यह गुरुजी की अतुल खोज है कि सारी पुरानी बीमारियों के रोगियों को UDF *आता है।* जैसे कि

- फिट्स, (fits), कैन्सर (cancer),
- रयूमैटोइड आरथ्राइटिस (rheumatoid arthritis),
- एड्स (AIDS), सोरियैसिस (psoriasis),
- इडियोपैथिक स्कोलियोसिस (idiopathic scoliosis),
- पारकिन्सन्स डिज़ीज़ (parkinson's disease),
- ओस्टीयोपोरोसिस (osteoporosis)
- हायपो या हायपर थाइरौइडिज़म (hypo or hyper thyroidism),
- अतीव थकान (fatigue)
- एक्ज़ीमा या अन्य चमडी की बीमारियाँ (eczema or other skin disorders),
- सारे शरीर में गांठें या दर्दें (aches and lumps in many parts of the body) इत्यादि। (छोटे lumps को लाइपोमा (lipoma) भी कहते हैं।)

इसीलिये ही गुरुजी कहते हैं कि UDF का आना ही *सारे बडे-बडे बीमारियों का मूल कारण है।*

अगर कोई कहे कि उसे संडास में अनपचा खाना आ रहा है, तो उसका मतलब क्या है ?

संडास में अगर खाना अनपचा ही दिखे, यानि जैसे के तैसे आये तो उसका मतलब है कि पेट में ऐसिड (जिसे हाइड्रोक्लौरिक ऐसिड कहते हैं) - उस की मात्रा कम है। खाना खाते समय बीच-बीच में पानी या soft drinks पीने के कारण भी ऐसा हो सकता है। पेट में ऐसिड का pH 3 तक या उससे नीचे नहीं जाने से पेप्सिन (pepsin) नहीं बनेगा एवं प्रोटीन्स् नहीं पचेंगे। अगर प्रोटीन्स् नहीं पचेंगे तो शरीर के कई सारे हौरमोन्स एवं एनज़ाइम्स (enzymes) नहीं बन पायेंगे।

और एक कारण भी है। घोर ऐसिड में बैक्टीरिया या वाइरस जिन्दा नहीं रह सकते। अगर पेट में ऐसिड की मात्रा कम हो तो उसके कारण खाने में जो बैक्टीरिया या वाइरस हैं, वे आसानी से आतडियों तक पहुँच सकते हैं और वहाँ से रक्त में घुस सकते हैं। इन्ही कारणों से गुरुजी बार-बार कहते हैं कि UDF का आना ही बडे-बडे बीमारियों के आने का एक मुख्य कारण है । चूंकि अलग-अलग प्रवृत्ति के लोग होते हैं, सो अनेक प्रकार के UDF फौरमुला बनाये गये हैं ।

UDF पुरानी **(OLD UDF)**

I (15) Medulla

II (2) Rt Parkhoo (2) Lt Parkhoo

III (8) Rt Parkhoo (8) Lt Parkhoo

IV (½) Ku – 20 secs x 4 treatments

V (10) Medulla (1) Gas खाली –6 वाला

VI (1) Gal (1) Spl (1) Liv – 3 वाला (1) Mu – 3 वाला

VII Ajay Normal → (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 वाला (1) Gas ' I ' – 6 वाला

इनमें हर प्वाइंट किसलिये दिया गया है यह समझें -

- ✓ (15) Medulla - ॲसेटिल कोलीन (acetyl choline) पेट में acid बनने के लिये जरूरी है
- ✓ Right Parkhoo एवं Left Parkhoo - folic acid/thiamine & B_{12} /niacin
- ✓ पाचन संस्थान में niacin तथा thiamine महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ग्रंथियों से स्राव ठीक से बनने व निकलने के लिये नॅयासिन जरूरी है। नॅयासिन की कमी से मस्सल्ज़ में कमज़ोरी होगी और ग्लैंड्स के काम करने की क्षमता कम हो जायेगी, मुँह तथा आंतों में इन्फ्लमेशन आ जाती है। थायामीन पेट की स्मूथ मस्सल्ज़ (smooth muscles) के लिये जरूरी है । पेट तथा पाइलोरस (pylorus) के smooth muscles की सही तरीके से कार्य करने के लिये metabolized glucose चाहिये, जिसके लिये thiamine जरूरी है।
- ✓ (½) Ku-20 seconds x 4 treatments - इन्फेक्शन एवं इन्फ्लमेशन दोनों को खत्म करने
- ✓ (10) Medulla - वेगस नर्व द्वारा सारे पाचन संस्था को उकसाने के लिये
  (1) Gas Only - 6 Points - पेट में ब्लड सप्लाई बढाने के लिये

इन सभी प्वाइंट में सबसे मुख्य हैं - **(10) Medulla** एवं **'Gas Only'**

ये दोनों मिलकर पेट के ऐसिड को और बढायेंगे जिससे पेप्सीन का कार्य अच्छा होगा, प्रोटीन्स का पाचन अच्छी तरह से होगा

याद रहे कि (10) Medulla कैंसर के मरीजों को नहीं देना क्योंकि जब यह अनेक जगहों पर काम करता है, तो शायद कैंसर के सैल्लज़ को भी उकसायेगा ।

इसके बाद (1) Gal (1) Spl (1) Liv – 3 वाला (1) Mu – 3 वाला - पाचन संस्थान के लिये तथा Ajay Normal formula अवशोषण के लिये ।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

इस उपचार के बाद अगर Large Folic Black दिया जाय तो उपचार के तुरन्त बाद ही चेहरे का काला रंग 25% कम हो जाता है ! और दूसरे दिन सुबह लैट्रीन में पहला 1" टट्टी काला होगा जिसका मतलब वे मलाशय के जरिये toxins निकल रही हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

UDF formula में (½) Ku-20 seconds किसलिये देते है ?
जब किसी को UDF आता है – तो उसके शरीर में बहुत सारे organs में infection होगा। इस ट्रीट्मेंट से ऐसा पाया गया है कि सारे शरीर में जहाँ भी infection हो या inflammation – चाहे वह किडनी में हो या चाहे intestines में – सभी ठीक हो जाते हैं।
यह कैसे होता है यह बताने के लिये गुरुजीने WBC's कार्यों के बारे में काफी गहराई में पढ़ाई की है और उसके बाद यह अनुमान लगाते हैं, जिसकी theory नीचे दी गयी है।
हमारे शरीर में infection से लडने के लिये कई सारे cells हैं जो जो अलग-अलग तरीके से infection से लडते हैं।

इनमें मुख्य हैं –
मोनोसाइट्स ***(monocytes)*** *एवं ग्रैनूलोसाइट्स* ***(granulocytes)*** **-** *मोनोसाइट्स (monocytes)* - ये ब्लड में कार्य नहीं कर सकते क्योंकि वे ECF यानि एक्स्ट्रा सैल्यूलर फ्लूइड (extra cellular fluid) में 8-10 घंटे ही जीवित रह सकते हैं । लेकिन वे capillaries के छिद्र से निकलकर tissue में घुस जाने पर दस साल तक भी जिन्दा रह सकते हैं। जब कोई infection होता है, तब टिशूज़ से monocytes निकलकर antigen से लडते हैं और खुद मर जाते हैं। लेकिन मरने से पहले कम से कम 20 से 50 antigens को मार देते हैं। ये चाहे infection हो या inflammation – दोनों में काम करेंगे। *ग्रैनूलोसाइट्स (granulocytes)* तीन प्रकार के हैं जिनके नाम हैं – न्यूट्रोफिल्स (neutrophils), ईसीनोफिल्स (eosinophils) एवं बैसोफिल्स (basophils). उनके कार्य इस प्रकार हैं –

न्यूट्रोफिल्स **(neutrophils)** – ये ब्लड के अन्दर बहुत पावरफुल (powerful) हैं। ये ब्लड में cancer-जैसे cells को भी मार सकते हैं।

ईसीनोफिल्स **(eosinophils)** – ये oxygen का एक highly reactive form यानि बहुत प्रभावशाली रूप बनाते हैं जो हर प्रकार के बैक्टीरिया (bacteria) को खत्म कर देगा। (यह ओज़ोन (Ozone) यानि प्योर ओक्सीजैन (pure oxygen) जैसा काम करता है।)
लेकिन वे सिर्फ ब्लड के अन्दर कार्य कर सकते हैं। वे टिशूज़ के अन्दर घुस नहीं सकते।[13]

बैसोफिल्स **(basophils)** - ब्लड में इनकी मात्रा 0-1% यानि बहुत ही कम है। पर LMNT को इससे बहुत लाभ होता है। जब शरीर किसी infection का मुकाबला नहीं कर सकता तब वह inflammation में बदल जाता है। जब हम 'Ku' treatment देते है तब वह hypothalamus द्वारा pituitary gland को ACTH बनाने के लिये उकसाता होगा – जो adrenal gland को उकसायेगा कि वह उस inflammation को रोकने के लिये कौरटिसोल (cortisol) बनाये।
(½) Ku-20 seconds – देने के बाद चाहे वह granulocytes को उकसाये, चाहे monocytes को,या ACTH को – यह देखना शरीर का काम है। इस ट्रीट्मेंट से शरीर में चाहे इन्फेक्शन हो या इन्फ्लमेशन वह खत्म हो जायेगा।
-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

[13] Taber 18th ed. p.653 – Eosinophils destroy parasitic organisms. They release chemicals that cause bronchoconstriction in asthma. लंग्ज़ (lungs) में infection होने से Eosinophils बढ़ जाते हैं। Bronchial asthma यानि bronchitis का ट्रीट्मेंट है – (6) Right Swt.

पाचन शक्ति ठीक करने के अन्य **UDF** फौरमुले

UDF के साथ अलग-अलग लक्षणों को ठीक करने के अलग-अलग फॉरमुला बनाये गये हैं। हर फॉरमुला में (10) Medulla एवं Gas only का होना जरूरी एवं अनिवार्य है। इनमें कुछ मुख्य फॉरमुला नीचे हैं, जो सभी को लाभ पहुँचाते हैं -

I (15) Medulla
II (2) Rt Parkhoo (2) Lt Parkhoo
III (½) Ku – 20 secs x 4 treatments
IV (10) Medulla (1)Gas Only – 6 points
V (1) Gal (1) Spl (1) Liv – 3 points (1) Mu – 3 points (1) Rt.Ov. (1) Lt.Ov.
VI Ajay Normal → (8) Pan (1) Gal (2) Liv-3wala (4) Gas I-3 wala **

* जिनको कब्जी है उन्हें "(6)Gas ' I ' – 3 points " देना है । उससे भी राहत न हो तो साथ में (2) S4-5 भी जोड़ सकते हैं ।

** जिनको नरम मौशन हो या जिनकी ऐल्कली बढ़ी हुयी हो उन्हें (1)Gas ' I ' – 6 points** दें

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

नीचे का यह फॉरमुला भी पेट 'set' करने के लिये है। यह उन्हें देना जिन्हें 'Gas' 'B_{12}' 'folic acid' में दर्द है और कब्जी भी है।

I (15) Medulla
II (2) Rt Parkhoo (2) Lt Parkhoo
III (8) Rt Parkhoo (8) Lt Parkhoo
IV (½) Ku – 20 secs x 2 treatments
V (½) Ku – 6 secs x 2 treatments
VI (10) Medulla (1)Gas Only – 6 points (1)Gas ' I ' – 6 points*
VII Fast treatment. (Gas only, Gas I, Gal, Spleen, Liv, Mu, WD)
VIII Ajay Normal (8) Pan (1) Gal (3) Liv (6) Gas I-3 Wala

* 'Gas I' कब्ज को ठीक करेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

घुटने का दर्द, पीठ का दर्द, CP के बच्चों के लिये, एवं जिनको ऐल्कली बढ़ी हो

I (15) Medulla
II (3) Raman treatment
III (2) Rt Parkhoo (2) Lt Parkhoo
IV (½) Ku – 20 secs x 4 treatments
V (10) Medulla (1)Gas Only – 6 points + अगर कब्ज हो तो (1)Gas ' I ' – 6 points

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

अगर इन्फेक्शन या इन्फ्लमेशन हो तो

I. (3) Raman Treatment
II. (2) Rt. Parkhoo (2) Lt. Parkhoo
III. (½) Ku 20 Sec. X 6 Treatments
IV. (10) Medulla (1) Gas Only - 6 Pts (1) Gas I – 6 Points*
V. (8) Pan (1) Gal (2) Liv - 3 Pts (1) Gas I - 6 Pts

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

शरीर में दर्दे, ब्रेन की बीमारियाँ, पैरालाइसिस Body pain, brain disease, paralysis

I (3) Necklace
II (3) Raman Treatment
III (2) Rt. Parkhoo (2) Lt. Parkhoo
IV (8) Rt. Parkhoo (8) Lt. Parkhoo
V (½) KU - 20 sec. X 2 Trts.
VI (½) KU - 6 sec. X 2 Trts.
VII (10) Medulla (1) Gas only -6Pts. (1) Gas I – 6 Points*
VIII (8) Pan (1) Gal (2) Liv 3 Pts. (1) Gas I -6 Pts.

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Raman treatment - पेरीटोनियम (peritoneum) के लिये
मुख्य लक्षण जिनके लिये UDF फौरमुले लाभदायक हैं –
'Gas' प्वाइंट में दर्द, पेट में भारीपन, गैस, जी मिचलाना, पेट में भारीपन के साथ सिर दर्द इत्यादि।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

HCl treatment formula

कुछ पेशंटों में देखा गया कि UDF उपचार को बार-बार देना पड़ता है, फिर भी समस्या पूर्ण रूप से ठीक नहीं हो पाता। इसलिये निम्न उपचार बनाया गया जो खास कर पेट की HCl ऐसिड को बढ़ाने का काम करता है। ऊपर के किसी भी UDF formula के 5 से 15 मिनट बाद यह HCl उपचार देने से प्रोटीन्स अच्छी तरह से पचने लगते हैं तथा इन दोनों के बाद हम कोई भी अन्य उपचार दें तो वह और लाभ देता है।

I (15) Medulla - ॲसेटिल कोलीन के लिये

II (½) Ku – 6 secs x 1 trt. - मास्ट सैल्स (mast cells) द्वारा हिस्टामाइन को उकसाने

III 1 pt. Gall (जांघ के बीच में) - पाइलोरस के बाहर गैस्ट्रीन बनानेवाली सैल्स को उकसाने

IV B_{12} 2:2 - B_{12} भी ॲसेटिल कोलीन को उकसाता है।

V Fast : Gas : GasI : Gal : Spl : Liv : Mu – भोजन के पाचन के लिये

VI Ajay Normal (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 वाला (4) Gas ' I ' – 3 वाला - पचे हुये भोजन के अवशोषण के लिये

मुख्य लक्षण – 'Gas' प्वाइंट में दर्द या कड़कपन, बार-बार गैस होना, बच्चों में दूध पीने के बाद तुरन्त उल्टी की या डकार दिया तो उसमें दही की जगह दूध दिखायी देना इत्यादि लक्षणों में यह बहुत फायदेमन्द है। खास कर मन्द बुद्धि के बच्चों के लिये यह बहुत लाभदायक है। UDF तथा HCl - ये दोनों उपचार इन बच्चों के माता पिता को सिखा देना है और कहें कि रोज देते जायें।

इन्फ्लमेशन तथा इन्फेक्शन ठीक करने के उपचार
Inflammation treatment formula (ITF)

ये उपचार कई दशकों पहले, यानि करीब 1970 के आसपास बनाये गये। ये भी हरि की कृपा से आयी हैं। कई किस्म के पेशंटों पर उपचार करते-करते गुरुजी सोचने लगे कि अगर कोई कीड़ा या मकोड़ा काटे तो वहाँ लाल होकर उस जगह में सूजन हो जाती है। तो इसके लिये हम कैसे उपचार करें ?

इस के बारे में अभ्यास करने लगे तो पता चला कि -

शरीर में जब बाहरी कीटाणु प्रवेश करते हैं तो शरीर अपने आप को बचाने के लिये कई तरह की प्रक्रिया करती है जिसे inflammatory response कहते हैं। इससे हमारे शरीर की रक्षात्मक फौज (यानि तरह तरह के WBC's) जो ब्लड में घूमते रहते हैं, वे उस जगह पहुँच जाते हैं और उस बाहरी कीटाणु से लड़ते हैं। जब यह ज्यादा हो तो अपने शरीर के तथा बाहर के मरे हुये सैल्स सब मिलकर उस जगह में जमने लगते हैं जिसे इन्फ्लमेशन (inflammation) कहा जाता है। शरीर में इन्फ्लमेशन को कंट्रोल (control) यानि रोकने का मुख्य दायित्व ऐड्रीनल कौरटेक्स के कौरटीजॉल (cortisol) हौरमोन का है।

अब मन में प्रश्न आया कि ऐड्रीनल ग्रंथी तो शरीर के पीछे किडनीज़ के ऊपर है! उसे कैसे उकसायें?

अभ्यास करते-करते पता लगा कि ऐड्रीनल कौरटेक्स की नर्व सप्लाई T6 के नीचे से मिलती है ? तो गुरुजी ने पेशंट को उल्टा लिटाया और सोचा कि पीठ के उस जगह पर घिसकर तो देखें ? तो ऐसे कुछ बार करते-करते अचानक पेशंट ने कहा कि उसे बहुत अच्छा लग रहा है। यही उपचार कुछ देर के अंतर में और दो बाद दिया गया और फिर देखा कि करीब-करीब सारी सूजन उतर चुकी थी। सो उपचार इस प्रकार बनाया गया -

(6) Adr x 3 treatments. अगर जरूरत हो तो **20** मिनट के बाद दुबारा दे सकते हैं।

- यह इन्फ्लमेशन को ठीक करने का सबसे महत्वपूर्ण उपचार साबित हुआ है।
- कई साल पहले हमारे आश्रम में काम करनेवाले एक लड़के को एक रात बिच्छू ने डंक मार दी। और देखते ही देखते उसके बगल (armpits) के नीचे सूजन आ गयी। वह हाथ नीचे नहीं कर पा रहा था, और दर्द के मारे चिल्ला रहा था। उसी समय गुरुजी ने खुद उसे (6) Adr x 3 treatments दिया। और ऐसे हर बीस मिनट बाद देते गये।
  पहले उपचार के बाद दर्द तुरन्त कुछ कम हुआ। दूसरे उपचार के बाद उसका चिल्लाना कम हुआ। हाथ के नीचे का गोला कम था और हाथ लगाने पर ही दर्द होता था। तीसरे उपचार के बाद दर्द एकदम गायब ! और पाँच उपचार के बाद हाथ के नीचे का गोला न के बराबर हो गया।
  दूसरे दिन सुबह एक और उपचार दिया गया जिसके बाद वह पूर्ण ठीक हो गया।
- इन्फ्लमेशन को सूचित करने के लिये शब्द के अन्त में 'itis' जोड़ देते हैं। जिस बीमारी के नाम के अन्त में 'itis' होता है, उसके लिये यह सबसे उचित उपचार है। उस समय पोलीयो मायेलाइटिस (polio myelitis) नामक बीमारी के कई पेशंट गुरुजी के पास आते थे। myelitis –यह इन्फ्लमेशन की ही बीमारी है। जैसे ही उन्होंने उस पेशंट को (6) Adr x 3 treatments का उपचार दिया तो पेशंट ने तुरन्त कहा कि उसे कुछ अच्छा लगा। ऐसे कई पेशंटों पर देने के बाद सब कहने लगे कि उपचार के बाद उन्हें बहुत अच्छा लगता है। फिर उनसे बात करते करते यह पाया गया कि कई लोगों को पहले फीवर यानि बुखार हुआ था और उसके लिये कुछ इन्जेक्शन या दवाई दिया गया तो उसके बाद उनको पोलियो की बीमारी हुयी थी। तो गुरुजी ने सोचा कि क्या यह उपचार दवाइयों के दुष्परिणाम को भी ठीक कर सकता है ?
- उसे आजमाने का अवसर जल्दी ही आ गया। एक औरत आयीं जिनकी आँखें लाल थीं और उनसे पानी निकल रहा था। पूछने पर उन्होंने कहा कि पहले उसे किसी अन्य बीमारी के लिये इन्जेक्शन दिया गया। अस्पताल से घर लौटी तो दूसरे दिन सुबह से उसकी आँखों में खुजली और खारिश होने लगा, और कई महीनों से उनसे पानी निकल रहा था। गुरुजी ने ऊपर का उपचार <u>सिर्फ एक ही बार दिया</u> कि उससे तुरन्त ऐसा लाभ मिला कि पूछो मत।
  बाद में कई लोगों पर इसे आजमा चुके हैं। सभी को इस उपचार से फायदा हुआ है - इसका मतलब यह उपचार दवाइयों के दुष्परिणाम को दूर करने के लिये उपयोगी है - यह साबित हुआ। आज कई दशकों से

गुरुजी इस उपचार को दवाइयों के दुष्परिणाम से राहत देने के लिये दे रहे हैं, जिसके नतीजे बहुत ही अच्छे आ रहे हैं।

- कुछ साल बाद एक अन्य पेशंट को दवाइयों के दुष्परिणाम के कारण कुछ सूजन-सी थी। उस समय गुरुजी ब्रेन के कार्यों के बारे में कुछ पढ़ रहे थे। तब तक उन्होंने सिर्फ (6) Medulla की खोज की थी। उस पेशंट को उपचार करते समय - हरि की प्रेरणा से - मन में अचानक यह सोच आयी कि उन्हें मेडूला उपचार और अधिक बार दें तो क्या होगा ? तेजी से मेडूला-जैसा देने लगे और तीस बार करने के बाद उनका हाथ रुक गया कि अचानक पेशंट ने कहा कि उसे बहुत ही अच्छा लग रहा है। और आप विश्वास नहीं कर सकते कि <u>उसी वक्त</u> उस पेशंट की सूजन खत्म-सी हो चुकी थी !
  उस उपचार का नाम (30) Medulla रखा गया। इसका प्रयोग कई पेशंटों पर किया गया और कई अनुभवों से यह सोचा जाता है कि यह प्रोस्टाग्लैन्डिन्स (prostaglandins) को उकसाता या उनके कार्य को सुधारता है।

- हमारे तिरुपूर LMNT सेन्टर की शुरुआत में एक पेशंट के साथ उनकी एक सहेली आयी, जिन्हें अपने इस उपचार पद्धति में विश्वास ही नहीं था। बार-बार कह रही थीं कि वे हमेशा प्राणायाम करके अपने आप को ठीक रखती थीं, सो उन्हें किसी भी प्रकार का उपचार की जरूरत नहीं। जब वे चल रही थी तो मुझे लगा उनकी चाल में कुछ गड़बड़ी है। वे थोड़ी-सी लड़खडाती हुयी चल रही थीं। लेकिन उसके बारे में उन्होंने कुछ नहीं कहा। अचानक प्रभु की कृपा से मैंने देखा कि उनकी एक एढ़ी के ऊपर कुछ सूजन-सी थी।

  बातों बातों में उस सूजन के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा - " ओह ! वह तो कुछ नहीं है ! बरसों पहले मेरी एढ़ी के ऊपर एक फोड़ा हुआ था जो पक नहीं रहा था। डॉक्टरों ने उसे काटकर निकाल दिया। तभी से उधर हल्की सी सूजन है।"
  मैंने कहा - " इस सूजन को चुटकी बजाने के समय के अंदर हम LMNT उपचार द्वारा कम कर सकते हैं ! "
  उन्होंने कहा - "लेकिन यह तो बीस साल से है ! कभी-कभी दर्द करता है। मुझे इससे कोई परेशानी नहीं है! और वैसे भी, कोई मेरे ऊपर चढ़े, यह मुझे बरदाश्त नहीं है। मैं अपने ऊपर किसी को पैर रखने नहीं दूंगी।"
  LMNT चिकित्सा के प्रति उनकी हिचकिचाहट क्यों है, यह बात अब मुझे समझ आयी।
  तो मैंने कहा - " क्या मैं बैठे-बैठे ही आपके कान के नीचे गर्दन पर कुछ उपचार कर सकता हूँ ?"
  पहले वे राजी नहीं थीं, लेकिन अपनी सहेली के बार-बार कहने पर राजी हुयीं।
  बस्स ! फिर क्या ? गुरु की कृपा से उन्हें एक ही बार, सिर्फ एक ही बार (30) Medulla दिया गया।
  तो विस्मय और आनंद के साथ चिल्लाकर कहने लगी - " यह तो जादू है ! मेरा सारा दर्द निकल गया !!"
  उनके चेहरे की विस्मय और आनन्द-से भरे expressions देखने योग्य थे।
  और फिर उन्हें LMNT (डॉ. लाजपतराय मेहरा न्यूरोथेरेपी) और गुरुजी के बारे में बताया गया। और वे LMNT की इतनी बडी fan यानि चहेता बन गयीं कि उन्होंने खुद इस थेरपी को सीखा और अपने परिवार के सदस्यों को भी LMNT उपचार लेने के लिये जिद करने लगी। इतना ही नहीं, पिछले पाँच बरसों से अपने कई सहेलियों के परिवारों को अपना LMNT उपचार लेने के लिये वे प्रेरणा दे रही हैं।
  यह सब हरि की कृपा से एक (30) Medulla के उपचार से हुआ। है न कमाल की बात ? आज की तारीख में side effect of medicines के लिये इससे बढ़िया और कोई उपचार नहीं है।
  इस उपचार के अन्य कार्यों के प्रति p.27 में (30) Medulla में लिखा गया है, जिसमें कई प्रभाव ऐसे हैं जो कि पेशंटों पर प्रयोग होकर सफलता प्राप्त कर चुके हैं। कुछ और प्रभाव हैं जिन पर खोज जारी है

  अब हमें इन्फ्लमेशन ठीक करने के लिये दो अलग प्वाइंट मिली हैं। इनके उपचार के सहज तरीके तथा इनके चमत्कारिक नतीजों को देखते हुये इसमें कोई संदेह नहीं है कि ये किसी अमानुष्य शक्ति द्वारा ही गुरुजी को प्राप्त हुये हैं। ये दोनों उपचार शरीर में इन्फ्लमेशन को रोकने के लिये कमाल के उपचार हैं। लेकिन वे अलग-अलग तरह से काम करते हैं।
  इस उपचार को कई हजारों पेशंटों पर प्रयोग करके नतीजे इतने अच्छे मिले हैं कि क्या कहें ? चूंकि यह फॉरमुला इन्फ्लमेशन को रोकता है तो उसे Inflammation treatment formula का नाम दिया गया जो इस प्रकार है -

First day पहला दिन I (30) Medulla II (6) Adr x 2 treatments
Second day दूसरा दिन (6) Adr x 3 treatments

उपयोग –
पोलियो, ऐपेन्डीसाइटिस (appendicitis), कौन्जन्क्टीवाइटिस (conjunctivitis) यानि आँखें लाल होकर उससे पानी निकलते रहना, इत्यादि इन्फ्लमेशन की बीमारियों के लिये। बिच्छू, साँप, या जहरीली जडी–बूटी के कारण आयी सूजन के लिये, या दवाइयों के दुष्प्रभाव को ठीक करने।

ध्यान दें – (30) Medulla हृदय रोग के मरीजों को नहीं देना। जरूरत होने पर बिठाकर (6) Adr देना है। अगर किसी के शरीर में इम्यूनिटी कम है तो उस समय किसी भी हालत में (6) Adr नहीं देना है। उदाहरण – Septicemia, Cancer, AIDS तथा हृदय बीमारी के रोगियों को नहीं देना।

Practical Tips प्रयोगात्मक सुझाव
– इस formula को किसी भी अन्य फॉरमुला के साथ combine यानि जोड़ सकते हैं। उदाहरण के लिये – अगर पेशंट ने कहा कि उन्होंने कुछ गोली खायी थी जिसके बाद अपचन और पेट खराब होने लगा, और हमने चैक किया तो देखा कि उसको 'Mu' तथा 'Mu^0' दोनों में दर्द है, तो निम्न तरीके से उपचार कर सकते हैं

I	(30) Medulla	II	Fast treatment
III	Ajay Normal + (6) Adr	IV	ATF + (6) Adr इत्यादि

अब एक प्रश्न मन में आ सकता है कि बिच्छू का जहर उतारना एक अलग बात है। क्या यह उपचार साँप के जहर को उतार सकता है ? वैसे देखा जाय तो साँप काटने के बाद कोई हमारे पास उपचार के लिये नहीं आते। लेकिन सन् २००६ का यह किस्सा जो आश्रम में हुआ उससे लगता है कि यह उपचार साँप के जहर को उतारने में भी कामयाब होनी चाहिये।

उस समय हमारे पास सूर्यमाल गाँव की एक औरत आयी जिसे कई सालों से हाथ दुख रहे थे। पूछने पर पता चला कि करीब चालीस साल पहले उसे साँप ने उसी हाथ में काटा था। तब उसका उपचार अस्पताल में किया गया। बाद में डॉक्टरों ने उससे कहा कि जहर निकल चुका है और आप घर जा सकते हैं। उस समय से उस जगह पर उसे दर्द होता था – जो रुक–रुक कर आती थी, यानि कुछ दिन दर्द होता था और अन्य दिन नहीं। (30) Medulla के एक ही उपचार के बाद उसने कहा कि दर्द निकल गया। फिर भी अगले सप्ताह उसे एक और उपचार दिया गया। तब उसने बताया कि कई बरसों बाद पिछले कुछ दिनों से ही वह ठीक से सो पायी।

चाहे विश्वास हो या न हो, अगर किसी को साँप ने काटा तो भी सबसे पहले उसे यह उपचार देने से कुछ राहत तो मिलेगी जरूर। बाद में जरूरत हो तो उसे अन्य उचित उपचार दे ही सकते हैं। यह एक सरल और रामबाण उपाय है जो खासकर गाँव के लोगों को सिखा देना चाहिये ताकि वे जहरीली जड़ी बूटियों के असर से तथा साँप, बिच्छू जैसी जीव जंतुओं से अपनी रक्षा कर सकें।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

मार या अपघात का **LMNT** उपचार (Injury treatment)

यह एक गजब का उपचार है। जब कहीं मार लगे, तो उस जगह में त्वचा फट जाती है और नीचे के कैपिल्लरीज़ (capillaries) टूटती हैं जिससे उनसे थोडा रक्त बाहर निकल जाता है। अगर चोट ज्यादा हो या मार गहरा हो तो यह रक्त शरीर के बाहर बह जाता है जिसे हेमोरेज (hemorrhage) कहते हैं। अन्यथा वह गुमचोट बन जाता है।

कहीं भी चोट लगने पर उस जगह में इन्फेक्शन न हो इसके लिये तरह–तरह की दवाइयाँ लगाये जाते हैं जिन्हें ऐन्टीसेप्टिक (antiseptic) कहा जाता है। असल में हमारे शरीर में ही एक कैमीकल है जो ऐन्टीसेप्टिक का काम करता है। वह है बाइल (bile), जो लिवर बनाता है और गौल ब्लैडर में स्टोर किया जाता है। और लिवर के कुफर सैल्स (Kupffer Cells) का एक काम है कि पुराने टिशूज़ (tissues) के मरे हुये सैल्स को खत्म कर दे ताकि नये सैल्स उस जगह पर ठीक से बन पायें। इसके अलावा, शरीर में कहीं भी कुछ बनना हो उसके लिये raw materials यानि कच्चा पदार्थों का दायित्व भी लिवर का ही है।

इसके अलावा, देखा गया है कि Thymus या Thymus Chest उपचार देने से दर्द तुरन्त कम होता है, तथा नयी टिशूज़ (tissues) जल्दी बनने लगती हैं। इस कार्य का physiology में कोई उल्लेख नहीं है। यह सारे मानव जाति के लिये LMNT की यानि गुरुजी की तजुर्बे की एक अनुपम और लाजवाब खोज है।

इसका निष्कर्ष यह है कि मार लगने पर अगर हम गौल ब्लैडर तथा लिवर को उकसायें तथा Thymus Chest दें तो रोगी को लाभ होगा। इस अनुमान के आधार पर निम्न उपचार बनाया गया जो देश-विदेश के अनेक केन्द्रों के कई रोगियों पर अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है।

Injury treatment formula

I 60 TF 'Gal – Liv ' x 3 treatments
II (1) Gal (1) Liv – 3 points (4) Ch. Only
III (1) Gal (1) Liv – 3 points (4) Thymus+Chest
IV (1) Gal (1) Liv – 3 points (8) Thymus+Chest + (4) Thrd*

- अगर डायाबीटीस, आरथ्राइटिस या कोई ऑटो इम्यून डिसार्डर हो तो (4) Thymus+Chest की जगह पर (4) Ch. Only (10) ↑|↓ (L1-L5) दें और
  (8) Thymus+Chest की जगह पर (8) Ch. Only (20) ↑|↓ (L1-L5) देना है।
- * अगर चोट ताज़ा-ताज़ा हो तो (4) Thrd देने से लाभदायक साबित हुआ है। शायद यह इसलिये कि थायरौइड ग्लैंड से आयोडिन निकलेगा जो घाव को जल्दी ठीक होने में सहायक है। अगर बहुत दिनों का पुराना घाव हो तो (4) Thrd देने की जरूरत नहीं।

अगर चोट गहरी हो और ऊपरी त्वचा को खास नुकसान न हो तो कैपिल्लरीज़ से निकला हुआ रक्त बाहर नहीं आ पाता, और त्वचा के नीचे ही जमने लगता है, उसे हेमाटोमा (hematoma) कहते हैं। रक्त में RBC, WBC's, platelets तथा कैल्शियम और कई क्लोटिंग फैक्टर (clotting factors) होते हैं। जब रक्त जमने लगता है तो ये पदार्थ उस थक्के में जम जाते हैं और एक हल्का-पीला रंग का पानी-जैसा तरल फ्लूइड (fluid) अलग हो जायेगा जिसे सिरम (serum) कहते हैं। मार लगने पर हमें सबसे पहले उस जमे हुए सिरम को खत्म करना है। उसके लिये भी ऊपर का Injury treatment बहुत ही प्रभावशाली साबित हुआ है। और यह उपचार 10-15 दिनों तक या तब तक देते जाना जब तक सिरम सूख न जाये।

ताज्जुब की बात तो यह है कि यह उपचार बरसों पुराने घाव या जल जाने या झुलस जाने की निशानों को मिटाने में भी कामयाब है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

गुरुजी की तीव्र इच्छा है कि यह उपचार खिलाडी और उनके ट्रेनर्स (trainers) सीख लें ताकि वे खेल-कूद के मैदान में आते मोच (sprains) या घाव के दर्द इत्यादि परेशानियों से तुरन्त राहत प्राप्त कर सकें। यहां तक कि न्यूरोथेरेपी के उपचारों के बाद पूरा टूटा हुआ लिगामेन्ट संपूर्ण रूप से ठीक हो चुका है – ऐसा 2010 का एक केस का सबूत हमारे पास है।

जो कोई इस दिशा में उचित कदम उठाना चाहें या हमारे उपचारों की कामयाबी को टैस्ट करना चाहें तो उनसे सहयोग करने के लिये हम हमेशा तैयार हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Viral treatment formula

कुछ दिन पहले मुझसे एक व्यक्ति ने पूछा था – क्या NT उपचार से हम वाइरस (virus) या बैक्टीरिया (bacteria) इत्यादि को मार सकते हैं ? अगर नहीं, तो virus या bacteria इत्यादि से आये बीमारियों को कैसे हम बिना दवाई के ही उपचार करने में कामयाब हैं ?

चूंकि हर व्यक्ति जो न्यूरोथेरेपी से परिचित नहीं है, उसके मन में ऐसा प्रश्न आना स्वाभाविक है, तो उसका जवाब देना जरूरी है।

उत्तर जी हाँ। हमारे शरीर में कई ऐसे सैल्स हैं जिनमें ही यह क्षमता है। *अगर हम उनको उकसा सकें* तो हमें virus या bacteria इत्यादि को मारने की दवाई लेने की कोई ज़रूरत नहीं है। चूंकि दुनिया में कई करोडों virus या bacteria हैं, और नये बनते रहते हैं, तो चन्द bacteria को मारने वाले दवाइयों से प्रोब्लेम खत्म नहीं होता। जिनको virus या bacteria से infection होता है, उनके बीमारी का मूल कारण तो वह virus या bacteria नहीं है, मूल कारण तो यह है कि उनके शरीर में इम्यूनिटी (immunity) यानि रोग से लडने की शक्ति कम हो गयी है।

तो हमें सिर्फ अपनी इम्यूनिटी को बढाने की ज़रूरत है। और यह काम दवाई नहीं कर सकती। क्योंकि जो ऐन्टीबायोटिक्स (antibiotics) इत्यादि बैक्टीरिया (bacteria) को मारने के लिये दिये जाते हैं, वे हमारे शरीर के हितकारी बैक्टीरिया को भी नुकसान पहुँचाते हैं, जिससे हमारे शरीर की इम्यूनिटी और भी कम हो जायेगी।

मिसाल के तौर पर, अगर कोई हमसे कहे कि एक लकीर को मिटाये–बगैर छोटा करना है तो हमें क्या करना है ? उसके पास ही अगर एक लम्बी लकीर खींच दें तो पहली लकीर छोटी दिखने लगती है। बैक्टीरिया या वाइरस इन्फेक्शन (bacterial or viral infection) में हम अपने उपचार द्वारा ठीक ऐसे ही करते हैं। वाइरस की शक्तिवाली लकीर से जब शरीर की इम्यूनिटी की लकीर लम्बी हो जाती है तो वाइरस उस शरीर का कुछ भी बिगाड नहीं सकता।

यह काम सिर्फ शरीर ही कर सकता है। हमारे शरीर में बाहरी कीटाणुओं से लडने के लिये कई सारे सैल्स (cells) हैं जैसे –

- नैचुरल किलर्स (natural killers),
- गामा ग्लोबूलिन (gamma globulin),
- इम्यूनो ग्लोबूलिन्स (immuno globulins),
- इन्टरल्यूकिन्स (interleukins) इत्यादि ।

इनके अलावा हमारे थायमस ग्लैंड (thymus gland), स्प्लीन (spleen) एवं लिम्फ नोड्स (lymph nodes) में WBC's के खास cells यानि लिम्फोसाइट्स (lymphocytes) हैं, जो हमारे शरीर की इम्यूनिटी को बनाये रखते हैं। LMNT उपचार द्वारा हम इन cells को उकसाते हैं, जिससे हमारे शरीर की इम्यूनिटी बढ जाती है। तो किसी भी virus या bacteria से शरीर को हानि नहीं पहुँचता। साथ में शरीर के हितकारी बैक्टीरिया को भी नुकसान नहीं पहुँचता। इसीलिये ही इन बीमारियों में LMNT कामयाब है।

हमारे शरीर के अन्दर कई किस्म की सैल्स हैं जो अंगरक्षक-जैसे काम करती हैं और शरीर को वायरस या बैक्टीरिया या अन्य कीटाणुओं से बचाती रहती हैं। ये मुख्यतः थाइमस ग्लैंड, स्प्लीन और पैरोटिड ग्लैंड द्वारा बनायी जाती हैं और भारी मात्रा में लिम्फ नोड्ज़ (lymph nodes) में रहती हैं जो जांघों में तथा कच्च या बगल में पायी जाती हैं। हम जांघों के नोड्ज़ को 'Lymph' नामक उपचार से उकसाते हैं। इन सब से निम्न उपचार बनाया गया –

(5) Lymphs (3) Spl (8) <u>Thymus Only</u> (12) Armpits + Ton 'P'

- ✓ (5) Lymphs — B-Lymphocytes, नैचुरल किलर्स तथा गामा–ग्लोबुलिन को उकसाने
- ✓ (3) Spl — WBC's या एन्टी बौडीज़ बनाने तथा लिम्फ नोड्स को उकसाने के लिये
- ✓ (8) <u>Th. Only</u> — थाइमस ग्लैंड के विभिन्न 'T-cells' को उकसाने
- ✓ (12) Armpits — कच्छ या बगल के लिम्फ नोड्स को उकसाने के लिये
- ✓ TON "P" — पैरोटिड ग्रंथियों को लिम्फोसाइट्स बनाने के लिये उकसाने

इस उपचार से शरीर की इम्यूनीटी को बढ़ाते हैं ताकि उसमें किसी भी बाहर के या भीतर के वायरस या बैक्टीरिया इत्यादी से लड़ने की क्षमता बढ़े। यह हर किस्म के वाइरल फीवर या अन्य इन्फेक्शन से शरीर की रक्षा करता है।

मम्प्स के कुछ किस्सों में बांजपन होते देखकर यह लगता है कि पैरोटिड ग्रंथियों का सम्बन्ध जननांगों से है। सो गुरुजी कहते हैं कि Ton 'P' कम उम्र के लोगों को नहीं देना – जिनको बच्चे चाहिये – क्योंकि पैरोटिड ग्रंथियों को अकारण उकसाने से शायद बांजपन हो सकता है। ऐसे ज्यादा केस नहीं आते। इस तथ्य पर और खोज करना है।

पहले गुरुजी ऊपर के भारी उपचार देते थे। आजकल इसे mild यानि हल्का उपचार बनाया गया –

VTF (Mild) → (1) Lymph (1) point Spl (1) Th. Only x 6 trt.

यह हर किसी के लिये शरीर को बीमारी से बचाने के लिये लाभदायक है। एवं बुखार आने के बाद भी दे सकते हैं। यह छोटे बच्चों के लिये भी उपयुक्त है। लेकिन किसी पेशंट को ऑटो इम्यून डिसार्डर है तो उन्हें यह उपचार नहीं देते हैं, क्योंकि लिम्फोसाइट्स को उकसाने से उनकी बीमारी बढ़ सकती है।

फिर अभ्यास करते–करते पता चला कि bone marrow में जब सैल्स बनते हैं तो स्प्लीन के सैल्स इन्फ्लमेशन को कंट्रोल करते हैं। तो आजकल कैन्सर इत्यादि पुरानी बीमारियों के उपचार में सिर्फ (1) Lymph (1) Th. Only x 6 treatments दिया जाता है। यानि पुरानी बीमारियों में जरूरत होने पर (अर्थात् 'Spl ' के प्वाइंट में दर्द हो तो) ही 'Spl ' को उकसाना, अन्यथा नहीं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

LMNT के **Heparin** फारमुले

रक्त का गुण है कि जब तक वह तेजी से चलता रहे तब तक कोई खतरा नहीं, लेकिन अगर वह कहीं भी रुक जाय या उसकी गति बहुत ही धीमी हो जाय तो वह जमने लगेगा, जिसे क्लोटिंग (clotting) कहते हैं। यह कुदरत का नियम है जो हमारी रक्षा के लिये बनाया गया है। अगर ऐसा नहीं होता तो कहीं मार इत्यादि लगने पर रक्त बहता ही रहे तो रक्त के अत्यधिक बहाव से मौत हो सकती है।

इसके ठीक विपरीत, अगर नलिकाओं के अन्दर अनचाहे रूप से क्लोटिंग हो जाय, तो वह भी जानलेवा है। तो इससे बचने के लिये भी कुदरत ने एक तरकीब बनायी है। हमारे शरीर में विशेष सैल्स हैं जो हेपारिन नामक कैमीकल बनाते हैं। हेपारिन का कार्य है कि रक्त में clots यानि थक्के बनने नहीं देना। शरीर में जितना हेपारिन बनता है उसमें करीब 85% लिवर और लंग्ज़ के mast cells नामक सैल्स में बनता है। बाकी 15% हेपारिन हर टिशू (pericapillary connective tissues) तथा बेसोफिल ल्यूकोसाइट्स (basophil leukocytes) द्वारा बनाया जाता है, जो खास प्रकार की WBC's हैं, जो सारे शरीर में पायी जाती हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

अब शरीर में क्लोट कैसे बनता है यह समझें –

रक्त में बारह कैमिकल्स होते हैं जो clotting होने के लिये आवश्यक हैं। इन्हें clotting factors कहते हैं। इनमें मुख्य हैं Vitamin K, प्लैटेलेट्स नामक सैल्स, एवं कैल्शियम, जो रक्त में ही मौजूद है। लिवर भी दो clotting factors बनाता है, जिन्हें प्रोथ्रौम्बिन (prothrombin) एवं फाइब्रिनोजैन (fibrinogen) कहते हैं। जब शरीर में कोई मार लगती है, या घाव होता है, तब ये दोनों कैमीकल्स लिवर से निकलकर रक्त द्वारा प्रवाहित होकर उस जगह में पहुँचते हैं। मार के कारण प्लैटेलेट्स टूटते हैं तो उनसे थ्रौम्बोकाइनेस (thrombokinase) नामक एनज़ाइम निकलता है। यह ब्लड में स्थित कैल्शियम की उपस्थिति में प्रोथ्रौम्बिन को थ्रौम्बिन (thrombin) में बदलता है। यह थ्रौम्बिन लिवर से निकले हुये फाइब्रिनोजैन को फाइब्रिन (fibrin) नामक कैमीकल में बदल देता है। यह फाइब्रिन उस घायल जगह में एक पतला जाल-सा बन जाता है, जिसमें टूटे हुये RBC's इत्यादि फँस जाती हैं, जो थक्का यानि क्लोट बनकर उस जगह को जल्दी भरने में मदद करती हैं।

ध्यान देनेवाली बात यही है कि अगर किसी के लिवर से प्रोथ्रौम्बिन या फाइब्रिनोजैन न निकले, या अगर कैल्शियम, प्लैटेलेट्स या विटामिन K जैसे अन्य clotting factors की कमी हो, तो उसके शरीर में clotting नहीं होगा, और उसके कारण मामूली चोट लगने पर भी उसे लगातार ब्लीडिंग होता रहेगा। औरतों में ऐसा हो तो उनके मासिक धर्म बन्द ही नहीं होंगे। (ऐसी औरतों को जब हम ऐसिड फॉरमुला देते हैं तो ब्लीडिंग रुक जाती है। तो शायद ऐसा होता होगा कि ब्लड का pH ज्यादा ऐसिडिक हो तो थ्रौम्बोकाइनेस ठीक से काम नहीं कर पाता।)

- क्लोटिंग की प्रक्रिया को निम्न तरीके से याद रख सकते हैं –
  प्रोथ्रौम्बिन (+ कैल्शियम) + थ्रौम्बोकाइनेस → थ्रौम्बिन बनेगा;
  थ्रौम्बिन + फाइब्रिनोजैन → फाइब्रिन बनेगा;
  फाइब्रिन + रक्त कोशिकायें → क्लोट बनेगा

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

हेपारिन लंग्ज़ और लिवर में ही इतनी अधिक मात्रा में क्यों बनता है ?

यह इसलिये है कि ये दोनों जगह या अंग ऐसे हैं जहाँ रक्त का प्रवाह – बहुत ही कम समय के लिये ही सही – अत्यन्त ही धीमी गति से होता है। लिवर में कुफर सैल्स नामक सैल्स हैं जिनका कार्य है कि 120 दिन से पुराने RBC's हो या रक्त में कोई कीटाणु, बैक्टीरिया या वाइरस हो तो उन्हें एक सैकंड के सौवे हिस्से ($^1/_{100}$ sec) के अन्दर खत्म कर देना या नष्ट करना। { नष्ट किये गये सैल्स से प्राप्त बचे हुये पदार्थ को लिवर में संचित करके दुबारा जरूरत के अनुसार उपयोग किया जाता है }। इस कार्य को ठीक से करने के लिये लिवर के अंदर रक्त की नलिकायें (sinusoids) बहुत ही संकीर्ण एवं टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं जिनके अंदर से रक्त को गुजरना पडता है। इस दौरान रक्त की गति या रफ्तार इतनी धीमी हो जाती है कि वहाँ रक्त जमने का खतरा है। और वहां क्लोटिंग न हो, इसलिये लिवर के उस भाग में mast cells हेपारिन बनाती हैं।

दूसरी जगह है लंग्ज़ (lungs) के ऐल्वियोलि (alveoli) जिसमें भी एक सैकंड के सौवे हिस्से ($^1/_{100}$ sec) के अन्दर कैपिल्लरी के अन्दर से कारबन डाई ऑक्साइड निकलकर ऐल्वियोलि के अंदर घुसना है और उसी समय के दौरान लंग्ज़ के अंदर से हवा के oxygen को कैपिल्लरी के अन्दर घुसना है। इस जगह पर भी रक्त की रफ्तार इतनी धीमी है कि वहाँ पर भी क्लोटिंग होने का खतरा है। उससे बचने के लिये ही ऐल्वियोलि के आसपास की mast cells हेपारिन बनाती हैं। इसका मतलब यह है कि अगर हम लिवर और लंग्ज़ को उकसायें तो हेपारिन बना सकते हैं और भविष्य में क्लोट होने से बचा सकते हैं।

यह हुआ भविष्य में क्लोटिंग से बचने का उपाय। अब जो क्लोट बन चुका, वह कैसे घुलता है यह जरा समझें - हमारे शरीर में रोज-मर्रा के काम-काज में छोटे-छोटे मार इत्यादि लगते रहते हैं। जिनके कारण हज़ारों की गिनती में खून के छोटे-छोटे थक्के बनते रहते हैं। उन थक्कों के अन्दर अन्य प्लास्मा प्रोटीन्स के साथ प्लास्मिनोजैन (plasminogen) नामक कैमीकल भी होता है। मार लगने के कुछ घन्टों बाद घायल टिशूज़ तथा रक्त नलिकाओं के epithelium यानि अन्दरी परत tPA (tissue plasminogen activator) नामक कैमीकल छोडते हैं। यह tPA काफी धीरे-धीरे काम करनेवाली एक एन्ज़ाइम है जिसके प्रभाव से क्लोट के अन्दर का प्लासमिनोजैन करीब 24 घंटों के बाद प्लास्मिन (plasmin) नामक कैमीकल में बदल जाता है। यह प्लास्मिन एक proteolytic enzyme यानि protein को पचाने वाला एन्ज़ाइम है जो ट्रीप्सिन से मिलता-जुलता है। यह क्लोट के फाइब्रिन फाइबर्स (fibrin fibres) को ही नहीं, बल्कि अन्य कई क्लोटिंग फैक्टर्स (clotting factors) को भी पचाने में सक्षम है। इस तरह से वह क्लोट को घोलने में समर्थ है। शरीर के अन्दर छोटी रक्त नलिकाओं में जब क्लोट बनते हैं तो इसी प्रक्रिया द्वारा उन थक्कों को खोला जाता है। (Guyton 10th ed. p 425-426; Taber's 18th edn. p1491)

फाइब्रिन (fibrin) को खत्म करने या पचाने के कार्य को फाइब्रिनोलाइसिस (fibrinolysis) कहते हैं। पर अगर शरीर में प्लासमिनोजैन या tPA ठीक से न बने तो ये क्लोट बढ़ते जायेंगे, जो जगह-जगह पर रक्त के प्रवाह में रुकावट डालेंगे, जो पैरालाइसिस या अन्य बीमारियों का कारण बन जाते हैं।

न्यूरोथेरेपी में इस तथ्य को किस प्रकार से उपयोग में लाया जाता है ?

ऊपर के तथ्य से हमें यह समझ में आती है कि अगर किसी व्यक्ति को किसी अनचाहे जगह पर क्लोट हो रहा हो, तो उस व्यक्ति के शरीर में हेपारिन ठीक से नहीं बन रहा है। चूंकि हेपारिन लिवर और लंग्ज़ में ही ज्यादा मात्रा में बन रहा है तो उन दोनों अंगों को उकसाने से हेपारिन बन जायेगा। साथ में पुराने क्लोट के फाइब्रिन नामक प्रोटीन को पचाने के लिये पैंक्रियास को उकसाना है। इस सोच से गुरुजी निम्न उपचार बनाये जिसमें पैंक्रियास, लिवर और लंग्ज़ को क्रमशः उकसाते हैं → (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only

हेपारिन फॉरमुला में पैंक्रियास को उकसाने का राज क्या है ?

अगर हम सडक से गुजरते समय यह देखें कि दो लडके एक-दूसरे से मिलते-जुलते शक्ल के नजर आये तो क्या हम यह नहीं कह सकते कि शायद वे एक ही माँ-बाप की संतान होनी चाहिये ? ऐसा लिखा गया है कि प्लास्मिन एक fibrinolytic एन्ज़ाइम है जो trypsin से मिलता-जुलता है। Trypsin तो पैंक्रियास द्वारा प्रोटीन्स को पचाने के लिये बनाया जाता है। एवं शरीर में प्रोटीन्स को पचाने का मुख्य दायित्व पैंक्रियास का ही है। तो क्या यह संभव नहीं कि plasmin भी पैंक्रियास ही बना रहा हो ? गुरुजी ने शायद यही सोचकर 'Pan' को उकसाया है। [fibrinolytic = फाइब्रिन को तोड़ने वाला]

जब हम ऊपर का Heparin formula देते हैं तो दो प्रकार के नतीजे देखने को मिलते हैं-
किसी औरत को मैन्सस यानि मासिक धर्म में थक्के आ रहे हों तो ऊपर के उपचार को एक-दो बार देने के बाद अगले मैन्सस में उसे क्लोट नहीं आते - ऐसे कई औरतों पर साबित हुआ है। यानि यह फॉरमुला हेपारिन-जैसा कार्य करता है जो आने वाले क्लोट को रोकता है। और यह फॉरमुला इतनी प्रभावशाली है कि एक बार मैन्सस में clots खत्म हो जाने पर कुछ बरसों तक यह तकलीफ नहीं होती।

दूसरी बात यह है कि इस उपचार से ह्रदय रोग तथा पैरालाइसिस की मरीजों को काफी आराम पहुँचता है। जिनके ह्रदय में ब्लोकेज (blockage) यानि रुकावट हों उन्हें P. Heparin का उपचार दिया जाय तो सबसे पहले तो उनका सांस फूलना बंद हो जाता है। और अगर कई महीने दिया जाय तो देखा गया है कि उनकी ejection fraction बढ़ जाती है - जिससे हम निष्कर्ष निकालते हैं कि blockages खत्म हो रहे हैं। यह कार्य प्लास्मिन-जैसा है।

इन दोनों नतीजों से गुरुजी इस निष्कर्ष पर आये हैं कि यह फॉरमुला प्लास्मिन तथा हेपारिन दोनों को उकसाता है। इसलिये ही इस फॉरमुला का नाम **P. Heparin** यानि **Plasmin Heparin** रखा गया है।

यानि **P. Heparin → (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

प्रश्न **:** Physiology के अनुसार क्लोट के अन्दर तो पहले से ही प्लासमिनोजैन होती है। अगर वह हमारे उकसाने के बाद तैयार हो तो क्लोट बनने के बाद उसके अन्दर कैसे पहुँच कर उसे खोलती है ?

उत्तर – क्लोट के अन्दर जो प्लासमिनोजैन है वह तब तक प्लास्मिन में नहीं बदल सकती जब तक उस पर tPA का प्रभाव न हो। तो हम अनुमान लगाते हैं कि LMNT द्वारा पैंक्रियास को उकसाने से शायद tPA भी बनता हो जो प्लासमिनोजैन को प्लास्मिन में बदल रहा हो।

कारण जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि LMNT का P. Heparin formula भविष्य में क्लोट बनने की प्रवृत्ति को रोकता है तथा पैरालाइसिस तथा ह्रदय रोगों में पुराने क्लोट को भी खोलने में समर्थ है। { जिन्हें हाल ही में, यानि कुछ ही दिन पहले पैरालाइसिस हुआ हो उन्हें इस उपचार से जल्दी आराम पहुँचता है, जब कि पुरानी बीमारी को ठीक होने में काफी समय लग सकता है }

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

विभिन्न हेपारिन फौरमुले एवं गौर करनेवाली कुछ बातें

अनचाहे थक्कों को खोलने का सबसे प्रमुख फॉरमुला है **P. Heparin**. फिर उसमें अन्य कुछ प्वाइंट जोड़कर विभिन्न हेपारिन फौरमुले बनाये गये हैं जिन्हें अलग-अलग लक्षणों को ठीक करने के लिये उपयोग किया जाता है। आजकल हर हेपारिन फॉरमुला के पहले (½) Ku – 6 secs देने से ज्यादा लाभ पाया गया है

P. Heparin → (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only → यह सभी रोगियों को दे सकते हैं

मगर अगर खून बह रहा हो या घाव हो तो जब तक घाव (wounds) ठीक न हो, कोई भी Heparin उपचार नहीं देना।

मुख्य बीमारियाँ जिसमें **P. Heparin** लाभ देता है –

हाई बी पी यानि उच्च रक्त चाप में P. Heparin diastolic BP को कम करता है। इसके अलावा

मन्द बुद्धि के बच्चे (MR child)	Hypo-thyroidism हायपो थायरौइडिज़्म
पैरालायसिस यानि लकवा, अधरंग	एथेरोस्क्लेरोसिस (Atherosclerosis) या एन्जाईना (angina)
किडनी एवं ह्रदय की बीमारियाँ	थ्रौम्बोसिस (thrombosis) यानि क्लाट बनने की प्रक्रिया
मासिक धर्म में clots एवं दर्द	थ्रौम्बोसाइटोसिस (thrombocytosis) = प्लेटेलेट्स ज्यादा हों
शरीर में कहीं भी clots हों तो	ब्लड सरक्यूलेशन यानि रक्त संचार बढ़ाने के लिये
डायाबीटीस यानि शुगर की बीमारी	AVN (एवॅस्कुलर नेक्रोसिस) – खासकर जांघ की फीमर हड्डी में होता है *
Carpal tunnel syndrome कॉरपल टनल सिंड्रोम – हाथों की उँगलियों में अतीव दर्द या सुन्नपन	
Tarsal tunnel syndrome टॉरसल टनल सिंड्रोम – पैरों की उँगलियों में अतीव दर्द या सुन्नपन	

* अक्सर AVN की रोगियों को Mu^0 में दर्द होता है। अगर ऐसा हो तो उन्हें A. Heparin देना है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

P. Heparin formula का एक मुख्य उपयोग
अगर डॅयास्टौलिक बी पी बढ़ जाय तो उसे हम P. Heparin देकर तुरंत ठीक करते हैं।
व्याख्या – किडनीज़ का मुख्य काम है रक्त को फिल्टर करना। अगर किडनीज़ के अन्दर ब्लड का फ्लो (blood flow) पर्याप्त नहीं हो, तो वे रक्त को ठीक तरह से फिल्टर नहीं कर पायेंगी। ऐसी हालत में किडनीज़ रैनिन (renin) नामक कैमीकल (chemical) छोडती हैं, जो renin-angiotensin system द्वारा रक्त नलिकाओं को constrict यानि संकुचित कराता है। इससे ब्लड का फ्लो तो बढेगा जरूर, लेकिन साथ में Diastolic BP बढ़ जायेगा।

{ गुरुजी ने physiology के इस तथ्य पर काफी विचार किया और सही अनुमान लगाया कि अगर किसी को ऐथेरो स्क्लेरोसिस (atherosclerosis) हो तो उसके कारण किडनीयों की रीनल आरटरी में भी क्लोट हो सकता है। किडनीज़ के अन्दर ब्लड का फ्लो कम होने का यह भी एक कारण हो सकता है। अगर इसे ठीक करना हो तो हमें क्लोट को खोलने के लिये P. Heparin देना है। हमने देखा है कि P. Heparin के कुछ ही उपचारों के बाद डॅयास्टौलिक बी पी तुरन्त ही कम हो जाती है। तो हम समझते हैं कि P.Heparin से ब्लड clot खत्म हो गया है और किडनीज़ के अन्दर ब्लड का फ्लो ठीक हो जाने के कारण kidneys से renin निकलना बन्द हो गया जिससे बीपी नौरमल हो गया। ऐसा असर कई पेशंटों में देखा गया है, जो कि इस तथ्य की सच्चाई को साबित करता है }
जब रेनिन अधिक मात्रा में बनने लगता है तब इससे हाई बीपी हो जाती है। खास तौर से डायास्टोलिक बीपी (diastolic BP) बढती है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

A. Heparin *   (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only (1) acid (4) Ch. Only

यह उपचार घुटने के दर्द के लिये अतीव उत्तम है। शायद रक्त के थक्के द्वारा घुटने में रक्त जाना बन्द हो गया हो या इन्फ्लमेशन (inflammation) आ गई हो। सूजन के साथ दर्द, हाथ लगाने से गर्म लगना और लाली हो तब ही उसे इन्फ्लमेशन कहा जाता है। अन्यथा सूजन को swelling कहते हैं। ('A' यानि acid)

- अगर घुटने के दर्द के साथ Mu^0 में दर्द तथा इन्फ्लमेशन हो तो –
  A. Heparin (6) Adr + capfree देने से घुटना एक ही उपचार के बाद काफी ठीक हो जाता ह। डायबिटीज के रोगी के पांव सूज जाते हैं या सुन्न हो जाते हैं। कभी किसी एक उँगली में जख्म हो जाता है। बाद में रक्त के अभाव में वह जगह नीला या काला हो जाता है। इन्फेक्शन फैलते जाता है, जिसे गैंग्रीन (gangrene) कहते हैं। तो डॉक्टर उस उँगली को काटने के लिये कहते हैं ताकि जहर सारे शरीर में न फैले।
- जिन डायाबीटीस के पेशंटों को पैरों की उंगली में गैंग्रीन हो या गैंग्रीन होने से बचने के लिये –
  A. Heparin (6) Adr + Bottom of feet देने से दो महीनों ही में पांव एक दम ठीक हो जायेंगे और गैग्रीन आई हो तो भी गैग्रीन समाप्त हो जायेगी, पैर काटने की नौबत टल जायेगी। अगर ज़ख्म से ख़ून बह रहा हो जो ठीक नहीं हो रहा हो तो ऊपर के उपचार के अंत में (4) Thrd. भी डालना पडेगा ताकि जख्म जल्दी भर जाये। इनको Loveleen + Sulta Ulta भी अच्छा लगता ह।

कब देना – A. Heparin का प्रयोग हम ऊपर के सभी बीमारियों में कर सकते हैं, जहाँ Mu^0 में दर्द हो तथा acidosis के कुछ और लक्षण भी हों जैसे –कब्जी, त्वचा सूख जाना, त्वचा में जलन, रूखे-सूखे बाल इत्यादि।
मुख्य उपयोग – गैंग्रीन, बैम्बू स्पाइन, पैरों में या तलवे में जलन, डायाबीटीस, घुटने में दर्द

* अधिकांश लोगों को A. Heparin के अंत में (6) Adr देने से और अच्छे नतीजे पाये गये हैं। लेकिन डायाबीटीस के कुछ पेशंटों को Adr देने के बाद उन्हें अच्छा नहीं लगे, तो ऐसे लोगों को (6) Adr नहीं देना।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

G. Heparin   (30) Medulla (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only

कब देना – (30) Medulla से हम प्रोस्टाग्लैन्डिन्स को उकसाते हैं जिससे दवाइयों के दूष्परिणाम या शरीर के किसी भी हिस्से में इन्फ्लमेशन द्वारा आये प्रोब्लेम को ठीक करते हैं।
('G' यानि ' glandins ')

मुख्य उपयोग – * सिस्टोलिक हाई बी पी को कम करने के लिये
* हाई बी पी के कारण पैरालायसिस हो तो

- मैन्सस में दर्द हो तथा क्लोट यानि थक्के हो तो G. Heparin देने से अगले मासिक चक्र से ही दर्द और क्लोट दोनों ही बन्द होते हैं।
- घुटने का दर्द जिसमें घुटने में हाथ लगाने से गरम लगता है और वह जगह लाल है तथा वहाँ सूजन भी है, लेकिन Mu^0 में दर्द नहीं है । X-ray रिपोर्ट में "Osteo arthritis (ओस्टियो आरथ्राइटिस) of the knee" या "OA of the knee" – ऐसा लिखा रह सकता है। ऐसे पेशंट को एकाध उपचारों के अंदर ही घुटने में गर्मी और सूजन दोनों कम हो जाते हैं।
- ऑटोइम्यूनिटी (auto immunity) द्वारा आये रोगों को समाप्त करने के लिये, जैसे मल्टीपल स्क्लेरोसिस (multiple sclerosis) नामक बीमारी, जिसमें माँस-पेशियां अत्यन्त कमजोर हो जाती हैं।
- इस उपचार में हेपारिन में प्रोस्टाग्लैन्डिन्स मिलाने से जिन्हें हाई बीपी के कारण पैरालाईसिस हुआ है उनको काफी लाभ होते देखा गया है। लेकिन यह उपचार उन पेशंटों को नहीं देना जिन्हें हृदय की बीमारी हो।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

J. Heparin **(4) Para (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only (6) Adr**

कब देना – हम रक्त में कैल्शियम की मात्रा को बढ़ाने के लिये (4) Para देते हैं। जिन्हें सोये पड़े क्रैम्प्स आती हों या शरीर में कमजोरी या दर्दें हो उन्हें यह उपचार लाभ देगा। क्रैम्प्स यानि माँसपेशियों में खिंचाव, जो कैल्शियम की कमी से अक्सर पिंडलियों में होता है।
(' J ' यानि 'ज्वाइंट्स')

मुख्य उपयोग – जिनके सारे शरीर में दर्दें हो एवं कमजोरी लगती हो – खासकर डायाबीटीस के पेशंट को

चेतावनी – इस उपचार का असर कम से कम दो दिनों तक रहता है। लेकिन अगर दूसरे दिन नौरमल फॉरमुला या NAN देने से पेशंट को इस फॉरमुला से जो भी लाभ हुआ था वह झठ से खत्म हो जाता है और पेशंट कहते हैं कि उन्हें मजा नहीं आया।

इस बात की सच्चाई निम्न उदाहरण से पता चला – J. Heparin के एक उपचार के बाद चेन्नाइ (Chennai) की एक 70 वर्षीय महिला को बहुत लाभ हुआ – ये उनके शब्द हैं –

"कल में सैन्टर में आने से पहले बहुत ही थकी हुयी थी। लेकिन यह उपचार लेने के तुरन्त बाद ऐसा लगा कि मैं आसमान में उड़ रही हूँ। कल मैंने इतना काम किया कि मुझे विश्वास नहीं हो रहा है। तो मुझे आज भी कुछ ऐसा ही चमत्कार दिखाइये !

उनको साधारणतः गैस और अपचन की शिकायत होती थी। उनकी पाचन शक्ति को ठीक करेंगे तो और लाभ होगा – ऐसा सोचकर उनको उस दिन NAN दिया गया। तो दूसरे दिन उन्होंने आकर कहा कि –

"हाय ! कल पता नहीं क्या हुआ ! कल यहाँ से जाने के बाद मुझे इतनी थकान महसूस हुयी कि क्या कहूँ ? कल के उपचार से पहले कितनी fresh थी, सब खत्म हो गया। परसों यहाँ आने के पहले जो थकान थी वह समझो लौट आयी ! कल के उपचार से तो सारा मजा किरकिरा हो गया ! "

तो इससे क्या समझ में आती है कि J. Heparin से शरीर की थकावट दूर हो जाती है और पेशंट को बहुत लाभ मिलता है। लेकिन उसे तुरन्त दूसरे दिन NAN का उपचार न दें नहीं तो उसका असर खत्म हो जायेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

M. Heparin **(6) Medulla (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

(6) Medulla देकर हेपारिन देने से देखा गया है कि जिन बच्चों को मैनिन्जाइटिस (meningitis) या हाइड्रोसेफालस (hydrocephalus) है – उन्हें काफी आराम होता है। इसलिये सोचा जाता है कि यह हायपोथैलमस के द्वारा ब्रेन के 3rd ventricle को खोलने में समर्थ है।

जब कोई तेज बुखार के बाद ब्रेन के परतों में इन्फल्मेशन आ जाती है उसे मैनिन्जाईटिस (meningitis) कहते हैं। साधारणतः ब्रेन में सैरिब्रोस्पाईनल फ्ल्यूड (Cerebrospinal fluid or CSF) lateral ventricles से निकलकर तीन नंबर के वैन्ट्रीकल में पहुँचता है और वहाँ से चार नंबर के वैन्ट्रीकल में जाता है। लेकिन ब्रेन में इन्फ्लमेशन होने के कारण वह फ्लूइड तीन नंबर वैन्ट्रीकल से निकल नहीं पाता और ब्रेन में जमा होना शुरू कर देता है। जमा हुआ उस पानी का दबाव ब्रेन के दूसरे हिस्सों पर पड़ने से उस रोगी को फिट(fits) भी आ जाती है। ब्रेन में पानी के जम जाने को हाइड्रोसेफालस (hydrocephalus) कहते हैं।

M. Heparin से हम ब्रेन में CSF के संचार में जो रुकावट आयी है उसे ठीक कर सकते हैं। और (6) Adr साथ में देने से इन्फ्लमेशन में बहुत लाभ होगा और ब्रेन के सूजन को कम कर सकते हैं। हां, पैरालाईसिस के रोगी को M. Heparin देने से बहुत लाभ होता है और पिछले चालीस सालों में हजारों पेशंट इस उपचार से ठीक भी हुये हैं, जिस का असली कारण शायद इस प्रकार है →

ब्रेन में ब्लड ब्रेन बैरीयर (blood brain barrier) नामक रचना है जिस के कारण कोई कृत्रिम दवाई या इन्जेक्शन (injection) ब्रेन के अन्दर नहीं पहुँच सकती। अगर कोई चीज़ जा सकती है तो वह है बेहोशी की दवाई, अल्कोहोल (alcohol यानि शराब), एवं शरीर के अपने कैमीकल। जब हम हेपारिन फॉरमुला देते हैं तो हम देखते हैं कि कुछ ही दिनों में रोगी को काफी प्रगति मिलती है। तो यह सोचा जाता है कि हमारे ट्रीट्मेंट से जो कैमीकल बना, वह शरीर का अपना कैमीकल है जो ब्रेन के अन्दर जा कर जमे हुये रक्त इत्यादि को समाप्त करता है।

{ऐलोपेथी में L2 और L3 द्वारा भी दवाई दिमाग में इन्जेक्शन द्वारा भेजने का प्रयत्न किया गया है, पर उसमें खास कामयाबी नहीं मिली क्योंकि इस ब्लड ब्रेन बैरीयर के कारण दिमाग में कोई भी आर्टीफिशियल (artificial) यानि कृत्रिम दवाई घुस नहीं सकती }

मुख्य उपयोग –

सिर दर्द	माथा, चेहरा, गर्दन, या कंधों के दर्दों के लिये
ब्रेन की बीमारियों में	जो पैरालायसिस इन्फार्क्ट (infarct) के कारण आयी हो
मन्द बुद्धि	मैनिन्जाइटिस (meningitis) यानि बुखार के कारण ब्रेन में सूजन
स्मरण शक्ति बढ़ाने	ऐन्सेफालाइटिस (encephalitis) नामक ब्रेन की बीमारी में
आँखों की बीमारियों में	बैल्स पैल्सी – जिसमें मुँह एक तरफ टेढ़ा होता है
ब्रेन की छटी क्रैनियल नर्व (Cranial nerve VI) में कोई ब्लौकेज यानि रुकावट का होना	

अगर ब्रेन के तृतीय वैन्ट्रीकल (3rd ventricle) में कोई ब्लौकेज (blockage) हो, जिसके कारण ब्रेन में पानी भर जाता है, उसे हाइड्रोसेफालस (hydrocephalus) कहते हैं। उसमें भी M. Heparin बहुत फायदेमंद है। अगर शंट (shunt) लगा हो तो भी दे सकते हैं लेकिन उस समय गर्दन पर ज्यादा जोर देकर दबाना नहीं, कम प्रेशर देकर उपचार देना।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

T. Heparin **(4) Thymus+Chest (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

TT. Heparin **(8) Thymus+Chest (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

मार लगने के बाद रक्त जम कर थक्का बनकर नीचे रह जाता है और सिरम (serum) उसके ऊपर जमा रहता है। तो मार लगने पर हमें पहले उस जमे हुए सिरम को खत्म करना है। इसके लिये पहले हमें Injury treatment देना है। और वह तब तक देना जब तक सिरम सूख न जाये।

दस-पंधरह दिनों के उपचार के बाद जब सिरम पूरा सूख जायेगा, उसके बाद उस जगह के रक्त नलिकाओं के अन्दरी घाव को ठीक करने के लिये TT. Heparin देना चाहिये।

कब देना – जब मार लगी तो घाव के सूखने के बाद उस जगह पर रक्त संचार बढ़ाने के लिये इसे देना है।
मुख्य बीमारियाँ – अपघात या ऑपरेशन के बाद। अगर मार मामूली हो तो T. Heparin देना। अगर मार ज्यादा गहरा हो तो (4) Thymus+Chest की जगह पर (8) Thymus+Chest देना चाहिये।
लेकिन TT. Heparin या T. Heparin जो भी हो, यह घाव सूखने के बाद ही देना।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

X. Heparin **(10) Medulla (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

(10) Medulla से हम वेगस नर्व यानि दस नंबर का क्रेनियल नर्व (cranial nerve) को उकसाते हैं, जो ऐब्डोमैन (abdomen) की सब ग्रंथीयों को उकसाती है। दस नंबर क्रेनियल नर्व से पेट की एसिड को तीन गुना बढाया जा सकता है। यह उपचार पाचन संस्थान के सब जगह में रक्त के थक्कों से रुकावट दूर करने के लिये दिया जाता है।

कब देना – जब 'Pan' या Gas के प्वाइंट में दर्द हो तो देना।

मुख्य बीमारियाँ – एब्डोमेन की सभी ग्रंथियों को उकसाने एवं पाचन संस्थान में रक्त के थक्कों को दूर करने के लिये।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

अभी सबसे नये **formula** हैं

PT. Heparin **(8) Pan (7) Liv (8) Thymus+Chest**

F. Heparin या Fibrinolysin heparin **(18) Pan (7) Liv (8) Ch. Only**

Anti F. Heparin या Anti fibrin heparin (2) Pan (7) Liv (8) Ch. Only

ऊपर के तीनों उपचार अलग-अलग तरीके से काम करते हैं। ये सभी प्रकार के पैरालाइसिस के लिये उपयोगी सिद्ध हुये हैं। कुछ लोगों को P. Heparin की जगह पर P.T. Heparin देने से दर्दों से राहत मिलती है। पुराणी बीमारियों में Clots के जमे फाइब्रिन को तोड़ने के लिये F. Heparin उपयोगी है, जब कि कहीं भी अनचाहे ग्रोथ के कारण रक्त संचार में रुकावट हो तो Anti F. Heparin लाभदायक है। आगे अनुभव से पता चलेगा। इनके ऊपर खोज जारी है

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Multi Heparin treatment

एक दिन अचानक बांद्रा क्लिनिक में कमलेश दीदी का बायां सिर, बायां हाथ एवं पैर सुन्न होने लगे। उन्होंने तुरन्त गुरुजी को बुलाया और कहा कि मुझे लगता है कि मुझे पैरालाइसिस का दौरा पड़नेवाला है। गुरुजी ने तुरन्त सभी जरूरी उपचार दिये। जब कोई खास असर न हुआ तो उन्होंने निम्न उपचार बनाया जिसे लेने के तुरन्त बाद ही दीदी ने कहा कि अब मुझे थोड़ा अच्छा लग रहा है। उसी शाम को मुंबई के लीलावती अस्पताल में MRI लिया गया जिसके शब्द इस प्रकार हैं –

MRI report dt. 20.2.2009 : "There are a few ischemic foci in both frontal lobe white matter. A tiny ischemic focus is seen in right parietal cortex."

इन शब्दों का मतलब है कि ब्रेन के दाहिने साइड में कौरटैक्स के white matter में कुछ भागों में इस्कीमिया हो चुका है यानि रक्त नहीं पहुँच रहा है।

I (15) Left Medulla (6) Lt. Swt x 3 treatments
II (4) Para (7) Liv (8) Ch. Only (10) Adr
III F. Heparin → (18) Pan (7) Liv (8) Ch. Only
IV Anti F. Heparin → (2) Pan (7) Liv (8) Ch. Only
V (½) Ku – 6 secs x 8 treatments
VI P. Heparin → (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only.

एक सप्ताह तक यह ट्रीट्मेंट दिन में तीन बार दिया गया। बीच-बीच में raw materials के लिये पेट ठीक करने के उपचार भी दिये गये। गुरुजी ने कहा कि दूसरी कोई दवाई लेने की जरूरत नहीं, तो दीदी ने अन्य किसी दवा या उपचार लेने से इन्कार कर दिया। दो ही दिनों में दीदी को लगा कि वह काफी ठीक हैं।

एक सप्ताह बाद दुबारा MRI लिया गया तो पाया गया कि नौरमल है। तो वहां के लैब के डॉक्टर भी हैरान होकर पूछने लगे कि आपने कौन सी दवाई ली कि एक ही सप्ताह में यह result आये। न्यूरोथेरेपी के बारे में कहने पर वे यकीन नहीं कर पाये कि बिना दवाई के एक ही सप्ताह के अंदर infarcts ठीक हो सकते हैं !

MRI report dt. 2.3.2009 reads as follows : **"Essentially Normal Study."**न्यूरोथेरेपी में शायद पहली बार यह चमत्कार हुआ है कि <u>एक ही सप्ताह के अंदर</u> ऐसा बदलाव लिखित रूप में MRI report में आया है। अब यह समझें कि गुरुजी की सोच क्या थी जिससे यह उपचार इतना प्रभावशाली बना –

I जब भी कहीं रक्त नहीं पहुँचे तो उसका एक कारण यह है कि वहां की नलिकायें संकीर्ण हो चुकी हैं। यह तजुर्बा है कि (15) Left Medulla (6) Lt. Swt से नलिकायें या स्फिंक्टर खुल जाते हैं।

II किसी भी जगह में calcification को तोड़ने का उपचार है –
(4) Para (7) Liv (8) Ch. Only (10) Adr –
इधर क्लौट के अंदर के कैल्शियम को खोलने के लिये दिया गया है।

III Clots के fibrin को खोलने के लिये – F.Heparin

IV Clots के अनचाहे ग्रोथ को तोड़ने के लिये – Anti. F.Heparin

V Mast cells द्वारा heparin बनाने के लिये – (½) Ku – 6 secs

VI रक्त संचार को नियमित रूप से रखने के लिये इन सब के अंत में – P. Heparin.

यह सबसे नवीन उपचार है जो सब प्रकार के पैरालाइसिस, इन्फार्क्ट, क्लौट, या सालों पुराना दर्द इत्यादि के लिये रामबाण सिद्ध हुआ है।

पैरालाइसिस और ह्रदय रोग के अलावा हेपारिन फॉरमुला कब देना है कैसे पता चलेगा ?

पैरालाइसिस और ह्रदय रोग के अलावा हेपारिन फॉरमुला मुख्यतः दर्दों में देते हैं। अक्सर पहले दिन हमारे उपचार के तुरन्त बाद रोगी कहेगा कि दर्दों में काफी आराम है। लेकिन अगर अगले दिन उसने आकर कहा कि कुछ ही घंटों के आराम के बाद दर्दें वापस आ गयीं, तो हमें समझना चाहिये कि उस सम्बन्धित भाग में कोई क्लोट है जिसके कारण दर्दें लौट आयीं। उसके लिये उचित हेपारिन फॉरमुला देना है।

उदाहरण –

अगर पेशंट को सिर या गर्दन में दर्द है और साथ में Mu^0 में दर्द हो तो उसे निम्न उपचार से लाभ होगा –

I (4) Medulla Clockwise ♀ T1/T2 II ATF + Neck ghisai

अगर रोगी कहता है कि पहले उसे आराम था और चार-पाँच घंटे बाद या दूसरे दिन सुबह उसके दर्दें वापस आयीं तो दूसरे दिन के उपचार में उचित हेपारिन फॉरमुला देना है।

- सबसे पहले Mu^0 में अब भी दर्द है या नहीं, यह चैक करें, Mu^0 में दर्द है तो निम्न उपचार से लाभ मिलेगा
  I ऊपर का सारा II A. Heparin + Neck ghisai
- अगर Mu^0 में दर्द नहीं है तो निम्न उपचार दें –
  I (4) Medulla Clockwise ♀ T1/T2 II M. Heparin + Neck ghisai x 2 treatments

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

हेपारिन उपचार कब देना है, तथा *उचित हेपारिन उपचार* कैसे चुनना है, निम्न प्रकार से पता लगा सकते हैं –

अगर उन्हें Mu^0 में दर्द है तो	A.Heparin
अगर रात में क्रैम्प्स आये वह कैल्शियम की कमी से है	J. Heparin
मैन्सेस में दर्द या क्लोट्स हो तो, या हाई बी पी के कारण पैरालाइसिस हो	G. Heparin
बार-बार सरदर्द या आँख, नाक या ब्रेन की बीमारी में	M. Heparin
पुरानी मार लगी हो, या मार लगने के बाद हेमाटोमा के कारण लकवा हो	TT. Heparin
अगर पैरालाइसिस में इन्फार्कट या इस्कीमिया हो और दर्दें भी हो	PT. Heparin, F. Heparin
अगर फाइब्रोइड्स (fibroids), सिस्ट (cyst) या किडनी स्टोन हो	Anti F. Heparin
अगर इन्फार्कट हो और कई बरसों से पैरालाइसिस हो तो	F. Heparin, Anti F Heparin

अगर पेट या पाचन संस्थान में बार–बार तकलीफ हो	X. Heparin
अगर मल्टीपल इन्फार्कट या कैल्सीफिकेशन हो (multiple infarcts / calcification)	Multi heparin
अगर ऊपर के अलावा कुछ अन्य प्रोब्लेम हो तो	P. Heparin

Vitamin B_{12} formula - (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo

इस फॉरमुला की प्रेरणा गुरुजी को अपनी पूज्य माताजी से प्राप्त हुयी। और उसका किस्सा इस प्रकार है – बचपन में गुरुजी की माताजी जब भी कहीं दूर चलकर वापस घर लौटती थी तो काफी थकी हुयी नज़र आती थी। यहाँ तक कि उनसे छोटा से छोटा काम भी नहीं होता था। तो वे बडी धीमी और महीन आवाज में गुरुजी से कहती थी कि मेरे कमर के बायीं side की हड्डी पर आकर बैठो। और गुरुजी ने देखा कि जब वे उस हड्डी पर बैठ जाते थे तो थोड़ी देर बाद उनके माताजी में जबरदस्त परिणाम दिखता था। उनकी आवाज में पूरी ताकत और जोश आ जाता था। और उसके बाद वे घर के सारे काम–काज ऐसे करती थी कि कोई विश्वास नहीं करे कि वही औरत है जो कुछ देर पहले हाय–हाय कर रही थी। उसी अनुभव से गुरुजी ने समझा कि हमारे बायीं बाजू के कमर की हड्डी में कोई ऐसी चीज़ बनती है जो शरीर की कमजोरी दूर करती है। लेकिन वह चीज़ क्या है – यह पहले उन्हें पता नहीं था, सो उन्होंने उस अनुभव पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

कुछ साल बाद गुरुजी के पास उपचार के लिये एक गुजराती महिला आयीं जो कहती थी कि उन्हें कमर की बायीं बाजू पर दर्द था – तो गुरुजी को अपनी माताजी के लक्षण याद आये और उन्होंने उस औरत को उसी जगह पर कुछ उपचार देना चाहा जहां उन्होंने बचपन में अपनी माताजी को दिया था। उसके लिये वे चाहते थे कि वह औरत करवट में लेटे, लेकिन उस महिला को उनकी भाषा समझ में नहीं आयी। तो गुरुजी अपने आप लेटकर उसे दिखाया कि वे क्या चाहते हैं तो उस औरत के मुँह से शब्द आये – 'ओह ! परखू ?' तब से गुरुजी ने उस ट्रीट्मेंट का नाम 'परखू ' रख दिया जिसे अंग्रेजी में 'Parkhoo' लिखते हैं । [गुजराती में 'परखू' का मतलब 'करवट']

उपचार के बाद उस औरत को तुरन्त ही चमत्कारिक फायदा हुआ, और उन्होंने कहा कि उन्हें साधारणतः Vitamin B_{12} के इन्जेक्शन के बाद ही इतना फायदा होता था। तो गुरुजी ने अनुमान लगाया कि यह उपचार Vitamin B_{12} की उत्पादन को उकसाता होगा। फिर वे किताबों में पढ़ने लगे, और शरीर के दर्दों के साथ Vitamin B_{12} की कमी की लक्षणों का सम्बन्ध अवलोकन करते गये। तो उन्होंने पाया कि जिनमें भी Vitamin B_{12} की कमी की लक्षण थीं, उन सभी को बायीं तरफ के femur हड्डी के सामने के नोक पर अतीव दर्द होता था। उस भाग को iliac fossa कहते हैं। और RBC's के उतपादन के प्रति पढ़ा तो पाया कि शरीर में बीस वर्ष की उमर के बाद RBC's जिन जगहों में बनते हैं, उनमें एक है ilia यानि pelvis की हड्डियाँ। (Guyton 10^{th} ed. p 383).

Taber's 18^{th} edn.p 2239 में लिखा है कि विटामिन B_{12} इन्टेस्टाइन की बैक्टीरिया द्वारा बनाया जाता है। अतः वे उस दर्द के प्वाइंट को वे B_{12} point कहने लगे, जिसका उपचार Left Parkhoo नामक उपचार से किया गया। शरीर में लिवर में Vitamin B_{12} का 5 से 6 साल तक का ही स्टौक (stock) रहता है, और गौल ब्लैडर लिवर का गोदाम है जहाँ बाइल को रखा जाता है। तो उन्होंने फॉरमुला इस प्रकार बनाया – (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo जिसका नाम B_{12} formula रखा गया। इस फॉरमुला में गौल ब्लैडर को पहले उकसाया गया, बाद में लिवर को – उसका तात्पर्य यही है कि – पहले गोदाम खाली करो और बाद में नयी चीज भेजो।

इस उपचार से देखा गया कि शरीर में Vitamin B_{12} का अवशोषण बढ़ जाता है और उसकी कमी के कारण आयी लक्षण मिटने लगती हैं। कमजोर व्यक्ति को यह उपचार देने से ताकत बढ़ जाती है। Vitamin B_{12} तथा फोलिक ऐसिड़ दोनों रहने से ही लाल रक्त के सैल्स (RBC's) को मैचोरिटी (maturity) मिलती है। इन दोनों विटामिन्स के बगैर RBC's मैच्योर (mature) नहीं हो सकते यानि तैयार नहीं हो सकते। अगर शरीर में Vitamin B_{12} की कमी हो तो दोनों हाथों की उंगलियों के पीछे की गांठो में कालापन आ जाता है। पैरालाईसिस (paralysis) यानि लकवा होने के बाद पांव का गिरा रहना (drop foot) यानि पैर को खींच–खींच कर चलना – यह भी Vitamin B_{12} की कमी के कारण होती है।

विटामिन **B_{12}** की कमी की पहचान

अगर Vitamin B_{12} की कमी हो जाये तो हाथों की उंगलियों के पीछे जोड़ों पर चमड़ी काली हो जाती है। या चेहरे पर पिगमैन्टेशन (pigmentation) भी आ जायेगी। या पलाठी लगाकर काफी देर बैठने के बाद कभी-कभी पांव सो जाते हैं जो उठने के तुरन्त बाद सोये हुए लगते हैं पर जो कुछ सैकन्डज़ में ठीक हो जाते हैं। अगर ऐसा बैठने के बाद उठने पर पांव सोये ही रहे तो समझना चाहिये कि शरीर में Vitamin B_{12} की कमी आ गई है।

Folic acid and Pure Folic acid formula

गुरुजी के पास कई महिलायें आती थीं जिनको अक्सर कमर के दाहिनी बाजू पर दर्दें होती थीं। चैक करने पर देखा जाता था कि उन्हें 'Gas और Rt. Ov. के प्वाइंट में बहुत दर्द होता था। इनमें से कुछ औरतों ने कहा कि उनके ब्लड टैस्ट में फोलिक ऐसिड (folic acid) की कमी पायी गयी जिसके लिये वे गोली ले रहे थे पर दर्द जाता नहीं था। उसके बारे में अभ्यास किया तो पता चला कि फोलिक ऐसिड हरी साग-सब्जी से मिलती है। लेकिन सिर्फ उसे खाने से ही बात नहीं बनेगी, उसके बनने के लिये भोजन में प्रोटीन्स का पाचन तथा अवशोषण ठीक से होना चाहिये। इसके बाद वह शरीर की जरूरत के अनुसार बड़ी आंत के ऐसेंडिंग कोलन (ascending colon) की बैक्टीरिया द्वारा बनाया जाता है। LMNT में हमने पाया है कि 'Rt. Ov.' के उपचार से ऐसेंडिंग कोलन के उस भाग को उकसा सकते हैं। इससे फॉरमुला इस प्रकार बनाया गया - (6) Gas Only (6) Gas I (6) Rt.Ov.

- ✓ Gas Only - पेट में HCl तथा पैप्सीन बनाने के लिये ताकि प्रोटीन्स ठीक से पचे
- ✓ Gas 'I' - आंतड़ियों को उकसाने ताकि सभी चीजों का पाचन तथा अवशोषण ठीक से हो
- ✓ Rt. Ov. - ऐसेंडिंग कोलन को उकसाने ताकि बैक्टीरिया ठीक से काम कर सके

यह देने से कुछ ही उपचारों में उनकी दर्दें निकल जाती थीं। इतना ही नहीं, कुछ औरतों को उपचार के तुरन्त बाद ही चेहरे पर थोड़ी-सी लालिमा भी दिखती थी। यह कैसे और क्यों हुआ - यह पता लगाने के लिये किताबों के गहन अभ्यास करने पर निम्न तथ्य पाये गये -

- ❑ फोलिक ऐसिड की कमी से शरीर में RBC's की कमी होती है।
- ❑ RBC's के उत्पादन की मुख्य जगह है ilia यानि pelvic हड्डी के दोनों भाग (Guyton 10th ed. p 383)
- ❑ जब शरीर में RBC's बढ़ती हैं तो त्वचा ज्यादा लाल दिखता है - उदाहरण के लिये जब कोई छुट्टियों के लिये पहाड़ी इलाके में कुछ दिन रहने के बाद नीचे आयें तो कुछ दिनों तक वे ज्यादा गोरे दिखते हैं।

इन सब से गुरुजी को विश्वास हो गया कि यह उपचार या तो फोलिक ऐसिड का उत्पादन या उसके अवशोषण को बढ़ाता है। यह फॉरमुला शरीर में फोलिक ऐसिड की कमी से आयी लक्षणों को ठीक करता है, अतः उसे **Folic acid formula** कहा गया **→ (6) Gas Only (6) Gas I (6) Rt.Ov.**

पहले ऊपर का formula ही दिया जाता था जिससे कई पेशंटों को काफी लाभ मिलता था।

बाद में गुरुजी ने अनुभव और अभ्यास से अब तक प्राप्त तथ्यों की जाँच की -

- ➢ फोलिक ऐसिड और विटामिन B_{12} दोनों मिलकर RBC's की maturity को बढ़ाते हैं।
- ➢ जिनको B_{12} की कमी है उन्हें बायीं कमर में बहुत दर्द होता है जो (8) Lt.Parkhoo देने से कम होता है, तथा उस उपचार द्वारा शरीर में B_{12} को उकसाया जाता है।
- ➢ फोलिक ऐसिड को ऐसेंडिंग कोलन (ascending colon) में बैक्टीरिया द्वारा बनाया जाता है।
- ➢ जिनको फोलिक ऐसिड की कमी है उन्हें दाहिनी कमर में बहुत दर्द होता है।
- ➢ तो क्या ऐसा न हो कि कमर के दाहिने बाजू पर Lt Parkhoo जैसा उपचार किया जाय तो उससे फोलिक ऐसिड बने ? उस उपचार को Rt. Parkhoo का नाम दिया गया।

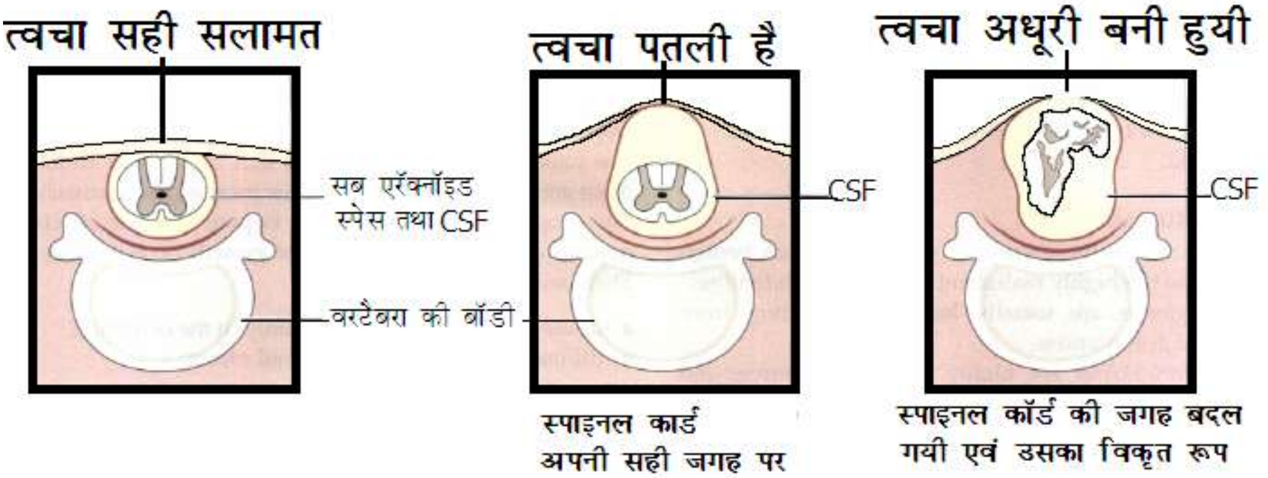
पहले (8) Rt Parkhoo दिया गया। उपचार के बाद कई लोगों को बहुत ही लाभ मिला। फिर देखा गया कि जिनको Rt Parkhoo के प्वाइंट में दर्द था, उन्हें (2) Rt. Parkhoo x 6 treatments उपचार देने के बाद करीब उतना ही लाभ मिला जितना कि पूरा Folic acid formula से मिलता था। तो समझ में आया कि (8) Rt Parkhoo से हम शरीर में फोलिक ऐसिड को बना या उकसा सकते हैं। तो निम्न उपचार बनाया गया जिसका नाम रखा गया - Pure Folic acid → (6) Gas Only (6) Gas I (6) Rt.Ov. (8) Rt.Parkhoo

{Pure – यह नाम इसलिये कि Rt.Parkhoo सिर्फ फोलिक एसिड को उकसाता या बढ़ाता है, अन्य चीजों को नहीं। Pure यानि शुद्ध।}

फिर पता चला कि spina bifida की तकलीफ का एक मुख्य कारण है फोलिक ऐसिड की कमी। और ऐसा देखा गया है कि spina bifida के पेशंटों को हमेशा 'Gas, Rt. Ov. और Rt Parkhoo इन तीनों प्वाइंट में बहुत दर्द होता है। उनको Pure folic acid उपचार देने के बाद देखा गया कि उनको बहुत ही अच्छा लगता है। हमारे पास सूर्यमाल आश्रम में स्पाइना बाइफीडा का एक case ऐसा आया था कि कई महीने यह उपचार देने के बाद देखा गया कि रोगी को न केवल सारी दर्दें निकल गयीं बल्कि X-ray में L5-S1 की जगह पर हल्का-सा कुछ दिखने लगा जिससे लगा कि वहाँ की cartilage में कुछ परिवर्तन या ग्रोथ आयी है। जिससे हम समझते हैं कि यह उपचार निस्संदेह शरीर में फोलिक ऐसिड बनाता है या उसके कार्य को उकसाता है।

इसके अलावा यह उपचार muscular dystrophy तथा tilt के पेशंटों के लिये बहुत ही उपयोगी साबित हुआ है। आजकल इस उपचार को और mild बनाया गया है यानि –

Pure Folic acid mild – (1)Gas Only–6 points (1)Gas ' I '–6 points (2) Rt.Ov. (8) Rt Parkhoo

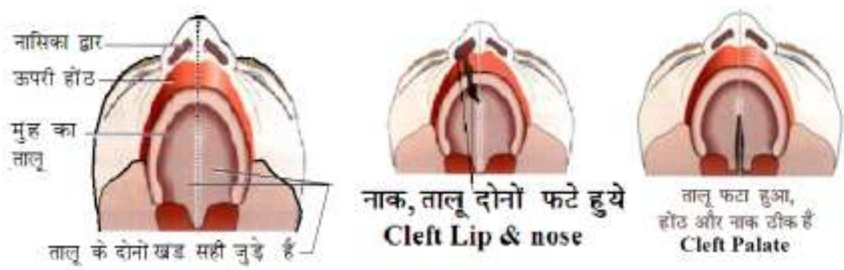


Folic acid deficiency disorders

निम्न बीमारियाँ फोलिक ऐसिड की कमी के कारण आती हैं

- मैगैलोब्लास्टिक अनीमिया (Megaloblastic anemia) – इसमें रक्त कोशिकायें आकार में बड़ी ही रह जाती हैं जिस के कारण वे कैपीलरीज़ के अंदर घुस नहीं सकती।
- स्पाइना बाइफीडा (spina bifida); मैनिन्जो मायेलोसील (meningo-myelocele); मैनिन्जोसील (meningocele) – इन तीनों को neural tube defects कहा जाता है और इन सबमें पाया गया कि प्रेगनैन्सी में अगर माँ को फोलिक ऐसिड की कमी हो तो बच्चे में ये defects हो सकते हैं। चित्र देखें। ऐसे बच्चे पेशाब या लैट्रीन कंट्रोल ठीक से नहीं कर पाते।





इनके अलावा निम्न दो गड़बड़ी हैं जिनमें भी यही उपचार लागू होगा लेकिन ठीक होने में कई महीने लगेंगे।

- क्लैफ्ट लिप्प या हैर लिप्प (cleft lip or hare lip) यानि जिसकी ऊपरी होंठ जनम से ही फटी हुयी हो। साथ में नाक में भी प्रोब्लेम हो सकता है। ऊपर चित्र देखें।
- क्लैफ्ट पैलेट (cleft palate) यानि जिनकी ऊपरी तालू जनम से ही फटी हुयी हो।

निम्न बीमारियों में भी गुरुजी ने **Folic acid** के प्वाइंट में दर्द पाया है

- कौनजैनिटल यानि जनम से रहनेवाली हृदय की बीमारियाँ (congenital heart disorders) – जैसे हार्ट में होल (hole in the heart) – इसके अन्तर्गत तीन बीमारियाँ आती हैं जिसे ASD,VSD or PDA कहते हैं। देश भर में कई बच्चे ऊपर के उपचार से, बिना ऑपरेशन के ही, दस–बारह महीनों में ठीक हुये हैं। इसके बारे में निम्न किस्सा प्रस्तुत है।

कुछ साल पहले गुरुजी के पास उपचार के लिये एक ऐसी बच्ची आयी जिसे hole in the heart की बीमारी थी। जिसके कारण उसे जरा–सी भी थकान लगने पर उसकी उँगलियाँ नीली पड़ जाती थीं। किताबों में इस बीमारी के प्रति यह नहीं लिखा गया कि यह किस की कमी से आती है। लेकिन गुरुजी हार माननेवाले नहीं थे। उन्होंने अपने अनोखे सोच से एक नयी पद्धति अपनायी जो अपने में बेमिसाल है –

पुस्तको में यह जरूर लिखा है कि अगर प्रेगनैन्सी के दौरान माँ में किसी विटामिन की कमी हो या कोई ग्लैंड ठीक से काम न करे तो उसके असर से बच्चे में कुछ खास बीमारियाँ हो सकती हैं। लेकिन हरि की कृपा से गुरुजी की दिमाग में यह नई सोच आई कि प्रेगनैन्सी के दौरान माँ में जिस विटामिन की कमी होती है तो बच्चे में भी उन चीजों की कमी होंगी ही। और अपने साठ साल के अनुभव से उन्हें पता था कि अक्सर प्रेगनैन्सी के दौरान औरतों में फोलिक ऐसिड या B_{12} की कमी होती है – जिनके कारण शरीर में कुछ खास प्वाइंट पर दर्दें होती हैं जिनकी उन्होंने खोज कर ली है। बच्चों को pain point चैक करने से वे नहीं बता पायेंगे कि उन्हें दर्द होता है या नहीं, लेकिन उनकी माँ तो अपनी pain point के बारे में बोल सकती है न ? तो माँ को चैक करने के बाद उसके pain point के अनुसार बच्चे को फोलिक ऐसिड या B_{12} का उपचार दें तो बच्चे को बहुत लाभ होगा – ऐसा उन्होंने निश्चय किया।

जब गुरुजी ने उस बच्ची की माँ को चैक किया तो उसके फोलिक ऐसिड के प्वाइंट में बहुत ही ज्यादा दर्द था। तो गुरुजी ने हरि को ध्यान करके उस लड़की को ऊपर का उपचार दिया तो कमाल की बात है कि ट्रीट्मेंट लेकर बाहर आने के तुरन्त बाद ही लड़की ने कहा कि उसे बहुत ही अच्छा लगा। उसे 5-6 महीने उपचार दिये गये जिसके बाद sonography में आया कि उसके हार्ट का hole 9 mm से घटकर 4 mm का हो चुका था। उसके बाद से सारे देश भर कई ऐसे बच्चों को इस उपचार द्वारा ऑपरेशन के बिना ही ठीक किया जा रहा है।

उसी समय से उन्होंने बच्चों के बीमारियों में पूछ–ताछ की एक नयी पद्धति निकाली – उपचार तय करने से पहले बच्चे के प्रोब्लेम पूछने के अलावा हमेशा बच्चों की माँ की B_{12} तथा folic acid के pain points चैक करना चाहिये। ताकि हमें पता चले कि बच्चे में किस चीज की कमी है। अगर माँ को प्रेगनैन्सी के दौरान Vitamin B_{12} या फोलिक ऐसिड की कमी हो तो बच्चे को उसी का उपचार करें तो ही बच्चे के उपचार में बहुत प्रगति होगी एवं बीमारी जल्दी ठीक होगी। *छोटे बच्चों की उपचार को अत्यन्त प्रभावशाली और आसान बनाने के लिये यह गुरुजी का एक उत्तम खोज है जिसने खासकर मन्द बुद्धि के बच्चों को ठीक करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।*

अब तक तीन फॉरमुला हैं जो फौलिक ऐसिड की कमी की बीमारियों में काम आते हैं –

Folic acid (6) Gas Only (6) Gas 'I' (6) Rt.Ov.
Pure Folic acid (6) Gas Only (6) Gas 'I' (6) Rt.Ov. (8) Rt Parkhoo
Pure Folic acid mild – (1) Gas Only–6 points (1) Gas' I '–6 points (2) Rt.Ov. (8) Rt Parkhoo

Genes change formulas **Genes** के कार्यों को सुधारने के फौरमुले

Black treatment या **Genes Formula No.1**

जैसे ऊपर कहा गया है – फोलिक ऐसिड़ और Vitamin B_{12} के बगैर RBC's मैच्योर (mature) नहीं हो सकतीं, और उससे शरीर में RBC's की कमी आयेगी, इतना तो कोई आम व्यक्ति भी कह सकता है। लेकिन इसके आगे हम गुरुजी के असामान्य दृष्टिकोण का एक और परिचय प्राप्त करते हैं और वह यह है कि – RBC's का मुख्य गुण है कि रक्त को लाल रंग प्रदान करना। यानि अगर RBC's कम है तो उसके ब्लड में लाल रंग कम होगा। तो क्या ऐसा नहीं हो सकता कि जिनका रंग काला है वह Vitamin B_{12} और फोलिक ऐसिड की कमी से ही हो ? इस अनुमान को मन में रखकर निम्न फॉरमुला बनाया गया – **(6) Gas** खाली **(6) Gas I (6) Rt.Ov (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo**

इसमें पहले *Folic acid formula* देकर बाद में *Vitamin B_{12} formula* दिया गया है। *Folic acid formula* शरीर के दायीं तरफ के अंगों को उकसाता है जब कि (8) Lt Parkhoo शरीर की बायीं तरफ की आंतडियों को उकसाता है। इस क्रम से देने से normal peristalsis बना रहेगा। अगर हम पहले *Vitamin B_{12} formula* देकर बाद में *Folic acid formula* देते तो पेशंट को सख्त कब्जी हो सकती है। सो इस चीज का ध्यान रहे। { Gas Only को Gas खाली भी लिखा जाता है }

इस उपचार द्वारा चेहरे का या शरीर का या हाथों के पीछे का pigmentation यानि कालापन खत्म हो जाता है, जिसके कारण ही इस उपचार को Black treatment formula का नाम दिया गया है। यह पैलागरा (pellagra) के लिये या जिनके ज़बान काली हो उसे ठीक करने के लिये भी दिया जाता है।

इस उपचार से शरीर में Vitamin B_{12} तथा फोलिक ऐसिड दोनों के कार्य सुधर जाते हैं। Parkhoo के उपचार से हम **ilia** के दोनों भाग को उकसाते हैं, जो **RBC's** उत्पादन का एक मुख्य केंद्र है। इन सबसे RBC's की मात्रा बढ़ेगी ही।

अगर रक्त में RBC's की मात्रा कम हो तो उसमें हीमोग्लोबिन की भी कमी होगी। तो उसे भी इस उपचार से ठीक कर सकते हैं। इसलिये ही यह उपचार Minor एवं Major Thalassemia की बीमारियों में भी काम देता है – क्योंकि उन में विभिन्न कारणों से हीमोग्लोबिन की कमी होती है।

गहन अभ्यास से पता चला कि Vitamin B_{12} और फोलिक ऐसिड – ये दोनों ही सैल्स के अन्दर DNA एवं RNA के कार्यों को प्रभावित करते हैं। DNA और RNA से ही genes बने हुये हैं। तो गुरुजी ने निहायती ऊमदा अनुमान लगाया कि Vitamin B_{12} और फोलिक ऐसिड के इन उपचारों से हम जीन्स की गड़बड़ियों से आई बीमारियों को सुधार सकते हैं। इस अनुमान से जब इस उपचार को Down Syndrome के बच्चों को दिया गया तो उनमें काफी सुधार आती है, जिससे हम समझते हैं कि बिगड़े genes के कार्य को भी इस फॉरमुला से सुधारा जा सकता है। इसीलिये इसे **Genes Change formula No. 1** भी नाम दिया गया। इस फॉरमुला का उपयोग **Large Folic Black** के साथ दिया हुआ है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Pure Genes Formula y; Genes formula No. 2

न्यूरोथेरेपी की सफलता को देखकर अनेक बीमारियों के पेशंट आने लगे, तो देखा गया कि कुछ पुरानी बीमारियाँ ऐसी थीं जिनमें हमारे विभिन्न उपचारों से पेशंटों को थोड़ा बहुत आराम जरूर मिलता था, पर वे पूर्ण रूप से ठीक नहीं होते थे। तो गुरुजी ने सोचा कि शायद इसका कारण यह है कि उनके cell के अन्दर कुछ ऐसी गड़बड़ी या खराबी होगी जिसे ठीक करने के लिये जीन्स के कार्यों को सुधरना है।

गुरुजी ने किसी किताब में पढ़ा था कि 1,25 DCC तथा Vitamin B_{12} सेल्ल (cell) के अन्दर जीन्स के कार्यों की देखभाल करते हैं। उस तथ्य से निम्न फॉरमुला बनाया गया जिससे उन पेशंटों को बहुत ही आराम मिला → **(7) Liv (4) Para (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Lt Parkhoo**

इस formula के पहले चार प्वाइंट मिलकर Pure 1,25 DCC बनाते हैं। और Lt.Parkhoo सिर्फ B_{12} को उकसाता या बढ़ाता है, अन्य चीजों को नहीं। Pure यानि शुद्ध। }

अतः दोनों को मिलकर बनाया गया फॉरमुला का नाम Pure Genes formula रखा गया।

Black treatment formula के बाद इसकी खोज की गयी सो इसे Genes Formula No. 2 भी कहते हैं।

मुख्य बीमारियाँ -डाउन सिन्ड्रोम Down Syndrome, psoriasis सोरियासिस Bamboo spine बैम्बू स्पाइन

New Genes Formula या **Genes formula No. 3**

पहले गुरुजी के पास ऐसी महिलायें आती थीं जिनको अत्यधिक सफेद पानी जाता था, जिसे अंग्रेजी में White discharge (WD) कहते हैं। Pain point चैक किया तो देखा कि उन्हें नाभी के ठीक निछले भाग में अतीव दर्द था। तो उस प्वाइंट को WD का नाम दिया गया। साथ में पाया गया कि उन्हें 'Pan ' के प्वाइंट में भी बहुत दर्द हुआ करता था। इन दर्दों को निकालने के लिये नया फॉरमुला बनाया –

(8) Pan (6) WD (8) Ch. Only (20) ↑|↓

ध्यान दें कि 'Pan' एवं 'WD' नाभी के ठीक विपरीत स्थानों (opposite points) को सूचित करते हैं।

(8) Ch. Only (20) ↑|↓ – यह acid-alkali का बैलेंस बनाये रखने के लिये दिया गया है।

(1,25 DCC formula में इसके प्रति लिखा गया है)

पहले पहल इस फॉरमुला का नाम " Pan – WD formula " रखा गया। इस उपचार से 90% से ज्यादा औरतों में दर्द तुरन्त निकल जाता है तथा एक या दो उपचार के अंदर ही सफेद पानी का निकलना एकदम बंद हो जाता है। जब सफेद पानी का आना बहुत ज्यादा हो जाय तो उसे ल्यूकोरिया (leucorrhea) कहते हैं। प्रायः सभी उमर के औरतों को यह तकलीफ रहती है, लेकिन वे उसे चुपचाप सह लेती हैं। यह एक कमाल का उपचार साबित हुआ है जो इस परेशानी को बहुत ही जल्दी ठीक कर देता है – जो कि विश्वास के बाहर है। आजमाने से ही हमारे कथन के सत्य का पता चलेगा।

New Genes formula के अन्य उपयोग –

- पिछले साठ वर्षों से विभिन्न बीमारियों का उपचार करते करते गुरुजी ने देखा कि जननांगों से सम्बन्धित प्रायः सभी बीमारियों में नाभी के नीचे के भाग में दर्द होता है। तो उन सभी की ठीक करने के लिये यह उपचार लाभदायक है। यानि prostate gland तथा uterus यानि गर्भाशय के सारे प्रोब्लेम के लिये यह लाभकारी है।
- वैसे ही, जिनको tilt हो या low back pain यानि पीठ के नीचे भाग में दर्द हो तो उन्हें भी इस उपचार से तुरन्त लाभ मिलता है।
- LMNT की सफलता का मौखिक प्रचार ही होता है। गुरुजी को अपनी थेरेपी के बारे में कहीं भी विज्ञापन करने की जरूरत ही नहीं पड़ी। फिर भी कई नये बीमारियों के पेशंट रोज उनके पास आते थे। जैसे ऊपर लिखा गया गुरुजी के पास कई मंगोलिज़म (mongolism) यानि डाउन सिन्ड्रोम (Down Syndrome) के बच्चे इलाज कराने आते थे। अब छोटे बच्चों का तो pain point का पता नहीं चलेगा। तो उनकी इलाज कैसे की जाय ? पहले पेट ठीक करने के कई उपचार दिये गये जिससे लाभ जरूर हुआ। फिर सोच विचार करने के बाद अन्त में हरी की कृपा से उनके मन में यह ख्याल आया कि जो भी तकलीफ जनम से है वह जननांगों की गड़बड़ी से होनी चाहिये। और LMNT में जननांगों की गड़बड़ी को ठीक करने के लिये 'WD' के प्वाइंट को उकसाते हैं। इसलिये सोचा कि क्यों न इन बच्चों को Pan – WD formula दिया जाय ? तो उपचार दिया गया तो कुछ दिनों के अन्दर काफी फर्क दिखने लगे। यहाँ तक कि उनके नाक की हड्डी जो पहले धँसी हुयी थी, वह बाहर आने लगी। और त्वचा के रंग में जो पीलापन होता था, वह कम होने लगा। तो इन सब कारणों से वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि यह फॉरमुला भी बिगड़े हुये जीन्स के कार्य को सुधार सकता है। चूंकि पहले ही दो जीन्स फॉरमुला थे, तो इसका नाम New Genes formula या Genes formula #3 रखा गया।
- कभी कुछ बच्चों में ऐसी एक प्रोब्लेम आ जाती है कि जनम से उनके पैर के बाहरवाला भाग अन्दर की ओर मुड़ा हुआ रहता है। इसे डुडा पांव, talipes या club foot कहा जाता है। ऐसे बच्चे अक्सर एढ़ी उठाकर चलते हैं यानि उनकी एढ़ी जमीन पर नहीं लगती और वे पैर के पंजे पर ही चल पाते हैं। गुरुजी ने सोचा कि तकलीफ जनम से ही है तो शायद जननांगों की गड़बड़ी से है, तो क्यों न इन्हें भी New Genes formula दिया जाय ?

  इस विचार से बच्चे को New Genes formula दिया गया तो एक ही उपचार के बाद बच्चे की माँ ने कहा कि कुछ फर्क जरूर है। पहले जब वह बच्चे को पकड कर चलाती थी तो बच्चे के वजन के कारण उसके हाथ पर काफी जोर पड़ता था। लेकिन उपचार के बाद उसने महसूस किया कि अब उस के हाथ पर कम वजन पड़ रहा है। और तीन-चार दिन के उपचार के बाद देखा गया कि बच्चे की एढ़ी जमीन के कुछ पास

आ रही है। पहले उसकी एढ़ी जमीन से तीन-चार इंच ऊपर थी। अब वह बीच-बीच में डेढ़ दो इंच तक आ जाती थी। बच्चे का बैलेंस भी काफी सुधर गया था। करीब 8-9 महीने के उपचार के बाद देखा गया कि उसके पैर का सामने का भाग काफी हद तक सीधा हो रहा था। और 1½ - दो साल के अंदर उसके पैर पूरा ही ठीक हो गया। 'Pan ' देना कैसे उपयोगी है – इसमें और एक बात भी है। पैंक्रियास के केमीकल्स के बारे में गुरुजी ने पढकर लिखा था कि – DNA और RNA को तोडने के लिये pancreatic juice का उपयोग करना है। जीन्स की गड़बड़ी के बीमारियों में (genetic disorders) हमें DNA और RNA के कार्य को सुधारना है। शायद यह भी एक और कारण होगा कि जीन्स की गड़बड़ी के बीमारियों को ठीक करने में यह फॉरमुला क्यों और कैसे लाभ पहुँचाता है।

संक्षेप में **New Genes** फॉरमुला के निम्न उपयोग हैं –

- औरतों में सफेद पानी का जाना, डूडा पाँव (Club foot), prostate gland की बीमारियाँ, यूटेरस यानि गर्भाशय की सारी समस्याएं, सेरेब्रल पैल्सी, डाउन सिंड्रोम यानि मंगोल बच्चे, जीन्स संबन्धी बीमारियाँ , पीठ के नीचे भाग में दर्द, नाभी के नीचे की दर्दें इत्यादि।
- डायाबीटीस की बीमारी में भी यह फॉरमुला लाभदायक है। उसके लिये निम्न प्रकार से उपचार करना है-
- अगर उन्हें ऑटो इम्यून डिसार्डर हो तो उनको अक्सर दाहिने पैर की छोटी उँगली में toe finger जैसा मसलने से दर्द होता है। ऐसे लोगों को 'Thymus' को दबाने के लिये 'Adr' देना है। उन्हें निम्न उपचार दें (8) Pan (6) WD (8) Ch. Only (6) Adr

  अगर ऑटो इम्यून डिसार्डर है या नहीं – यह ठीक से नहीं कह पाये तो उन्हें निम्न उपचार देना – (8) Pan (6) WD (8) Ch. Only (20) ↑|↓ <u>(L1-L5)</u>
- अगर नाभी से नीचे किसी कारण कोई दर्द हो और उन्हें डायाबीटीस या अन्य कोई ऑटो इम्यून डिसार्डर न हो तो इस formula को निम्न रूप में बदल सकते हैं – (8) Pan (6) WD (8) Thymus+Chest

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

इसके बाद खोज करते करते गुरुजी ने Pure Folic Black formula बनाया जिसमें ऊपर के प्वाइंट को अन्य क्रम से दिया गया – (8) Rt Parkhoo (3) Gal (7)Liv (8) Lt. Parkhoo

यह भी pigmentation यानि कालापन को कम करता है। यह उन मरीजों के लिये भी लाभदायक है जिन्हें कमर के दोनों बाजू में दर्द है, लेकिन पीठ के X-ray रिपोर्ट में NAD यानि 'No abnormality detected' अर्थात् सब कुछ नौरमल है – ऐसा लिखा रहता है।

आजकल इस उपचार को इस प्रकार से बदला गया है – जिसे **Large folic black formula** कहते हैं –

(1)Gas Only – 6 वाला (1) Gas ' I '– 6 वाला (2) Rt.Ov. (8) Rt. Parkhoo (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo

Black formula, Folic black formula या **Large folic black formula** के निम्न उपयोग हैं –

इनसे विटामिन B_{12}, niacin, folic acid, एवं thiamine की कमी से आई बीमारियाँ ठीक कर सकते हैं।

मुख्य बीमारियाँ **-**

पिग्मैन्टेशन (Pigmentation) यानि शरीर में का काले धब्बे पड़ना, पैलागरा (pellagra) यानि काली जुबान, ऐनीमिया (Anemia) यानि रक्त की कमी, ब्लड में हीमोग्लोबिन की कमी, जीन्स की गड़बड़ी से आयी बीमारियाँ, तथा पाचन ठीक करने के लिये भी उपयोगी है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

जिनका कमर एक तरफ झुका हुआ हो, उसे Tilt कहते हैं – उनके दर्द के अनुसार उपचार करना है –

- अगर फोलिक ऐसिड के प्वाइंट में दर्द है तो उन्हें Folic acid formula देना है।
- अगर B_{12} के प्वाइंट में दर्द है तो उन्हें Vitamin B_{12} formula देना है।
- अगर B_{12} और फोलिक ऐसिड दोनों में दर्द हो Folic Black formula देना है।

अब नाभी के आसपास के दर्दों के अनुसार ऊपर के फॉरमुला में से किस फॉरमुला को चुनना है यह समझें –

LMNT के किन प्वाइंट में दर्द है –	*फॉरमुला*
'Gas', Rt.Ov & B_{12} के प्वाइंट	*Genes formula #1 i.e., Black treatment formula*
'Gas', 'Rt.Ov', 'B_{12}' and 'Folic acid'	*Large folic black formula*

क्रैम्प्स आते हैं एवं B_{12} point में दर्द	*Genes formula #2 i.e., Pure Genes formula*
'WD' 'Pan' या 'Gas' में दर्द हो तो	*Genes formula #3 i.e., New Genes formula*
'Gas' एवं 'Folic acid' या 'Gas', Rt.Ov, 'Folic acid' एवं 'thiamine'	*Pure folic acid formula*
'B_{12}' or ' niacin' and 'folic acid' or 'thiamine', लेकिन 'Gas' में दर्द नहीं	*Pure folic black formula*

इनके अलावा, बीच-बीच में ज़रूरत के अनुसार UDF ट्रीट्मेंट देना है और पेट, digestion यानि पाचन इत्यादि ठीक करने के ट्रीट्मेंट भी देना चाहिये।

इस प्रकार से हम देखते हैं कि जीन्स की गड़बड़ियों को ठीक करने के लिये कई अलग उपचार हैं जो अलग-अलग बीमारियों में काम आते हैं। कभी-कभी ऐसा देखा गया कि किसी भी जीन्स उपचार देने के बाद दूसरे दिन कोई अन्य उपचार देने से नतीजे वैसे नहीं आते जो पहले आते थे। कभी-कभी तो उल्टे असर भी आते हैं। बहुत सोच विचार करने के बाद गुरुजी ने खोज लिया कि ऐसा क्यों होता है। और इसका कारण निम्न प्रकार है-

जब हम LMNT द्वारा कोई भी उपचार करते हैं तो हम समझते हैं कि उससे शरीर के केमीकल्स में बदलाव आता है जिसके कारण ही पेशंट को आराम मिलता है। जब हम कोई भी जीन्स फॉरमुला (Genes Change formula) देते हैं तो उसके कारण सैल्स के internal environment यानि आंतरिक वातावरण में काफी बदलाव आयेगा कि शरीर के जरूरत के अनुसार कुछ केमीकल्स कम होंगी और कुछ ज्यादा होंगी। और इनका असर कभी-कभी काफी दिनों तक रह सकता है। जब हम दूसरे दिन अन्य उपचार देते हैं तो उस उपचार के केमीकल्स तथा जीन्स उपचार द्वारा बनाये गये केमीकल्स में मिश्रण होगा जिससे उस नये उपचार के नतीजे जो आने थे वे पूरे नहीं आयेंगे या उल्टे आते हैं।

तो ऐसा न हो, इसका इलाज भी गुरुजी ही बताते हैं -

कोई भी जीन्स फॉरमुला देते समय निम्न चेतावनी जरूरी है -

- अगर LMNT के किसी उपचार के बाद हमें Genes Change formula देने की जरूरत पड़े तो - पहले एक नौरमल उपचार (NAN या FAN) देना आवश्यक है ताकि पहले दिया गया उपचार के केमीकल्स का असर इस Genes Formula पर न पड़े।
- वैसे ही कुछ दिन Genes Change formula उपचार करने के बाद जब हमें दूसरा उपचार देना है तो पहले एक नौरमल उपचार देने के बाद ही दूसरा उपचार करना चाहिये।

इसका कारण यह है कि जब हम नौरमल (NAN या FAN) देते हैं, तब किसी भी उपचार के कारण जो भी केमीकल्स कम ज्यादा हुये वे सब नौरमल हो जायेंगे यानि अपनी सामान्य मात्रा में होंगे। उसके बाद जो भी नये उपचार देंगे उसका पूर्ण प्रभाव होगा और देखा गया कि ऐसे करने से नतीजे बहुत ही अच्छे आते हैं।

सारांश - ये तीनों काफी powerful यानि प्रभावशाली उपचार हैं। लेकिन अगर पुरानी बीमारी हो तो इनके उपयोग करने से पहले पेट और आंतड़ियों को ठीक करना है तथा UDF आ रहा हो तो उसका उपचार करना जरूरी है।

इन तीन जीन्स फॉरमुला का उपयोग कब और कैसे करना है यह समझें -

जब भी कोई ऐसी बीमारी आती है जो बहुत पुरानी हो - उसमें जीन्स की गड़बड़ी होने की संभावना है, उस बीमारी में इन्हीं तीनों फॉरमुला से ही ठीक करना है। नीचे के किस्सा इसका उदाहरण है।

सन् २००५ में गुरुजी के पास एक बीस साल की पेशंट आयी। उसकी तकलीफ यह थी कि जिस दिन से उसके मैन्सस यानि मासिक धर्म शुरू हुये उस दिन से उसे लगातार हर दिन ब्लीडिंग होती थी। ऐसे पिछले कई सालों से चल रहा था। कई डॉक्टरों को दिखाया और हजारों रुपये खर्च करके कई सारे टैस्ट (test) करने के बाद पता चला कि उसके शरीर में vitamin K नहीं बनता है जिसके कारण रक्त जम ही नहीं सकता। उसे "**Mild Factor VIII deficiency** " नामक बीमारी बताया गया। डॉक्टरों ने कहा कि अब ब्लीडिंग बन्द करने का एक मात्र उपाय यह है कि उसके यूटेरस और ओवरीज़ को निकाल दिया जाय। आप सोचिये कि एक बीस साल की कुँवारी बेटी के माँ-बाप पर क्या गुजरा होगा यह सुनकर !

इस हालत में हरि की कृपा से उन्हें LMNT के बारे में पता चला और उसे हमारे पास ले आये। गुरुजी ने उसे चैक किया तो उसके Mu^0 के प्वाइंट में अतीव दर्द था जिसे हम ऐसिड़ोसिस के लक्षण समझते हैं। उस दिन उसे ATF दिया गया जिससे उसका Mu^0 का दर्द निकल गया। उसे ठीक से पानी पीने के लिये भी कहा गया। क्योंकि हमने पाया है कि acidosis का एक लक्षण है कि मैन्सस ज्यादा दिन तक या अत्यधिक मात्रा में आते हैं। दूसरे दिन सुबह ही उसकी मम्मी ने टेलीफोन किया कि रात को ही उसके मैन्सस बन्द हो गये ! है क्या यह विश्वास करनेवाली बात ?

कुछ दिन ATF देने के बाद जब Mu^0 का दर्द निकल गया तो उसे 10-15 दिन तक पेट एवं आंतड़ियों को ठीक करने के उपचार दिये गये। जब एक महीना हो चुका था और उसके मैन्सस नहीं आये तो उसकी मम्मी को चिन्ता हो गयी। फिर देखा गया कि उसके शरीर के दाहिनी भाग के अंग यानि 'Gal', 'Liv', 'Liv^0 ', इत्यादि में बहुत दर्द था। जिससे गुरुजी ने समझा कि उसकी शरीर में ऐल्कली बढ़ी हुयी है – जिसका एक लक्षण है मैन्सस का देरी से आना या कम स्राव का आना (scanty menses), तो उसे ठीक करने के लिये 'Mild alkali treatment' का उपचार दिया गया तो एकाध दिनों में उसके मैन्सस आ गये। सबसे बड़ी बात है कि इस बार मैन्सस चार-पांच दिनों में बंद भी हो गये।

फिर उसे कई दिनों तक UDF और पेट ठीक करने के अन्य उपचार दिये गये। उसके मैन्सस ठीक हो चुके थे। सब कुछ होने के बावजूद उसका Factor VIII ठीक नहीं हुआ। फिर गुरुजी ने कहा कि हमें उसके Genes को सुधारने का उपचार देना है। तो उसे एक दिन छोडकर एक दिन – ऐसे तीनों Genes फौरमुले बारी-बारी से दिये गये। हर एक के बीच में एक नौरमल फॉरमुला (FAN) दिया गया। तो दो तीन महीनों के अन्दर उसका Factor VIII बढ़ने लगा। और कुछ और उपचार के बाद उसका Factor VIII 80 तक आ गया। और तीन साल के बाद भी उन्होंने फोन पर कहा कि उसे मैन्सस की या अन्य किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं रही। इस उदाहरण से स्पष्ट साबित हुआ कि अगर हम हौसला रखकर सही तरीके से डाइग्नोसिस करके उपचार करें तो LMNT द्वारा बड़ी से बड़ी बीमारी को भी ठीक कर सकते हैं।

-- --

NEW

एस्ट्रोजैन द्वारा सैल्स (cells) के अन्दर क्रोमोसोम के DNA पर प्रभाव के कारण तुरन्त ही DNA का RNA में बदलने का कार्य शुरू हो जाता है। इसलिये जीन्स की गड़बड़ियों में एस्ट्रोजैन को भी उकसाना चाहिये – यह try करना है।।

-- --

LMNT के **'Star'** फौरमुले तथा रुमैटौइड आरथ्राइटिस **(RA)**

LMNT की सफलता की ख्याति दिन-प्रतिदिन बढ़ती गयी कि गुरुजी के पास ऐसे लोग भी आने लगे जो कई जगहों से तथा कई प्रकार के उपचार करके सब जगह से निराश हो चुके थे। उनमें मुख्य थे वे जिन्हें कई सारे जोड़ों में दर्दें यानि joint pains होती थीं। इसे संधी वात भी कहते हैं। उनके लिये LMNT मानो ईश्वर का प्रसाद था। हर एक के शरीर की स्थिति को ध्यान में रखकर उपचार करने के कारण पेट ठीक करने के तथा हेपारिन-जैसे रक्त संचार बढ़ाने के उपचार से ही कई लोगों को काफी लाभ मिलता था। लेकिन पुरानी बीमारी होने के कारण दर्द कभी खत्म नहीं होता था। कुछ लोगों को कुछ दिनों के लिये आराम मिलता था तो कुछ लोगों को चन्द घंटों तक और फिर से दर्दें लौट आती थीं।

पहले तो देखा गया कि ऐसे लोगों को 'Gal' के प्वाइंट में हमेशा दर्दें होती थीं तथा पेट भी खराब रहता था। इसके अलावा एक और बात गुरुजी के दिमाग में आयी जो इस प्रकार है –

गुरुजी के माता जी ने उन्हें बचपन से ही अपने देश की संस्कृति और कुल परंपरा को मान्यता देने के लिये सिखाया था। इसके अलावा गुरुजी खुद हस्त-रेखा (palmistry) देखने में निपुण थे। सो वे ज्योतिष इत्यादि शास्त्रों की भी बहुत कदर करते थे। वे हमेशा कहते हैं कि हमारे पूर्वजों को मालूम था कि जब बच्चा जनम लेता है तो उस समय के ग्रहों की स्थिति के अनुसार उसके जीवन के सारे कार्य चलते रहते हैं जिसके बारे में कुंडली में लिखा जाता है। और उसके ग्रहों का असर उसके स्वास्थ्य पर होता है।

तो हमेशा की तरह, हरि ने उनके दिमाग में एक अद्‌भुत सोच दौड़ाया कि जो बीमारियाँ कई सालों से पीछा नहीं छोड़ रही हैं – उनका सम्बन्ध ग्रहों से होनी ही चाहिये।

ग्रहों का असर सहस्रार चक्र वा आज्ञा चक्र के ऊपर है, जो कि pineal gland से सम्बन्धित है। LMNT में देखा गया है कि 'Ku' नामक उपचार देने के बाद ब्रेन की activity बहुत ही बढ़ जाती है। सो गुरुजी बरसों से कहते आये हैं कि 'Ku' उपचार से हम pineal gland को उकसा सकते हैं। तो उन्होंने निश्चय किया कि 'Gal' को उकसाना है, पेट को सैट करना है एवं पीनियल ग्लैंड को उकसाना है।

फिर निम्न ख्याल आये –

- पीनियल ग्लैंड का संदेश ब्रेन से निकलेगा तो उसे रीढ़ की हड्डी के अन्दर से स्पाइनल कौर्ड (spinal cord) के दोनों बाज़ू के peripheral nervous system के 31 जोड़ी नर्व्ज़ (31 pairs of spinal nerves) द्वारा ही सभी अंगों में पहुँचना है।
- यह आम बात है कि किसी भी रास्ते में रुकावट हो तो उससे यातायात ठीक से होगा नहीं, और traffic jam होगा, जिससे सामान सही वक्त पर नहीं पहुँचेगा।
- वैसे ही, मनकों के alignment में अगर कोई उतार–चढ़ाव हो तो ब्रेन से संदेश सभी अंगों तक ठीक समय या ठीक प्रकार से नहीं पहुँचेगा। तो इसे भी ठीक करना है।
- मनकों द्वारा रक्त संचार को सैट (set) करने के लिये उन्होंने Round arrow नामक उपचार (↑|↓) बनाया था।
- इन सब विचारों के आधार पर कई फॉरमुला बनाये गये जिन्हें Star treatments का नाम दिया गया। तो सबसे पहले जो उपचार बनाया गया वह इस प्रकार था –

  (3) ONS (3) Gal (4) Ku (20) ↑|↓

  - ✓ (3) ONS – नाभी को सैट (set) करने के लिये
  - ✓ (3) Gal - 'Gal' के दर्द को निकालने
  - ✓ (4) Ku - पीनियल ग्लैंड को उकसाने
  - ✓ (20) ↑|↓ - पेरीफेरल नर्वस सिस्टम द्वारा सारे अंगों में न्यूट्रिएन्ट्स ठीक से पहुँचाने

गुरुजी ने ग्रहों के प्रभाव के असर को ठीक करने के लिये इस उपचार को बनाया था – सो इसका नाम Star treatment रखा गया। जिस किसी को भी पुरानी दर्दें थी, उनको इस उपचार से तुरन्त ही दर्दें कम हो जाती थीं। इतना ही नहीं, देखते ही देखते यह फॉरमुला इतना पॉपुलर यानि जन–प्रिय (popular) हो गया कि वह सचमुच एक Star यानि सितारा बन गया। बाद में इस उपचार में और कई बदलाव आते गये सो ऊपर के उपचार का नाम **Old Star treatment formula** रखा गया।

Ku के बाद Round Arrow देने का एक और लाभ हुआ। देखा गया कि 'Ku' देने से कुछ लोगों में 'Mu^0' में दर्द होता था, एवं उनमें ऐसिड़ोसिस के लक्षण दिखने लगते, जब कि (20) ↑|↓ से Mu^0 का दर्द निकल जाता था। इस तथ्य का उपयोग कई जगहों में किया गया है। इसलिये आप देखेंगे कि कई फारमुलाओं में गुरुजी 'Ku' के बाद (20) ↑|↓ देते हैं।

फिर गुरुजी को ध्यान में आया कि जब ग्रहों का सम्बन्ध जनम से है तो उनका असर जननांगों पर होगा ही। और LMNT में हम जननांगों को 'WD' उपचार द्वारा उकसाते हैं। सो उपचार को इस प्रकार बदला गया –
(3) WD (1) Gal (4) Ku (20) ↑|↓ - जरूरत हो, तो पहले (3) ONS भी दे सकते हैं।ये दोनों उपचार जोड़ों के दर्द के सभी रोगियों को अच्छे लगने लगे।

लेकिन पूरा लाभ नहीं होता था और पेशंटों को 'Gal' में दर्द हमेशा होता था। यह देखकर गुरुजी ने सोचा कि – अगर किसी पाइप में कोई ब्लौकेज (blockage) यानि रुकावट हो, तो अगर हम उसके अंदर से जोर से पानी छोडें तो पाइप खुल जायेगी। इसी प्रकार से उन्होंने सोचा कि बाइल की मात्रा और ज्यादा चाहिये जिससे bile duct में प्रवाह बढ़े ताकि ampoulla of vater में कोई ब्लौकेज हो तो वह खुल जाय।
इसलिये (3) Gal को बढ़ा कर (6) Gal बनाया गया।
(4) Ku को बदलकर (½) Ku – 40 secs बनाया गया जिससे पेशंटों को ज्यादा लाभ पाया गया

सो नया उपचार इस प्रकार बना – जिसे New Star treatment का नाम दिया गया।
New Star treatment formula - (6) Gal (6) WD (½) Ku – 40 secs (20) ↑|↓

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

New Star <u>Modified</u> formula

इसके बाद पेशंटों की संख्या और बढ़ती गयी। फिर भी कुछ ऐसे मिल ही जाते थे, जिनको ऊपर के उपचार से पूरा लाभ नहीं मिलता। सोच विचार करके गुरुजी को लगा कि यह इसलिये ही होगा क्योंकि उनका नाभी सैट (set) होता ही नहीं था। तब तक उन्हें नाभी को सैट (set) करने के और उपचार प्राप्त हो चुके थे –

TF यानि Toe fingers एवं NNS यानि New Nabhi Set. अतः फॉरमुला को इस प्रकार बदला गया
(3) ONS (20) TF (6) NNS (6) Gal (6) WD (½) Ku – 40 secs (20) ↑|↓
यह उन्हें देना जिनका पाचन ठीक नहीं है, या जिनकी नाभी upset है।

यह New Star treatment का ही बदला हुआ रूप है, सो उसे New Star <u>Modified</u> formula कहा गया। इसमें (6) Gal इसलिये दिया गया है कि Ampoulla of Vater में या common bile duct के रास्ते में अगर कोई ब्लौकेज (blockage) हो, उसे खोलने के लिये।

यह उपचार कई तरह के पेशंटों को लाभ पहुँचाया है। उनमें मुख्य हैं – RA यानि रुमैटौइड आरथ्राइटिस के पेशंट जिनके लिये यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

सब जोड़ों की घिसाई (All joints ghisai) – यह इस उपचार की खासियत है। यह उपचार गुरुजी के गहन अभ्यास एवं उस ज्ञानका एक नया दृष्टिकोण से अनुपम उपयोग का परिचायक है।

New Star Modified उपचार के बाद एक-एक मिनट के अंतर में उँगलियों से लेकर कंधे तक हर एक जोड पर अपने हथेलियों से <u>बहुत ही हल्की-हल्की घिसाई</u> करनी है। ऐसा करें तो देखा जायेगा कि एक-एक करके हर एक जोड़ से दर्द निकलता जाता है कि पेशंट कहते हैं कि जादू-जैसा लगता है।

ऐसा क्यों और कैसे हुआ, इसकी खोज भी गुरुजी ने कर ली है। वे हमें उसका राज बताते हैं –

मेटाबौलिज़म यानि चयापचय के दौरान सैल्स के अन्दर जो प्रक्रियायें चलती हैं, उनके कारण उनके अन्दर CO_2 (कारबन डाई ऑक्साइड) बनती है। ऑक्सीजन की कमी से, या अगर टिशूज़ में रक्त संचार कम हो, तो यह कारबन डाई ऑक्साइड H_2CO_3 यानि कारबोनिक एसिड (carbonic acid) के रूप में सैल्स और टिशूज़ के अन्दर जमता जायेगा जिससे टिशूज़ में ऐसिड की मात्रा बढ़ती जायेगी जिसे metabolic acidosis कहते हैं। इसका समर्थन physiology में पाया जाता है (Guyton 10th ed. p 347) [14] । और हमने LMNT में पाया है कि acidosis के कारण भी जोड़ों में दर्दें आ सकती हैं।

इसका मतलब है कि अगर किसी प्रकार से हम उस जोड़ में रक्त संचार बढ़ा दें, तो जोडों में जमा हुआ H_2CO_3 यानि कारबौनिक ऐसिड, कारबन डाई ऑक्साइड और पानी के रूप में बदलकर रक्त में घुल जायेगा और रक्त द्वारा लंग्ज़ के ऐल्वियोलि (alveoli) के अन्दर चला जायेगा। जब हम श्वास लेते हैं तो CO_2 ऐल्वियोलि द्वारा बाहर फेंका जायेगा, लेकिन करीब 90% से भी ज्यादा CO_2 बाहर निकलने के लिये सोलह श्वास की जरूरत है।[15]

इसलिये इस उपचार में (20) ↑|↓ देने के बाद हर जोड़ की घिसाई करते हैं। जोड़ों में रक्त संचार बढ़ाते हैं तो उसमें जमा हुआ कारबौनिक ऐसिड, कारबन डायौक्साइड (carbon dioxide) के रूप में बदल जायेगा। इसमें गुरुजी बार-बार याद कराते हैं कि हर एक जोड़ की घिसाई के बाद एक मिनट का अंतर देना जरूरी है। क्योंकि एक आम मनुष्य को 16 श्वास लेने के लिये एक मिनट लगता है। अगर हम यह अंतर न दें तो CO_2 पूरा नहीं निकल पायेगा और इस घिसाई का पूरा लाभ नहीं मिलेगा।

---

[14] सैल्स के मेटाबौलइज़म यानि चयापचय के दौरान ऐसिड मुख्यतः H_2CO_3 ज्यादा मात्रा में निकलती हैं। वैसे ही, हाइपोक्सिया यानि औक्सीजन की कमी तथा टिशूज़ में रक्त प्रवाह कम हो तो भी रक्त में ऐसिड की मात्रा बढ़ेगी।
[15] (Guyton 10th ed. p 454 – Fig. 39-2)

RA की बीमारी के प्रति नीचे लिखा गया है। उससे पहले विभिन्न प्रकार के नयी बीमारियों के डाइग्नोसिस और इलाज में गुरुजी LMNT द्वारा इतनी सफलता कैसे प्राप्त कर रहे हैं – इसका एक राज़ यहाँ बयान करना जरूरी है –

जब कोई नयी बीमारी के पेशंट गुरुजी के पास आते, तो उनका डाइग्नोसिस करने का तरीका यह था कि, वे पेशंट के शरीर के कई निर्धारित जगहों पर दर्द है या नहीं – यह चैक करते थे। अगर पेशंट के पास कोई रिपोर्ट हो तो उसमें क्या कमी है यह देखते थे। जब अगली बार उसी बीमारी या उसी प्रकार के रिपोर्ट लेकर अन्य पेशंट उनके पास आते थे तो उस पेशंट के शरीर के प्वाइंट में दर्द चैक करते। इनमें से कुछ प्वाइंट ऐसे होते थे जो उन्होंने पूर्व अनुभव से प्राप्त किया और कभी कुछ अन्य प्वाइंट में दर्द पाते थे जो पिछले पेशंट में भी था। और फिर वे मिलाते थे कि किस प्रकार के लक्षणों या बीमारियाँ के साथ शरीर के किन प्वाइंट के दर्दें जुड़ी हुयी हैं। ऐसे करते–करते पिछले चार दशकों के अनुभव से उनको निश्चित रूप से ज्ञान हुआ है कि बीमारी या लक्षण चाहे अनेक हों, लेकिन उनके असर से शरीर में कुछ आठ–दस (या उससे कम) खास प्वाइंट पर ही दर्दें आती हैं।

यहाँ तक तो सब कुछ ठीक है। इसमें कोई खास विशेषता तो नहीं लगती न ?
लेकिन असली एवं विशेष बात तो अब आती है –
" अगर शरीर के उन खास प्वाइंट के दर्दों को पहचानने और उन्हें निकालने में कोई निपुण हो जायें तो – <u>उस दर्द से सम्बन्धित कई बीमारियों एवं लक्षणों को आप उस एक ही उपचार से ठीक कर सकते हैं</u> !"

एक ही उपचार से कई सारे लक्षण ठीक कर सकते हैं ? क्या यह विश्वास करने वाली बात है ?

जी हाँ ! सच तो यही है। डाइग्नोसिस का यह तरीका एक लाजवाब औजार (unique diagnostic tool) सिद्ध हुआ है – जिसके कारण ही देश भर के कई **LMNT** केन्द्रों में जिन्होंने यह विद्या सीखी है – चाहे कम पढ़े–लिखे हैं – इस थेरेपी से कई प्रकार की बीमारियों के उपचार में सफलता प्राप्त कर रहे हैं। इसलिये गुरुजी बार–बार कहते हैं कि LMNT जैसी कोई अन्य थेरेपी नहीं है जो मानव जाति के लिये एक वरदान सिद्ध होने वाली है। उनकी इस कथन की सच्चाई साबित करने के लिये यह एक कारण ही पर्याप्त ह।

अब आइये RA के पेशंटों के प्रति कुछ जानकारी –

RA के पेशंट उन्हें कहते हैं, जिनके पास ब्लड टैस्ट के रिपोर्ट में ये शब्द लिखे होंगे – RA Antigen Positive या Rheumatoid Factor – Positive. RA factor निम्न बीमारियों में भी positive होता है – हेपाटाइटिस, सिफिलस, लिवर सिरोसिस, SLE, स्क्लेरोडर्मा, या तीव्र बैक्टीरिया या वाइरल इन्फेक्शन इत्यादि।

ऐसे पेशंट जब हमारे पास आते हैं, तो उनके रिपोर्ट देखने के बाद हम अपने कार्ड पर रिपोर्ट की तारीख लिख कर उसके आगे लिखेंगे – RA positive. कुछ लोगों में ANA positive होता है- तो वैसा लिखें।

वैसे तो इन पेशंटों को कई उँगलियों एवं जोड़ों में दर्द तो होता ही था – पर सब का दर्द एक–जैसा नहीं था। किसी को किसी उँगली में ज्यादा तो किसी में कम। लेकिन कई पेशंटों पर काफी जाँच करने के बाद एक समानता पाया गया और वह यह था कि –

<u>RA के सभी पेशंटों को दोनों हाथों की अनामिका यानि अंगूठी–वाली उँगली की बीचवाले जोड़ पर दर्द बहुत</u> था। इस जोड़ को proximal inter-phalangeal joint कहते हैं। (Taber's 18th edn.p 153) में चित्र देखें)

ऐसे लोगों को New Star Modified से बहुत लाभ हुआ। पहले यह उपचार एक दिन छोड़कर एक दिन ही देते थे। आजकल जरूरत हो तो रोज भी देते हैं। कुछ दिनों के उपचार के बाद, जैसे उँगलियों का दर्द पूरा ही निकल जाता है, वैसे सप्ताह में दो या एक बार देना भी काफी हो सकता है।

इस उपचार की सफलता के बाद से गुरुजी ने जोड़ों का दर्द या संधी वात के पेशंटों के लिये एक नया डाइग्नोसिस का तरीका शुरू किया है, जिसे हर थेरेपिस्ट ने अपनाना है।

पेशंट के दोनों हाथ की अनामिका यानि चौथी उंगली की बीच की जोड़ को अपने अंगूठा और पहली उँगली के बीच में पकड़कर उनउें एक ही समय में दबाना और पेशंट से पूछना कि दोनों हाथों में किस हाथ की अनामिका उँगली में ज्यादा दर्द है। और दर्द के अनुसार उसे कार्ड पर सूचित करना है।

बायीं हाथ के उँगली में अतीव दर्द हो तो उसके लिये Lt. 4th ++++ लिखना है। तथा दायीं हाथ के उँगली के अतीव दर्द के लिये Rt. 4th ++++ लिखना है। अगर दर्द कम हो तो उसके अनुसार +++ या ++ लिखना है।

फिर देखा गया कि जिनके जोड़ों का दर्द था मगर ब्लड रिपोर्ट में RA Negative पाया गया, उनके अनामिका उँगली में वैसे ही दर्दें होती थीं जैसे RA positive के पेशंटों को थी। तो ऊपर के अनुभव के अनुसार उन्हें भी New Star Modified Formula दिया गया तो सभी पेशंटों के दर्दें निकल गयीं। इसका मतलब अनामिका उँगली में दर्द एक सूचक है कि – उस व्यक्ति को शायद बाद में RA की बीमारी हो सकती है। तो इसके लिये गुरुजी ने एक अनोखी पद्धति / युक्ति निकाली। अगर किसी पेशंट के जोड़ों में दर्द है, मगर उनके पास या तो ब्लड टैस्ट का रिपोर्ट नहीं है, या रिपोर्ट में RA negative लिखा है – मगर हमने पाया कि दोनों अनामिका उँगलियों में दर्द है, तो उस पेशंट के कार्ड में लिखेंगे कि – " RA है " : याद रहे कि उस पेशंट के कार्ड में RA positive नहीं लिखना।

चाहे रिपोर्ट हो या न हो, <u>दोनों का उपचार एक ही है।</u> निम्न क्रम से बेहतरीन नतीजे मिले हैं –

I (4) Medulla Clockwise ♀ T1/T2 + अगर गर्दन में दर्द है तो 'Neck ghisai' भी करें।

II New Star modified formula यानि (3) ONS (20) TF (6) NNS (6) Gal (6) WD (½) Ku-40 seconds (20) ↑|↓

बाद में ऊपर लिखे अनुसार सभी जोड़ों की क्रम से घिसाई करनी है जिसे All joints ghisai कहते हैं।

यह उपचार संधी वात के पेशंटों को इतना सफल सिद्ध हुआ कि पूछिये मत। लोगों को दर्दों में इतनी राहत मिली कि जो रोते-लड़खड़ाते आये वे उपचार के बाद मानो उडते हुये घर गये।

यह नहीं कि सारे शरीर से दर्द एक ही साथ निकलेगा। दर्द निकलने का भी अपना अलग एवं original क्रम देखा गया है जो कि सभी रोगियों के लिये एक-जैसा है –

पहले दो तीन दिनों के अन्दर हाथों के उँगलियों और कलाई से दर्द पूरा निकल जायेगा। फिर कोहनी से, उसके बाद कंधों से। और कुछ दिन बाद कमर से, बाद में जांघों से, फिर एढ़ियों से, और सबसे आखिर में पैरों का दर्द निकलेगा। उसमें भी क्रम इस प्रकार है कि पहले उँगलियों के ऊपरी भाग से और सबसे अंत में उँगलियों के तलवों से दर्द निकलेगा। इस प्रकार से कई महीनों के उपचार के बाद के नतीजे यहाँ बताये गये हैं। इसमें सबसे मुख्य यह कि गुरुजी का अवलोकन (power of observation) कितना गहरा है देखिये।

मुख धौती द्वारा दर्दों में राहत

एक बार एक ऐसी औरत गुरुजी के पास लायी गयी जिन्हें RA के कारण उँगलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी हो चुकी थीं। (गुरुजी इसे RA की deformity कहते हैं।) और हाथों की उँगलियाँ इतनी छोटी हो चुकी थीं कि सिर्फ झुर्रियाँ ही दिखती थीं। दर्द के कारण वे ऐसी कराह रही थीं कि किसी थेरेपिस्ट को हाथ तक भी लगाने नहीं दिया। उनकी बायी अनामिका उँगली में इतना दर्द था कि उसे गुरुजी छू भी नहीं सकते थे।

गुरुजी के मन में हर रोगी के लिये अपार करुणा कूट-कूटकर भरी हुयी है। हर पेशंट को अपना बच्चा मानते हैं। तो वे हार माने नहीं। सोचने लगे " इन्हें अपना कोई भी ट्रीट्मेंट नहीं दिया जा सकता। तो दूसरा उपाय क्या किया जाय ? "

गुरुजी के ऊपर हरि की अपार कृपा है, इसके कई मिसाल पहले दिये गये हैं। तो क्या हरि उन्हें अब छोड़ देगा ? हरि की कृपा से उनके मन में यह विचार आया –

रक्त संचार की गड़बड़ी के कारण जो टिशूज़ में इतनी ऐसिड बढ़ी हुयी है उसे LMNT के Acid treatment formula नामक उपचार से तो कम कर सकते हैं। लेकिन इसे कम करने के लिये एक और भी तो तरीका है – और वह है श्वास प्रक्रिया को बढ़ाना ! यानि अगर कोई जोर से साँस बाहर छोडने लगे तो उससे कारबन डायऑक्साइड (CO_2) बाहर जाने लगेगा। फिर सोचने लगे कि इसके लिये क्या करना है ?

हम आश्रम में सुबह योगासन की क्लास में द्रुत गति के व्यायाम के बाद मुख धौती नामक एक खास क्रिया करवाते हैं – जिसमें सामने झुक कर साँस को जोर से बाहर छोड़ने के लिये कहा जाता है। तो गुरुजी को वह बात याद आयी। सोचे कि यह औरत तो बैठे-बैठे यह कर सकती है! तो क्यों न यह आजमाया जाय ?

तो पहले दो-तीन दिन उनसे मुख धौती करवाया गया और घर में भी करने के लिये सिखाया। धीरे-धीरे उनकी दर्दें कम होती गयीं। फिर कुछ दिन उन्हें Raman treatment दिया गया, तो और लाभ मिला। बाद में उसे New Star Modified उपचार दिया गया तो कुछ ही दिनों बाद देखा गया कि उँगलियाँ पहले से कुछ सीधी हो रही हैं।

ऐसी serious यानि गंभीर स्थिति की व्यक्तियों का उपचार कई महीनों तक चलेगा, लेकिन जिनकी उँगलियाँ नौरमल हैं उनको इस उपचार से काफी जल्दी ही दर्दों से राहत मिलती है।

अब मुख धौती किसे, कैसे और क्यों करना है यह समझें।
यह इसलिये करना है क्योंकि हमने पाया है कि RA के पेशंटों में कुछ लोगों को हमारे उपचार के बाद तुरन्त तो बहुत अच्छा लगता है, लेकिन कुछ घंटों में जोड़ों में दर्द वापस आ जाता है। फिर देखा गया है कि उनके बायें हाथ की अनामिका उँगली में दर्द वापस आ जाता है, जिससे हम समझते हैं कि हर कुछ घंटों में ऐसिड बढ़ जाती है। इसका एक कारण ऐसा हो सकता है कि RA के पेशंटों का हीमोग्लोबिन (hemoglobin) की मात्रा नौरमल से कम ही रहती है। जब हीमोग्लोबिन कम हो तो टिशूज़ में पर्याप्त ऑक्सीजन नहीं पहुँचेगा।

मुख धौती करने या सिखाने का तरीका –

a. पेशंट को कुर्सी पर बैठाकर कहें कि वे नाक से नौरमल साँस लें, और तुरन्त बाद मुँह के द्वारा जोर से बाहर फेंकें। ऐसा करने से जो carbonic acid जोडों के अंदर फँसा हुआ है, वह carbon dioxide के रूप में श्वास द्वारा शरीर से निकल जायेगा और दर्दों से राहत मिलेगी।

b. Mukha dhauti उन्हें करना है जिन्हें जोडों के दर्द के साथ Mu^0 में या बायीं हाथ के अनामिका उँगली यानि left ring finger के बीच के जोड में बहुत दर्द है, लेकिन दाहिनी हाथ के उसी उँगली में उतना दर्द नहीं है।

c. एक साथ दस बार करना है, फिर एक मिनट rest लेना है और फिर दस बार करना है – ऐसे 10 राउंड या अधिकतम 15 राउंड कर सकते हैं, यानि सौ या डेढ सौ बार तक कर सकते हैं।
{ अगर पेशंट के left ring finger में *बहुत ही ज्यादा* दर्द हो तो पहले एक या दो दिन के लिये 150 बार तक करवा सकते हैं। ऐसे सुबह शाम कर सकते हैं। लेकिन बार-बार उँगली का दर्द चैक करते हुये आगे बढना है। जैसे ही left ring finger का दर्द निकल जाये तो बन्द कर देना है। }

d. बीच में एक मिनट rest लेना बहुत जरूरी है। जैसे ही मुख धौती करेंगे तो तुरन्त ही ऐसिड कम होगी लेकिन अगर एक साथ ज्यादा ऐसिड निकल जाय तो कुछ समय के लिये ऐल्कली बढ़ेगी तो शरीर उसे शायद सह नहीं पाये। जब left ring finger का दर्द निकल जाये तो बन्द कर देना है – उसका भी यही कारण ह।

New star modified formula निम्न हालातों में देना है –
अगर जोडों में दर्द के साथ में Mu^{0+++} हो एवं निम्न में से कोई एक हो –

- ✓ अगर दोनों हाथों की अनामिका उँगलियों में समान दर्द हो, या
- ✓ अगर बायीं हाथ की अनामिका उँगली में ज्यादा दर्द हो, या
- ✓ अगर Liv^0-Mu^0 इन दोनों में समान रूप से दर्द हो, या
- ✓ अगर Mu^0 का दर्द Liv^0 के दर्द से ज्यादा हो तब देना है।

एक ट्रीट्मेंट के बाद से ही पेशंट को काफी आराम मिल जाता है।

New star modified formula के विभिन्न उपयोग –
जोडों के दर्द ठीक करने – जो अक्सर RA यानि रुमैटोइड आरथ्राइटिस के पेशंटों में पाया जाता है।
इसके अलावा निम्न बीमारियों में भी लाभदायक है –

- psoriasis सोरियासिस,
- cervical spondylitis सरवाइकल स्पौन्डीलाइटिस,
- low back pain कमर दर्द,
- knee pain घुटने का दर्द,
- osteo-arthritis ओस्टीयो आरथ्राइटिस
- कोरिया (Chorea बीमारी) में भी लाभ दिया है
- gout गाउट –जिसमें यूरिक ऐसिड (uric acid) बढ़ने के कारण उँगलियों के जोडों में सूजन और दर्द होता है

ध्यान रहे – जेनेटिक बीमारियाँ (genetic disorders) यानि जीन्स के बिगडने से आयी बीमारियों को ठीक करने के लिये हम Vitamin B_{12} & folic acid के points को उकसाते हैं। कई पेशंटों में देखा गया है कि New star modified formula देने के बाद उनके Vitamin B_{12} & folic acid – दोनों प्वाइंट का दर्द निकल जाता है। अतः जीन्स के बिगडने से आयी बीमारियों के लिये भी इस फॉरमुला का उपयोग किया जा सकता है। इस पर गुरुजी की खोज जारी है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Alkaline Star Formula

गुरुजी के क्लिनिक में LMNT में रोज कुछ न कुछ नयी खोज चलती रहती है। तो पेशंटों का दर्द देखते हुये पाया गया कि कुछ लोगों 'Gal' के बाद 'WD' देने से उन्हें अच्छा लगता है, जब कि कुछ और लोगों को 'WD' के बाद 'Gal' देने से आराम मिलता है। ऐसा भी पाया गया कि 'Gal' से ऐल्कली कम होती है जब कि 'WD' से ऐसिड कम होती है। इसका मतलब कुछ लोगों में ऐसिड बढ़ने के कारण दर्द हुआ, जब कि दूसरों में ऐल्कली बढ़ने से दर्दें आयीं।

New Star Modified formula उनको नहीं देना जिन्हें जोडों में दर्द के साथ केवल दाहिनी उँगली में दर्द है। एवं उनको भी नहीं देना जिन्हें केवल Liv^0 में दर्द है लेकिन Mu^0 में दर्द नहीं। अगर दोनों अनामिका उँगलियों में दर्द है और $Liv^{0\ +++}$ हो या दाहिनी हाथ के उँगली में ज्यादा दर्द हो तो उनके लिये एक नया फॉरमुला बनाया गया जिसमें 'Gal' और 'WD' का क्रम बदला गया। और इस उपचार में पुराना 'Ku' देना है
उसे *Alkaline Star Formula* का नाम दिया गया –
(3) ONS (6) TF (3) NNS <u>(6) WD (6) Gal</u> <u>(4) Ku-Old</u> (20) ↑|↓
पुरानी 'Ku' से Mu^0 में दर्द आता है – जिसका मतलब उससे ऐसिड बढ़ती है यानि ऐल्कली कम होगी।

उपचार चाहे कितना भी अच्छा हो, हर एक को एक जैसा लाभ होगा – ऐसा नहीं है न ? तो इसके बाद भी कोई नया उपचार बनना ही था। यही तो है LMNT की खासियत – कि गुरुजी हमेशा नयी खोज करते रहते हैं !

July 2006 से ऊपर के New Star और Alkaline Star formula को तोड़कर एक नया क्रम बनाया गया जो सभी प्रकार के जोड़ों के दर्दों में बहुत ही प्रभावशाली है –

I ***New Star Acid treatment*** → (6) WD (8) Left Chest (20) ↑|↓

II इसके बाद मुख धौती कराना है – दस बार कराना, फिर एक मिनट आराम कराना, फिर दस बार कराना – बायीं हाथ के अनामिका उँगली का दर्द निकलने तक ऐसा करते जाना है। इससे ऐसिड कम होगी यानि ऐल्कली बढ़ेगी। इसके बाद दो मिनट rest यानि आराम कराना और दुबारा चैक करना कि बायीं उँगली से दर्द पूरा निकल गया कि नहीं। अगर अब भी दर्द न हो तो उसके बाद ऐल्कली को कम करने के लिये नीचे का उपचार देना है।

III ***New Star alkali treatment*** → (6) Gal (½) Ku-40 seconds (8) Ch. Only (20) ↑|↓

इन दोनों के बाद शरीर के ऐसिड-ऐल्कली बैलेंस को वापस ठीक करने के लिये निम्न उपचार देना जरूरी है–

IV (10) Medulla + Fast treatment Gas : Gas 'I': Gal: Spl: Liv: Mu: WD: (2) S4-5

V Ajay Normal Formula mild – (8) Pan (1) Gal (2) Liv – 3 points (1) Gas ' I ' – 6 points

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Left side treatment formula (LSTF)

LMNT में गुरुजी की सफलता के कई कारण जगह–जगह पर बताये गये हैं। उनमें एक मुख्य कारण ऐसा है कि वे शरीर में हर कार्य किस प्रकार से होता है – उस की गहराई तक जाते हैं। अगर शरीर के कुछ अंग ठीक से काम न कर रहे हों तो उसकी हर पहलू के बारे में गहन रूप से अभ्यास करते हैं। और फिर उनको उसी क्रम से उकसाते हैं जो कि शरीर की कार्य–शैली को सँवारता हो। ऐसे करने के कारण ही उनके उपचारों से पेशंट को तुरन्त ही लाभ मिलता है।

इसी श्रृंखला में आता है सख्त कब्जी के लिये यह उपचार, जो उस समस्या के हर पहलू को ध्यान में रखकर बनाया गया है। यह फॉरमुला सभी के लिये उपयुक्त है। इसमें गुरुजी की विचार–धारा को समझें –

- कब्जी इसलिये आयी, क्योंकि उनका डिसेंसिंग कोलन (descending colon) ठीक प्रकार से काम नहीं कर रहा है। और इस का एक मुख्य कारण है रक्त संचार। सो हमें डिसेंडिंग कोलन के हर भाग में रक्त प्रवाह को बढ़ाने के लिये उचित जगहों को उकसाना है। और उन्हें उसी क्रम में उकसाना है जैसे आंतड़ी में पैरीस्टैल्सिस (peristalsisis) की लहर चलती है। यानि पहले हमें transverse colon के ऊपरी भाग को, फिर बीच के भाग को, फिर नीचे के भाग यानि sigmoid colon को – इस क्रम में उकसाना है।
- फिर कब्जी के अन्य कारणों को भी ठीक करना है। कब्जी का एक मुख्य कारण है पानी कम पीना। अगर व्यक्ति पानी कम पिये, उसके कारण ऐसिड़ोसिस की लक्षण दिखेंगी, जिसमें मुख्य है Mu^0 में दर्द – जो अधिकांश व्यक्तियों में पाया जाता है। तो हमें Mu^0 के दर्द को निकालना है।
- कब्जी का एक और मुख्य कारण है हायपो थाइरौइड्–इज़्म। जब थायराइड ग्लैंड कम काम कर रहा हो – उसे हायपो थाइरौइडिज़्म कहते हैं। थायरौइड ग्लैंड की मुख्य जिम्मेदारी है मेटाबौलिज़्म या चयापचय – जिसके लिये वह पाचक स्त्रावों के निकास तथा GIT यानि पाचन नलिका की motility यानि गति दोनों को बढ़ाता है।

अगर थायरौइड ग्लैंड कम काम करे तो पाचक स्त्राव कम मात्रा में निकलेगा; आंतड़ियों में खाना पचेगा नहीं, जिसके कारण इन्टेस्टाइन में खाना बहुत ही धीरे आगे बढ़ेगा। ऐसी अवस्था में मल एवं अन्य अवशिष्ट पदार्थ यानि अनावश्यक चीजें ज्यादा समय तक बडी आंत में रहेंगी, जिस के कारण बडी आंत से ज्यादा मात्रा में फ्लूइड्स (fluids) सोखी जायेंगी। इसके परिणाम–स्वरूप टट्टी सूखी और सख्त बन जायेंगी, जिससे कब्जी हो जाता है। यह ध्यान देने वाली बात है कि बडी आंत की motility यानि गति काफी कम ही होती है। सो motility में जरा–सा बदलाव भी कब्जी होने के लिये पर्याप्त है। तो कब्जी के उपचार में हमें थायरौइड ग्लैंड को उकसाना ही है।

वैसे देखा जाय तो कब्जी को ठीक करने के लिये ऊपर के सारे चीजों को ठीक करना ही पर्याप्त है। लेकिन गुरुजी की दृष्टि हमेशा ही गहन और दूरदर्शी रही है। तो सिर्फ कब्जी को ठीक करना ही उनके लिये पर्याप्त नहीं, बल्कि कब्जी के कारण अगर कोई अन्य दुष्परिणाम हो, तो उन्हें भी ठीक करना जरूरी है। तो उनकी विचार धारा ने क्या मोड़ लिया वह नीचे देखें –

- यह सामान्य ज्ञान है कि हमारे आसपास जहाँ भी कचरा या अनचाहे वस्तुओं की जमावट हो, उसमें कीटाणु या बैक्टीरिया इत्यादि के पनपने के लिये सहयोगी वातावरण निर्माण होता है जो कि इन्फेक्शन का रूप धारण करता है। इसी पर आधारित गुरुजी का नूतन विचार इस प्रकार था – अगर किसी को बहुत दिनों से कब्जी है तो उससे आंतडियों में कुछ न कुछ इन्फेक्शन होगा ही। *Chronic infection यानि जो इन्फेक्शन लम्बे समय तक रहे – वह इन्फ्लमेशन में बदल जाता है।* तो हमें कब्जी को ठीक करने के साथ–साथ इन्फ्लमेशन को भी खत्म करना है, नहीं तो पेशंट को पूर्ण रूप से आराम मिलेगा नहीं।

  है न यह एक अनोखी और दूरदर्शी सोच ?

  इन सब से एक बहुत ही प्रभावशाली फॉरमुला बनाया गया जिसे **Left side treatment formula (LSTF)** का नाम दिया गया क्योंकि यह left यानि बायीं side के अंगों के कार्य को सुधारता है। यह फॉरमुला उन्हें देते हैं जिन्हें क्रौनिक कोन्स्टिपेशन (chronic constipation) यानि बहुत दिनों से कब्जी है। इस फॉरमुला में गुरुजी

ने *हर एक point* को बहुत ही सोच-समझकर शरीर के बायीं side के हर एक भाग को - बड़ी आंत के peristalsis यानि गति के अनुकूल - एक विशिष्ट क्रमबद्ध तरीके से उकसाया है।

LSTF - (4) Spl (4) Const (4) Mu (4) Lt.Ov. (4) Mu^0 (4) Thrd (4) Adr

कुछ विद्यार्थियों के मन में प्रश्न उठ सकता है कि constipation यानि कब्जी को ठीक करने के लिये 'Spl' यानि स्प्लीन तथा 'Lt.Ov' यानि लेफ्ट ओवरी को क्यों उकसाया जा रहा है ? कब्जी तो अन्न नलिका में भोजन की गति बहुत धीमे होने के कारण आयी है। 'Lt.Ov' तथा 'Spl' तो अन्न नलिका के बाहर हैं ! तो उन्हें उकसाने की जरूरत ही क्या है ?

बहुत ही स्वाभाविक प्रश्न है।

यहाँ एक मुख्य चीज ध्यान देने योग्य है। हम अपने प्वाइंट द्वारा नाभी के चारों ओर पेट के विभिन्न भागों में रक्त संचार को बढ़ाते हैं। हर एक प्वाइंट का नाम उस भाग में जो मुख्य अंग है उसे ध्यान में रखकर दिया गया है। लेकिन जब हम वह प्वाइंट देते हैं - वह सिर्फ उस अंग को ही नहीं, बल्कि उस भाग में जो-जो अंग हैं - उन सभी में रक्त का बहाव बढ़ायेगा। इसके उदाहरण ही ऊपर के फॉरमुला में हम देखते हैं।

उदाहरण के लिये नाभी के ऊपर के बायीं भाग में मुख्य अंग है 'स्प्लीन'। लेकिन उस के आसपास अन्य अंग भी तो हैं ! यानि बड़ी आंत के transverse colon की बायीं अंतिम भाग एवं descending colon के ऊपरी भाग ! जब हम 'Spl' नामक प्वाइंट देते हैं, उस समय इन तीनों अंगों में ही रक्त का प्रवाह बढ़ेगा, न कि सिर्फ स्प्लीन में। वैसे ही, जब हम 'Mu' नामक प्वाइंट देते हैं तो देखा गया कि वह नाभी के बायीं बाजू के दर्दों को खत्म करता है यानि उस भाग में रक्त बढ़ाता है। वहाँ छोटी आंत के अलावा descending colon का मध्य भाग भी तो है ! तो उसे भी उकसायेगा।

जब हम 'Lt.Ov' प्वाइंट देते हैं तो वह नाभी के नीचे के बायीं भाग के दर्द को निकालता है। वहाँ ओवरीज़ या टैस्टीस के अलावा descending colon के अंतिम भाग एवं sigmoid colon में भी रक्त संचार बढ़ेगा।

ऊपर लिखे हुये तथ्यों के अनुसार अब हम दोहरायें कि LSTF का हर प्वाइंट किसलिये दिया गया है -

- *Spl* – इधर transverse colon के अंतिम भाग एवं descending colon के ऊपरी भाग को उकसाने।
- *Const* – जब भी कब्जी होती है - इस प्वाइंट में दर्द होता है। सो उस दर्द को निकालने
- *Mu* – descending colon के मध्य भाग को उकसाने के लिये एवं आंतडियों में चिकनाहट बढ़ाने जिससे बड़ी आंत में मल का कचड़ा आसानी से आगे बढ़े
- *Lt.Ov.* – descending colon के अंतिम भाग एवं sigmoid colon को उकसाने के लिये
- *Mu^0* – acidosis कम करने के लिये - क्योंकि ऐसिड ज्यादा होने से constipation होगा ही
- *Adr* – आंतड़ियों में इन्फ्लमेशन कम करने के लिये। इससे ऐसिड भी कम होगा।
- *Thrd* – क्योंकि कब्जी का एक मुख्य कारण है - थायरौइड ग्लैंड का कम काम करना।

- जैसे ऊपर कहा गया है, इस फॉरमुला में 'Spl' का प्वाइंट *इधर* स्प्लीन को उकसाने के लिये नहीं दिया गया, बल्कि बड़ी आंत के उस भाग के लिये।
- साधारणतः जब भी हम 'Adr' देंगे तब वह थायमस ग्लैंड को हायपो करेगा, साथ में थायरौइड भी थोडा हाइपो हो जायेगा। अगर दोनों (यानि Adr और Thrd) एक के बाद एक देना हो, तो पहले थाइरौइड देकर बाद में Adr देने से नतीजा पूरा 100% नहीं आयेगा, थोडा कम आयेगा। इसलिये पूरे यानि बहुत अच्छे results पाने के लिये पहले Adr देकर बाद में Thyroid देना - यानि (4) Spl (4) Const (4) Mu (4) Lt.Ov. (4) Mu^0 (4) Adr (4) Thrd - देना ही बेहतर है।

लेकिन ऐसा करते समय एक प्रोब्लेम है। ऊपर के उपचार में Mu^0 तक के सारे प्वाइंट पेशंट को सीधा लिटाकर देते हैं। उसके बाद Adr देने के लिये पेशंट को उल्टा यानि पेट पर लेटने के लिये कहना है एवं Thrd देने के लिये फिर से उसे सीधा लिटाना होगा। यानि इस क्रम में पेशंट को बारी-बारी से सीधा-उल्टा-सीधा सुलाना पडता है, जिससे बुजुर्गों, एवं कमर दर्द या हार्ट प्रोब्लेम इत्यादि के पेशंटों के लिये परेशानी हो सकती है। तो

पेशंट को ज्यादा तकलीफ न हो, इसलिये Mu^0 देने के बाद पहले Thrd देकर बाद में Adr देते हैं यानि –
(4) Spl (4) Const (4) Mu (4) Lt.Ov. (4) Mu^0 <u>(4) Thrd (4) Adr</u> – ऐसे देते हैं।

लेकिन हमेशा याद रखना कि हमने पेशंट के सुविधा के लिये ही ऐसा कॉम्प्रोमाइस (compromise) यानि समझौता किया है। इससे नुकसान तो नहीं है, लेकिन उसे ट्रीट्मेंट एक या दो दिन ज्यादा देने की ज़रूरत हो सकती है।

गुरुजी की सोच कितनी निराली है, यह दिखाने के लिये यह फॉरमुला एक बहुत ही अच्छी मिसाल है। शरीर की कार्य-शैली की गहराई में जाकर उस जानकारी को किस खूबी से उन्होंने प्रयोग करके इस त्रासदायक प्रोब्लेम के हर पहलू के लिये एक अत्यन्त प्रभावशाली और औषध-रहित उपचार की खोज की है, देखा ?

LSTF फॉरमुला के उपयोग –

Severe constipation — सख्त कब्जी
Bamboo spine — बैम्बू स्पाइन
Pains in the left side of the body — शरीर की बायीं तरफ की दर्दों के लिये

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Round normal formula

यह भी मामूली कब्जी के लिये एक बहुत अच्छा फॉरमुला है। इसमें फर्क यह है कि डिसेंडिंग कोलन को ही नहीं, बल्कि ऐसेंडिंग कोलन से लेकर sigmoid colon तक बड़ी आंत के सभी भागों को क्रम पूर्वक उकसाया गया है।

(1) Rt.Ov. (1) Liv (1) Gal (1) Spl (1) Mu (1) Lt.Ov. x 3 treatments.

इसमें हर प्वाइंट का उपयोग समझें –

Rt.Ov. – ileum के अंतिम भाग एवं ascending colon के शुरू के भाग को उकसाने
Liv – ascending colon के मध्य भाग को उकसाने के लिये
Gal – ऐसेंडिंग कोलन के ऊपरी भाग एवं ट्रान्स्वर्स कोलन के शुरू के भाग को उकसाने
Spl – ट्रान्स्वर्स कोलन के अंतिम भाग एवं डिसेंडिंग कोलन के ऊपरी भाग को उकसाने
Mu – डिसेंडिंग कोलन के मध्य भाग को उकसाने के लिये
Lt.Ov. – डिसेंडिंग कोलन के अंतिम भाग एवं sigmoid colon को उकसाने के लिये

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Lactic acid conversion formula

एक बार किसी पेशंट ने गुरुजी से आकर कहा कि उन्हें काफी सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद या कुछ भारी व्यायाम करने के बाद थोड़ी थकान-सी हो जाती है, घुटने उठा नहीं जाता, मगर कुछ ही देर के अन्दर अपने आप ठीक हो जाती है। अगर यह हृदय की कमजोरी से होता तो पेशंट को काफी साँस फूलता और उसमें इतनी जल्दी अपने आप ठीक नहीं होता। लेकिन इस पेशंट को सीढ़ियाँ चढ़ने पर साँस फूलने की शिकायत तो थी नहीं। फिर गुरुजी ने उस पेशंट को चैक किया तो 'Liv' और 'Pan' में बहुत ज्यादा दर्द था। उनके अलावा 'Rt. Ov.' तथा 'Lt. Ov.' इन प्वाइंटों में भी दर्दें थीं। सोचा कि शायद इन्फ्लमेशन भी हो सकता है। सो उन सभी प्वाइंट के दर्दों को निकालने के लिये निम्न उपचार बनाया गया – **(6) Rt.Ov. (6) Lt.Ov. (8) Pan (12) Liv (6) Adr**

जैसे ही उपचार दिया गया तो पेशंट को बहुत ही आराम मिला। दूसरे दिन उन्होंने आकर कहा कि सारा दिन अच्छा गया, उन्हें कोई तकलीफ नहीं हुयी। तो गुरुजी सोचने लगे कि इसमें कौन-सी कैमीकल बनती होगी जो ऐसी काम करती है। काफी अभ्यास और किताबों में खोजने के बाद उन्होंने अनुमान लगाया कि यह उपचार Lactic acid के conversion यानि अदल-बदल में किसी तरफ मदद कर रहा है।

पहले शरीर में लैक्टिक ऐसिड़ (lactic acid) का काम क्या है जरा समझें – अगर हम दंड-बैठक या भारी व्यायाम कर रहे हों तो 25-30 दंड-बैठक लेने के बाद उठा नहीं जाता – फिर थोडी देर आराम करने से फिर कर सकते हैं। वैसे ही, अगर हम सीढियाँ चढ रहे हों तो 75 या 80 सीढियाँ चढने के बाद एकदम कदम उठा नहीं पाते, लेकिन कुछ क्षणों के लिये जरा रुक कर जोर से साँस लेने के बाद चढ पाते हैं। ऐसा क्यों ?

खाने में जो चावल-चपाती इत्यादि कारबोहाइड्रेट्स हैं, वे सब पचने के बाद ग्लूकोज़ (glucose) बनकर रक्त में पहुँचते हैं। वहाँ ग्लूकोज़ muscles में ग्लाइकोजेन (glycogen) के रूप में store यानि जमा रहता है। कोई भी कार्य करने के लिये हाथ-पैर इत्यादि के muscles को जो ऊर्जा यानि शक्ति चाहिये, वह इस जमा हुआ ग्लाइकोजेन (glycogen) को जलाकर ही muscles को प्राप्त होता है। इस प्रक्रिया के दौरान muscles से लैक्टिक ऐसिड़ (lactic acid) नामक कैमीकल निकलता है।

जब भारी व्यायाम हो तो रक्त में इस लैक्टिक ऐसिड़ की जमावट बढ़ जाती है। वैसे तो हार्ट के muscles के लिये भी काम करने के लिये ग्लूकोज़की ही आवश्यकता है। लेकिन जब रक्त में लैक्टिक ऐसिड़ की मात्रा बढ़ जाये तो उस से ऐसिडोसिस हो सकती है जिस के कारण माँस-पेशियाँ ढ़ीली पडेंगी, और इससे शरीर को नुकसान हो सकता है। ऐसा न हो, इसलिये ह्रदय की माँस-पेशियों में ऐसी क्षमता है कि वे रक्त में बढ़ी हुयी लैक्टिक ऐसिड को पाइरूविक ऐसिड (pyruvic acid) में बदलकर उससे ऊर्जा प्राप्त कर सकती हैं। यह शरीर को बचाने के लिये एक आत्म रक्षण प्रक्रिया है जो कि लैक्टिक ऐसिड़ की मात्रा बढ़ने पर भी रक्त में ऐसिडोसिस न होने से बचाती है।

जैसे ही शरीर में oxygen की मात्रा बढ जायेगी, लैक्टिक ऐसिड का गुण है कि वह वापस ग्लाइकोजैन में convert हो जायेगा यानि बदल जायेगा, जिससे muscles के लिये वापस शक्ति मिल जायेगी। इस प्रकार से यह क्रम चलता रहता है। पहले 40-50 सीढी चढने के अन्दर मस्सल्ज़ तथा शरीर में oxygen की मात्रा कम होती जाती है। उसके बाद और 25-30 सीढियाँ चढने के लिये ह्रदय लैक्टिक ऐसिड़ से अपनी ऊर्जा ले लेता है। यानि उस समय लैक्टिक ऐसिड ही हमारी मदद करती है। लेकिन शरीर की अन्य muscles में यह क्षमता नहीं है कि वे लैक्टिक ऐसिड़ से ऊर्जा प्राप्त करें। उसके बाद हम एक कदम भी उठा नहीं पायेंगे क्योंकि घुटनों को ब्लड द्वारा पर्याप्त oxygen नहीं मिलता सो घुटने की माँस-पेशियाँ oxygen की अभाव में थक जायेंगी। उसके बाद कुछ श्वास लेने से ऑक्सीजन मिलने पर ब्लड में जो लैक्टिक ऐसिड़ है, वह glucose में बदल जायेगा और घुटनों को energy प्राप्त होगी, जिससे हम बाकी की सीढियाँ चढ पाते हैं।

जब कोई कहते हैं कि हम कुछ दिन पहले चढ़ाई पर गये थे, या बहुत दूर चलकर आये, या बहुत दिनों के बाद gym यानि व्यायाम करने गये थे, और वहाँ से लौटने के बाद से हमारे घुटनों में या पिंडलियों में दर्द है, तब अगर ऊपर का उपचार उन्हें दिया जाता है तो <u>उपचार के तुरन्त बाद ही</u> उनके घुटनों के या पिंडलियों का दर्द निकल जाता है। और वे कहते हैं कि उनकी घुटनों में जान आ गयी।

अब आप ही बताइये कि अगर इस उपचार देने से ऐसे <u>कई सारे पेशंटों को</u> अच्छा लगने लगे, तो क्या आप गुरुजी की बात पर सहमत नहीं होंगे कि यह उपचार शरीर में लैक्टिक ऐसिड़ को वापस ग्लाइकोजैन में बदलने में सहायक है ?

Lactic Acid formula के मुख्य उपयोग -

- घुटने का दर्द - खास कर जब Liv^0 एवं Mu^0 दोनों में दर्द है। यह तजुर्बा है।
  उदा- डायाबीटीस ऐसिड की बीमारी है - उसमें अक्सर पेशंट को Mu^0 में दर्द होता है।
  हाई बीपी ऐल्कली की बीमारी है। उसमें Liv^0 में अक्सर दर्द होता है।
  यानि अगर किसी को डायाबीटीस तथा हाई बी पी हो और उनके घुटने में दर्द हो तो यह उपचार घुटने के दर्द में लाभ देता है। एस्ट्रोजैन तथा प्रोजेस्टेरोन - ये दोनों ही vasodilators हैं यानि वे रक्त नलिकाओं को फैलाते हैं। (Sembulingam 2^{nd} ed. P. 368) शायद यह भी एक कारण है कि क्यों 'Rt.Ov.' तथा 'Lt. Ov' हाई बी पी में लाभ देते होंगे।इसके अलावा निम्न परिस्थितियों में भी यह उपचार लाभ दता है -
- कोई भारी व्यायाम के बाद, या पहाड चढने के बाद या दूर सफर पर जाकर आये या बहुत दिनों बाद व्यायाम करने जिम (gym) में गये और कहे कि दूसरे दिन उनकी पिंडलियों में दर्द है, तो समझना कि माँस-पेशियों में oxygen की कमी से वे दर्दें आयी, जिसके लिये यह उपचार रामबाण है।
- RA यानि रयूमैटोइड आरथ्राइटिस जिसका मुख्य लक्षण है दोनों अनामिका उँगली में दर्द का होना
- ओस्टीयो आरथ्राइटिस (osteo arthritis) यानि प्रौढों में पीठ, घुटने तथा अन्य जोड़ों में दर्द हो - खास कर जिन जोड़ों पर शरीर का वजन पड़ता हो, उनको इस उपचार से लाभ मिला है।

Angiotensin No.2 formula

यह लो बी पी बढ़ाकर तुरंत नौरमल करने का ऐसा कमाल का उपचार है जो गुरुजी ने हूबहू फिजियोलोजी (physiology) के तथ्यों के आधार पर बनाया है। यह उपचार उन रोगीयों के लिये बहुत अच्छा है जिन की रक्त चाप उन का मासिक धर्म या किसी मार या किसी अंग के काटे जाने से 500ml या अधिक रक्त बह जाने से, कम हो गया हो। इस उपचार से रक्त चाप तुरन्त बढ़ जायेगा। इस उपचार में एक और गुण है कि जैसे-जैसे कुछ दिनों में रक्त का उत्पादन बढ़ता जायेगा शरीर में, वैसे-वैसे यह उपचार वापस होता जायेगा। यानि रक्त चाप जरूरत से अधिक नहीं बढ़ेगा। यह कैसे होता है - यह समझें।

Renin Angiotensin System

रक्त में ऐंजियोटैन्सीनोजैन (angiotensinogen) नामक एक प्लास्मा प्रोटीन (plasma protein) होता है। जब शरीर में किसी कारण से बी पी कम होता है, तो किडनीज़ रक्त को ठीक से फिल्टर नहीं कर पायेंगी। इससे रक्त में urea, creatinine जैसे अनचाहे वस्तुओं की जमावट होगी जिससे शरीर को नुकसान होगा। ऐसा न हो, उसके लिये किडनीज़ के ग्लोमेरूलस (glomerulus) के पास के JG सैल्स नामक सैल्स हैं जिनसे रेनिन (Renin) नामक एनज़ाइम निकलता है। यह एन्ज़ाइम तब निकलेगा जब किडनीज़ के अंदर रक्त का प्रवाह जरूरत से कम होगा। रक्त में angiotensinogen हो तो रेनिन उसे ऐंजियोटैन्सीन 1 (AT1) में convert कर देगा यानि बदल देगा (ग्लोमेरूलस यानि किडनीज़ की मुख्य छलनी)
(JG cells = juxta-glomerular cells)

ऐंजियोटैन्सीन #1 (AT1) जब ब्लड में गुजरता हुआ लंग्ज़ तक पहुँचेगा तब लंग्ज़ से ACE नामक एन्ज़ाइम निकलेगा जो उस ऐंजियोटैन्सीन #1 को ऐंजियोटैन्सीन #2 यानि ऐंजियोटैन्सीन नंबर दो में बदल देगा (ACE = Angiotensin Converting enzyme)

Angiotensin #2 - जिसे संक्षेप में AT2 लिखते हैं, यह बी पी को तुरन्त बढ़ाने वाला एक अत्यन्त प्रभावशाली कैमीकल है। AT2 निम्न तरीकों से कार्य करता है -

पहला - वह एक बहुत ही शक्तिशाली vaso-constrictor है { यानि उसके प्रभाव से सारी रक्त नलिकायें तुरन्त constrict यानि संकुचित हो जाती हैं } । लेकिन कमाल की बात है कि वह धमनियों और शिराओं पर एक-जैसा प्रभाव नहीं डालता। इसका असर आरटरीज़ यानि धमनियों पर ज्यादा है, जिससे उनके अन्दर का प्रेशर (arterial pressure) बढ़ जाता है । आरटरीज़ के इस बढ़े हुये प्रेशर के विरुद्ध हृदय को रक्त को पम्प करना है। उसी समय अगर शिरायें की नलिकायें भी संकीर्ण हों तो उससे हृदय पर ज्यादा बोझ पड़ेगा - तो ऐसा न हो, इसलिये veins यानि शिराओं की नलिकायें पर AT2 का असर कम है।

दूसरा - AT2 किडनीज़ के tubules पर प्रभाव डालता है कि वे नमक और पानी को पेशाब द्वारा बाहर जाने से रोक लें - जिससे पेशाब कम बनेगा। पेशाब ज्यादा बने तो रक्त का वौल्यूम और घटेगा न ?

तीसरा - वह ऐड्रीनल कौरटेक्स को उकसाता है ताकि उससे aldosterone निकलेगा - जिसके प्रभाव से भी किडनी के tubules नमक को बाहर जाने से रोकेंगे। लेकिन नमक रुकेगा तो पानी भी साथ में रुकेगा। सो नमक और पानी शरीर में ही रह जायेगा।

यानि ऐसे तीन विभिन्न प्रभाव होते हैं जिनके कारण ब्लड वौल्यूम बहुत जल्दी बढने लगता है, जिससे बी पी भी अपने आप बढ़ेगी । इस कार्य को पूरी तरह से होने के लिये करीब 20 मिनट ही लगते हैं। इसे रेनिन ऐंजियोटैन्सीन सिस्टम (Renin Angiotensin System) कहते हैं।

रेनिन रक्त में आधे घंटे से एक घंटे तक रहता है और धीरे-धीरे काम करते रहता है । जब कि angiotensin #2 (AT2) अपने कार्य को एक दो मिनट के अंदर ही कर लेता है। ब्लड और टिशूज़ से कई केमीकल्स निकलती हैं जिन्हें angiotensin-ase कहा जाता है, जो उचित समय के बाद angiotensin को खत्म कर देते हैं ताकि बी पी बहुत अधिक न बढ़े। (आपको याद होगा कि जिस कैमीकल के नामके अंत में 'ase' प्रत्यय होता है, वह एक एन्ज़ाइम है जो किसी भी वस्तु को तोड़ेगा यानि पचायेगा। angiotensin-ase यानि angiotensin को पचानेवाला एन्ज़ाइम)

अब हम देखें कि किन कारणों से बी पी कम हो सकती है –

अगर अचानक ही लो बी पी हुआ हो उसका एक मुख्य कारण है – शरीर से अचानक ही रक्त बाहर बह जाना। इसे हेमोरेज (hemorrhage) कहते हैं। जिसके कारण उनका ब्लड वौल्यूम (blood volume) यानि आयतन एकाएक कम हो जायेगा।

साधारणतः यह निम्न कारणों से हो सकता है –

जब कोई गहरी चोट लगी हो, *या accident यानि* अपघात *हुआ हो*
या औरतों को abortion यानि गर्भपात के दौरान या menses में बहुत ही ज्यादा ब्लीडिंग हुयी हो
कुछ लोगों को रक्त दान करने के बाद भी चक्कर आ सकता है। वह भी इसी कारण से है।

(अगर accident यानि अपघात के कारण ब्लीडिंग हुयी हो तो उसे अस्पताल के रिपोर्ट में hemorrhage due to RTA – ऐसे लिखते हैं – RTA यानि Road Traffic Accident)

बी पी कम होने से क्या तकलीफ होती है ?

अगर ब्लीडिंग अचानक इतना ज्यादा हो – जिसमें शरीर का 35% यानि पौने दो लिटर के आसपास ब्लड निकल जाय – तो उस के कारण पहले हृदय से रक्त निकलना बहुत ही कम होगा और बाद में बी पी कम होती जायेगी। तो हार्ट फेल्यूर (heart failure) भी हो सकता है, यानि हृदय एक दम बन्द भी हो सकता है, जिसे hypo-volemic shock कहा जाता है। तो ऐसा न हो, इसलिये angiotensin #2 peripheral arteries को ज्यादा संकुचित करता है ताकि हार्ट फेल्यूर की नौबत न आये। [hypo=कम ; vol = volume (आयतन); mia = रक्त में ; hypovolemia यानि रक्त का वौल्यूम कम होना]

अगर शरीर से ½ लिटर के आसपास रक्त निकल जाय तो उतना खतरा नहीं है। कुछ औरतों में मैन्सस के बाद ऐसा हो सकता है। जिसके कारण उन्हें मासिक धर्म के बाद 2-3 दिन तक – या उससे कुछ ज्यादा दिनों के लिये – कुछ भी काम करने पर चक्कर आते हैं। पूछने पर वे बतायेंगी कि उन्हें मासिक चक्र में ब्लीडिंग बहुत ज्यादा है। इसके कारण उनका ब्लड वौल्यूम (blood volume) तथा ब्लड प्रेशर कुछ दिनों के लिये अचानक कम हो गया। रक्त की कमी का मतलब शरीर में हीमोग्लोबिन यानि ऑक्सीजन–वाहक की कमी होना। जब औरत लेटी अवस्था में हैं, तो उनके शरीर में जितना रक्त है, उससे शरीर के अनैच्छिक कार्यों के लिये – यानि हृदय, लंग्ज़ इत्यादि के कार्यों के लिये –जितनी ऑक्सीजन चाहिये वह मिल जाता है। लेकिन जब वे काम में लग जाती हैं तब उन्हें ज्यादा ऑक्सीजन की जरूरत है जो कि हीमोग्लोबिन की कमी के कारण उन्हें मिल नहीं पाता। ब्रेन में पर्याप्त ऑक्सीजन न मिलने के कारण उन्हें चक्कर आते हैं। ऐसी औरतों के अन्य लक्षण – कँपकँपी, दाँतों का अकडना, बोलती बन्द होना – यानि बोलने के लिये भी शक्ति नहीं रहना, temperature एवं pulse का कम होना इत्यादि।

तो अगर किसी को अचानक रक्त निकल जाने के बाद ऊपर के लक्षण दिखें – इसका एक मतलब है कि उनके शरीर में angiotensin #2 नहीं बन रहा है।[16] अगर हम किसी तरह शरीर में angiotensin #2 बना दें तो बी पी ठीक हो जायेगा। पहले हमें angiotensinogen बनाना है। फिर किडनी और लंग्ज़ उसे बदल देंगे। तो यह सब कैसे करें ?

अब यहाँ पर आता है गुरुजी का निरालापन ! देखिये, गुरुजी ने कैसे हर एक मुद्दे की गहराई तक पहुँचकर उसका लाजवाब एवं मुँह–तोड़ हल किया है !

- लिखा है कि angiotensinogen एक प्लासमा प्रोटीन है। रक्त में जितने भी प्लास्मा प्रोटीन हैं, वे लिवर द्वारा ही बनाये जाते हैं। यानि कोई भी प्लास्मा प्रोटीन बनाना हो, हमें तो सिर्फ लिवर को उकसाना है। वह अपने आप angiotensinogen बना देगा ! और उसके बाद किडनी तथा लंग्ज़ को उकसाना है। अगर हम इन तीनों को <u>ठीक प्रकार और क्रम से</u> उकसाने में सफल हों तो इस प्रोब्लेम को हल कर सकते हैं !! इतना ही नहीं, लंग्ज़ और लिवर का एक और गुण है कि उनके अंदर कुछ रक्त संचित रहता है, जिसे वे दोनों जरूरत होने पर संचार में ला सकते हैं।

[16] (Guyton 10th ed. p 290 : ऐंजियोटैन्सीन नंबर दो का उत्पादन तब बढ़ता है, जब आरटरीज़ का प्रेशर या उनमें रक्त की मात्रा अचानक कम हो जाय।

- अब एक प्रश्न मन में आ सकता है कि लिवर तो बहुत सारी चीजें बनाता है – तो जब हम लिवर को उकसायेंगे तो क्या वह उन सभी चीजों को नहीं बनायेगा ?
  उत्तर – नहीं, ऐसा नहीं। हमारे शरीर में एक निगेटिव फीड़बैक सिस्टम (negative feedback system) है जिससे शरीर के हर अंग को पता चलता है कि शरीर को उस समय किस चीज या केमीकल की जरूरत है, और किस की नहीं। तो जब हम लिवर को उकसाते हैं, वह सिर्फ उन्हीं चीजों को बनायेगा, जिनकी शरीर को उस समय जरूरत है – जिसमें एक होगा angiotensinogen. वह उन चीजों को नहीं बनायेगा जो उस समय शरीर में पर्याप्त मात्रा में उपस्थित हैं। लिवर अपने आप को सिकुड़कर 450 ml. तक रक्त को संचार के लिये दे सकता है।
- किडनीज़ को उकसाते समय यह प्रश्न आयेगा कि क्या हमें दोनों किडनीज़ को उकसाना है या नहीं ?
  उत्तर – नहीं। हमें दोनों किडनीज़ को नहीं उकसाना है। ध्यान दें कि लो बी पी ऐसिड़ोसिस यानि शरीर में ऐसिड बढ़ने के कारण होता है। और न्यूरोथेरेपी यानि LMNT में पाया गया है कि दोनों किडनीज़ एक–जैसे काम नहीं करतीं। Left kidney ही ऐसिड को फिल्टर करती है। यानि जब बायीं किडनी ठीक से काम न करे तभी acidosis की बीमारियाँ आती हैं ! सो हमें सिर्फ बायीं किडनी यानि Mu^0 को ही उकसाना है।
- फिर आयी बात लंग्ज़ को उकसाने की ! लंग्ज़ को उकसाने के लिये हमारे पास तीन उपचार हैं – \°/ यानि बैक ऐरो, चेस्ट ओनली (Chest Only) और 'Lu + Sh'. इन तीनों में किस को प्रयोग करना है ?
  उत्तर – यहाँ भी गुरुजी द्वारा फिज़ियॉलोजी के गहन अभ्यास का परिचय प्राप्त होता है। ACE बनती है लंग्ज़ के apex यानि सबसे ऊपरी भाग में ~~– उसका Page number –~~। इस भाग को उकसाने के लिये हमारा एक ही ट्रीट्मेंट है – वह है 'Lu + Sh'.
  इस प्रकार से गुरुजी ने निम्न फॉरमुला बनाया – **(7) Liv (7) Mu^0 (6) Lu+Sh**
  (7) Liv - लिवर को Angiotensinogen बनाने के लिये, तथा 450ml. तक रक्त को संचार में लाने
  (7) Mu^0 - left kidney को उकसाने के लिये, रेनिन द्वारा angiotensin #1 बनाने के लिये
  (6) Lu+Sh - लंग्ज़ को ACE बनाने को उकसाने के लिये, जो AT1 को AT2 में बदलेगा

देखा गया कि इस उपचार के तुरन्त बाद ही उन औरतों की कँपकँपी बन्द हो जाती है और रक्त चाप बढ़ने लगता है। चूंकि यह फॉरमुला फिज़ियॉलोजी के angiotensin #2 के उत्पादन के तथ्यों पर आधारित है सो उसका नाम Angiotensin #2 फॉरमुला रख दिया गया।

रक्त की मात्रा पूरे शरीर के वजन का 14-वा हिस्सा है। इस उपचार से Renin-Angiotensin system द्वारा नाडियाँ तुरन्त ही constrict हो जाती हैं, ब्लड का फ्लो (flow) यानि प्रवाह बढ़ जाता है, और BP ठीक होने लगती है। हर दिन 50/100 cc ब्लड का वौल्यूम बढ़ जायेगा और जैसे–जैसे ब्लड बढ़ेगा, नाडियाँ खुलती जायेंगी और angiotensin #2 की मात्रा कम होती जायेगी। और एक समय बिल्कुल बैलेंस आ जायेगा कि रक्त की मात्रा ठीक हो जायेगी – वैसे ही angiotensin #2 की मात्रा भी नारमल हो जायेगी और उसके बाद बी पी बढ़ेगी नहीं।

क्या यह अविश्वसनीय बात है ? क्या अनुभवों के आधार पर कही गयी यह बात सच नहीं हो सकती ?

इस फॉरमुला की गजब के नतीजों के बारे में प्रस्तावना यानि भूमिका में पहले ही लिखा गया है। उसकी जो लौजिक ऊपर लिखी हुयी है उसे पढ़ने के बाद पाठकों को विश्वास हो सकता है कि यह संभव है।

इस फॉरमुला के विभिन्न उपयोग

यह निम्न प्रकार के लो बी पी के पेशंटों को देना चाहिये –

- जिनको अपघात या गर्भपात के कारण या किसी औपरेशन के बाद शरीर से आधे लिटर के आसपास रक्त निकल जाने के कारण लो बी पी हो।
- जिन औरतों को मासिक धर्म के बाद चक्कर, होंठों या हाथों का काँपना, दाँत अकडना इत्यादि हो।

- डबल निमोनिया (pneumonia) की बीमारी में यह फॉरमुला उपयोगी है।[17]
  अस्पतालों में ऐसे पेशंटों को राहत देने के लिये angiotensin #2 तथा डोपॅमीन (dopamine) की दवाई दी जाती है। नौरमल व्यक्ति में ऑक्सीजन की कमी होने पर टिशूज़ में रक्त प्रवाह बढ़ता है, लेकिन शायद इस बीमारी में रक्त का प्रवाह इतना नहीं बढ़ पाता कि टिशूज़ की जरूरतें पूरी हों। जैसे प्रस्तावना में लिखा गया है, उन मरीजों के लिये भी LMNT का ऐंजियोटैन्सीन #2 फॉरमुला उत्तम पाया गया है।
- जिनको बचपन में निमोनिया था और कई साल बाद हमारे पास आये, उनको निम्न उपचार बहुत लाभदायक पाया गया है –(क्रम याद रहे – **ADK**; A यानि AT2 ; D यानि dopamine; K यानि kidney)
  I Angiotensin #2 formula II (20) Medulla - डोपॅमीन के लिये
  III Kidney clear treatment – क्योंकि pneumonia के कारण किडनी पर भी असर होता है।
- Angiotensin #2 के उपयोग का एक और कारण है कि वह किडनी के अंदर रक्त प्रवाह बढ़ाता है।[18]
- मंद बुद्धि यानि रिटारडेड (mentally retarded) बच्चों में कुछ बच्चों में कभी ऐसा पाया जाता है कि उनको बचपन में निमोनिया हुआ था। उन्हें अन्य उपचारों के साथ ऊपर के ये तीन उपचार भी देने से उनमें काफी फर्क आ जाता है – ऐसे उन बच्चों के माँ-बाप खुद हमसे कहते हैं।
- इतना ही नहीं। अगर कोई बच्चा हमारे पास किसी भी प्रोब्लेम के लिये आये और हमें पता चला कि बच्चे को पहले कभी या उसकी माँ को प्रेगनैन्सी में या उससे कुछ दिन पहले निमोनिया था, तो जब हम ऊपर के तीनों उपचार उस बच्चे को देते हैं, तो उसे तुरन्त लाभ पहुँचता है, चाहे वह हमारे पास कोई अन्य बीमारी के लिये ही क्यों न आया हो।

प्रश्न – बाकी सब तो समझ में आयी, लेकिन यह नहीं समझ आयी कि अगर माँ को निमोनिया हुआ था तो बच्चे को यह उपचार क्यों देना है ?

यह भी गुरुजी की अनुपम सोच का नमूना है। और वह यह है कि – जब तक बच्चा माँ के पेट में होता है, उस दौरान जो-जो कमी माँ में होंगी वे सब बच्चे में भी होगी। अगर माँ को प्रेगनैन्सी में निमोनिया हुआ तो उससे जो भी कमी आयी, वही कमी बच्चे में भी आयी होगी न ? इसलिये ही गुरुजी ऐसा कहते हैं। इसका एक और नमूना हम पहले ही Chole treatment formula में देख चुके हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Vasopressin formula

कई साल पहले गुरुजी को एक ऐसा उपचार मिला जो कि विश्वास के बाहर है। यह भी कुदरत की देन है। एक पेशंट को कई सालों से लो बी पी (low BP) यानि लो ब्लड प्रेशर की शिकायत थी। LMNT में हम कहते हैं कि लो बी पी ऐसिड बढ़ने से आती है। तो पहले उन्हें ATF दिया गया जिससे कुछ तो लाभ हुआ लेकिन बी पी हमेशा कम ही रहती थी।

एक दिन पता नहीं हरि की क्या कृपा थी कि गुरुजी उस पेशंट को 1,25 DCC देने वाले थे। उन दिनों 1,25 DCC के फॉरमुला में (7) Liv (4) Para .... न देकर (2) Para (7) Liv (2) Para .... ऐसे दिया जाता था।

तो गुरुजी उस पेशंट को 'Para' दे ही रहे थे, कि (2) Para देने के बाद अचानक पेशंट ने कहा कि उन्हें बहुत ही अच्छा लग रहा है। चैक करने पर पता लगा कि उनकी बी पी बढ़ चुकी थी। तो उस दिन उसे अन्य उपचार नहीं दिया गया। दूसरे दिन और एक उपचार (2) Para देने के बाद उनकी बी पी नौरमल हो गई। इतना ही नहीं, कुछ दिन के बाद चैक करने पर भी वह नौरमल ही थी, वापस नीचे नहीं आयी।

---

[17] (Guyton 10th ed. p 176) : निमोनिया में टिशूज़ में रक्त का प्रवाह कम होता है जिससे औक्सीजन की भी कमी होगी।

[18] AT2 की मात्रा का बढ़ना GFR यानि किडनीज़ के अंदर रक्त के प्रवाह को बनाये रखने तथा क्रेटीनाइन एवं यूरिया जैसी फालतू चीजों के निकास को सामान्य रखने में मदद करती है। (Guyton 10th ed. p 290) : यानि अगर हमें किडनी के फंक्शन को सुधारना है तब भी angiotensin #2 formula दे सकते हैं क्या ? अगर किडनी के पेशंटों को हाई बी पी न हो तो इसे टैस्ट करना है कि क्या यह creatinine या यूरिया को कम करेगा ? – इन दोनों पर गौर करना है, test करना है।

गुरुजी हैरान होकर सोच में पड़े। एकाएक बी पी बढ़ने का मतलब इस उपचार से सभी नाड़ीयें कुछ सिकुड़ जाती हैं, जिनके कारण रक्त चाप बढ़ता है। फिर वे vaso-constrictor chemicals यानि रक्त नलिकाओं को सिकोड़ने वाली केमीकल्स के बारे में पढ़ने लगे। तब उनको लगा कि यह उपचार न जाने किसी तरीके से वैसोप्रैसिन बनाने के लिये उकसाता है। अब वैसोप्रैसिन के कार्य के बारे में समझें –

वैसोप्रेसिन एक हौरमोन है, जो हाईपोथैलेमस में बनता है और फिर पौस्टीरियर पिट्यूट्री में जमा किया जाता है। यह एक बहुत ही शक्तिशाली कैमीकल जिसके प्रभाव से शरीर के सारी रक्त नलिकायें सिकुड़ कर संकीर्ण हो जाती हैं। इसके प्रभाव से किडनीज़ पानी को रोक लेती हैं और उसे बाहर जाने नहीं देतीं। यानि इसके प्रभाव से ब्लड वौल्यूम यानि रक्त का आयतन बढ़ जाता है और उससे बी पी बढ़ने लगता है।

तब से इस उपचार को लो बी पी के लिये कई पेशंटों पर आजमाया गया है। और सभी पर एक–जैसे नतीजे पाये गये हैं, जिससे साबित होता है कि गुरुजी का अनुमान सही है कि (2) Para देने से वैसोप्रैसिन बनता है।

प्रश्न – अब angiotensin #2 formula तथा वैसोप्रैसिन – ये दोनों ही बी पी को बढ़ाते हैं। तो कैसे पता चलेगा कि किस पेशंट को कौन–सा फॉरमुला उपयोग करना है ?

उत्तर – दोनों formula के उपयोग में अन्तर समझ लें।

- Angiotensin#2 एवं vasopressin – दोनों powerful vaso-constrictors हैं। दोनों ब्लड प्रेशर को बढाते हैं यानि low BP को नौरमल (normal) करते हैं। लेकिन दोनों का कार्य अलग–अलग हैं।
  - ✓ वैसोप्रैसिन पानी को ही रोकता है जब कि
  - ✓ angiotensin #2 एवं aldosterone – ये नमक और पानी दोनों को रोकते हैं।
- Vasopressin formula यानि (2) Para → उन्हें देना है जिनको कई सालों से लो बीपी रहती है, यानि उनकी बीपी हमेशा ही नौरमल से कम रहती है, उदा– 100/70। ऐसे लोग काम करने से जल्दी ही थक जाते हैं।
- Angiotensin #2 formula एक खास किस्म की लो बीपी के पेशंटों को ही देना है – यानि जिनकी बी पी साधारणतः नौरमल है, लेकिन अब किसी कारण शरीर से ½ लिटर के आसपास रक्त निकल जाने के कारण बी पी कम हो गयी।
- <u>ऐसे पेशंटों को इस अचानक आयी हुयी low BP ठीक करने के लिये Vasopressin formula नहीं देना है।</u>
- *Vasopressin formula का एक और भी उपयोग है।* यह उनको भी देना है, जिन्हें डायाबीटीस इन्सीपीडस *(diabetes insipidus)* की बीमारी है। इस बीमारी में शरीर में ADH नहीं बनता, जिसके कारण व्यक्ति बहुत ही ज्यादा पानी पीता है और तुरन्त ही कुछ ही समय के बाद उसे पेशाब भी बहुत ज्यादा आती है। लेकिन हरि की कृपा से यह बीमारी बहुत ही rare यानि अपूर्व या विरल है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Multivitamin formulae

इन फॉरमुलाओं को बनाने की प्रेरणा की ऐतिहासिक जानकारी –

एक बार गुरुजी, कमलेश दीदी, श्री. पीयुष पांचाल जी और कुछ अन्य थेरेपिस्ट बैठ कर LMNT फौरमुलों के प्रति कुछ चर्चा कर रहे थे। तब पीयुष जी ने गुरुजी से पूछा कि क्यों न ऐसा एक ट्रीट्मेंट बनाया जाय जिससे सभी को एनर्जी (energy) यानि शक्ति मिले ? उसी समय मल्टीविटामिन (multivitamins) की गोली की एक बोतल हाथ में आयी। और उसमें देखा तो Vitamin B_{12} calcium, इत्यादि का नाम था। तब तक गुरुजी अलग से कैल्शियम, सोडियम इत्यादि को बढ़ाने के लिये उपचार तो दे ही रहे थे। पीयुष जी के प्रश्न के बाद यह सोच आयी कि क्यों न इन्हें जोड़कर एक उपचार बनाया जाय ? इसी सोच से आये निम्न चार उपचार।

फिलहाल ये चार अलग ट्रीट्मेंट हैं जो शरीर में शुगर, सोडियम, कैल्शियम और विटामिन B_{12} इत्यादि की कमी को ठीक करते हैं। अक्सर इन चीज़ों की कमी से ही मनुष्य को बिना कारण थकावट महसूस होती है। तो उनकी कमी दूर करने के लिये जब उचित फॉरमुला दिया जाता है, तो रोगी की थकान तुरन्त दूर हो जाती है।

अतः इनको Multivitamin फॉरमुला कहा जाता है, क्योंकि शरीर में अगर कमजोरी हो तो अक्सर डॉक्टर मल्टी विटामिन की गोली खाने के लिये कहते हैं।
जरूरत के अनुसार किसी भी पेशंट को इन चारों में से कोई एक फॉरमुला देना है।

- (1) Pit (3) Gal (7)Liv (8) Lt. Parkhoo (2) Adr
- (4) Pit (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo (6) Adr
- (4) Para (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (6) Adr या (2) Adr
- (2) Para (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (2) Adr

इन फौरमुलों में हर प्वाइंट खास विचार से दिया गया है –

- 'Pit' – ब्लड शुगर बढ़ाने एवं काम करने के बाद की थकान को दूर करने के लिये
- (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo – बायीं जांघ के ऊपर LMNT के B_{12} प्वाइंट के दर्द को कम करने तथा विटामिन B_{12} का ऐब्ज़ोर्पशन (absorption) यानि अवशोषण बढ़ाने के लिये, जो नर्वस टिशू (nervous tissue) यानि तंत्रिकाओं की देखभाल के लिये जरूरी है। इस उपचार से शरीर में ताकत बढ़ती है, कमजोरी दूर होती है।
- (2) Adr - ऐल्डोस्टीरौन के लिये, जो किडनीज़ के ट्यूबूल्स को सोडियम रोकने के लिये कहता है। इससे रक्त में सोडियम की मात्रा बढ़ेगी
- (6) Adr - कौरटीज़ौल (cortisol) के लिये, जो इन्फ्लमेशन को कम कराता, तथा ब्लड शुगर बढ़ाता है
- (2) Para - वैसोप्रैसिन (vasopressin) के लिये, जो दीर्घकालीन लो बी पी को नौरमल कराता है।
- (4) Para - पैरॉथौरमोन (parathormone यानि PTH) द्वारा रक्त में कैल्शियम को बढ़ाने के लिये।

अब हर फॉरमुला किस प्रकार की मरीजों को लाभ देगा यह समझें

(1)Pit (3)Gal (7)Liv (8)Lt. Parkhoo (2) Adr

उपयोग – शुगर एवं सोडियम बढ़ाने तथा B_{12} द्वारा नर्व को मजबूत बनाने के लिये – खास कर जिन बच्चों को शुगर या सोडियम की कमी से fits आयी हो।

या खिलाडी जो कहते हैं कि उन्हें शाम होते-होते क्रैम्प्स एवं कमजोरी-जैसे लगती है। शाम को कमजोरी है इसका मतलब पसीना द्वारा सोडियम निकल गया है। उनमें सोडियम की कमी है सो (2) Adr से उन्हें लाभ होगा क्योंकि (2) Adr से हम ऐल्डोस्टीरोन को उकसाते हैं जो नमक को बाहर जाने से रोकेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(4) Pit (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (6) Adr

उपयोग – जिन्हें कमजोरी लगती हो, एवं जिन्हें थोडा व्यायाम के बाद ही चक्कर आते हैं तो इसका मतलब उनके शरीर में शुगर की मात्रा बहुत कम है। उनके लिये यह उपचार उत्तम है। लेकिन यह उपचार ह्रदय-रोग के मरीजों को एवं जिन्हें हाई बी पी के कारण पैरालायसिस हुआ है, उन्हें नहीं देना – क्योंकि सोचा जाता है कि 'Adr' ह्रदय रोग के मरीजों को नुकसान करेगा, एवं 'Pit' ऐल्कली को बढ़ाता है, सो यह उपचार हाई बी पी के पेशंटों को नहीं देना।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(4) Para (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (6) Adr or (2) Adr

जिन्हें कैल्शियम और शुगर या सोडियम की कमी हो उन्हें दे सकते हैं –जैसे डायाबीटीस एवं किडनी के मरीजों के लिये या जिन्हें क्रैम्प्स दिन में भी एवं रात में सोये पडे भी आते हैं।

जिनको पैरालायसिस है उन्हें भी दे सकते हैं, अगर उन्हें हाई बी पी न हो तो।

जिन्हें शुगर की कमी हो उन्हें (6) Adr दें।

जिन्हें नमक की कमी हो उन्हें (2) Adr दें। हाई बी पी की मरीजों को (2) Adr न दें।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

(2) Para (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (2) Adr

जिन्हें लो बी पी हो और शरीर में कमजोरी हो उनके लिये अच्छा है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Latest विचार जो इसे लिखते समय आया है – (29.07.2007)
लगता है कि अब से Multivitamin formula में (8) Rt Parkhoo भी जोड़ देना चाहिये – फोलिक ऐसिड के लिये। यानि फॉरमुला में B_{12} फॉरमुला की जगह पर Folic black formula देना है। यानि formula में सुधार इस प्रकार होगा।

(1) Pit (8) Rt Parkhoo (3) Gal (7)Liv (8) Lt. Parkhoo (2) Adr
(4) Pit (8) Rt Parkhoo (3) Gal (7) Liv (8) Lt Parkhoo (6) Adr
(4) Para (8) Rt Parkhoo (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (6) Adr या (2) Adr
(2) Para (8) Rt Parkhoo (3) Gal (7) Liv (8) Lt. Parkhoo (2) Adr

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Angina treatment या Athero treatment

I (4) Medulla Clockwise ♀ T1/T2 + Raman trt + (10) Pan (2) Thrd
II (1) Single point liver x 2 treatments
III P. Heparin → (8) Pan (7) Liv (8) Ch. Only + Sulta Ulta (हाथ ऊपर 135° पर)
या जिनको Mu^0 में दर्द हो तो एवं सख्त कब्जी ही उनके लिये
III Mild ATF IV A. Heparin Sulta Ulta (हाथ ऊपर 135° पर रखकर देना है)

मुख्य बीमारियाँ

ह्रदय रोग, ऐथेरो स्क्लेरोसिस, कॉलस्ट्रॉल का बढ़ जाना, ट्राइग्लिसेराइड का बढ़ जाना, कार्डियैक अस्थमा, कारपल टनल सिंड्रोम या टारसल टनल सिंड्रोम इत्यादि के लिये

- - - - - - - - - - - - - -

Kidney clear formula

LMNT में हम जननांगों को उकसाने के लिये 'WD' प्वाइंट का उपयोग करते हैं। नाभी के नीचे के अंगों को उकसाने के लिये New Genes formula देते हैं। तथा अगर उधर तीव्र दर्द हो तो उसमें Chest Only के जगह पर Thymus Chest देते हैं। इसका उपयोग हम यूट्रस या प्रोस्टेट ग्लैंड के प्रोब्लेम में करते हैं।

वैसे ही, LMNT में हम किडनीज़ को उकसाने के लिये Liv^0 – Mu^0 प्वाइंट का उपयोग करते हैं। Pure 1,25 DCC उपचार के तजुर्बे से गुरुजी ने सोचा कि Liv^0 – Mu^0 को अकेले उकसाने से कुछ पेशंट को तकलीफ हो सकता है। अतः वे ऐसिड ऐल्कली के बैलेन्स बनाने के लिये उसके साथ Ch. Only तथा ↑|↓ देने लगे जिससे देखा गया कि पेशंट को कमाल के नतीजे मिलते हैं।

किडनीज़ को उकसाने के फौरमुला को Kidney clear formula कहते हैं जिसमें दो प्रकार हैं – हमें पेशंट के उस दिन के स्थिति के अनुसार उचित फौरमुला को चुनना है।

पहले गुरुजी (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20) ↑|↓ देते थे, उसे बाद में निम्न रूप में बदला गया –

I (1) Liv^0 (1) Mu^0 (2) Ch. Only (5) ↑|↓
II (3) Liv^0 (3) Mu^0 (4) Ch. Only (10) ↑|↓
III (5) Liv^0 (5) Mu^0 (6) Ch. Only (15) ↑|↓
IV (7) Liv^0 (7) Mu^0 (8) Ch. Only (20) ↑|↓

ऊपर का उपचार निम्न प्रकार के लोगों को देना है – जिन्हें कमर दर्द, लेफ्ट किडनी स्टोन (किडनी में पथरी) दाद, खाज, ऐलेर्जी, सोरियासिस (psoriasis), या कोई अन्य सूखे चर्म रोग हो एवं निम्न में से कोई हो –

- जिन्हें नौरमल या कड़क मोशन या कब्जी हो।
- जिन्हें Liv^0 - Mu^0 में समान दर्द हो या Mu^0 में ज्यादा दर्द और Liv^0 में कम दर्द हो
- उन औरतों को जिन्हें मैन्सस यानि मासिक धर्म 4 दिन या उससे अधिक दिनों के लिये आते हों
- जिन्हें ऐसिड़ोसिस के अन्य लक्षण हों जैसे बायीं अनामिका उंगली में दर्द इत्यादि।
- एवं जिनकी बी पी नौरमल रहती है या कभी–कभी लो बी पी हो जाती है

यह फौरमुला खास कर उन बच्चों को लाभ देता है जिनका माइक्रो हेड या माइक्रो सेफालस (micro head or micro-cephalus) हो – यानि जिस बच्चे का सिर शरीर की तुलना में अन्य बच्चों से छोटा हो।

- ध्यान दें – पथरी के साथ दर्द हो तो 'Ch only' ↑|↓ की जगह पर 'Th+Ch' देना है।

Ulta Kidney clear formula

लेकिन सभी को हर दिन एक जैसे लक्षण नहीं होते। जब शरीर बिगड़ता है, तब कुछ लोगों को लूज़ मोशन या ऐल्कली बढ़ने के अन्य लक्षण दिखते हैं। तो अपने साठ साल के अनुभव से गुरुजी की खोज है कि ऊपर के फौरमुला के क्रम को पेशंट की स्थिति (condition) के अनुसार इस प्रकार बदलना है।

I (1) Mu^0 (1) Liv^0 (5) ↑|↓ (2) Ch. Only
II (3) Mu^0 (3) Liv^0 (10) ↑|↓ (4) Ch. Only
III (5) Mu^0 (5) Liv^0 (15) ↑|↓ (6) Ch. Only
IV (7) Mu^0 (7) Liv^0 (20) ↑|↓ (8) Ch. Only

यह उपचार निम्न प्रकार के लोगों को देना है –जिन्हें कमर दर्द, राइट किडनी स्टोन (right kidney stone) हो एवं निम्न में से कोई हो –

- Liv^0 में ज्यादा दर्द और Mu^0 में कम दर्द हो
- जिन्हें नरम या लूज़ मोशन (loose motions) हों।
- उन औरतों को जिन्हें मासिक धर्म में स्राव बहुत कम या एकाध दिनों के लिये ही आता हो
- जिन्हें शरीर में सूजन आये जो रात को न हो, सुबह उठने पर हो और कुछ घंटों के बाद कम हो जाये
- दाद, खुजली, या कोई अन्य चर्म की बीमारी हो जिससे पानी निकलता रहे
- जिन्हें ऐल्कलोसिस के अन्य लक्षण हों जैसे दायीं अनामिका उंगली में दर्द इत्यादि।
- जिन्हें बीच–बीच में या हमेशा ही हाई बीपी की शिकायत हो

अगर किसी को पथरी के साथ दर्द हो तो ↑|↓ तथा Ch. Only के जगह पर Th + Ch देना है।

ध्यान दें –

निमोनिया (pneumonia) नामक बीमारी में किडनीज़ पर दुष्प्रभाव पड़ता है। उसके लिये भी शरीर की स्थिति के अनुसार उचित Kidney clear treatment देना है। यह उपचार उन्हें भी देना है जो हमारे पास किसी अन्य बीमारी के लिये आये हैं और पूछने पर हमें पता चला कि उन्हें बचपन में कभी भी निमोनिया हुआ था।

यह उपचार उन बच्चों को भी लाभ देगा जिन्हें दिन में तीन–चार बार लूज़ मोशन होते हैं – जैसे कि कुछ CP के बच्चों में पाया जाता है।

(Taber's 18th edn.p 42) में लिखा है कि dopamine का एक कार्य है किडनीज़ में रक्त प्रवाह बढ़ाना। सो किडनीज़ के प्रोब्लेम के लिये (20) Medulla भी लाभदायक होगा ? इस पर और खोज करना है।

पुणें के श्री अनिल भालेराव जी के बेटे को pimples यानि मुहासे एवं ऍलेर्जी था। साथ में उसे 'Gal $^{+++}$' था। उन्होंने निम्न उपचार दिया – 1st day - New Gal formula; 2nd day : New Gal formula + Kidney clear treatment - अगले दिन सुबह सारे मुहासे निकल गये। चेहरा ऐसा साफ था कि विश्वास के बाहर था।

भालेराव जी का एक और अनुभव ऐसा है कि शरीर में अगर स्वेलिंग हों, चाहे वह हार्ट के कारण या किडनीज़ ठीक से काम न करने के कारण, उस पेशंट को (10) Pan x 3 treatments देने से अक्सर लाभ पहुँचता है। अगर उससे पूर्ण लाभ न मिले तो बाद में उचित kidney clear treatment दे सकते हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Anil Sharma treatment (Mu^0 में दर्द न हो तो नहीं देना)

(5) Pan (3) Gal (5) Liv (7) Mu^0 (3) acid (3) WD (3) Pit (6) Adr

यह उपचार गुरुजी के बहुत ही पुराने विद्यार्थी श्री अनिल शर्मा जी का बनाया हुआ है, जो आजकल लंडन में न्यूरोथेरेपी प्रैक्टिस (practice) कर रहे हैं। यह फॉरमुला ऐसिड कम करने के लिये बहुत ही अच्छा उपचार है।

चूंकि 'Adr' देने से 'Thymus' हाइपो होगा, यानि कम काम करेगा, तो शरीर की इम्यूनिटी कम न हो, इसलिये हर 4 उपचार करने के बाद एक उपचार में '(6) Adr' के जगह पर (4) Thymus+Chest दें

मुख्य बीमारियाँ – जिन्हें ऐसिड के कारण जोड़ों में दर्द हो (Mu^0 में काफी दर्द हो तभी दें),

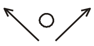
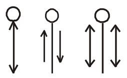
गाउट (gout) यानि गठिया (यूरिक ऐसिड ज्यादा) Bamboo spine बैम्बू स्पाइन

Cervical or lumbar spondylitis सरवाइकल या लम्बार स्पौन्डीलाइटिस

पंजाब के कुछ थेरेपिस्टों ने कहा है कि यह उपचार औरतों में Leucorrhea यानि सफेद पानी जाने को भी रोकता है।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Oxygen-hormonal treatment

I (2)  (1)  (3) organ clearance (5) 

II. (1) Liv° (1) Mu°

III. (2) Ch only

IV. (3) Folded legs (6) TF (3) NNS

V. (3) Raman x 1 treatment

VI. (2) Folic

VII. (2) Thia

VIII. (2) B_{12}

IX. (2) Nia

X. (10) Medulla + Fast Gas : Gas I : Gal : Spl : Liv : Mu

XI. (1) Pit (1) Thrd (1) Adr (½) Ku – 20 secs - हॉरमोन्स बनाने के लिये

XII. Ajay Normal (8) Pan (1) Gal (2) Liv -3 points (1) Gas I -6 points

मुख्य बीमारियाँ

- Abdomen disorder पेट की बीमारियाँ,
- M.S (multiple sclerosis) मल्टीपल स्क्लेरोसिस
- Back Pain पीठ का दर्द,
- Mental Retardation मन्द बुद्धि,
- Neuropathy न्यूरोपैथी
- Myopathy मायोपैथी,
- M.N.D (Motor Neuron Disorder) मोटर न्यूरॉन डिसॉरडर

ध्यान दें – मन्द बुद्धि के बच्चों के लिये यह बहुत ही उपयोगी है। इस उपचार को माता पिता को सिखा देना, और कहना कि दिन में कम से कम एक बार रोज दें। अगर सुबह शाम दें तो और भी अच्छा है। लेकिन जब तक पेट पूर्ण रूप से ठीक न हो तब तक होरमोन्स को नहीं उकसाना है।

तो एकाध महीने तक क्रम इस प्रकार होगा – I – X तक और बाद में XII नंबर देना है। एकाध महीने बाद जब पेट और पाचन पूरा ठीक हो जाय और UDF इत्यादि का आना एकदम बंद हो, तब XI नंबर वाला उपचार भी जोड़कर देने से हॉरमोन्स ठीक से बनेंगे और उपचार का पूरा लाभ होगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

यही उपचार निम्न बीमारियों के लिये भी बहुत ही उपयोगी पाया गया है –

प्लैटलैट्स की मात्रा अत्यन्त कम हो (Low count of Platelets) – जैसे कि ITP नामक बीमारी में होता है (ITP = Idiopathic thrombocytopenic purpura)

कोई भी जेनेटिक बीमारी के लिये

S.L.E., Scleroderma, या अन्य कोई भी ऑटो इम्यून डिसार्डर हो तो

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

पुणें के श्री अभय पाठक जी ने पाया है कि M.N.D (मोटर न्यूरौन डिसोर्डर), Myopathy (मायोपॅथी) या माँस पेशी सम्बन्धी पुरानी बीमारियों के लिये निम्न उपचार क्रम अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। उनकी एक bed ridden **MND** lady patient है जिनको पहले दोनों साइड से दो आदमी पकड कर लाते थे। चार महीने के हमारे उपचार के बाद एक उंगली पकडकर चलने लगी। पहले गर्दन नीचे ही रहता था। उठा नहीं पाती। अब अपना आप उठा लेती है। उनके लिये निम्न क्रम बहुत फायदेमंद था।

पहले एक महीने के लिये Oxygen hormonal treatment – रोज देना है, कम से कम दिन में एक बार।

एक महीने के बाद यानि दूसरे महीने से

I Oxygen hormonal treatment II (15) Medulla x 6 treatments

तीसरे महीने से

I Oxygen hormonal treatment II (15) Medulla x 12 treatments

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

कुछ अन्य उपचार और उनकी कार्य शैली

Oxygen formula - क्यों और कैसे कामयाब है उसे समझिये

(8) Ch. Only (6) ← → (6) \°/ (3) ↑o↑ (20) ↕ ↕|↕ |↑↓ (6) \°/ (3)↑o↑ (6) ← →

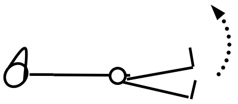
- ✓ (8) Ch. Only — लंग्ज़ साफ करने के लिये
- ✓ (6) ← → — गर्दन की मसल्स को खोलता है ताकि अच्छी तरफ सांस ले सके
- ✓ (6) \°/ — लंग्ज़ को रक्त का सप्लाई बढ़ाने के लिये
- ✓ (3) ↑o↑ — T1/T2 के नसों द्वारा दीमाग के नर्व्ज़ को ठीक से संदेश पहुँचाने
- ✓ (20) ↕ ↕|↕ |↑↓ — सारे शरीर में रक्त के संचार को ठीक करने
- ✓ (6) \°/ (3) ↑o↑ (6) ← → जैसे ऊपर दिया गया है

यह उपचार शरीर की टिशूज़ और सैल्स में oxygen की मात्रा बढ़ाने के लिये देते हैं। इस उपचार की सफलता के बारे में गुरुजी द्वारा प्रस्तावना में बताया गया है। क्रोनिक बीमारियों में कुछ मरीजों को 'Thymus' से नुकसान हो सकता है, जब कि कुछ अन्य लोगों को 'Adr' से। सो ऐसी बीमारियों में सभी arrows (L1-L5) तक ही देना है, ताकि मरीज को कोई नुकसान न हो।

यह देखा गया है कि आज के दिन यह उपचार बहुत ही अच्छा है। इस का कारण है कि लंग्ज़ साफ हो जाते हैं, उन में रक्त का बहाव बढ़ जाता है, जिससे शरीर की हर ग्रंथी को अधिक औक्सीजैन से भरा हुआ रक्त मिल जाता है, जिससे उन के कार्य करने की क्षमता बढ़ जाती है और जो जो कार्य वे पहले नहीं करते होते या जो एन्ज़ाइम या हौरमोन या कैमीकल नहीं बना रहे होते, उसे बनाना प्रारंभ कर देते हैं। दूसरी बात है कि आंतडियों में विल्लाई (villi) हैं जिन को भरपूर औक्सीजैन न मिले तो मृत्युप्राय-से हो जाते हैं और उन के कार्य करने की क्षमता कम हो जाती है जिससे वे सब न्यूट्रियन्ट्स (nutrients) यानि पोषण तत्वों की सोखना कम कर देते हैं, या बंद कर देते हैं। जैसे ही उन्हें औक्सीजैन से भरा हुअे रक्त मिलता है, वे भरपूर और सही तरीके से काम करना लगते हैं, जिससे शरीर के हर अंग को बहुत लाभ होता है, और जो कैमीकल इत्यादि पहले नहीं बन रहे थे, वे बनने लग जाते हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Old Nabhi Set (ONS)



रोगी को करवट से लेटकर फिर सीधा लेटने को कहें। थेरैपिस्ट उनके पांव के पास ऐसे खड़े रहें कि उनकी दाहिनी एढ़ी के पास आपकी दाहिनी एढ़ी हो। अब नीचे झुककर अपने दायें हाथ के अंगूठा, तर्जनी, और मध्यमा उँगलियों को रोगी के दोनों पांव के बड़े अंगूठों के बीच इस प्रकार घुसाना है कि उनका दाये पैर का अंगूठा आपके अंगूठे और तर्जनी के बीच में रहे और उनके बायें पैर का अंगूठा आपके तर्जनी और मध्यमा के बीच रहे। और इस प्रकार पकड़कर रोगी के दोनों पांव अपने हाथों की ऊंचाई तक उठाकर छे सैकन्ड तक ठहरना है, और फिर बहुत ही धीरे नीचे लाना है - ऐसे 3 बार करना है। इसे कार्ड पर (3) ONS लिखते हैं।

धयान रहे कि -

- पैरों को ऊपर उठाते समय अपनी हाथों की ऊँचाई (खडे रहने पर) तक ही उठाना है। इस से ऊपर उठाने पर कोहनी, हाथ इत्यादि में दर्द होगा जिससे थेरैपिस्ट को तकलीफ होगी, सो अधिक ऊपर नहीं उठाना।
- रोगी अपने आप पांव उठाने या नीचे ले जाने का बिल्कुल प्रयत्न न करें।

  इस उपचार से नाभी के आसपास के सभी अंग अपने निर्धारित जगह पर लौट आयेंगे जिससे पूरा एबडोमन सैट (set) हो जायेगा। पहले इस का नाम "नाभी सैट" ही रखा गया था। लेकिन इसके बाद नाभी सैट करने का एक और नया उपचार बनाया गया, सो इस उपचार को Old Nabhi Set कहा गया। Old यानि पुराना, New यानि नया।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Toe Fingers (TF) तथा **New Nabhi Set (NNS)**

- रोगी सीधा लेटा होना चाहिये, उनके दोनों हाथ रिलॅक्स की स्थिति में दोनों जांघों के पास रखा रहे। थेरैपिस्ट रोगी के पांव के तलवे की तरफ आराम से बैठकर के पैर के अंगूठों पर निम्न उपचार करें -
  - ✓ **TF** पेशंट के पैरों की हर एक उँगली के अंतिम छोर की ज्वाइंट को रगड़ना या मसलना है, जिससे चमडी के नीचे की नसें उकसाये जायें - हर ज्वाइंट पर 3 जगह करना। हर जगह पर उतनी बार मसलना है जितना लिखा हो। उदा - अगर 20 TF लिखा हो तो बीस बार करना, अगर 6 TF लिखा हो तो 6 बार करना।
  - ✓ **NNS** हर एक अंगूठे के पहले पोटे को अपने अंगूठों और हाथ से नीचे तलवों की तरफ दबाना पर इंतजार नहीं करना। फिर तुरंत छोड कर दूसरे पोटे को पहले ही की तरफ तलवों की तरफ दबाना है। 6 NNS लिखा हो तो हर उंगली पर 6 बार देते हैं।

  इन दोनों उपचारों से पाचन संस्थान के अंगों को एक-एक करके set कर सकते हैं। हर उंगली किस भाग को उकसाता है या किस अंग के दर्द को निकालता है, उन का फंक्शन निम्न प्रकार है -

बायें **(left)** पैर की उंगलियां नाभी के **right side** यानि दाहिने साइड के अंगों को उकसाती हैं

✓ बड़ा अंगूठा	छाती में स्टेर्नम (sternum) के नीचे 'Gas' के दर्द को निकालता है
✓ पहली उंगली	पैंक्रियास (pancreas) की दांई (right) भाग यानि पैंक्रियास के माथे के भाग को (इससे होरमोन्स ज्यादा निकलेंगे)
✓ बीच वाली उंगली	गॉल ब्लैडर तथा पसलियों (ribs) के अंदर के छाती के दाहिने भाग को
✓ तीसरी उंगली	लिवर, ऐसेंडिंग कोलन (ascending colon) के मध्य भाग, तथा नाभी के दाहिने भाग की आंतड़ी को
✓ सब से छोटी उंगली	दायीं ओवरी / टैस्टीस, ऐपेंडिक्स, तथा ऐसेंडिंग कोलन के शुरू के भाग

दायें **(right)** पैर की उंगलियां नाभी के **left side** यानि बायें साइड के अंगों को उकसाती हैं-

- ✓ बड़ा अंगूठा — नाभी के ठीक ऊपर के दर्द को निकालता है – 'Gas I' जैसा काम करेगा
- ✓ पहली उंगली — पैंक्रियास की पूछड़ी के भाग को (इससे पाचक एन्जाइम्स ज्यादा निकलेंगे)
- ✓ बीच वाली उंगली — स्प्लीन तथा छाती की बायीं भाग को, और transverse colon के अंतिम भाग को
- ✓ तीसरी उंगली — डिसेंडिंग कोलन के मध्य भाग, नाभी के बायीं भाग, सारे शरीर के म्यूकस मैम्ब्रेन को
- ✓ सब से छोटी उंगली बायीं ओवरी या टैस्टीस, तथा sigmoid colon को
- ✓ दोनों पैरों की छोटी उँगली को एक साथ करने से वह नाभी के नीचे के 'WD' के दर्द को निकालता है।

उपचार का क्रम –

TF तथा NNS दोनों उपचारों के लिये एक ही क्रम होता है जो फॉरमुला और जरूरत के अनुसार बदल सकता है। अगर सिर्फ 20 TF 6 NNS लिखा हो तो सभी उँगलियों में उपचार करना है इस क्रम से देना –

Gas : Gas 'I' : Pan (बाया) : Pan (दाहिना) : Gal : Liv : Rt. Ov; Spl : Mu : Lt.Ov.

अलग-अलग उपचारों में क्रम बदला जाता है।

कुछ बीमारियों में सिर्फ एक या दो उँगलियों को उपचार देते हैं। उदाहरण के लिये – 6 NNS 'Gal' में हम रोगी के बायें पांव की सिर्फ बीच वाली उंगली को 6 बार नीचे दबाते हैं, अन्य उँगलियों को नहीं ।

लेकिन अगर NNS 'Pan' लिखा हो तो दोनों पैरों की 'Pan' की उँगली यानि अंगूठे के पास वाली पहली उँगली को ही उपचार देना है। चाहे एक-एक करके दें या एक साथ दें।

- अगर मामूली-सी कब्जी हो तो निम्न क्रम से दें –
  Gas : Gas 'I' : Pan (बाया) : Pan (दाहिना) : Gal : Liv : Rt. Ov; Spl : Mu : Lt.Ov.
  फिर दुबारा Spl : Mu : Lt.Ov. दें।
  Rt. Ov. इसलिये नहीं देना क्योंकि वह ऐल्कली को कम करेगा, ऐसिड को बढ़ायेगा।
- एक और क्रम है जो पाचन को ठीक करने के लिये उपयोगी है –
  Pan (बाया) : Pan (दाहिना) : Gal : Liv : Gas : Gas 'I' : Gal : Liv

ध्यान दें

इन दोनों उपचारों को एक के बाद एक देने से पेट एवं आंतडियां ठीक होनी शुरू हो जायेंगी, जिससे पाचन शक्ति बढ़ जायेगी। पेट में हाइड्रोक्लोरिक ऐसिड ठीक से बनने लगेगा, प्रोटीन्स ठीक से पचने लगेंगे, जिससे ऐमीनो ऐसिड्स भी (amino acids) ठीक मात्रा में बनने लगेंगी।

इन के बाद नौरमल NAN / FAN उपचार करना चाहिये ताकि पाचन और अवशोषण ठीक होने के कारण सभी ग्रंथियों के raw materials ठीक से प्राप्त हों और वे ठीक से काम करें।

ONS एवं **NNS** में फर्क तथा उनके उपयोग

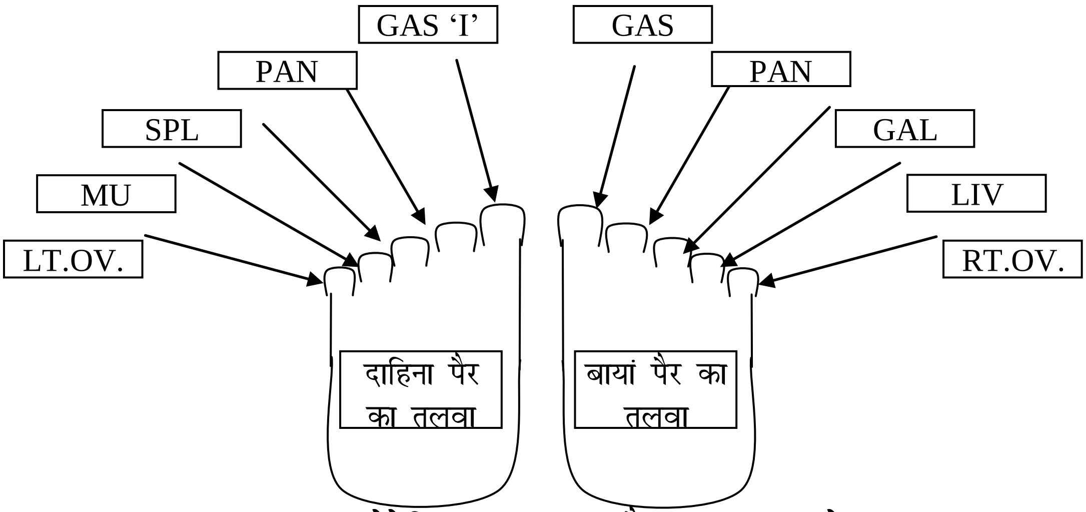
ONS एक आम उपचार है, जो पेट के सभी अंगों को एक ही समय में set करता है। प्रवास या अन्य कारणों से जब हल्का-सा नाभी upset हो तो यह अकेला ही शरीर को ठीक करने के लिये काफी है। लेकिन जब कोई एक खास अंग बिगड़ा हुआ हो तो उसे पूर्ण रूप से ठीक करने के लिये यह अकेला काफी नहीं है। पहले ONS दें फिर NNS देने से ज्यादा लाभ होगा।

ONS कैसे कार्य करता है यह समझने के लिये एक उदाहरण लीजिये – समझें कि हमारे पास एक थैली है जिसमें कई चीजों को tightly pack यानि ठोक के भरकर रखा गया है। लेकिन किसी प्रवास या हलचल के कारण अंदर की चीज थोड़े इधर-उधर हो चुकी हैं। अगर उनके अंदर ज्यादा उथल-पुथल न हुआ हो तो अगर हम थैली के कोने को पकडकर एक-आध बार हल्के-हल्के हिलायेंगे तो वही उन्हें अपनी-अपनी सही जगह में बिठाने के लिये काफी हो सकता है,। ONS का काम इसी प्रकार का है।

NNS द्वारा हम सूक्ष्म या महीन रूप से जिस अंग में गड़बड़ी हो उसे अकेले भी ठीक कर सकते हैं। और चाहे तो कई सारे अंगों को एक के बाद एक करके set कर सकते हैं। NNS का कार्य TV के remote control जैसा है जिससे हर एक चैनल (channel) को सूक्ष्म रूप से tune किया जा सकता है।

- -

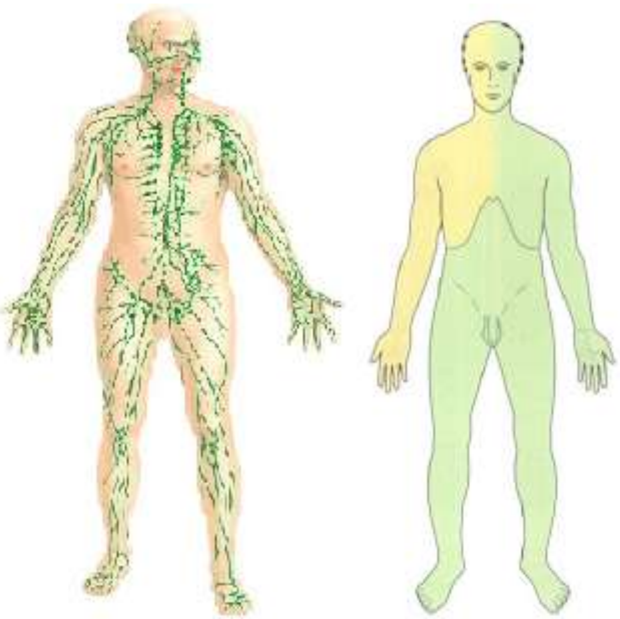
टो फिंगर उपचार में पैरों की उंगलियाँ किस प्वाइंट का दर्द कम करती हैं – उसकी जानकारी



थेरेपिस्ट इस बाजू बैठकर उपचार दें

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Maunish treatments



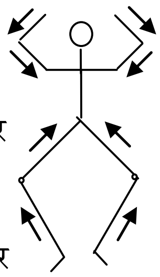
ये उपचार गुरुजी के एक पुराने छात्र श्री मौनिश व्यास जी द्वारा बनाये गये हैं। यह लिम्फ नोड्ज़ (lymph nodes) को उकसाने का एक सरल तरीका है। जब भी हाथ–पैर के किसी भी भाग में इन्फेक्शन हो या कोई मार लग जाये, तो कुछ ही देर में लिम्फ नोड्ज़ में अतीव दर्द के साथ सूजन भी हो सकता है। हाथ में समस्या हो तो कच्छ यानि armpits की जगह पर दर्द होगा, और अगर पैर में मार लगी हो तो groins (यानि जहां हम 'Pan' उपचार के लिये पैर रखते हैं,) उस भाग में दर्द होगा। जब तक उस जगह को ठीक न किया जाय तब तक उँगली या हाथ–पैर का दर्द भी ठीक नहीं होगा। इस उपचार से इस प्रकार के सूजन और दर्द से तुरन्त राहत मिलती है।

सारे शरीर के लिम्फ्स (lymphs) 24 घंटे में खाली दो–तीन लीटर ही वापस जाते हैं, जब कि 24 घन्टे में 12,000 लीटर रक्त हार्ट से बाहर निकलता है, और एक दिन में उतना ही रक्त हार्ट में वापस आता है। शरीर के भारी प्रोटीन्ज़, लिपिड्ज, तथा WBC's एवं lymphocytes, जो हमारे शरीर की रक्षात्मक फौज हैं, उन सभी चीजों को यही (lymph) उठाता है। यही कारण है कि इस का चलना बहुत ही धीमा होता है। अगर लिम्फ नोड्ज़ में कोई रुकावट आ जाये जिससे लिम्फ का चलना यानि उसकी गति एकदम रुक जाये तो मनुष्य चार दिन से अधिक जिन्दा नहीं रह सकता।



शरीर के दोनों बाजू के लिम्फ अलग–अलग नलिकाओं द्वारा हृदय के अंदर मिलते हैं। दांई तरफ का सिर या दिमाग, दांई तरफ का हार्ट, दांया फेफड़ा, दांया थोरैक्स (right thorax) तथा दांया हाथ के लिम्फ्स (lymphs) राइट लिम्फैटिक डक्ट (right lymphatic duct) द्वारा राइट सब्क्लेवियन (right subclavian vein) में जाते हैं। जब कि दोनों पांव, बांया हाथ, बांया दिमाग, बांया हार्ट, बांया फेफड़ा और बांया थोरैक्स के लिम्फ्स थोरासिक डक्ट (thoracic duct) द्वारा लेफ्ट सब्क्लेवियन (left subclavian vein) में जाते हैं। सो ऐसिड तथा ऐल्कली कम करने के लिये दो अलग क्रम बनाये गये हैं।

Mauneesh alkali treatment



रोगी को करवट लेकर बाद में सीधा लेटने को कहना है। दोनों हाथ इस तरह से रखने को कहना (जैसे चित्र में दिखाया गया है) फिर अपने हाथों के वजन से या अपने पांवों के वज़न से माँस–पेशियों को नीचे की ओर तथा अंदर से दबाते हुये उसकी दाहिनी हथेली से कंधे की तरफ उसके दाहिने armpits तक आधी इंच आधी इंच ऐसे आते जाईये। अंत में अपनी एढ़ी से उनके armpit के अंदर थोडा प्रेशर देकर दबाइये। ऐसे तीन बार करना।

फिर पेशंट को दाहिनी करवट पर घुटने को बाहर और पांव को अन्दर रखते हुए लेटने को कहें। अब आप पेशंट के दांये पैर पर – ऊपर के तरीके के अनुसार – अपने दोनों पैरों से आधी इंच आधी इंच करके चलते हुये एढ़ी से घुटने तक तथा घुटने से फेमुर (femur) के ऊपर से उसकी जांघ तक 3 बार जाना। इसी प्रकार पेशंट को बायी करवट पर लिटाकर उसके बांये पांव पर एढ़ी से जांघ तक दबाइये। अंत में इसी तरीके से उसके बांये हाथ को हथेली से armpits तक 3 बार दबाइये।

इस उपचार द्वारा अल्कली एवं रोगी की कड़कपन कम हो जायेगी और उसके मसल नर्म हो जायेंगी। CP, फिट्स एवं स्पैस्टीसिटी के रोगियों को यह उपचार लाभ देता है। याद रहे ऐल्कली कम करने का क्रम है – दांया हाथ, दांया पांव, बांया पांव, फिर आखिर में बांया हाथ।

Mauneesh acid treatment

ऊपर की तरह ही करना, लेकिन इस में पहले दांया पांव, बांया पांव, बांया हाथ फिर आखिर में दांया हाथ लेना है तो रोगी की acid की मात्रा कम हो जायेगी

-- - - - - - - - - - - - - - - --

फोल्डेड लेग्ज़ **(Folded legs treatment)**

इस उपचार से पेशाब की थैली, यूटेरस इत्यादि पर दबाव आने से रक्त का बहाव किडनीज़ में बहुत बढ़ जाता है, और जिससे Liv^0 - Mu^0 का दर्द निकल जाता है, यानि किडनीज़ काफी साफ हो जाती हैं और अच्छी तरह से काम करना शुरू कर देती हैं, जिसका मतलब यह कि अब वे रक्त को और अच्छी तरह से अधिक साफ करेंगी और अधिक मात्रा से रक्त में बढ़े अनचाहे कैमीकल्स को बाहर निकाल देंगी और जो कैमीकल कम है उसे नहीं निकलने देंगी। इस प्रकार से शरीर को इस उपचार से काफी लाभ होगा, शक्ति बढ़ेगी एवं कार्य करने की क्षमता बढ़ेगी और रोगी स्वस्थ महसूस करने लगेगा।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

Raman treatment - द्वारा हम पेरीटीनियम को उकसाते हैं –

यह एक रामबाण ट्रीट्मेंट है जो कि शरीर की कई दर्दों को समाप्त करने की क्षमता रखता है। यह यूट्रस और टैस्टीस की सभी प्रोब्लेम में उपयोगी है।

पहले सोचा जाता था कि रामन ट्रीट्मेंट उनको नहीं देना जिनकी ऐल्कली बढ़ी हुयी हो, लेकिन अब इस सोच में कुछ बदल आयी है।

अब देखा गया है कि राईट रामन खाली Rt. Raman Only देकर दाहिने कंधे से लेकर दाहिने हाथ की उँगलियों तक, दाहिनी छाती, माथे के दाहिने भाग इत्यादि दाहिनी साईड की दर्दों को समाप्त किया जा सकता है। ये सभी दर्दें अक्सर ऐल्कली बढ़ने से आते हैं।

जब कि लेफ्ट रामन Lt. Raman से लैफ्ट साईड की दर्दें, या लैफ्ट हाथ की 4^{th} यानि चौथी उंगली की दर्दों को भी समाप्त किया जा सकता है। ये सभी दर्दें अक्सर ऐसिड बढ़ने से आते हैं।

-- - - - - - - - - - - - - - - - - --

रामन ट्रीट्मेंट के पहले (4) Medulla Clockwise T1/T2 जोड़ने से निम्न भागों पर असर करता है–

- सरवाइकल (cervical) के nerves – C1 से C8 तक के सभी nerves
- माथा,
- शोल्डर यानि कंधों (shoulder),
- भुजायें (arms), कोहनी (elbows),
- कलाई (wrists),
- हाथों के उँगलियाँ – इन सारे अंगों के दर्दों के लिये यह अच्छा है।
- थौरासिक (thoracic) के nerves –T1 से T12 तक के सभी nerves
- इससे चेस्ट (chest) के दोनों sides की दर्दें,
- माइट्रल वाल्व (mitral valve) की दर्द,
- स्प्लीन (spleen) की दर्द,
- लंग्ज़ (lungs) एवं हार्ट (heart) इत्यादि के प्रोब्लेम में
- डायाफराम (diaphragm) का ऊपरी भाग में भी यह लाभदायक है। इसलिये इसे हम हिचकी (hiccups) बन्द करने के लिये,
- हायटस हरनीया (hiatus hernia) – इन दोनों के लिये भी use कर सकते हैं।
- लडकों में जब टैस्टीस नीचे उतरते नहीं – उसे cryptorchidism कहते हैं। उस के लिये भी यह उपचार काफी लाभदायक सिद्ध हुआ है।

हमारे तिरुप्पूर LMNT सेन्टर में Osteo arthritis of Knee के कारण एक 45 साल की औरत घुटने के दर्द से बहुत ही परेशान थीं। एक साइड से दूसरी साइड हिलते-हिलते ही चल पाती थीं। अन्य उपचारों से जब खास लाभ न मिला तो उन्हें (6) Raman x 6 treatments – दिया गया तो उपचार के तुरन्त बाद ही उनकी चाल सुधर गयी। और कुछ ही दिनों में वे ठीक हो गयीं

Feather Touch treatment

सन् 2007 की बात है – एक बार गुरुजी दिल्ली में गंगाराम अस्पताल (Sir Gangaram Hospital) में कुछ खास पेशंटों को देखने के बाद वापसी के लिये airport के गेट पर खडे थे। उस समय एक वृद्ध महिला को पहियेवाली कुर्सी में बिठाकर लाया गया जो दर्दों के कारण एक कदम भी चल नहीं सकती थी । वक्त कम था, लेकिन गुरुजी के मन में अपार करुणा थी। वे चाहते थे कि किसी तरह उस औरत की पीड़ा कम हो। तो सान्त्वना के शब्द कहते हुये उन्होंने बहुत ही नरम उँगलियों से उनकी गाल पर एक बार ऊपर से नीचे की ओर अपनी हथेली फेरा। तो तुरन्त ही महिला ने चकित होकर कहा "यकीन तो नहीं हो रहा है पर लग रहा है कि मेरा दर्द कुछ कम हुआ है ! कृपया और एक बार ऐसे ही कीजिये ना ! तो गुरुजी ने एक और बार उनके गाल पर हाथ फेरा तो मानो चमत्कार ही हो गया ! वह महिला कुर्सी से धीरे से उठकर खड़ी हुयीं और उन्होंने कहा कि अब तो मेरा दर्द ना के बराबर है !! देखनेवाले तो हैरान थे ही, एवं गुरुजी को भी आश्चर्य हुआ कि यह हुआ कैसे ?!?

उसके बाद अनेक पेशंटों पर यह उपचार भिन्न तरीकों से प्रयोग किया गया और हर बार सफलता प्राप्त हुयी। फिर कई महीनों के गहन अध्ययन और अनुसंधान के बाद गुरुजी ने जो इस उपचार के बारे में खोज की उसके बारे में उन्हीं के शब्दों में सुनिये कि इस का राज क्या है :-

" पुराने जमाने में या आज भी कई मस्जिदों में मुल्लां जी मोर पंख से बना हुआ पंखों का गुच्छ आनेवाले रोगियों को लगाते हैं जिससे उनको लाभ भी होता है। इस उपचार में हमारा स्पर्श भी इतना हल्का होता है, इसीलिये हमने इसका नाम फेदेर टच्च feather touch रखा है। आज की तारीख में यह उपचार बहुत ही ज्यादा लाभकर है। अब यह शरीर में किस तरह से लाभ पहुँचाता है यह समझें-

मस्सल (muscle) या ग्रंथी को उकसाने के बहुत से तरीके हैं – इन में से मैंने एक को चुना है जिसका नाम है – इम्पल्स (impulse). इम्पल्स की स्पीड 600 km. प्रति घन्टा है जिस के हिसाब से एक मिनट में दस किलो मीटर या 6 सेकंड में एक किलो मीटर एवं एक सेकंड के सौवे हिस्से में यह 1.60 मीटर प्रवाह करेगी। एक आम मनुष्य के सिर से पैर तक की लंबाई 1.6 मीटर के आसपास ही है। जब हम माथे पर या चेहरे पर हाथ फेरते हैं तो जो इंपल्स (impulse) निकलेगी वह $^{1}/_{100}$ सेकंड में पैर तक पहुँच जायेगी।

यही कारण है कि हमारा किसी जगह को बहुत ही नर्म तरीके से शरीर के पीठ वाले भाग या चमड़ी को पाउडर लगाकर हाथ की उँगली के अग्र भाग से स्पर्श करने से शरीर के सारे रोंगटे खडे हो जाते हैं। जिसका मतलब है कि अंदर की कैपीलरीज़ (capillaries) तक रक्त बहाव को बढ़ाया है। कम से कम तीन बार ऐसा करने से चमड़ी से हड्डियों तक अन्दर के सब मस्सल्ज़ को यह ठीक प्रकार से उकसा देते हैं, जिस से चाहे कोई ग्रंथी हो जो ठीक प्रकार से काम नहीं कर रही हो या कोई मस्सल में दर्द हो सब ठीक हो जायेगा। ऐसा पाया गया है कि उन में किसी प्रकार का दोष नहीं रहेगा।

उपचार का तरीका

चिकित्सा लेनेवाले को एक stool पर बिठायें या चाहे वे खड़े भी रह सकते हैं। उनके माथे और चेहरे पर पाउडर लगा दें। पहले आप रोगी के चेहरे के सामने खड़े हों।

- माथा से शुरू करना और उसे ऊपर से नीचे की ओर एवं पीछे से आगे की ओर सभी दिशाओं से सहलाना ताकि कोई भी जगह छूट न जाये।
- फिर आँखों के ऊपर से दोनों साइड की ओर,
- नाक के ऊपर,
- होंठों के ऊपर,
- ठोढ़ी के ऊपर,
- कान के नीचे से ठोढ़ी के सामने वाले भाग तक,
- फिर गर्दन के पीछे से आगे की ओर तक – हर एक जगह पर तीन-तीन बार उँगलियों की छोरों से इस तरह नरमी से सहलाना कि पाउडर न मिटे।

इसके बाद अपनी उँगलियों को दोनों कंधों से हाथों की उँगलियों तक ले जाना है। इस समय ध्यान रहे कि पेशंट के दोनों हाथ एकदम ढ़ीली एवं रिलॅक्स (relax) हों, हथेलियां अंदर की तरफ हों और उँगलियाँ भी बिल्कुल ढ़ीली रहें। अगर रोगी ने हाथ की उँगलियाँ सीधी रखी हैं तो वे रिलॅक्स नहीं रहेंगी और उपचार का पूरा लाभ नहीं होगा।

इसके बाद छाती पर, पेट पर, armpits यानि दोनों बगलों के अंदर और सारी पीठ पर पाउडर लगाना। रोगी की पीठ की तरफ खड़े रहकर आगे से पीछे की तरफ दोनों हाथों की उँगलियों से सहलाना। (ध्यान रहे अगर रोगी को इन्फ्लमेशन की बीमारी है तो छाती पर का थाइमस ग्लैंड और पीठ पर T1 से T6 तक के भाग को नहीं सहलाना, नहीं तो थाइमस के उकसाये जाने से रोगी को नुकसान हो सकता है।)

फिर बगल के बीच से कमर तक ऊपर की त्वचा को उकसाना, नाभी के निचले भाग से कमर के मध्य भाग तक सहलाना। फिर बाहर की तरफ से पेल्विक बोन pelvic bone से नीचे फीमर femur के नीचे तक ले जाना, दोनों टा़गों को चौड़ा करना, फिर दोनों फीमर से धीरे-धीरे पांव की एढ़ियों तक ले जाना, फिर रोगी को कुर्सी पर बिठाकर उसकी पांव की एढ़ी के नीचे एक उल्टा गिलास रखकर उस गिलास के ऊपर एक पांव की एढ़ी को रखना। और उसके calf muscle से पांव के ऊपर और फिर एढ़ी से पांव के नीचे भाग उँगलियों तक सहलाना। इसी प्रकार से दूसरे पांव का उपचार करने से रोगी को बहुत अच्छा लगेगा।

ध्यान रहे इस उपचार से पहले और बाद में जो अन्य उपचार जरूरी है उन्हें भी करें - जैसे कमर दर्द हो तो bending forward और standing point भी देना जरूरी है इत्यादि। "

Complement System formula

I Endorphin - for pain दर्द के एहसास को कम करने के लिये
II Ptyalin - for saliva - पाचन संस्थान के लिये
III (3) Raman - for peritoneum - सभी अंगों को ठीक से काम करने के लिये
IV Subclavian - for cleaning lymph channel -
+ Mukha Dhauti - for releasing carbonic acid from joints

जोड़ों में कारबोनिक ऐसिड जमने के कारण जो दर्द आता है उसे कम करने के लिये

V (1) Thymus VI (1) Lymph VII (1) Ton 'T'
इम्यूनिटी को बढ़ाने के लिये

VIII (½) Ku – 20 secs - neutrophils
IX (½) Ku – 13 secs - eosinophils
X (½) Ku – 6 secs - basophils
XI (½) Ku – 3 secs - mast cells

ऊपर के चारों ही इन्फ्लमेशन या इन्फेक्शन - दोनों के प्रभावों को कम करते हैं

XII New CNNS 'Gal - Liv' x 2 treatments - for infection and digestion
XIII CNNS - Pan: Pan : Gal : Liv : Gas : Gas : Gal : Liv
XIV (6) Adr – for inflammation

New UDF formula के बाद Complement System देने से वह प्रायः सभी पुरानी बीमारियों के लिये लाभदायक है। अगर मरीज को डायाबीटीस या कोई भी अन्य ऑटो इम्यून डिसार्डर हो तो ऊपर के उपचार में V, VI एवं VII नहीं देना।

Subclavian treatment

यह एक नया ट्रीट्मेंट है जो कि subclavian veins - जो गर्दन के दोनों बाजुओं में हैं - उनके द्वारा शरीर के लिम्फ्स (lymphs) यानि लिम्फैटिक सिस्टम (lymphatic system) को उकसाने के लिये दिया जाता है। रक्त की रफ्तार इतनी तेज है कि चौबीस घंटों में 12,000 लीटर रक्त हार्ट द्वारा पंप किया जाता है जब कि लिम्फ्स द्वारा

शरीर की भारी प्रोटीन्स और फैट्स ले जाने के कारण वह इतनी धीमी गति से चलता है कि एक दिन में खाली दो से तीन लीटर लिम्फ ही ह्रदय के अंदर से गुजरता है।

Fetal stage यानि मां के गर्भ के बच्चे में लिवर और स्प्लीन के साथ-साथ लिम्फ नोड्ज़ (lymph nodes) भी कुछ रक्त बनाते हैं। लिम्फ नोड्ज़ में निम्न सैल्स होते हैं -

- इन्टरल्यूकिन नंबर दो Interleukin #2 – ये टी-हैल्पर सैल्स बनाते हैं
- नैचुरल किलर सैल्स Natural killer cells
- गामा ग्लोबूलिन - जो प्लास्मा सैल्स बनाते हैं, जिनका मौलिकुलर वेट molecular weight डेढ़ लाख से नौ लाख तक है। ये जितनी भारी होते हैं, उतनी ही उनकी कीटाणुओं को खत्म करने की क्षमता बढ़ती है।

ये तीनों सैल्स इतनी शक्तिशाली हैं कि ये कैन्सर के सैल्स को भी समाप्त कर सकते हैं, और ये हर प्रकार के इन्फेक्शन को समाप्त कर सकते हैं। जैसे कि ऊपर कहा गया है, पेरीटोनियम ऐब्डोमन की प्रायः सभी ग्रंथियों को चारों बाजू से कवर cover यानि ढक कर कर रखा है, सिवाय पैंक्रियास, स्प्लीन और किडनीज़ को आगे से कवर किया है। और यह पेरीटोनियम एक ग्रंथी के इन्फेक्शन दुसरे में न फैले इसलिये उस infectious material यानि कीटाणुओं से भरी चीज़ को लिम्फ्स में डाल देता है जिस में ऊपर कहे गये तीनों सैल्स द्वारा इन्फेक्शन को समाप्त कर दिया जाता है।

Subclavian treatment उपचार देने की विधि

पहले रोगी की दोनों हाथों की अनामिका उंगली यानि चौथी उंगली को चैक करना चाहिये। अगर दोनों में दर्द हो तो सबक्लेवियन का उपचार दिया जा सकता है। और यह उपचार दो बार देने के बाद उन उँगलियों की दर्द निकल जानी चाहिये। और उन उँगलियों के दर्दों के साथ-साथ फोलिक ऐसिड, विटामिन B_{12}, Liv^0-Mu^0 इत्यादि के दर्दें भी निकल जानी चाहिये। और अगर ऐसा नहीं होता तो समझना चाहिये कि ये सब दर्दें रामन उपचार से निकल जानी चाहिये। और रामन उपचार से घुटनों की दर्दें, स्लिप डिस्क (slipped disc) की दर्दें, कमर की दर्दें इत्यादि सब निकल जायेंगी।

ध्यान दीजियेगा कि दोनों तरफ के सबक्लेवियन वेन्स एक-जैसे नहीं हैं। दांई तरफ की वेन (vein) बांयी तरफ की सबक्लेवियन वेन से पतली है यानि गोलाई में छोटी है। यह इसलिये कि दोनों तरफ के वेन्स में लिम्फ्स का समान प्रवाह नहीं है जैसे कि नीचे से पता चलेगा -

बांई तरफ की सबक्लेवियन वेन में	दांई तरफ की सबक्लेवियन वेन में
बांई ब्रेन की लिम्फ्स	दांई ब्रेन की लिम्फ्स
बांई छाती तथा लंग्ज़ की लिम्फ्स	दांई छाती तथा लंग्ज़ की लिम्फ्स
बांई तरफ के हार्ट की लिम्फ्स	दांई तरफ के हार्ट की लिम्फ्स
बांयें हाथ के लिम्फ्स	दांयें हाथ के लिम्फ्स
दोनों टांगों के लिम्फ्स	-
ऐब्डोमन के सभी औरगन्ज़ के लिम्फ्स	-

ध्यान रहे यह पता करने का विषय है कि ऐसा करने का क्या लाभ है कि लिम्फ्स के खाली एक चौथाई भाग ही दायीं तरफ की सबक्लेवियन नर्व में जाते हैं।

गुरुजी के **LMNT** के अपने ओरिजिनल लौजिक से बनाये गये फौरमुले

- NAN,
- FAN,
- LSTF,
- Chole,
- ATF,
- ALTF,
- APR,
- VTF,
- सभी Genes formulae,
- Vater,
- Multi vitamin formulae,
- Oxygen formula,
- Oxygen hormonal formula etc

फिज़ियॉलोजी के तथ्यों को अभ्यास करके उनके आधार पर बनाये गये फौरमुले

- P. Heparin,
- 1,25 DCC,
- angiotensin #2,
- estrogen,
- progesterone,
- angina treatment,
- hypothyroidism का उपचार,
- HCl एवं सभी
- UDF फारमुले इत्यादि

निम्न उपचारों को कुदरती देन कहेंगे –

- सभी मेडूला उपचार
- Lactic acid
- (6) Adr
- Left तथा Right Swt
- Thymus Chest,
- Formula 4
- (2) Para
- (4) Para
- Old Star एवं
- New Star treatments

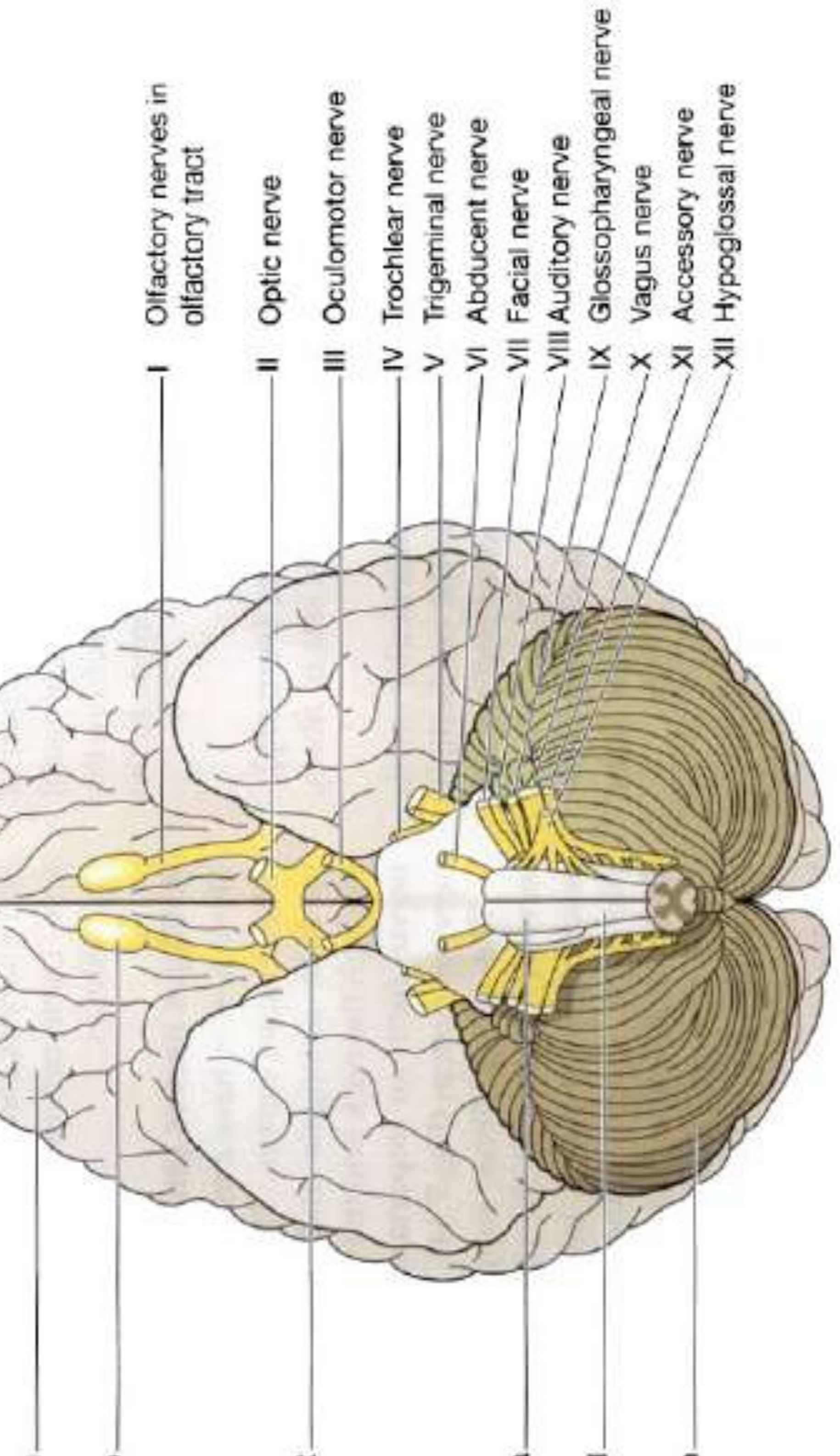


Figure 7.40 The inferior surface of the brain showing the cranial nerves.

Cranial nerves – क्रेनियल नर्व – ये बारह जोडी हैं जो ब्रेन से निकलकर अलग–अलग जगह जाते हैं। इनके बारे में चित्र देखिये Cranial nerves (Taber's 18th edn.p 457, 2170)

ध्यान रहे हर क्रेनियल नर्व दो हैं – एक दांई दूसरी बांई।

गुरुजी की गजब की खोज है जो medical science के लिये अविश्वसनीय लग सकता है, और वह यह है कि हर क्रैनियल नर्व को हम उसी नंबर के ' मेडूला ट्रीट्मेंट ' द्वारा उकसा सकते हैं।
इतना ही नहीं, एक और अनुपम खोज है कि दायीं और बायीं मेडूला ट्रीट्मेंट अलग–अलग काम करते हैं।

Left Medulla ट्रीट्मेंट – acid बढ़ाता है और right medulla ट्रीट्मेंट alkali बढ़ाता है। यानि Left Medulla देने से शरीर में acidosis के असर दिखते हैं। एवं Right Medulla treatment ठीक उल्टा है (Swt ऐड्रीनल मैडूला को उकसाता है, जब कि Medulla treatment ब्रेन को उकसाता है)

साथ ही गुरुजी ने एक अवलोकन प्रस्तुत किया है कि Left Medulla के साथ जब Left Swt देंगे तो उससे sphincter या arteries खुल जायेंगे या फैल जायेंगे, जब कि Right Medulla एवं Right Swt देंगे तो sphincter या arteries संकीर्ण हो जायेंगे या सिकोड जायेंगे।

इसके कुछ उदाहरण इधर दिये गये हैं –

- मुंबई के Sri. Prakash Verma नामक पेशंट को cardiac sphincter सिकुड गया था, जिसे कुछ साल पहले ओपरेशन किया गया फिर भी ठीक नहीं हुआ। जब वे गुरुजी से मिले तब उन्हें एक अत्यन्त छोटा नवाला निगलने में भी बहुत ही तकलीफ होती थी जिससे खाने का मजा ही चला जाता था। गुरुजी ने उन्हें – (15) Left Medulla (6) Left Swt x 3 treatments दिया
  तो उसी शाम को उन्होंने गुरुजी को फोन पर बताया कि कई बरसों बाद वे ठीक से खाना पाये।

- बांद्रा क्लिनिक में एक औरत आई जिसे varicose veins के कारण दोनों पैरों में सूजन थी। गुरुजी ने arteries को सिकोडने के लिये (15) Right Medulla (6) Right Swt x 3 treatments दिलाया तो गजब की बात है कि तुरन्त ही उसके पैरों की सूजन निकल गयी !

- मध्य प्रदेश के एक camp में साठ साल के औरत ने कहा कि उन्हें पेशाब करते समय बहुत दर्द होता था। गुरुजी ने – बगैर किसी test report के ही – सही और ऊमदा अंदाज लगाया कि उनकी इस तकलीफ का कारण है – urinary sphincter का opening बहुत ही संकीर्ण होना। अपने तथ्य के समर्थन में उन्होंने उस औरत से पूछा कि क्या आपको धार इतनी तेजी से और जोर से आती है कि पेशाब सामने के दीवार पर जा टकराती है ? तो उस औरत ने कहा कि हाँ ऐसा ही होता है। उन्हें (15) Left Medulla (6) Lt. Swt x 3 treatments दिया गया। कुछ देर बाद उन्होंने पेशाब किया तो उनकी तकलीफ बहुत ही कम हो चुकी थी। और दो दिन के ट्रीट्मेंट के बाद ही उन्हें पूरा आराम मिला।

- मैसूर के एक camp में श्री विजय शाह नामक पेशंट को ४ साल से esophageal stenosis था जिसके कारण खाना तो दूर, एक घूंट पानी निगलने में भी उन्हें बहुत समय लगता था। उन्हें
  (15) Left Medulla (6) Left Swt x 3 treatments दिया गया और उन्होंने तुरन्त ही पानी पीकर कहा कि अब आराम है। उसी रात को भी भोजन के समय भी उन्हें आराम रहा। दूसरे दिन उन्हें निम्न ट्रीट्मेंट दिया गया जिससे वे पूरे ही ठीक हो गये –
  { I (15) Left Medulla II (10) Left Medulla III (6) Lt. Swt } x 3 treatments
  इतना ही नहीं, चार महीने बाद सेप्टेंबर महीने में फोन पर पूछने पर उन्होंने बताया कि उन्हें खाना निगलने में कोई दिक्कत नहीं थी।

- बांद्रा के Sri. Rohinton नामक पेशंट के आँखों का परदा (sclera) पूरा ही सफेद था और उसे एक दम दिखता नहीं था। वे कुछ सालों से LMNT के उपचार ले रहे थे। उन्हें पेट set करने के अन्य उपचारों के साथ (2) Medulla x 12 treatments + Brodmann's area 17 & 18 घिसाई दिया गया।
  कुछ महीनों के बाद उसके आँखों की सफेदी कम हो चुकी थी और उसे हल्का-सा थोडा बहुत धुंधला दिखने लगा। उसका उपचार अब भी जारी है।

- (2) Medulla x 6 treatments देने से जिन बच्चों को cerebellum की गडबडियों की बीमारियाँ हैं, उन्हें बहुत लाभ देखा गया है। तथा इस ट्रीट्मेंट से पारकिन्सन के पेशंटों को काफी आराम पहुँचा है। देश भर के LMNT उपचार केन्द्रों मे कई पेशंटों के ऊपर इसका असर एक-जैसा ही देखा गया है। जिससे यह अनुमान लगाया जाता है कि यह उपचार 2nd क्रेनियल नर्व जैसा ही कार्य करता है एवं रेटीना के न्यूरौन्स को उकसाता है, जो GABA, acetylcholine, dopamine इत्यादि neuro-transmitters बनाते हैं।[19]

  ब्रेन का सारा कार्य क्रेनियल नर्वस द्वारा ही होते हैं। देश भर में चल रहे कई सारे LMNT सेंटरों में से थेरेपिस्ट द्वारा कहे गये कुछ ही उदाहरण ऊपर दिये गये हैं। तो क्या हम यह कह नहीं सकते कि मेडूला ट्रीट्मेंट द्वारा ब्रेन के कई बीमारियों को हम ठीक कर सकते है ?

कुछ खास बातें

- क्रैनियल नर्व number 2, 5 और 10 बहुत लम्बे नर्वस हैं। उचित मेडूला उपचार से इन्हें उकसाकर ब्रेन के कई फंक्शन्स पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- (2) Medulla x 6 treatments – Rheumatoid arthritis के पेशंटों के लिये भी अच्छा है।
- Retinitis pigmentosa के लिये निम्न उपचार बहुत अच्छा है –
  I (2) Medulla x 12 II (3) Necklace III Formula Number Four
- (2) Medulla x 12 treatments देने के बाद बांद्रा क्लिनिक के एक पेशंट पर निम्न असर देखा गया –
  'Pan' का दर्द एवं छाती में nipples के 45º ऊपर के सारे दर्दें एक ही ट्रीट्मेंट के बाद निकल गये (यह दर्द हृदय के माइट्रल वाल्व के प्रोब्लेम में अक्सर पाया जाता है)।
- बांद्रा clinic में MS (multiple sclerosis) के एक पेशंट को डबल यानि दो-दो दिखता था।
  उन्हें (3) Medulla x 3 treatments देने से कुछ दिनों के ट्रीट्मेंट के बाद से साफ दिखनेलगा यानि डबल दिखना बन्द हो गया।
- पाँच नंबर के क्रैनियल नर्व का कार्य है कि bolus यानि नवाले को आगे से पीछे की ओर ले जाना जब कि epiglottis को बन्द करने का कार्य नौ नंबर के क्रैनियल नर्व का है।
- पाँच नंबर का नर्व ब्रेन से जीभ को स्वाद का संदेश ले जाता है, जब कि सात नंबर का नर्व जीभ से ब्रेन को संदेश ले जाता है। सो स्वाद सम्बन्धी प्रोब्लेम के लिये हमें (5) Medulla तथा (7) Medulla दोनों को उकसाना है।
- क्रेनियल नर्व 5, 9, 10, 11, 12 मिलकर भोजन को निगलने के कार्य की देखभाल करते हैं
- **Larynx** एवं **pharynx** को क्रेनियल नर्व 10 एवं 11 नंबर दोनों ही कंट्रोल करते हैं। जब कि **pharynx** को क्रेनियल 9 भी कंट्रोल करता है। (R&W 9th edn. p. 169)
  ये दोनों अंग भोजन को निगलने के लिये तथा आवाज सही आने के लिये जरूरी हैं।
- निगलने की तकलीफ के साथ स्वाद न आये तो वह (9) Medulla से ठीक होगा।
- लेकिन अगर निगलने की तकलीफ के साथ आवाज भारी हो तो वह (10) Medulla से ठीक होगा।
- उल्टीयें लाने के कार्य को क्रेनियल नर्व 5, 7, 9, 10 और 12 करते हैं।[20]

---

19 (Retina releases acetylcholine, dopamine, GABA & indolamine - Guyton 10th ed. p 586)
20 Motor impulses that cause vomiting are transmitted through 5th, 7th, 9th, 10th & 12th cranial nerves to the upper GIT ……………(Guyton 10th ed. p 768)

क्रेनियल नर्व के सभी मेडूला ट्रीट्मेंट के पहले **(15) Medulla** देना बेहतर है।

नाक और श्वसन के प्रोब्लेम के मेडूला उपचार

अगर नाक बन्द न हो, लेकिन नाक से वास या गन्ध या खुशबू का पता नहीं लग रहा हो उसे Loss of smell (*anosmia*) कहते हैं। और उसका कारण है – एक नंबर के क्रैनियल नर्व का काम न करना।

पिछले साल गुरुजी दिल्ली में INO के एक conference में भाग ले रहे थे जिसमें alternative medicine के (नैचुरोपॅथी इत्यादि) करीब 700 doctors आये हुये थे। Conference के दौरान गुरुजी ने पूछा कि क्या ऐसा कोई व्यक्ति है जिसे सूंघने पर गन्ध या वास का पता नहीं चल रहा हो। तो उनमें से तीन लोगों ने कहा कि उन्हें यह प्रोब्लेम है। उन्होंने उस पर गौर नहीं किया था, क्योंकि उन्हें उससे कोई तकलीफ नहीं थी। तो उन तीनों को *भरी सभा में सब के सामने ही* निम्न ट्रीट्मेंट दिया गया – **(1) Medulla x 3 treatments**
यह ट्रीट्मेंट देते ही उन तीनों ने अचरज के साथ सभा को बताया कि उन्हें तुरन्त ही एक साबुन की खुशबू का एहसास होने लगा जब कि यह प्रोब्लेम उन्हें कई सालों से था।[21]

नाक या नीचे लिखे अंगों के प्रोब्लेम के लिये

नाक जहाँ से शुरू होती है root of the nose (supratrochlear nerve V^1)	(5) Medulla
नाक के म्यूकस मैम्ब्रेन	(5) Medulla
नाक की त्वचा (Nasociliary sensory nerve V^1)	(5) Medulla
नाक तथा फैरिंक्स (pharynx) के संवेदना के (visceral sensory nerve^4) के प्रोब्लेम के लिये	(7) Medulla
साँस की तकलीफ है तो – श्वसन क्रिया को बढ़ाने के लिये – औक्सीजैन की कमी होने पर carotid bodies के chemoreceptors द्वारा (Guyton 10th ed. p 478)	(9) Medulla
साँस की तकलीफ जब अत्यधिक हो तो श्वास के accessory muscles यानि sternocleidomastoid muscles का उपयोग करना है। (R&W 9th edn. p. 257)	(11) Medulla
साइनस के प्रोब्लेम Maxillary sinus – (maxillary general sensory nerve V^2)	(5) Medulla

ऊपर के सभी ट्रीट्मेंट 1½ मिनट के अंतर में तीन बार देना है – यानि
(5) Medulla x 3 treatments (7) Medulla x 3 treatments इत्यादि :

आँखों के मसल्स के प्रोब्लेम और उनके मेडूला उपचार (R&W 9th edn. p. 204)

पुतलियों को अन्दर की ओर घुमाना (Medial rectus muscle)	(3) Medulla
पुतलियों को ऊपर की ओर घुमाना (Superior rectus muscle)	(3) Medulla
पुतलियों को नीचे की ओर घुमाना (Inferior rectus muscle)	(3) Medulla
पुतलियों को नीचे और बाहर की ओर घुमाना (Superior oblique muscle)	(4) Medulla
पुतलियों को ऊपर और बाहर की ओर घुमाना (Inferior oblique muscle)	(6) Medulla
पुतलियों को बाहर की ओर घुमाना (Lateral rectus muscle)	(6) Medulla

21 ट्रीट्मेंट के बाद भी वही साबुन का उपयोग किया गया जिसे ट्रीट्मेंट से पहले सूंघा गया।

आँखों के अन्य प्रोब्लेम और उनके मेडूला उपचार

अंधापन के लिये – किसी भी प्रकार का	(2) Medulla
आँसू का बहाव बढ़ाने	(7) Medulla
आँसू की ग्रंथियाँ – लैक्रीमल ग्लैंड्स (visceral motor nerve)	(7) Medulla
आँसू की ग्रंथियाँ का लैक्रीमल नर्व (ophthalmic division) (Taber's 18th edn.p 2163)	(5) Medulla
आँसू की ग्रंथियाँ की थैली(lachrymal sac) (infratrochlear sensory nerve V^1)	(5) Medulla
आँखों का बन्द रहना	(3) Medulla
दर्द का आना या संवेदना का न रहना	(5) Medulla
कौन्जन्क्टीवाइटिस (conjunctivitis) (6) Adr x 3 treatments भी देना है।	(5) Medulla
कौरनिया (Cornea) या कौन्जन्क्टीवा (conjunctiva) के प्रोब्लेम	(5) Medulla
कम दिखना या न दिखना	(2) Medulla
लाल होना और पानी निकलते ही रहना – (6) Adr भी देना है	(5) Medulla
लेन्स (lens) के adjustment में प्रोब्लेम	(3) Medulla
माँस–पेशियाँ द्वारा आँखों के (iris) के ciliary muscles को constrict कराना जिससे विभिन्न प्रकार की रौशनी के लिये लेन्स (lens) को adjust किया जाता है	(3) Medulla
पुतली का बाहर की तरफ मुड जाना – जैसा कि स्क्विंट (squint) यानि बेंगापन में होता है	(3) Medulla
पुतली का फैल जाना (dilation of pupil) जिसके कारण डबल दिखना	(3) Medulla
पुतली का ऊपर और बाहर की तरफ टेढ़ा हो जाना जिस के कारण डबल दिखना	(6) Medulla
पुतली यानि आँख के ball का नीचे और बाहर की तरफ रहना जिसके कारण डबल दिखना	(4) Medulla
पलकों के प्रोब्लेम (ophthalmic general sensory nerve V^1)	(5) Medulla
पलकों का नीचे गिरा रहना जिसे Drooping of eyelids या ptosis कहते हैं	(3) Medulla
पलकों को ठीक से बन्द नहीं कर पाना (Bell's palsy)	(7) Medulla
रेटीना के न्यूरौन्स के प्रोब्लेम (Guyton 10th ed. p 586)	(2) Medulla
साइनस (frontal sinus)के प्रोब्लेम के लिये (Supraorbital nerve V^1)	(5) Medulla

कान सम्बन्धी प्रोब्लेम और उनके मेडूला उपचार

कान का अन्दरूनी या बाहरूनी हिस्सा के संवेदनायें (Mandibular Nerve V^3)	(5) Medulla
आवाज या श्रवणेंद्रिय द्वार (acoustic meatus)	(5) Medulla
बहरापन (hearing area of cerebrum)	(8) Medulla
कान के अन्दर semicircular canals की गडबडी के कारण vertigo यानि चक्कर आना	(8) Medulla
कान के अन्दर का spiral Organ of Corti को उकसाने	(8) Medulla
कान के सभी प्रोब्लेम के लिये	(8) Medulla
कान का बाहरी हिस्सा	(5) Medulla
कान का बाहरी भाग (auricle), सुनना (acoustic) तथा dura mater के पिछले हिस्से के cranial fossa से ब्रेन को संवेदना पहुँचाने (general sensory 5th branch of Vagus)	(10) Medulla
कान में इन्फ्लमेशन – (6) Adr भी देना है	(8) Medulla
कान middle ear, Eustachian tube से सम्बन्धित (tympanic sensory nerve)	(9) Medulla
कानों में घन्टियों का बजना (Otitis Media)	(8) Medulla
मध्य कर्ण के प्रोब्लेम (stapedial motor nerve)	(7) Medulla

ब्रेन या माथा सम्बन्धी प्रोब्लेम और उनके मेडूला उपचार

सिर दर्द माइग्रेन (migraine) के लिये	(5) Medulla
सिर के ऊपरी हिस्सा के त्वचा	(5) Medulla
Ataxia (Cerebellar ataxia) (Serotonin पैरों को उकसाने के लिये जरूरी है)	(2) Medulla, (8) Medulla
ब्रेन – सामने से पीछे तक	(2) Medulla
balance या posture बिगडना कान या आँखों के प्रोब्लेम के कारण [22] (vestibular sensory nerve)	(2) Medulla, (8) Medulla
बेसल गैंग्लीया के प्रोब्लेम	(2) Medulla, (12) Medulla
Cerebellum (Vestibulocochlear nerve) [23]	(8) Medulla
Cerebellum के प्रोब्लेम	(2) Medulla, (8) Medulla
Cerebral cortex के temporal lobe	(8) Medulla
चक्कर का आना या उसके कारण जी मिचलाना और उल्टियों का आना	(8) Medulla
Dopamine, acetylcholine, GABA (retinal neurons)	(2) Medulla
dura mater तक maxillary sensory nerve जाती है	(5) Medulla
Fits जो नींद में आते हैं, या नींद से उठने के कुछ ही देर बाद आते हैं	(12) Medulla

[22] (RW 9th edn. p 200,169 - for maintenance of **posture and balance,** impulses of Cranial nerve #2 from eyes, along with impulses from semi-circular canals of the ears from Cranial nerve #8 is necessary.)
[23] Control of equilibrium is a combined function of portions of the cerebellum and the reticular substance of the medulla, pons and mesencephalon.

GABA की कमी के कारण सेरेबैलम के प्रोब्लेम	(2) Medulla [24]
Hippocampus को उकसाने	(12) Medulla
कनपट्टी की त्वचा (skin of temple) (Zygomatic nerve V^2)	(5) Medulla
माथे के scalp यानि ऊपरी भाग में sensation का न होना (Supraorbital nerve V^1)	(5) Medulla
माथे पर silhouette या wrinkles नहीं आना	(7) Medulla
मस्तिष्क के बाजू, (temples) में दर्द का आना (mandibular sensory nerve V^3)	(5) Medulla
Medulla oblongata (Glosso-pharyngeal nerve)	(9) Medulla
Mid brain	(4) Medulla
Mid brain, medial geniculate body, Red nucleus	(8) Medulla
Pons (Abducent nerve) (Taber's 18th edn.p 2160)	(6) Medulla
Pons, Trigeminal ganglion, spinal, principal & mesencephalonic nucleus	(5) Medulla
RAS बिगड जाने पर मनुष्य coma में जा सकता है। उसे ठीक करने के लिये	(8) Medulla
सेरोटीनिन का बनना	(8) Medulla
Vertigo (semicircular canals of inner ear की गडबडी के कारण)	(8) Medulla
शरीर का balance, posture, हलचल में ताल-मेल न रहना इत्यादि	(2) Medulla

गर्दन और कंधों के लिये मेडूला उपचार

गर्दन को अच्छे बाजू की ओर नहीं घुमा सकना	(11) Left Medulla
गर्दन या कंधों में दर्द	(11) Medulla
कंधे को ठीक प्रकार से न घुमा सकना	(11) Left Medulla
कंधे में दर्द - जो गिरने से या मार लगने से आती है वह भी dislocation के कारण है	(11) Rt. Medulla
कंधा – frozen shoulder यानि हाथ को पूरी तरह से ऊपर उठा नहीं पाना	(11) Left Medulla
कंधा अपनी जगह से निकल कर थोडा नीचे आ जाना – shoulder dislocation	(11) Rt. Medulla
कंधा नीचे की तरफ झुक जाना	(11) Left Medulla

(6) Medulla और (10) Medulla के कार्यों की विस्तृत जानकारी में और कुछ खोज बाकी है।

चेहरा एवं मुँह के प्रोब्लेम और उनका मेडूला उपचार

निगलने के लिये bolus यानि नवाले को पीछे ले जाने के लिये	(5) Medulla
निगलने के लिये Epiglottis को खोलने एवं बन्द करने के लिये – cricothyroid एवं arytenoid muscles द्वारा (laryngeal nerve–superior) Taber's 18th edn.p 2163	(10) Medulla
निगलने के लिये जबान के मसल्स के लिये [25]	(12) Medulla
निगलने में प्रोब्लेम (खाना swallow करने में) को दूर करने	(9) Medulla

[24] यह गुरुजी की खोज है कि (2) Medulla x 6 treatments रेटीना के न्यूरौन्स GABA, dopamine, ऐसिटाइल कोलाइन (acetylcholine) एवं अन्य कई neuro-transmitters को उकसाते हैं। (Guyton 10th ed. p 586).

[25] The motor impulses that cause swallowing are transmitted by 5th, 9th, 10th and 12th cranial nerves (Guyton 10th ed. p 729).

निगलने में तकलीफ को दूर करने के लिये (अन्न–नलिका संकुचित होने के कारण)	(10) Medulla*
आवाज जो गयी हुयी हो उसे वापस लाना	(12) Medulla
आवाज का भारी होना (thick speech) उसे ठीक करने	(12) Medulla
आवाज में मिठास लाने के लिये	(10) Medulla
आवाज में hoarseness यानि खराशपन दूर करने के लिये	(10) Medulla
बोलने में तकलीफ को दूर करने – left vagus द्वारा लैरिन्क्स यानि स्वर–पेटी को फैलाने	(10) Medulla*
BP के नियंत्रण हेरिंग (Hering) के nerves द्वारा (Taber's 18th edn.p 889)	(9) Medulla
BP का नियंत्रण – carotid sinus द्वारा (Guyton 10th ed. p 188)	(9) Medulla
carotid arteries, carotid bodies के प्रोब्लेम	(9) Medulla
चबाने के मसल्स के प्रोब्लेम (mandibular nerve V^3)	(5) Medulla
चेहरे के एक side का पैरालाइसिस	(7) Medulla
चेहरे के भाव जिससे व्यक्ति का चेहरा भावनाओं के अनुसार सिकुडता है, या खिल उठता है	(7) Medulla [26]
चेहरे पर दर्द या संवेदना का एहसास या अभाव	(5) Medulla
दाँतों के हर प्रोब्लेम के लिये (Superior/Inferior alveolar nerve, infraorbital nerve)	(5) Medulla
Epiglottis को बन्द करने के लिये	(9) Medulla
Esophagus यानि अन्न नलिका अगर सिकुड गयी हो उसको खोलने	(10) Medulla*
गालों के त्वचा और म्यूकस मैम्ब्रेन (mandibular nerve V^3 का buccal nerve)	(5) Medulla
होंठों के प्रोब्लेम (mental nerve V^3)	(5) Medulla
जीभ के आगे के दो तिहाई भाग के म्यूकस मैम्ब्रेन (Lingual nerve V^3)	(5) Medulla
जीभ के मसल्स (Hypo-glossal nerve) का हलचल	(12) Medulla
जीभ या जबान में संवेदना का अनुभव न होना	(5) Medulla
जबान का एक side का पैरालाइस होना – यानि जबान एक side को बार–बार जाती हो [27]	(12) Medulla
जबडे के अन्दर का नरम हिस्सा (Mandibular nerve V^3)	(5) Medulla
जबडे के मसल्स के प्रोब्लेम – मोटर रूट काम न करने से (pterygoid nerve V^3)	(5) Medulla
जबडे के ऊपरी या निचले हिस्से का प्रोब्लेम (special sensory and visceral sensory)	(7) Medulla
जबडे की हड्डी (cheekbone) में प्रोब्लेम (Zygomatic nerve V^2)	(5) Medulla
जबडा पैरालाइस हुये side की ओर टेढ़ा होना और रोगी ठीक प्रकार से नहीं चबा सकना	(5) Medulla
कनपट्टी पर दर्द या संवेदना का एहसास या अभाव	(5) Medulla
लैरिन्क्स (larynx) के मसल (muscle) (laryngeal nerve - Inferior & recurrent)	(10) Medulla
लैरिन्क्स (larynx) के म्यूकस मैम्ब्रेन (laryngeal nerve – Superior)	(10) Medulla

26 इसका प्रयोग पॉर्रॅकन्सन की बीमारी में करनी चाहिये

27 12th Cranial Nerve is responsible for voluntary tongue movements (R&W 9th edn. p. 290)

मुँह – जो बाजू अच्छी हो उस तरफ की ओर मुँह का मुड जाना – Bell's palsy में ऐसा होता है	(7) Medulla
मुँह के अन्दर के तालू के प्रोब्लेम	(5), (9) Medulla
मुँह का टेढा हो जाना – जिस में किसी एक बाजू के सभी माँस–पेशियाँ पैरालाइस हो जाते हैं	(7) Medulla
मुँह पर दर्द या स्पर्श (Sensation) का अनुभव न होना	(5) Medulla
मुँह से सीटी बजा नहीं सकना	(7) Medulla
मुँह सूख गया हो तो सलाइवा लाने	(7), (9) Medulla
माथे या भौंह पर silhouette या wrinkles नहीं आना	(7) Medulla
मसूडों के प्रोब्लेम (mandibular nerve V^3)	(5) Medulla
pharynx के muscle का नियंत्रण	(9) Medulla
pharynx का mucous मैम्ब्रेन (Glosso-pharyngeal nerve)	(9) Medulla
pharynx से संवेदन (visceral sensory nerve)	(7), (9) Medulla
Pharynx तथा larynx के muscles को सिकुडना	(10),(11) Medulla
सलाइवा यानि लार बढ़ाने – parotid glands से [28]	(9) Medulla
सलाइवा यानि लार बढ़ाने – sublingual and submaxilliary glands से	(7) Medulla
सलाइवरी ग्लैंड्स (visceral motor nerve)	(7) Medulla
स्वाद – जीभ के पिछले तिहाई भाग (Glosso-pharyngeal – special sensory nerve)	(9) Medulla
स्वाद का अनुभव (chorda tympani)	(7) Medulla
स्वाद का अनुभव होना – जबान के आगे के ⅔ भाग से (special sensory nerve)	(7) Medulla
तालू (palate) के muscles को सिकुडना (bronchial motor nerve)	(10) Medulla
Tonsils के nerves को उकसाने (tonsillar nerves) (Taber's 18th edn.p 804)	(9) Medulla
Trachea एवं bronchi के smooth musclesको सिकोडता है – bronchitis के लिये	(10) Medulla
Trigeminal neuralgia	(5) Medulla
भौंह में दर्द या संवेदना न होना (frontal nerve & supra-orbital nerve V^1)	(5) Medulla

* इन्हें (10) Left Medulla ही देना है।

जिस तरफ की नर्व खराब हो उस तरफ मनुष्य की जबान का न जाना या घुमा न सकना

-- - - - - - - - - - - - - - - - - - --

सर्दी, खाँसी इत्यादि के लिये मेडूला उपचार Ref : *Cough : Taber's 18th edn.p 453*

<u>प्रायः सभी प्रकार के खाँसी के लिये (5) Medulla उपयोगी साबित हुआ है</u>।

- ✓ खुश्क खाँसी,
- ✓ बहुत जोर की खाँसी,
- ✓ अस्थमा की खाँसी,
- ✓ aortic aneurism के कारण जो खाँसी आती है (left recurrent laryngeal nerve पर प्रेशर के कारण) *

---

[28] Ptyalin अधिक मात्रा में Parotid glands के सलाइवा में ही पाया जाता है। (Guyton 10th ed. p740)
और 9th क्रेनियल नर्व ही पैरोटिड ग्लैंड्स को उकसाता है।

* शायद ऐसी खाँसी के लिये (10) Medulla भी लाभदायक होगा क्योंकि वह laryngeal nerve की देखभाल करता है।

Bronchial खाँसी –
- ✓ जो करवट बदलने पर या सुबह उठने पर आती है तथा
- ✓ जिसमें ब्लगम ग्रे (grey) रंग का फेना सहित तथा बदबूदार हो।
- ✓ खाँसी पहले खराशी और तकलीफ के साथ आती है लेकिन बाद में कुछ आसानी से आती है।
- ✓ ज्यादा बलगम का आना। या पतली बलगम का आना।
- ✓ Larynx में Diphtheria (डिफ्थीरिया) के कारण जो खाँसी आती है।
- ✓ Laryngitis का metallic cough यानि खाँसी जो खरोचने वाली आवाज के साथ हो।
- ✓ Pulmonary cough जो सख्त हो और साथ में दर्द के साथ हो - जैसा की निमोनिया में होती है।
- ✓ TB के शुरुआत में वह खराशी के साथ आती है।
- ✓ Whooping cough यानि pertussis जिसमें मुँह खाँसते-खाँसते लाल हो जाता है।

\- - - - - - - - - - - - - - - - - - -

सभी थेरेपिस्टों से अनुरोध है कि वे अपने केंद्रों में मेडूला ट्रीट्मेंट के कार्यों पर ज्यादा ध्यान दें और जब आपको कोई अच्छे result आते हैं तो *गुरुजी या कमलेश दीदी को तुरन्त पेशंट के नाम और लक्षण के साथ बतायें।*

अगर हर एक मेडूला पर कई केंद्रों से एक-जैसा असर की खबर हमें मिले तो <u>उस के आधार पर</u> गुरुजी को दुनिया का सबसे उच्च पदक यानि नोबेल पुरस्कार के लिये हम उचित कदम उठा पायेंगे। इस के लिये हर एक थेरेपिस्ट को एक बहुत ही छोटा-सा काम करना है।

ऊपर के तथ्यों पर उपचार करने पर हर एक केंद्र में अलग-अलग मेडूला ट्रीट्मेंट की सफलता के कई पेशंट मिलेंगे। तो एक notebook इसके लिये अलग रख कर उसमें पेशंट के नाम-पता तथा कौन-से मेडूला ट्रीट्मेंट से क्या लाभ मिला यह लिखते जायें तो सब से बेहतर होगा। ताकि जब भी उस के बारे में पूछा जाय तो आप तुरन्त proof दे सकते हैं। अगर एक notebook में लिखा हुआ हो तो कोई कह नहीं सकते कि हम झूठ बोल रहे हैं। और अगर पेशंट का हस्ताक्षर और साथ ही एक और साक्षी का नाम-पता और हस्ताक्षर भी मिल जाय तो क्या कहना !

गुरुजी हम से किसी प्रकार के उम्मीद न रखते हुये अपना ज्ञान हमें दे रहे हैं। तो उनका नाम रौशन करने के लिये यह छोटी-सी तकलीफ उठाने में हमें झिझक नहीं करनी चाहिये। *तो हमें पूरे लगन के साथ इस कार्य में जुड जाना है।*

वैसे यह कहने की जरूरत नहीं है कि जब गुरुजी और न्यूरोथेरेपी का नाम फैलता है तो उसका लाभ LMNT के हर एक थेरेपिस्ट को ही मिलेगा।

ऊपर के तथ्यों के आधार पर खोज करने योग्य कुछ और संदर्भ या प्रसंग -
कृपया निम्न ट्रीट्मेंटों को अपने केंद्रों में पेशंटों पर प्रयोग करके उनकी सफलता के बारे में हमें तुरन्त बतायें

? किडनी स्टोन-vagus nerve यूरेटर के ऊपरी भाग तक जाता है (Guyton 10th ed. p 698)	(10) Medulla
? ठसका लगने पर - अगर epiglottis ठीक से बन्द नहीं होने के कारण हो तो - मोटर न्यूरौन के पेशंटों पर तथा जिन बच्चों की मुँह से लार गिरते रहता है, उन पर आजमाकर देखना है।	(9) Medulla
? आँखों से आँसू ज्यादा निकलता रहे तो उसे कम कराने (यह आँसू की ग्रंथियों के muscles को उकसाता है तो आँसू की मात्रा का नियंत्रण भी करता होगा ?)	(7) Medulla
? आँखों से आँसू ज्यादा निकलता रहे तो उसे कम कराने - क्योंकि यह paranasal sinuses को उकसाता है (infratrochlear sensory nerve V^1 लैक्रीमल सैक को जाता है।)	(5) Medulla
? बाल जो रूखे-सूखे हों - (माथे के ऊपरी भाग के त्वचा से संवेदना ले जाता है)	(5) Medulla

? ब्रौंकाइटिस – इसमें साँस छोडने में तकलीफ है, वेगस नर्व ब्रौंकाइ को सिकोडता है	(10) Medulla
? ब्रेन के हायपर activity को शायद शान्त करेगा (यह मेडूला ओब्लोन्गाटा में काम करता है?)	(8) Medulla
? **Bell's palsy** – (मोटर रूट काम न करने से जबडा पैरालाइस हुये बाजू की ओर मुडेगा)	(5) Medulla
? चेहरे पर **expression** नहीं, यानि भाव व्यक्त नहीं कर पाता – Parkinson के रोगियों के लिये	(7) Medulla
? गालों के अन्दर जख्म – बार-बार जो अपने दाँतों से गालों को काट लेते हैं – (mandibular nerve V^3 का buccal nerve) गालों के त्वचा और म्यूकस मैम्ब्रेन से संवेदना ले जाता है	(5) Medulla
? Medulla oblongata और ब्रेन के हायपर activity को शायद शान्त करेगा	(8) Medulla
? उल्टीयें (vomiting) रोकने के लिये	(8) Medulla
? खर्राटे (snoring) कम करने के लिये (bronchial motor nerve) तालू (palate) के muscles को सिकुडता है	(10) Medulla
आँखों या पलकों को खुला नहीं रख पाते – Myasthenia gravis के पेशंटों के लिये आजमाना	(3) Medulla
दाँतों के सभी प्रकार के दर्द – दाँत निकालने के बाद जो असहनीय दर्द होता है उसके लिये भी	(5) Medulla
fits तथा cramps के लिये लाभदायक पाया गया है – चेन्नाइ में – एक पेशंट को लाभ मिला	(4) Medulla
मुँह का सूख जाना – भोजन के समय टाइलिन नहीं बनने के कारण	(9) Medulla
मसूडों से रक्त निकलना या मसूडों मे दर्द होना	(5) Medulla
taste यानि स्वाद पता लगाने के लिये – (जीभ से संवेदना ले जाता है)	(5) Medulla

जहां भी ? प्रश्न चिन्ह है वह सूचक है कि यह मेरी अपनी और एक दम नई सोच है। इसे आजमाने पर ही पता चलेगा।

- (2) Medulla x 6 treatments – पौंडीचेरी अरविन्द आश्रम में एक CP यानि सेरेब्रल पेल्सी के बच्चे को यह ट्रीट्मेंट दिया गया तो वह कुछ ही दिनों में उठ कर बैठने लगा।

- चेन्नाई के एक पेशंट को (5) Medulla + (9) Medulla x 3 treatments + 'कटका' – दिया तो तुरन्त गले के irritation यानि खराशी में बहुत आराम मिला। निगलने में तकलीफ एवं मुँह के अन्दर सूखापन था, वह भी ठीक हुआ।

- (6) Medulla – औरतों में बांजपन शरीर का temperature यानि तापमान कम होने के कारण हो तो – उन्हें (6) Medulla + Raman treatment देने से लाभ देखा गया है। उन्हें मैन्सस कम आते थे।

- आश्रम में श्री पंकित शाह जी को दिनांक 1st Dec.2006 को रात के भोजन के समय ठसका लगा । (9) Medulla देने के बाद बगैर पानी पिये ही तुरन्त ठसका से उसे आराम मिला । इसके बाद अनेद छात्रों पर इसको सफलता के साथ आजमाया जा चुका है।

- **Hiccups** के लिये (15) Left Medulla (6) Lt. Swt x 3 treatments से भी लाभ हो सकता है।

- पेशाब पर कंट्रोल नहीं – जैसे उमर बढ़ती है, कुछ लोगों को ऐसा होता है कि छींक के साथ या जोर से हँसने से पेशाब अपने आप निकल जाता है। खास कर यह मध्यम उमर की औरतों में पाया जाता है, क्योंकि उस उम्र तक उनकी नाभी के नीचे की मसल्स ढ़ीली हो चुकी होती हैं

- यह प्रोब्लेम वैसा ही है जैसे बच्चों में बिस्तर में लेटे लेटे ही पेशाब का आ जाना। इसे incontinence कहते हैं और यह औरतों में भी होता है। उन्हें निम्न ट्रीट्मेंट देने से लाभ होगा – (15) Right Medulla (6) Right Swt x 3 treatments + Piles का triangle

  इस ट्रीट्मेंट से urine का hole संकीर्ण होगा, Piles triangle से पेल्विस के आसपास के मसल्स tight होंगे, खास करके anus के और urinary sphincter के muscles, जिससे पेशाब पर कंट्रोल आ जायेगा

- अगर आँख की पुतली dilated यानि फैली हुयी हो तो शायद इसलिये है कि मसल्स tight यानि कडक हैं। उन्हें relax कराने के लिये (15) Left Medulla (6) Lt. Swt देनी चाहिये।

  (मुझे लगता है कि 40 साल के बाद जिन्हें चश्मे की जरूरत पडती है उसका मुख्य कारण है कि उनके आँख रिलैक्स नहीं कर पाते) यह ट्रीट्मेंट रोज देने से शायद हम चश्मो की जरूरत काफी बरसों तक टाल सकते हैं

  (Taber's 18th edn.p 18) में लिखा है कि a salt solution of acetylcholine is used to produce contraction of the pupil after cataract surgery. शायद (15) Medulla इस कारण से भी पुतली को सिकोडने के लिये मदद करेगा।

- src यानि S. Ramchandran

Dr. Lajpatrai Mehra's Neurotherapy Academy

Correspondence Address:

33-34, Surji Vallabhdas Bldg., G. K. Marg, Worli Naka, Mumbai - 400018. Maharashtra, India

Email: neurotherapyacademy@gmail.com